

छन्द राउ जइतसी रउ
(वीठू सूजइ रउ कहियउ)

सम्पादक
मूलचन्द 'प्राणेश'

प्रस्तावना लेखक
डॉ शक्तिदान कविया

भारतीय विद्या-मन्दिर शोध-प्रतिष्ठान
रतन विहारी पाक, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक भारतीय विद्या-मन्दिर बोध प्रतिष्ठान
रतन बिहारी पार्क बीकानेर (राज)

सम्पादक श्री मूलचन्द प्राणेश

प्रस्तावना लेखक डॉ पाण्डितान कविया

आवरण अमित भारती

प्रथम संस्करण 1991 प्रतियां 1000

मूल्य साठ रुपये मात्र

पैपर बक पञ्चवीस रुपये मात्र

मुद्रक छायाला प्रिण्टर्स

चन्दन सागर बीकानेर 334 001

प्रकाशकीय

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान के प्रकाशन क्रम में 'छन्द राउ जइतसी रउ, विठू सूजइ रउ कहियउ को प्रकाशित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता होरही है। इसके पूव नागत्मण, रणमल्ल छद आदि प्राचीन राजस्थानी बाण्यो का प्रकाशन किया जा चुका है। जो विद्वानों के द्वारा प्रशंसित हुए हैं और हमारे लिए उत्साहवद्भक।

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ राजस्थान के लिए ही नहीं सम्पूर्ण भारत के लिए गौरव का विषय है जिसमे साम्राज्यवादी मुगल बाहिनी को राजस्थान के एक राजा न पराजित करके मगा दिया और अपनी स्वतन्त्र सत्ता को बनाए रखा।

इसी क्रम से सस्था द्वारा कवि वर माधोदास दधवाडिया कृत राम रासो को प्रकाशित करने की याचना है। जिस के लिए सम्पादन का प्रारम्भिक काम चालू हो चुका है। यह काव्य कृति भी जन साधारण की सेवा में यथा समव दीर्घ ही प्रस्तुत की जा सकेगी।

छन्द राउ जइतसी रउ के प्रस्तुत प्रकाशन के सम्बन्ध मे जो विद्वान अपनी सम्मति भेजने की कृपा करेंगे, हम उनका हार्दिक स्वागत करेंगे।

अतने सुन्दर व उत्तम सम्पादन के लिए सम्पादक श्री मूलचन्द प्राणेश' व सुन्दर मुद्रण के लिए सासला प्रिंटस हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

विजय दिवस मागशीय कृष्णा 4
स 2048 बीकानेर

मूलचन्द पारीक
मन्त्री
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर

सम्पादकीय

‘छन्द राउ जइतसी रउ’ राजस्थानी भाषा में सजित एवं ऐतिहासिक काव्य कृति है। इसमें वीठू सूजा ने अपने आश्रयदाता बीकानेर के राय जतसी द्वारा कामरा के विरुद्ध लड़ गये युद्ध का प्रामाणिक वर्णन किया है। इसी प्रकार की एक और रचना उपलब्ध है, जिसका उल्लेख डा. एल. पी. टसीटोरी ने एक अज्ञात कवि की कृति बताते हुए सम्भावना व्यक्त की है कि हो सकता है यह कृति प्रख्यात छन्दों के सजक वीठू भई की हो। वीठू सूजा एवं वीठू भई राय जतसी के दरबारी कवि थे और उनमें परस्पर चाचा भतीजे का रिश्ता भी था।

डा. एल. पी. टसीटोरी ने सब प्रथम इस काव्यकृति के नाम को पहचाना तथा उपलब्ध सभी प्रतियों के आधार पर पाठ सम्पादित करके विद्वज्जनों के सम्मुख रखा। परन्तु इस काव्य कृति की जटिल भाषा एवं क्लिष्ट शब्दों का परिणाम स्वरूप जन साधारण को तो बात ही क्या, बड़े बड़े विद्वान भी इसके आगम को स्पष्ट नहीं कर सके।

स्व. श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने भी अपने मित्रों के साथ उक्त छन्द के संपादन का काय हाथ में लिया था परन्तु कि ही कारणों से वे इसे पूरा नहीं कर सके। ‘रणमल्ल छन्द’ का सम्पादन करके मैं जब स्वामी जी को लिखाने गया तो लौटते समय छन्द राउ जइतसी रउ के संपादन का काय मुझ सौंपते हुए इस शीघ्रातिशीघ्र पूरा करने की ताकीद भी की। स्वामीजी ने उक्त छन्द के सम्पादन का जितना काय किया था वह सामग्री भी मुझ सौंप दी।

मैंने नये सिरे से काय प्रारम्भ किया। छन्द के मूल पाठ का आधार डॉ. एल. पी. टसीटोरी द्वारा प्रकाशित पाठ को बनाया। विस्तार भय से पाठांतरों को सम्मिलित नहीं किया गया। वर्तमान कालिक शब्द कोशा में छन्द में प्रयुक्त शब्द ही नहीं मिले, तब अर्थ की तो बात क्या।

मैंने छन्द में प्रयुक्त सभी शब्दों के निकटतम हिंदी पर्याय देने का प्रयत्न किया है परन्तु कितने ही शब्दों का हिंदी में पर्यायवाची हैं ही नहीं, ऐसे शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इस कृति का ऐतिहासिक महत्त्व तो है ही, पर साथ ही भाषागत महत्त्व भी कम नहीं है। प्रस्तुत कृति का ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना नितांत आवश्यक था, परन्तु मरे इष्ट मित्रों एवं

विद्वज्जनो का आग्रह इस कृति को हिंदी भाषाय के साथ यथाशीघ्र प्रबुद्ध-पाठकों एवं जिज्ञासु विचारियों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाने का रहा। प्रस्तुत काय कृति ने सम्पादित होकर पुस्तक का स्वरूप ग्रहण कर लिया, पर इस देखने के लिए श्री स्वामी जी नहीं रहे। नमन् ॥

डा. शक्तिदान कविया ने प्रस्तुत काय कृति की विस्तृत, सटीक एवं विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना लिखी है, जिसके द्वारा काव्य में वर्णित सभी पक्षों का उद्घाटन हुआ है। प. अक्षयचंद्र जी शर्मा ने पुरावाक लिखकर इस काय कृति को आशीर्वाद प्रदान किया है एतदथ आभारी हूँ।

प्रस्तुत कृति को वतमान स्वरूप में प्रस्तुत करने का श्रेय श्री सत्यनारायणजी पारीक, डा. मनोहरजी शर्मा एवं श्री रामनिवासजी शर्मा को है। भा. वि. म. शा. प्र. प्रतिष्ठान, बीकानेर का अधिकारीगण विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, क्योंकि इनके सद्प्रयास के बिना प्रस्तुत कृति पुस्तक का स्वरूप ही ग्रहण नहीं कर पाती।

देवोत्थान एकादशी
स 2048 वि
(18 नवम्बर, 1991 ई.)

मूलचंद्र प्राणेश'
झड़ू (बीकानेर)

सम्पादकीय

छन्द राउ जतसी रउ राजस्थानी भाषा मे सजित एक ऐतिहासिक काव्य कृति है। इसमे वीठू सूजा ने अपने आश्रयदाता बीकानेर के राव जतसी द्वारा कामरां के विरुद्ध लड़े गये युद्ध का प्रामाणिक वर्णन किया है। इसी प्रकार की एक और रचना उपलब्ध है, जिसका उल्लेख डा एल पी टसीटोरी ने एक अज्ञात कवि की कृति बताते हुए सम्भावना व्यक्त की है कि हा सकता है यह कृति प्रख्यात छन्दों के सजक वीठू मेह की हो। वीठू सूजा एक वीठू मेह राव जतसी के दरबारी कवि थे और उनमें परस्पर चाचा भतीजे का रिश्ता भी था।

डा एल पी टसीटोरी न सब प्रथम इस का यकृति के मम को पहचाना तथा उपलब्ध सभी प्रतियों के आधार पर पाठ सम्पादित करके विद्वग्जनों के सम्मुख रखा। परन्तु इस का यकृति की जटिल भाषा एक विलुप्त शैली का परिणाम स्वरूप जन साधारण की तो बात ही क्या, बड़े बड़े विद्वान भी इसका आगम को स्पष्ट नहीं कर सके।

स्व श्री नरोत्तमदाम जी स्वामी ने भी अपने मित्रों के साथ उक्त छन्द के संपादन का काय हाथ म लिया था, परन्तु कि ही कारणों से वे इसे पूरा नहीं कर सके। रणमल्ल छन्द का सम्पादन करके मैं जब स्वामी जी को नियताने गया तो लौटते समय छन्द राउ जतसी रउ के संपादन का काय मुझ सौंपते हुए इस शीघ्रातिशीघ्र पूरा करने की ताकीद भी की। स्वामीजी ने उक्त छन्द के सम्पादन का जितना काय किया था वह सामग्री भी मुझ सौंप दी।

मैंने नये मिरस काय प्रारम्भ किया। छन्द के मूल पाठ का आधार डा एल पी टसीटोरी द्वारा प्रकाशित पाठ को बनाया। विस्तार भय से पाठान्तरी को सम्मिलित नहीं किया गया। वर्तमान कालिक शब्द काशाम छन्द में प्रयुक्त शब्द ही नहीं मिले, सब अर्थ की तो बात क्या।

मैंने छन्द में प्रयुक्त सभी शब्दों के निकटतम हिन्दी पर्याय देने का प्रयत्न किया है परन्तु कितने ही शब्दों का हिन्दी में पर्यायवाची है ही नहीं ऐसे शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इस कृति का ऐतिहासिक महत्त्व तो है ही पर साथ ही भाषागत महत्त्व भी कम नहीं है। प्रस्तुत कृति का ऐतिहासिक साहित्यिक एवं भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना नितांत आवश्यक था, परन्तु मेरे दृष्ट मित्रों एवं

विद्वज्जना का आग्रह इस कृति को हिंदी भाषाय के साथ यथाशीघ्र प्रबुद्ध-पाठकों एवं जिनामु विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाने का रहा। प्रस्तुत काय कृति ने सम्पादित होकर पुस्तक का स्वरूप ग्रहण कर लिया, पर इसे देखने के लिए श्री स्वामी जी नहीं रहे! नमन्!।

डा. शक्तिदान कविया ने प्रस्तुत काय कृति की विस्तृत, सटीक एवं विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना लिखी है, जिसके द्वारा काय में वर्णित सभी पक्षों का उद्घाटन हुआ है। प. अक्षयचन्द्र जी शर्मा ने पुरावाक लिखकर इस काय कृति को आशीर्वाद प्रदान किया है एतदथ आभारी हूँ।

प्रस्तुत-कृति को वर्तमान स्वरूप में प्रस्तुत करने का श्रेय श्री सत्यनारायणजी पारीक, डा. मनोहरजी शर्मा एवं श्री रामनिवासजी शर्मा को है। भा. वि. म. शोध प्रतिष्ठान बीकानेर के अधिकाराराम विनेप धर्मवाद के पात्र हैं, क्योंकि इनके सद्प्रयास के बिना प्रस्तुत कृति पुस्तक का स्वरूप ही ग्रहण नहीं कर पाती।

देवीस्थान एकादशी

स 2048 वि

(18 नवम्बर, 1991 ई.)

मूलचन्द्र प्राणेश'

क्षमू (बीकानेर)

पुरा षाक्

चारुणा तोरणेन

[दूराल्लक्ष्य सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन]

—मेघदूत

विजय दिवस

बीकानेर के ही नहीं, राजस्थान के गौरवमय दीपपूजा इतिहास में वि. सं. 1591 माग-शुक्ल कृष्णा 4 (ई. सं. 1534 ता. 26 अक्टूबर) का दिन एक विजय दिवस के रूप में स्वर्णक्षरों से अंकित है। उस दिन बीकानेर नरेश राव जतसी ने बाबर के महत्वाकांक्षी पुत्र कामरा को अपनी दूरदर्शी रण-चातुरी से परास्त कर, लाहौर की ओर भागने को विवश किया था। साधारणतः राजस्थान का शौर्य आत्मोत्सव से ज्वलित तो है, विजय प्रकाश से विभूषित कम। युद्ध है परस्पर बलनस्य एव द्वय की धारा है, स्वाभिमान के साथ दूसरे के स्वाभिमान का तिरस्कार है, सहयोग का अभाव है। इससे हमारे शौर्योदात्त की गाथाएँ इतनी उज्ज्वल नहीं जितनी घूमिल और मोघ मात्र हैं।

ऐसी स्थिति में राव जतसी ने राजनीतिक दूरदर्शिता, अटूट धैर्य, अनुशासनबद्धता और निश्चित योजना के बल पर कामरा की विशाल विजयो मत्त बाहिनी को अपनी छोटी सी सघी हुई सेना के द्वारा हरा कर—राजस्थान के साम्राजिक इतिहास में अपनी अलग पहचान कायम की है। बाण, राजस्थान इसके महत्त्व को हृदयगम कर पाता।

प्रामाणिक साक्ष्य

हमारा सौभाग्य है—इस घटना के प्रत्यक्ष दर्शी हैं—कविवर वीठू सूजा—जिनकी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति 'छन्द राउ जइतसी रउ' इतिहास और काव्य दोनों दृष्टियों से समृद्ध है। वीठू सूजा इतिहासकार हैं कवि हैं, वीर रस के कवि—सारी कृति भाषात उत्साह से झरत हैं। इतिहास की अपनी मर्यादा है, इत्य निश्चयेन बभूव—ऐसा निश्चित रूप से हुआ था—इस टेक को निभाते हुए सचाई का, तथ्यों का सम्मान करते हुए—इतिहास की शुष्कता इतिवृत्तात्मक नीरसता को बचाते हुए—कवि अपना काव्य करता है। इतिहास के प्रति ऐसी प्रतिबद्धता से काव्यत्व में किञ्चित् क्षरण तो होता है, पर कृति कवि की स्वर कल्पना गलदश्रु भावुकता और अत्युक्तिमयों की घनघटाओं से मुक्त रहती है। नि. सं. देह यह कृति इतिहास के घरातल को न छोड़ती हुई कविता की रसात्मकता से अपने की आदर रखती रही है। लगता है—जस मरुधरा की बालुकामयी परिधौ सावन भादों में मीना हरिताचल पहने हा।

प्रथम प्रयास

इतालवी विद्वान् डा तैसितोरी के द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ का प्रकाशन इनके स्वगवास के एक वर्ष पश्चात् सन् 1920 में हुआ था। इसकी भूमिका सम्पादक द्वारा 15 अक्टूबर 1918 को लिखी गई थी।

इस ग्रन्थ का सम्पादन अत्यन्त सतकता, प्रामाणिकता एवं श्रम पूर्वक किया गया है। पाठांतर भी दिये गये हैं। प्रस्तावना में इस कृति की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए सार सक्षेप दिया गया है और आधारभूत छन्दों का निर्देश भी। विशेष विन्दु निम्नोक्त हैं—

(क) यह कृति कामरां के पराजित होने और राव जतसी के विजयोत्सव मनाने की घटना को उजागर करती है। मुस्लिम इतिहासकार कामरा के इस दुर्भाग्य पर मौन साधे हैं। यह कृति बीच के अंतराल को भरती है।

(ख) राठीव वंश की पूर्व विभूतियों का क्रमानुसार वणन त्वरा के साथ किया गया है। वणन सजीव है, कहीं एकस्वरता नहीं।

(ग) कवि ने जतसी के पिता राव लूणकरण व शासन को निरुद्ध से अनुभूत किया है अतः वणन में विस्तार है। राव लूणकरण के शीघ्र के साथ प्रजा की सुख सम्पन्नता के भी चित्र हैं। प्रजा वत्सलता उभारी गई है।

(घ) कामरा के प्रस्ताव का जतसी ने जो उत्तर दिया है, वह क्षात्र दप से युक्त तेजस्विता और भोजस्विता से आलांकित है।

(ङ) कामरां का प्रचण्ड आक्रमण को देख कर जतसी न डर, न भागा—घोड़ी देर के लिए रण निपुणता के रूप आसन और यान के सुअवसर के साधु क्षणों के लिये प्रतीगा में ध्यवान् रहा।

(च) कवि ने जतसी के सम्बन्धिया परिजना, सामंतों और उत्साही धीर सनिक का जिस उत्साह उमग रग के साथ वणन किया है—वह लम्बा है, 109 वीरो के नामों से भरा धीर साथ ही भिन्न भिन्न प्रकार के स्वभाव, गुण, वपलता, त्वरा, गति आदि की व्यञ्जना करते हुए अश्वों को सामूहिक जाति से पृथक कर गुण, नाम और व्यक्तित्व प्रदान करते हुए नाम, रूप और गति आदि के साथ चित्रित करता है—यह अपने में अनुपमेय है। कवि अकुण्ठित भाव से, अत्यन्त ध्य के साथ, नितनूतन उत्साह के साथ—कहीं भी एकस्वरता न लाते हुए नयी-नयी उपमाओं, रूप को, शब्द ध्वनियों और चाक्षुण ध्वनि बिम्बों के साथ अवतारणा कर अश्वों की आरती उतारता चलता है—सारे छन्दों में पुनः एक नव स्पर्शन है शीघ्र का उद्दीप्त भोज है, प्रवाह है—ऐसा स्पग्ता है—प्रशांत महासागर उत्ताल तरंगों से बिल्वोल कर रहा है।

कवि न एव-एव धीर का स्तवन किया है—

धीरों का सुपुत्र गान है अमिमान वल्लभ का।

कात्र वप से युक्त घोर

राजस्थान का इतिहास जब पढ़ते हैं तो एक चित्र मानस पटल पर उभरता है जस खुले आसमान के नीचे एक सुगठित घोर अश्वारूढ़ है और विद्युत् प्रभा विनिन्दक असि धमक रहा है।

राव जतसी अपनी शक्ति के साथ रकाब पर पर रत कर अश्व पर चढ़ा। चक्रवर्ती राव चूड़ा का वंशज ४म अश्व पर चढ़ा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भगवान् विष्णु गरुड पर चढ़ हों।

चारण कवि ने भीतर छिप हुए सजग इतिहासकार ने तप्य का सम्मान करते हुए विजय का श्रेय किसी अलौकिक शक्ति को नहीं दिया—श्रेय के अधिकारी धीरो को शौर्य, साहस और राष्ट्र प्रेम व कारण यह विजय प्राप्त हुई है।

यह कृति इतिहास की दृष्टि से बीकानेर के गौरव का एक महत्वपूर्ण प्रामाणिक दस्तावेज है।

इतिहास और काव्य के निकट पर यह कृति रासी है, इसका भाषा के गठन की दृष्टि से भी असाधारण महत्व है। ढिगल भाषा पर कवि का असौम अधिकार है। भाषा में कसावट है।

भाव, कथा एवं चरित्र की छटा अशुष्ण रखते हुए कवि ने वीण सगार्द का अलण्ड निर्वाह किया है—जिससे स्पष्ट है कि कवि का ढिगल पर असाधारण अधिकार है। भाषा जस कवि के वशवर्तिनी है।

इतिहासकारों एवं साहित्य समीक्षकों की दृष्टि में

महा महोपाध्याय डॉ गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने बीकानेर राज्य का इतिहास लिखते समय इस कृति को अत्यंत प्रामाणिक रूप में स्वीकार किया है और कामरां के युद्ध का विवरण धीठू सूजा के आधार पर लिखा है—

‘कामरा की फौज बीकानेर की ओर अप्रसर हुई, जिसकी सूचना दूतों ने जाकर राव जतसी को दी। वहाँ पहुँच कर भी मुगलों ने अधोनता स्वीकार करने का पैगाम जतसी के पास भेजा, परंतु उसने बीकानेर के वंशज के अनुरूप ही उत्तर दिया, ‘जाओ कामरा से कह देना कि जिस प्रकार मेरे वंश के मल्लीनाथ, सत सल्ल (सावल), रणमल, जोधा, बीका दूंग, लूणकण, गगा आदि ने मुसलमानों का गव-भजन किया था, उसी प्रकार मैं भी सरा नाग बरूंगा।

“जतसी ने इस अवसर पर इतनी बड़ी सेना का सामना करना उचित न समझा और अपनी भयभीत प्रजा को आगे कर वह वहाँ से दूर हट गया। केवल भोजराज रूपावत कुछ भाटियों के साथ बीकानेर के गड (पुराना) की रक्षा के लिये रह गया, जिसे मारकर मुगलों ने वहाँ पर अधिकार कर लिया, परंतु जतसी भी चुप न बठा रहा। रात्रि के समय मुगलों की सेना पर आक्रमण किया। राठोडों के इस प्रबल हमले का सामना मुगल

सेना न बर सकी और मैदान छोड़ कर लाहौर की ओर भाग पड़ी हुई। जतसी की मुसलमानों पर यह विजय राठीडो व इतिहास में चिरकाल तक अमर रहेगी।

‘जतसी वीर और योग्य शासक होने व साथ युद्ध-नीति का भी अच्छा ज्ञाता था, सदैव युद्ध के हर एक पहलु पर गभीरता पूर्वक विचार कर लेने के अनन्तर ही अपनी नीति निर्धारित करता था। प्रसिद्ध मुगल शासक बाबर की मृत्यु के बाद उसके पुत्र लाहौर का स्वामी कामरान की बीकानेर पर चढ़ाई होने पर जतसी ने अद्भुत युद्ध चातुर्य का परिचय दिया था। कामरान की विशाल वाहिनी का केवल वीरता से परास्त नहीं किया जा सकता था। जतसी भी यह भली भाँति समझता था। इस अवसर पर उसने बड़े धम और चातुर्य से काम किया। गढ़ खाली छोड़ कर उसने गवन सेना को भीतर बँध आने का लालच दिया, जिसमें वह फँस गई। फिर तो उसने उत बुरी तरह हराकर भगा दिया और इस प्रकार अपने पूर्वजों की उपाजिन कीर्ति का और भी उज्ज्वल बनाया।’

‘कमल-द्वयश्रीरत्नक वाच्यम् के यगस्वी कवि जयसोम ने जतसी की प्रजा-वत्सलता के लिए लिखा है कि जतसी ने दुर्भिक्ष के समय अन्न सत्र खोल कर पीड़ित प्रजाजनों को हर प्रकार से सुविधाएँ पहुँचाई थीं।

दीनानाय जनानामुपकार परामणकधिपणाभत् ।

तने च सत्रमाला दुःकाले कालभावन ॥१४४॥

भारतीय इतिहास के यगस्वी विद्वान् डा. दशरथ शर्मा ने दयालदास री हयात (भाग 2) की प्रस्तावना में ‘बीठू सूजा की महान् इतिहासकार बताया है और इनकी कृति के महत्त्व का इतिहास, का य एव गीत की दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए लिखा है— इस कृति में जहाँ जतसी का विजय का सजीव वर्णन है वहाँ जतसी के पूर्वजों का भी लेखा जोखा है।

‘आश्रमकारियों ने जनमी द्वारा खाली किये गए किले को अपने अधिकार में किया—पर, कुछ घण्टों के लिये ही। रात के समय उनके ठिकाना पर जतसी टूट पड़ा और सुबह होते होते वधे खुचे लाहौर की ओर भाग खड़े हुए। जतसी ने पीड़ित नारियों को मुक्त कराया। गार्स पुन मारवाड़ की धरती पर सुरक्षित हो गई।

डा. मोतीलाल मनारिया—‘कामरान काबुल और पंजाब का हाकिम था और इस युद्ध में परास्त हुआ था। सूजाजी ने इसका सविस्तार वर्णन किया है। इसलिये पुस्तक का ऐतिहासिक महत्त्व यथेष्ट है। वर्णन शली सजीव और ओजस्विनी है।

‘बुरु मण्डल का शोध पुण इतिहास के लेखक, सम्पादित गवेषक श्री गोविन्द अप्पवाल ने इस कृति के सम्बन्ध में अपना मत य देते हुए लिखा है—सूजा की कृति ‘छ द राठ जतसी रउ न केवल साहित्य की बल्कि इतिहास की भी अमूल्य निधि है। इतिहास के अनेक सुप्त प्रसंगों पर इस कृति के द्वारा महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। मध्य युगीन राजस्थान के श्रेष्ठ ऐतिहासिक का यों में इसकी गणना निःसर्बोच की जा सकती है।

इस कृति में मारवाड के राव चूडा राठोड से लगाकर मुगल बादशाह बाबर के पुत्र कामरां द्वारा बीकानेर के चतुर्थ राव जतसी पर चढाई करने और जतसी की कामरा पर गानदार विजय प्राप्त करने का ओजस्वी वर्णन है।

प्रस्तुत सम्पादन

डा तस्सितोरी द्वारा सम्पादित यह कृति सन् 1920 में प्रकाशित हुई है—यह आज अप्राप्य है। भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान ने इस काय को हाथ में लिया। श्री मूलचंद्र प्राणेश उस समय शोध प्रतिष्ठान में शोध काय में लगे थे—उनकी यह काय सौंपा गया। शोध प्रतिष्ठान में काय का प्रारंभ हुआ, काय आगे बढ़ा, फिर रुक गया। अब उ ही के द्वारा सम्पादित छंद राउ जतसी रउ' धीठू सुजइ रउ कहियउ नाम स मून पाठ हिंदी भाषाय एवं विवेक शब्द चर्चा के रूप में प्रकाशित हो रहा है। श्री मूलचंद्र प्राणेश डिगल के गभीर विद्वान् हैं एक श्रेष्ठ सभ्यज्ञात के पुजारी हैं। यह काय इ होने चि तन और बहुष्य के साथ सम्पन्न किया है। इस प्राचीन ऐतिहासिक और खण्डकाय की प्रस्तावना लिखी है—डिगल एवं प्राचीन राजस्थानी साहित्य के अधिकारियों विद्वान् डा शक्तिमान कविया ने—जिसस ग्रंथ की महिमा में श्रौवद्धि हुई है। यह उचित ही है—पुण्य तोया गंगा की पूजा गंगा तल के द्वारा ही की जा सकती है।

राव बीका की टेकरी के वातायन से

गोधूमिल वेला है आज मागशीप महीने की कृष्णा 4 है—यही विजय दिवस है। हम लोग राव बीका की टेकरी पर खड़े हैं। टेकरी उपेक्षित है जीण है प्राचीन गौरव की एक घूमिल रेखा—अभी भी पुरानी सुघड बनावट लिए मजबूत दीवारें इधर उधर टूट रही हैं। यही पर राव बीका राव लूणकरण और राव जतसी के स्मारक लख—उनकी छतरियों पर उत्कीर्ण हैं।

बीकाजी की टेकड़ी का स्मारक लेख

- I श्री गणेश कुलदेव्या प्रसादात् ॥ अभिप्सिताय सिद्धर्थं पूजितोय सुरा सुर
- II सब विघ्न छिदे तस्म गणाधिपतये नम ॥ अथास्मिन् शुभ सवत्सरे श्री म नपति
- III विक्रमादित्य राज्यात् सवत् 1598 वर्षे शाके 1463 प्रवतमाने मासोत्तम मासे
- IV फाल्गुन मासे शुभ शुक्ले पक्ष त्रिथी एकादश्या भागव वासरे घट्टा 48 पलानि 22
- V अश्लेषा नक्षत्र घट्टा 41 पलानि 20 शुक्ल नाम योगे घट्टा 25 पलानि 41 विणज

- VI कर्ण एव पचाग शुद्धौ रावजी श्री लूणकरण जी तत्पुत्र रावजा
श्री जैतसी जी वमी
- VII तिस्टभिघमपत्नीभिश्चतसृभि भोग पत्नीभि सहित श्री नारायण
परम भक्ति
- VIII ससक्त चित्त परमधाम मुक्तिपद प्राप्त ॥ तस्येय सप्रतिमा देहली
छात्रिका शास्त्रोक्त
- IX विधिना प्रतिष्ठापिता ॥ सा चिरतर तिष्ठतु ॥ श्री रस्तु ॥
॥ शुभ भूपात् ॥
- X श्री जर्तासिहोद्विजराज कीर्ति प्रवेश आसीत्पुर विक्रमेश ॥ धर्मेण
भूमौ परि
- XI पाल्य राज्य पत्नी समेत परमापधाम ॥ ॥ श्री बल्याणमस्तु ॥

राव जतसी का स्वगवास स 1598 वि में हुआ—इसी स्थान के आसपास—
सम्भवत वतमान स्थित श्री लक्ष्मीनारायण जी मंदिर के पास ऊँचाई पर जो श्री गणेश
जी का मी दर है—उसी के पास एक खुले मैदान में सुन्दर धनुषाकार गुमटी अवस्थित है
कहते हैं यहीं से श्री बीकाजी सूप को अघ्य देते थे । नि सदेह यह स्थान दुग के अतर्भुक्त
रहा है । अभी भी इस ऊँचाई पर जब हम खड़े होकर देखते हैं तो तीन ओर दूर-दूर तक
फला हुआ क्षितिज दिखाई देता है और ऊपर ऊँचा बहुत ऊँचा छतरी की तरह छाया
नीला आसमान—यहीं वहाँ किला रखा है । जिसकी स्थिति आज भी सुरभित सी दिखाई
देती है । यही से अभी भी शताब्दियों पुराने भौगोलिक स्वरूप को अद्युण्ण देखा जा सकता
है । क्षितिज के और इस ऊँचाई के मध्य में लम्बी गहरी खाइया घाटियाँ, टेकरियाँ—
घाराओं के रूप में स्थित है—सगता है—इसी जूने रास्ते स कामरां आया होगा और खाली
किले को देख कर विजय से पागल हो गया होगा । सेना भी मंदिरों को तोड़ने, गायों को
मारने और नारी उत्पीडन में लग गई होगी । मंदिरा में डूब गई होगी ।

कामरां की एस विनाश लीला का साक्षी आज भी श्री चितामणि का एक शिला
रेख — जिसमें कामरां का नाम स्पष्ट रूप से उल्कीण है, उसकी विनाशकारी करतूत के
साथ ।

स्मारक लेख

- I ॥ सवत 1592 वर्षे श्री बीकानेयरे महादुर्गे । पूव स 1380 वर्षे
श्री जिनकुशल सूरिभि प्रतिष्ठितम्
- II श्री महोवर मूल नायकस्य श्री आदिनाथादि चतुर्विंशति पट्टस्य ।
स 1591 वर्षे मुगदलाधिप कम्मरा पातसाहि समा
- III गमे विनाशित परिकरस्य उद्ग[ढ]रित श्री आदिनाथ मूलनायकस्य
बोहिपहरा गोत्र म, ब्रच्छा पुत्र म बरसिह भाया

IV श्रा ठोऊल (वीभल ?) दे पुत्र म मेधा भार्या मठिगलदे पुत्र म वयरसिह । म पन्नमोहा (साहा ?) म्या पुत्र म श्रोचद म महग्गादि ॥

V सपरिवाराभ्या सरतरगच्छे श्री जिनहस सूरीश्वराणा पट्टालकार

VI श्री जिन माणिक्य सूरिभि श्री जयत सोह विजयराज्ये ॥श्री॥

स्मरण रहे— बाबर की मृत्यु को अभी 5 वष ही हुए हैं । हुमायू अभी जम नहीं पाया है और कामरां ने अपने को लाहौर म जमा लिया है । उसन अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया है । हुमायू ने जब अपने इस भाई को प्रम की सीख दी तो उसके उत्तर मे एक फारसी का प्रतिद्ध गेर लिखकर भेजा—

अरुसे मुल्क कसेदर बनार गीरद चुस्त,
कि योसा कर लवे शमगीरे आबदार दिहद ।

—राज्य की नव वधू का वही दबतापूवक आलिगन करता है, जो चमकती हुई तलवार के अधरो का चुम्बन करता है ।

[मुगलकालीन भारत-हुमायू (भाग 1)-पृष्ठ 239]

यह उत्तर उम महत्वाकांक्षी के भीतर छिपी विजिगीषा का फुकार है । ऐसे गर्वो मत्त को राव जतमी ने पराजित करके अपने हिमालय से अद्विग व्यक्तित्व का परिचय दिया है । हमारा उद्देश्य हो-विजय-केवल विजय ! आज भी हम भारत के प्रहरी बन खड हैं । यह विजय दिवस भारत का शाश्वत विजय दिवस हो ।

सादुल कालोनी बीकानेर

—अक्षयचन्द्र शर्मा

विजय दिवस मागगीय कृष्णा 4 स 2048 वि

प्रस्तावना

डिगल राजस्थान की वह परिनिर्मित प्रांजल एव प्रशस्त भाषा है जिसका अपना विशाल शब्द-कोश तथा व्याकरण है। निजी रीतिगात्र के आधार पर रचा गया बहिष् विषयक विपुल साहित्य इस समृद्ध भाषा की अपनी निधि है जिसकी समता अत्यन्त दुर्लभ है। ऐतिहासिक वीरकाव्य तो मानो डिगल की बपीती ही है। डिगल का साहित्यिक अर्थ ही ठोस, भारी अथवा बनशाली होता है। वीरभूमि राजस्थान में ऐतिहासिक वीरकाव्य का प्रभूत प्रणयन तो स्वाभाविक बात है। राजस्थान की धरती अपने ऊपर गजन करने वालों का रक्त भी जाती है सभबत इसीलिए बादल भी यहाँ गाँज कर बरमने में मग्न होते हैं। स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी जनकवि शंकरदान सामीर कृत यह दोहा पठनीय है—

पाणी री काई पिय रगत पियोडी रज्ज ।

सक मन म आ समझ घण नह बरस गज्ज ॥

वस्तुतः उत्तरकालीन अपभ्रंश के बाद डिगल साहित्य विकसित होने लगा और उसका प्रकय-काल था विभ्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी। इसी काल में विशुद्ध ऐतिहासिक काव्यों का विपुल मात्रा में निर्माण प्रारंभ हुआ। वीरभोग्या वसुधरा सूत्र व अनुमार वीरत्व का बर्तन अभिनन्दन करने की यहाँ प्राचीन काल से परम्परा रही है। वीर पुरुष की श्रेष्ठता सिद्ध करने वाला प्राकृत पगलम् (14 वीं शताब्दी) ग्रन्थ का एक दोहा उल्लेखनीय है—

सुरतह सुरही परसमणि णहि वीरेस समाण ।

औ बकल अह कठिण तणु औ पमु औ पासाण ॥

अर्थात् कल्पवृक्ष सुरमि और पारसमणि ये तीनों ही वीर पुरुष की तुलना में नहीं ठहरते क्योंकि एक बल्कल युक्त कठोर तन वाला दूसरा पशु और तीमरा पापाण है। ऐतिहासिक वीरकाव्य वस्तुतः डिगल साहित्य का हृदय है। डिगल के ऐतिहासिक प्रबंधकार्यों की विशेषताओं के सदृश राजस्थान के इतिहासकार प रामकरण जी आसोपा के ये शब्द द्रष्टव्य हैं—

‘राजपूताना का इतिहास जैसा डिगल भाषा में वर्णित है वसा अ य किसी भाषा में उपलब्ध नहीं है। कारण यह कि डिगल भाषा राजस्थानी भाषा है और यह सबसे समस्त तथा युक्तियुक्त है कि जसा वणन प्रचलित देशभाषा में होता है वसा अ य भाषा में नहीं हो सकता।’ (राजरूपक भूमिका, पृ. 1)

राजस्थान की शीघ्र प्रधान सस्कृति के निर्माण और सुरक्षा में यहाँ के साहित्यकारों का बड़ा भारी योगदान रहा है। धर्मानुकूल युद्धवीर को ही ढिगल काव्यो में चरितनायक माना गया है। ऐतिहासिक काव्य रचना का मुख्य उद्देश्य महान् व्यक्तियों के यश को स्थायी रूप देना रहा है, क्योंकि कीर्ति ही अमर घन होता है। कहा भी है— 'कीर्तियस्य स जीवति।' लोबहित ही जिनके जीवन का सद्य हो, ऐसे स्थायी और बलिदानी वीरों के चरित्र को प्रख्यात एवं प्रकाशित करने से सामाजिक जीवन सस्कारित होता है। यही कारण है कि राजस्थान में शायद ही कोई ऐसा वीर हो, जिसकी स्मृति में किसी-न किसी कवि द्वारा काव्याञ्जलि अर्पित न की गई हो।

ढिगल साहित्य में आकार की दृष्टि से महाकाव्य समझे जाने वाले अधिकांश ऐतिहासिक प्रबन्धकाव्य यस्तुत चरितकाव्य ही हैं। ये प्रायः रासो, रूपक, विलास, प्रकास वेलि छन्द इत्यादि नामों से मिलते हैं। झूलणा, झमाळ, नोसाणी दूहा आदि छन्द विधेय में प्रणीत ऐतिहासिक चरितकाव्य भी प्रभूत मात्रा में उपलब्ध हैं। ढिगल के अधिकांश ऐतिहासिक चरितकाव्य सण्डकाव्य से साम्य रखने वाले हैं। छन्द सनक ढिगल-काव्यो में प्रारम्भिक मगलाचरण और अन्त में 'कळम छप्पय को छोटकर रोप पूरी रचना प्रायः किसी एक ही छन्द में मिलती है। इस श्रेणी की प्रमुख रचनाओं में 'पाबूजी रो छन्द (मेहा घोठू कृत), देवलजी रो छन्द (सूजा देवा कृत), राउ जइतसी रउ पाघडी छन्द' (रचयिता अज्ञात), 'छन्द राउ जइतसी रउ (सूजा घोठू कृत) इत्यादि विधेय उल्लेखनीय हैं।

छोटे आकार की छन्द-सज्जक रचनाएँ अपेक्षाकृत अधिक मिलती हैं, जो विषय की दृष्टि से स्तोत्र अथवा प्रशस्ति आदि काव्यो की श्रेणी में आती हैं। यथा— 'चाळकनेची रो छन्द (दुरसा आढा कृत), 'रामदेव जी रो छन्द' (जाला कृत), 'भवाजी रो छन्द (कवि नेत कृत), 'रवेची रो छन्द (हमीर रतनू कृत), नाहरस्थान राजमिधोत रो छन्द (माधोदास गाढण कृत) आदि आदि। परवर्ती काल में ऐसी कृतियाँ प्रभूत मात्रा में रची गईं किन्तु उनके शीघ्र छन्द के बहुवचन में मिलते हैं। उत्तर मध्यकाल से लेकर वर्तमान काल तक छन्द-सज्जक ढिगल रचनाओं की धारा सतत रूप में प्रवहमान रही है। परिमाण के साथ वष्य विषयो में भी निरन्तर अभिवृद्धि होती रही। स्तुति प्रशस्ति प्रकृति एवं वणक काव्य के रूप में ढिगल में छन्द शीर्षक से इतनी रचनाएँ मिलती हैं कि उन पर कई शोध ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। उदाहरणार्थ— आवड जी रा छन्द (नंद जी लिडिया) सुरज जी रा छन्द (कानो जी मातीसर), पिछमी पीर रा छन्द (चिमन जी कविया) शभूगर जी रा छन्द (मोड जी आगिया), बभूत सिद्ध रा छन्द (घूड जी मोतीसर), सोला सनी रा छन्द (अनोप जी वीठू), गगा माई रा छन्द (झजलाल कविया) महाराणा अरसी रा छन्द (पाहुडलान आटा), महाराजा मानसिध जी रा छन्द (जगमाल मोतीसर), सोड दोलतसिध रा छन्द (भगवानदान झोबा) परतापसिध ऊदावत रा छन्द (आईदान आढा) नाथूसिध रा छन्द (अलसीदान रतनू), आवू रा छन्द (नवल जी लाळस), राव अमरसिध रो कटारी

रा छन्द (माघोदास नाटक), बीसा छन्द (जुझारदान वेपा), खेजड़ी रा छन्द (सोमदान बारठ), वरसाळ रा छन्द (शक्तिदान कविया) आदि उत्प्रेक्षनीय हैं।

'रणमल्ल छन्द' (श्रीधर व्यास कृत) जसी अपवाद स्वरूप कृतियों भी मिलती हैं, जिनमें अनेक प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है। छन्द मञ्जक ऐतिहासिक खण्डकाव्य में सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ छन्द राठ जइतसी रउ (बीठू सूजा नगराजोत कृत) है। इसमें बीकानेर के राठ जतसी द्वारा बादशाह बाबर के पुत्र कामरान के साथ स 1591 वि, मागशीघ कृष्णा 4 शनिवार के दिन हुए युद्ध में राठोड सेना की विजय का प्रामाणिक और विस्तृत वर्णन है।

'छन्द राठ जइतसी रउ का रचयिता सूजा बीठू गाँव मूजासर (बीकानेर) का निवासी चारण कवि था। चारणों की एक शाखा का नाम बीठू है, जो उसके पूर्वपुरुष बीठू के नाम से प्रचलित हुई। सूजा बीठू के पिता का नाम नगराज था। नगराज का जन्म तो गाँव मूजासर (बीकानेर) में हुआ था किन्तु उन्हीं गाँव कासर (तहसील सरदारशहर, जिला चुरू) जागीर में मिला, जहाँ पर वे रहने लगे और वही सूजा बीठू का जन्म हुआ। सूजा बीठू का बीकानेर के राठ जतसी ने 12 गाँवों की ताजोम के साथ लाखपसाव दिया था। उन गाँवों में पावूसर और खिलेरिया प्रमुख हैं। इस संबंध में यह दोहा प्रचलित है—

जतराव जाण जगत बस बघारण वान।

सूजन दी सी सहस घिर पावूसर घान ॥

उक्त पावूसर गाँव में आज भी मूजावत बीठू चारण रहते हैं और खिलेरिया में भी वे निवास करते हैं। ये दोनों गाँव जिना चुरू में हैं।

सबप्रथम इस ऐतिहासिक खण्डकाव्य को प्रकाश में लाने का श्रेय राजस्थानी के अनन्य प्रेमी इटली निवासी सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ एल पी टसीटोरो (सन् 1887-1919 ई) को है जिसने सन् 1629 की प्राचीन हस्तलिखित प्रति का आधार पर इसे सम्पादित किया था। डा टसीटोरो ने तो दिनांक 15 अक्टूबर 1918 को छन्द राठ जइतसी रउ की भूमिका, परिशिष्ट आदि लिख कर इस तयार कर दिया था किन्तु प्रकाशन उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद सन् 1920 ई में हुआ। इस ग्रन्थ का अग्रजी भाषा में भाषाण युक्त संस्करण बीकानेर त ही कुछ समय पहले प्रकाशित हुआ है। राजस्थानी भाषा और साहित्य के मुख्य विद्वान् श्री मूनचंद प्राणण ने अब पूर्ण मनोयोग से इस ग्रन्थ का सम्पादन कर पूर्ववर्ती संस्करणों से भिन्न संस्कृत मूल वशिष्टग्रन्थों को उजागर किया है। इस ग्रन्थ की विशेषताओं का समिप्त परिचय आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

व्यावस्तु सबप्रथम एक गाथा छन्द में मंगलाचरण के रूप में अनश्वर अक्षर ओकार विद्या की अष्टिष्ठात्री देवी शारदा एवं बुद्धि प्रदायक गणपति की वन्दना करते हुए कवि ने कुछ भूषण राठोडों की कीर्ति उजागर करने का मतव्य प्रकट किया है। इसके पश्चात् छन्द पाषण्डो (पद्धटिका) में मारवाड के प्रसिद्ध शासक राठ बूडाजो (स 1451-1480 वि) के शीघ्रपूर्ण ऐतिहासिक प्रसंगों का समिप्त वर्णन किया गया है। गाँव सालवडी (वर्तमान सालोडी—जिला जोधपुर) के मानाधिकारी के रूप में अपने व्यक्तित्व

को विकसित करते हुए राव सलखा के पौत्र एवं वीरमदेव के पुत्र चूडा ने यवनों को परास्त कर मड़ौर पर अपना अधिकार जमा लिया था। इसके पश्चात् चूडा द्वारा नागौर विजय होइवाना म शासन परिवर्तन भाटी राणगदेव (पूगल) को मारना तथा जांगलू तक छाक जमाते हुए माहिलों, भाटिया एवं जोहियो को नियंत्रित रखने जसी सफलताओं का बणन है। लिजर तों का कुचित होकर चढ़ाई करना और नागौर के निरुद्ध राव चूडा के वीरगति प्राप्त करने तक का उल्लेख है।

राव चूडा के पश्चात् उसने पुत्र राव रणमल्ल (स 1485-1495 वि) के शासन काल की प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त बणन है। उसने अपने शीघ्र से सोजत को सोनगिरों से मुक्त कराया महम्मद को मारकर राणा मोवल (मवाह) की सहायता की चाचा और मेरा का मारकर आह्लाद प्रदेश में धार जमाई तथा राणा कुभा को सिंहासनारूढ़ किया। राणा कुभा ने राव रणमल्ल को घोड़े से मरवा दिया, मानो साक्षात् धम की हत्या कर दी हो— मारियउ रक्षण साख्यात धम्म।

राव रणमल्ल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र राव जोधा (स 1510-1545 वि) मारवाह का शासक बना। वह बल मे भीम और बुद्धि मे सहृदय के समान था। उसने आका और हाजा का हना दुग के निरुद्ध परास्त किया और मेवाह को रौंद कर पुन अपने मड़ौर प्रदेश में लौटा। प्रयाग और गया तीर्थ पर जाकर उराने पितृ-पोषण हेतु तपण एवं पिंडदान किया। पूव दिशा से हाथियों को लेकर तथा पतहपुरी व रणसेत में सारंग खान पठान को मारकर विजय पताका फहराते हुए राव जोधा अपने राज्य में लौटा था।

राव जोधा के दिवंगत होने पर उसका पुत्र बीका और सातल दक्षिणाली वृषभ की तरह गजन करने वाल एक दूसरे से बढ़कर पराक्रमी हुए। राव बीका तो जांगलू प्रदेश में अन्न एवं धत का जनहिताथ पुष्कल प्रयोग करता था। उसकी विजय दुदुभि बजती थी। उसने नरसिंह को मारा देवावर और देवानपुर पर आक्रमण किया नागौर को दावार अग्निग्रीत किया पूगल के राव शेखा को वशीगृह से मुक्त कराया और सवत् 1542 वि के अकाल में अपनी प्रजा का भरण पोषण किया। राव बीका ने दुग का निर्माण करवाया जिम ही शोभा साती द्वीपो तक सुविन्त है।

राव बीका के स्वर्गवामी होने पर उसका पुत्र राव लूणकरण राज्यारूढ़ हुआ जिसने मड़ौर से लेकर मुलतान तक अपनी आन (दुग्राई) फिरवाई। राव लूणकरण के समय देवालियों में नगाह झालर एवं शल की ध्वनि गुजायमान होती थी और धम की ध्वजा फहराती थी। स 1554 वि में अकाल के समय देवालियों में पूजन हेतु प्रसाद तयार करवा कर प्रजा का भरण पोषण किया। मवत् 1570 वि में राव लूणकरण ने मुहम्मदखान का पराजय स्वीकार करवाई और चारण कवियों को दान स्वरूप हाथी भेंट किया। उसने जसलमर एवं नागौर पर चढ़ाई की नारनोल को अधिकृत किया और फीराजली उसके परो आलगा। यत्र मेना से लडता हुआ राव लूणकरण अपने दो पुत्रों— प्रतापसिंह और बरसी सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

राव लूणकरण के पश्चात् उसका पुत्र राव जतसी अग्नि गिन्वा की भाँति सहसा उठ खडा हुआ। उसने डिगते हुए सप्तरूपी आकाश के नीचे मानो यमा दे दिया हो।

महदेव की भाँति मेघावी राव जतसी ने शक्ति की उपासना कर आत्म शक्ति प्राप्त की— 'सत जइतसीह आपा सकसि पइ सेव मनाविय देसपति । राव लूणकरण उस जापलू प्रदेश का स्वामी है, जहाँ की स्त्रियाँ रुपवती-गुणवती तथा पुरुष पराश्रमा होते हैं । यवन रूपी तगक पर राव जतसी रूपी गरुड क्षपट्टा मारता है । बान्शाह कामराँ हाथी के समान है तो जैतसी सिंह रूपी है । कामराँ समुद्र है तो जैतसी अगस्त्य । शत्रु-सेना के रण-वाद्य बजते ही राव जतसी के सैनिक गुड्ढाय कटिबद्ध होने लगे । सवत् 1591, मागशीय कृष्णा 4, गनिवार के दिन कामराँ और राव जतसी की सेनाएँ युद्ध स्थल में भिड़ पड़ीं । राव जतसी राम की भाँति थे, अतः उनके सैनिकों ने राम का जय घोष किया । प्रतिपक्ष में कामराँ के सिपाही भी मुहम्मद का नाम लेने लगे । राव जतसी अपने चुने हुए 108 विशिष्ट वीरों की माला के सुमेरु स्वरूप थे । रणभूमि में ऐसी क्षाकशीक मची, मानो हाथियों के झुण्ड पर शेर टूट पड़े हों । राव जैतसी की ओर से शत्रु दल पर असि धाराएँ ऐंम गिर रही थी, मानो मूसलाधार बरसात हो रही हो । जिस प्रकार राम ने लकाधिपति रावण पर विजय प्राप्त की थी, उसी प्रकार राव जतसी ने भी कामराँ पर विजय प्राप्त की । कामराँ पराजित हो लाहौर की ओर भाग छूटा । राव जतसी की उस महान् विजय के उपलक्ष्य में मधुघरा में उत्सव आयोजित हुए और यावच्चन्द्र दिवाकर कीर्ति अंकित हुई । इसी के साथ 'छन्द राउ जइतसी रउ' की कथावस्तु समाप्त होती है ।

इतिहास की दृष्टि से 'छन्द राउ जतसी रउ' एक विशेष महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है । इसमें मढौर (मारवाड़) के राव चूडाजी से लेकर उसके पुत्र राव रणमहल और पौत्र राव जोधा (जोधपुर के संस्थापक) तक के ऐतिहासिक विवरण के पश्चात् राव जोधा के पुत्र और बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीका, उनके पुत्र लूणकरण और पौत्र जतसी तक का सक्षिप्त एवं प्रामाणिक वर्णन अंकित है । कुल 6 पीढ़ियों के वर्णन में प्रथम तीन पीढ़ी तो जोधपुर की हैं । राव चूडाजी से लेकर राव जोधाजी तक की घटनाएँ मारवाड़ के इतिहास और विभिन्न स्थानों से पृष्ठ एवं प्रमाणित होती हैं । बड़ी घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं और छोटी घटनाएँ नवीन पाठ्य के रूप में महत्त्वपूर्ण हैं ।

जहाँ तक बीकाजी से लेकर उनके पौत्र राव जैतसी तक के इतिवृत्त का प्रश्न है, ऐतिहासिक दृष्टि से काव्य रचना करने वाले समकालीन कवि सूजा धीठू की लेखनी में सन्देह की गुंजाइश कम ही दिखाई देती है । पूरे ग्रन्थ में कहीं पर भी कपोल-कल्पित, अतिरञ्जित अथवा अलौकिक तत्वों का उल्लेख नहीं मिलना, इस कृति की ऐतिहासिक महत्ता का पृष्ठ प्रमाण है । 'छन्द राउ जइतसी रउ' में उल्लिखित अधिकांश घटनाएँ तो इतिहास ग्रन्थों से परिपुष्ट हैं किन्तु कुछ प्रसंग ऐसे हैं जिन पर अभी शोध-वाय होना चाकी है । सब से महत्त्वपूर्ण तो वे ऐतिहासिक तिथियाँ हैं, जो अनात अथवा अल्पनात रहने के कारण आज भी इतिहास जगत् में अनुसंधान का विषय बनी हुई हैं । 'राउ जइतसी रउ छन्द' के निम्नोक्त चार उदाहरण विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं ।

(1) सवत् 1542 वि के अकाल में राव बीका ने अपनी शरणागत प्रजा का दुग निर्माण के निश्चय के साथ धरण-पोषण किया था । यथा—

को विकसित करते हुए राव समझा के पौत्र एव वीरमदेव के पुत्र चूडा ने यवनो को परास्त कर मडौर पर अपना अधिकार जमा लिया था। इसके पश्चात् चूडा द्वारा नागौर विजय होइवाना म शासन-परिवर्तन, भाटी राणगणैव (पूगन) को मारना तथा जांगलू तक घाक जमाते हुए माहिलो, भाटिया एव जोहियो को नियंत्रित रखने जसी सफलताओ का वणन है। खिजर खाँ का कुपित होकर चढाई करना और नागौर के निकट राव चूडा के वीरगति प्राप्त करने तक का उल्लेख है।

राव चूडा के पश्चात् उसने पुत्र राव रणमल्ल (स 1485-1495 वि) के शासन काल की प्रमुख घटनाओं का सन्धिस्त वणन है। उसने अपने शीय स सोजत को सोनगिरो से मुक्त कराया महमद को मारकर राणा मोवल (मवाड) की सहायता की, चाचा और मेरा को मारकर आहाड प्रदेश में घाक जमाई तथा राणा कुभा को सिंहासना रूढ किया। राणा कुभा ने राव रणमल्ल को घोषे स मरवा दिया मानो साक्षात् घम की हत्या कर दी हो—'मारियउ रइण साम्यात घम्म।

राव रणमल्ल की मृत्यु के पश्चात् उमका पुत्र राव जोधा (स 1510-1545 वि) मारवाड का शासक बना। वह बल में भीम और बुद्धि में सहदेव के समान था। उसने आका और हाजा का हमा दुग के निकट परास्त किया और मेवाड को रौद कर पुन अपने मडौर प्रदेश में लौटा। प्रयाग जोर गया तीथ पर जाकर उसने पितृ-पोषण हेतु तपण एव पिंडदान किया। पूव दिना स हाथियो को लेकर तथा पतहपुरी के रणघेत में सारण खान पठान को मारकर विजय पताका फहराते हुए राव जोधा अपने राज्य में लौटा था।

राव जोधा के दिवंगत होने पर उसके पुत्र बीका और सातल सक्तिगाली वृषभ की तरह गजन करने वाक एक दूसरे से बढकर पराक्रमी हुए। राव बीका तो जांगलू प्रदेश में अन्न एव घत का जनहिताथ पुष्कल प्रयोग करता था। उसकी विजय-दुदुभि बजती थी। उसने नरनिह को मारा देरावर जोर देपालपुर पर आक्रमण किया नागौर को दो बार अग्निगृहीत किया पूगल के राव गेखा को बनीगृह से मुक्त कराया और सवत् 1542 वि के अकाल में अपनी प्रजा का भरण पोषण किया। राव बीका ने दुग का निर्माण करवाया जिमका शोभा सातो द्वीपो तक सुविदित है।

राव बीका के स्वगवामी होने पर उमका पुत्र राव लूणकरण राज्यारूढ हुआ, जिसने मडौर से लेकर मुलतान तक अपनी आन (दुहाई) फिरवाई। राव लूणकरण के समय देवालयो में नगाड क्षालर एव शख की ध्वनि गुजायमान होती थी और घम की ध्वजा फहराती थी। स 1554 वि में अकाल क समय देवालया में पूजन हेतु प्रसाद तयार करवा कर प्रजा का भरण पोषण किया। सवत् 1570 वि में राव लूणकरण ने मुहम्मदखान को पराजय स्वीकार करवाई और चारण कवियो को दान-स्वरूप हाथी भेंट किये। उसने जसलमेर एव नागौर पर चढाई की नारनीन को अधिकृत किया और फीरोजखाँ उसके परो आ लगा। यवन सेना से लच्छा हुआ राव लूणकरण अपने दो पुत्रो - प्रतापसिंह और बरसी सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

राव लूणकरण क पश्चात् उसका पुत्र राव जतमी अग्नि शिवा की भाँति सहसा उठ खडा हुआ। उसने डिगते हुए ससार रूपी आकाश के नीचे मानो यभा दे दिया हो।

महत्त्व की भाँति मेघावी राव जतसी ने शक्ति की उपासना कर आत्म शक्ति प्राप्त की— 'सत जइतसीह आपा सकति पइ सेव मनाविय देमपति । राव लूणकरण उस जागलू प्रदेश का स्वामी है, जहाँ की स्त्रियाँ रूपवती गुणवती तथा पुरुष पराक्रमी होते हैं । यवन रूपी तमक पर राव जतसी रूपी गरुड झपट्टा मारता है । बादशाह कामराँ हाथी के समान है तो जतसी सिंह रूपी है । कामराँ समुद्र है तो जतसी अगस्त्य । शत्रु सेना के रण वाद्य बजते ही राव जतसी के सैनिक युद्धाथ कटिबद्ध होने लगे । सवत् 1591, मागशीप कृष्णा 4, रानिवार के दिन कामरा और राव जतसी की सेनाएँ युद्ध स्थल में भिड़ पड़ी । राव जतसी राम की भाँति थे, अतः उनके सैनिकों ने राम का अय घोष किया । प्रतिपक्ष में कामराँ के सिपाही भी मुहम्मद का नाम लेने लगे । राव जतसी अपने चुने हुए 108 विशिष्ट वीरों की माना के मुमेरु स्वरूप थे । रणभूमि में ऐसी हाकथीक मची, मानो हाथियों के झुण्ड पर गेर टूट पड़े हो । राव जतसी की ओर से शत्रु-दल पर अति धाराएँ ऐसे गिर रही थीं, मानो मूसलाधार बरसात हो रही हो । जिस प्रकार राम ने लकाधिपति रावण पर विजय प्राप्त की थी, उसी प्रकार राव जतसी ने भी कामराँ पर विजय प्राप्त की । कामराँ पराजित हो लाहौर की ओर भाग छूटा । राव जतसी की उस महान् विजय के उपलक्ष्य में मरुपरान्त में उत्सव आयोजित हुए और मावकचन्द्र दिवाकर कीर्ति अंकित हुई । इसी के साथ 'छन्द राउ जइतसी रउ' की कथावस्तु समाप्त होती है ।

इतिहास की दृष्टि से 'छन्द राउ जतसी रउ' एक विनोद महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है । इसमें मडौर (मारवाड़) के राव चूडाजी से लेकर उसके पुत्र राव रणमल्ल और पोत्र राव जोधा (जोधपुर के संस्थापक) तक के ऐतिहासिक विवरण के पश्चात् राव जोधा के पुत्र और बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीका, उनके पुत्र लूणकरण और पोत्र जनसी तक का संक्षिप्त एवं प्रामाणिक वर्णन अंकित है । कुल 6 पीढ़ियों के वर्णन में प्रथम तीन पीढ़ी तो जोधपुर की हैं । राव चूडाजी से लेकर राव जोधाजी तक की घटनाएँ मारवाड़ के इतिहास और विभिन्न रुदातों से पुष्ट एवं प्रमाणित होती हैं । बड़ी घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं और छोटी घटनाएँ नवीन पातय के रूप में महत्त्वपूर्ण हैं ।

जहाँ तक बीकाजी से लेकर उनके पोत्र राव जतसी तक के इतिवृत्त का प्रश्न है, ऐतिहासिक दृष्टि से काव्य रचना करने वाले समकालीन कवि सूजा बीठू की लेखनी में सन्देह की गुंजाइश कम ही दिखाई देती है । पूरे ग्रंथ में कहीं पर भी कपोल-कल्पित, अतिरजित अथवा अलौकिक तत्त्वों का उल्लेख नहीं मिलता, इस कृति की ऐतिहासिक महत्ता का पुष्ट प्रमाण है । 'छन्द राउ जइतसी रउ' में उल्लिखित अधिकांश घटनाएँ ही इतिहास ग्रंथों से परिपुष्ट हैं, किन्तु कुछ प्रसंग ऐसे हैं, जिन पर अभी शोध-वाय होना बाकी है । सब से महत्त्वपूर्ण तो वे ऐतिहासिक तिथियाँ हैं जो अज्ञात अथवा अल्पज्ञात रहने के कारण आज भी इतिहास जगत् में अनुसंधान का विषय बनी हुई हैं । 'राउ जइतसी रउ छन्द' के निम्नांकित चार उदाहरण विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं ।

(1) सवत् 1542 वि के अकाल में राव बीका ने अपनी शरणगत प्रजा का दुर्ग निर्माण के निश्चय के साथ भरण-पोषण किया था । यथा—

को विकसित करते हुए राव सलखा के पौत्र एव वीरमदेव के पुत्र चूडा ने यवनों को परास्त कर मडौर पर अपना अधिकार जमा लिया था। इसके पश्चात् चूडा द्वारा नागौर विजय होइवाना म शासन-परिवर्तन, भाटी राणगदेव (पूगत) को मारना तथा जांगलू तक धाक जमाते हुए मोहिलो भाटिया एव जोहियो को नियमित रखने जसी सफलताओं का वणन है। विजय खाँ का कुपित होकर चढाई करना और नागौर के त्रिकट राव चूडा के वीरगति प्राप्त करने तक का उल्लेख है।

राव चडा के पश्चात् उसके पुत्र राव रणमल्ल (स 1485-1495 वि) के शासन काल की प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त वणन है। उसने अपने शीय से सोजत को सोनगिरी में मुक्त कराया महमद को मारकर राणा मोकल (मवाड) की सहायता की चाचा और मेरा को मारकर आह्लाड प्रदेश में धाक जमाई तथा राणा कुभा को सिंहासना रुढ़ किया। राणा कुभा ने राव रणमल्ल को घोखे से मरवा दिया मानो साक्षात् धर्म की हत्या कर दी हो— मारियड रइण सारयात धम्म।

राव रणमल्ल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र राव जोधा (स 1510-1545 वि) मारवाड का शासक बना। वह बल में मीम और बुद्धि में सहदेव के समान था। उसने आका और हाजा का हमा दुग के निकट परास्त किया और मेवाड को रीन कर पुन अपने मडौर प्रदेश में लौटा। प्रयाग और गया तीथ पर जाकर उसने पितृ-पोषण हेतु तपण एव पिंडदान किया। पूव दिगा स हाधियो को लेकर तथा फतहपुरी के रणसेत में सारग खान पठान को मारकर विजय-पताका फहराते हुए राव जोधा अपने राज्य में लौटा था।

राव जोधा के निवगत होने पर उसके पुत्र बीका और सातल दक्षिणाली वृषभ की तरह गजन करने वाल एक दूसरे से बढकर पराक्रमी हुए। राव बीका तो जांगलू प्रदेश में अन्न एव घत का जनहिनाथ पुष्कल प्रयोग करता था। उसकी विजय दुदुभि बजती थी। उसने नरसिंह को मारा देरावर और देवा नपुर पर आक्रमण किया नागौर को दो बार अग्निहृतीत किया पूगल के राव गेवा को बन्गीगृह से मुक्त कराया और सवत् 1542 वि के अकाल में अपनी प्रजा का भरण पोषण किया। राव बीका ने दुग का निर्माण करवाया जिम को शोमा सातो द्वीपो तक सुविश्रित है।

राव बीका का स्वगवासी होने पर उसका पुत्र राव लूनकरण राज्यारूढ हुआ जिसने मडौर से लकर मुलतान तक अपनी आन (दुहाई) फिरवाई। राव लूनकरण के समय देवालयो में नगाड क्षालर एव शल की ध्वनि गुजायमान होती थी और धम की ध्वजा फहराती थी। स 1554 वि में अकाल के समय देवालयो में पूजन हेतु प्रसाद तमार करवा कर प्रजा का भरण पोषण किया। सवत् 1570 वि में राव लूनकरण ने मुहम्मदखान को पराजय स्वीकार करवाई और चारण कविया को दान स्वरूप हाथी भेंट किये। उसने जसलमेर एव नागौर पर चढाई की नारनील को अधिकृत किया और फीरोजखान उसके परो आ लया। यवन सेना से लडता हुआ राव लूनकरण अपने दो पुत्रों— प्रतापसिंह और वरसी सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

राव लूनकरण के पश्चात् उसका पुत्र राव जतसी अग्नि गिगा की भांति सहसा उठ खडा हुआ। उसने डिगते हुए ससार रूपी आकाश के नीचे मानो धमा दे दिया हो।

सहदेव की भाँति मेघाधी राव जतसी ने शक्ति की उपासना कर आत्म शक्ति प्राप्त की— 'सत जटसतीह आपा सबति पद सेव मनाविय देसपति । राव लूणकरण उस जागलू प्रदेश का स्वामी है जहाँ की स्त्रियाँ रूपवती-गुणवती तथा पुरुष पराक्रमी होते हैं । यवन ऋषी लगव पर राव जतसी रूपी गहड़ झपट्टा मारता है । बादशाह कामराँ हाथी के समान है तो जतसी सिंह रूपी है । कामराँ समुद्र है, तो जतसी अगस्त्य । दानु-सेना के रण-वाद्य बजते ही राव जतसी के सैनिक युद्धाय कटिबद्ध होने लगे । सवत् 1591, मागगीप कृष्णा 4, रानिवार के दिन कामराँ और राव जतसी की सेनाएँ युद्ध स्थल में भिड़ पड़ी । राव जतसी राम की भाँति थे, अतः उनके सैनिकों ने राम का जय घोष किया । प्रतिपक्ष में कामराँ के सिपाही भी मुहम्मद का नाम लेने लगे । राव जतसी अपने चुने हुए 108 विशिष्ट वीरों की माला के सुमेरु-स्वरूप थे । रणभूमि में ऐसी पाकशील मची, मानो हाथियों के झुण्ड पर दोर टूट पड़े हों । राव जतसी की ओर से शत्रु दल पर अति धाराएँ ऐम गिर रही थी, मानो मूसलाघार वरसात हो रही हो । जिस प्रकार राम ने लकाधिपति रावण पर विजय प्राप्त की थी, उसी प्रकार राव जतसी ने भी कामराँ पर विजय प्राप्त की । कामराँ पराजित हो लाहौर की ओर भाग छूटा । राव जतसी की उस महान् विजय के उपलक्ष्य में मरघरा में उत्सव आयोजित हुए और यावच्चन्द्र दिवाकर कीर्ति अंकित हुई । इसी के साथ 'छन्द राउ जतसी रउ' की कथावस्तु समाप्त होती है ।

इतिहास की दृष्टि से 'छन्द राउ जतसी रउ' एक विशेष महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है । इसमें महौर (मारवाड़) के राव चूडाजी से लेकर उसके पुत्र राव रणमल्ल और पौत्र राव जोधा (जोधपुर के सम्पापक) तक के ऐतिहासिक विवरण के पश्चात् राव जोधा के पुत्र और बीकानेर राज्य के सम्पापक राव बीका, उनके पुत्र लूणकरण और पौत्र जनसी तक का सक्षिप्त एवं प्रामाणिक वणन अंकित है । कुल 6 पीढ़ियों के वणन में प्रथम तीन पीढ़ी तो जोधपुर की हैं । राव चूडाजी से लेकर राव जोधाजी तक की घटनाएँ मारवाड़ के इतिहास और विभिन्न हयातों से पुष्ट एवं प्रमाणित होती हैं । बड़ी घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं और छोटी घटनाएँ नवीन पात-य के रूप में महत्त्वपूर्ण हैं ।

जहाँ तक बीकाजी से लेकर उनके पौत्र राव जतसी तक के इतिवृत्त का प्रश्न है, ऐतिहासिक दृष्टि में काव्य रचना करने वाले समकालीन कवि सूजा वीठू की लेखनी में सहदेव की गुजाइग बम ही दिखाई देती है । पूरे ग्रन्थ में कहीं पर भी कपोल-कल्पित, अतिरिक्त, अथवा अलौकिक तत्वों का उल्लेख न मिलना, इस कृति की ऐतिहासिक महत्ता का पुष्ट प्रमाण है । 'छन्द राउ जतसी रउ' में उल्लिखित अधिराज घटनाएँ तो इतिहास-ग्रन्थों से परिपुष्ट हैं किन्तु कुछ प्रसंग ऐसे हैं, जिन पर अभी शोध-काय होना बाकी है । मय सं महत्त्वपूर्ण तो वे ऐतिहासिक तिथियाँ हैं जो अज्ञात अथवा अल्पज्ञात रहने के कारण आज भी इतिहास जगत् में अनुसंधान का विषय बनी हुई हैं । 'राउ जतसी रउ छन्द' के निम्नांकित चार उदाहरण विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं ।

(1) सवत् 1542 वि के अकाल में राव बीका न अपनी शरणागत प्रजा का दुग निर्माण के निश्चय के साथ भरण-पोषण किया था । यथा—

छात्रपति उबारिय छत्र छाह । बइताळइ भाढी दीघ बांह ।
वीरइ दुरग कति वीध वत्त । सोभाग दीप जाणइ सपत्त ॥ (49)

इतिहास ग्रंथों और राजस्थानी रचनाओं से यह तो सुस्पष्ट है कि राव बीकाजी ने सबसे प्रथम स 1542 में दुर्ग का निर्माण राती घाटी पर करवाया था और बाद में (स 1545, बकाल सुदी 2 शनिवार के दिन) बीकानेर शहर बसाया था। रहीं बकाल की बात से अधिकांशतः थोड़ा किलो के निर्माण ऐसे ही समय में होते थे। कहावत है—'रत न मिलता रोट राजा र बणता थोट'। इस दृष्टि से उपर्युक्त वयस 1542 में जागलू प्रदेश बकाल की चपट में था, यह नवीन तथ्य इस ग्रंथ से ज्ञात होता है।

(2) सवत् 1554 वि में बकाल की विभीषिका में बीकानेर के राव लूणकरण न देव-पूजाय अन्न के बडाह कर देवानयो में लोगों का भोजन प्रदान किया और उनकी रक्षा की। यथा—

'बउपनउ समीसर करनि चाळि । देवरउ दुनी राखी दुवाळि ॥ (54)

करन राउ वरइ कुसमइ बडाहि । मेदनी उवारी मइल माहि ॥ (55)

उपर्युक्त वयस के परिप्रेक्ष्य में अधिकांश इतिहासकारों द्वारा मान्य बीकानेर के स्थापक राव बीकाजी की निर्माण तिथि की प्रामाणिकता में सन्देह उत्पन्न होता है। आज तक अधिकांश इतिहासकार एक दूसरे की देखा देखी यही लिखते आ रहे हैं कि राव बीकाजी का स्वगवास सवत् 1561 वि आश्विन शुक्ला 3 के दिन हुआ था और उसके पश्चात् राव लूणकरण राजगद्दी पर बठा। इस मत को मानने वाले कविराज क्यामलदास (घोरबिनोद, पृ 480) चतुरक हैमाजूदेव (बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ 42) डा किशोरसिंह बाहस्पत्य (करनी चरित्र, पृ 165) विश्वेश्वरनाथ रेड (मारवाड़ का इतिहास द्वितीय भाग, पृ 682) गौरीशंकर हीराचंद ओझा (बीकानेर राज्य का इतिहास भाग 1, पृ 112) इत्यादि हैं।

दूसरी ओर मुहता नणसा रीरपात (भाग 3 पृ 181) के अनुसार सवत् 1554 में रावजी लूणकरणजी टीक बना। 'तवारीख जसलमेर (सेवक लतमीचंद, स 1948 वि पृ 313) के अनुसार सवत् 1551 में राव बीकाजी का 56 वय की अवस्था में स्थगवास हुआ और राव लूणकरण सवत् स 1551 में पाट विराजे।'

उपर्युक्त मतभेदों के रहते हुए यह कहना कठिन है कि अमुक मत ही पूर्णतः सही है। फिर भी इतना अवश्य है कि उपर्युक्त लम्बी सूची वाले यक्तियों में एक दूसरे की देखा देखी में ही सवत् 1561 लिखा है अतः उसमें सन्देह की गुंजायमान है। दूसरी तरफ कवि सूजा वीठू खुद राव जतमी के समय जीवित था और उसी शताब्दी की घटनाओं के सम्बन्ध में उसके लिखित प्रमाण की काटने का कोई औचित्य या ठोस आधार उपलब्ध नहीं है। यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि छन्द राउ जइतसी रउ के 49 वें छन्द में राव बीकाजी की मृत्यु और उनके पुत्र राव लूणकरण के सिंहासनारूढ़ होने का

स्पष्ट उल्लेख हुआ है। कवि के अनुसार बलवान वृषभ के समान राव बीका तो मृत्यु को प्राप्त हुआ और कुल में सूय की भाँति राव लूणकरण सहसा उन्मि्त हुआ। यथा—

‘वेगहउ साड बीकाउ विघन । कुळ भाण तेवि उदियउ करन । (50)

इस स्पष्ट कथन के दुरंत वाद छंद सख्या 54 में ही मह उल्लेख किया गया है कि सवत् 1554 के अकाल के समय राव लूणकरण ने देवालयों में पूजाथ अन चढ़ा कर गरीब जनता को उदर पूर्ति का साधन उपलब्ध कराया। समकालीन व्यक्ति वे इस बघन को न मानने का कोई युक्तिसंगत कारण इष्टिगत नहीं होता। मेरा अनुमान है कि जिन इतिहासकारों ने राव बीकाजी की मृत्यु तिथि का उल्लेख शिलालेख अथवा हस्त लिखित प्रति में जहाँ कहीं भी पढ़ा होगा, वहाँ उन्होंने राजस्थानी की मुठिया लिपि पर ध्यान नहीं दिया। इस लिपि में 5 और 6 अंकी की आकृति में बहुत ही कम अंतर होता है। सभवत सवत् 1551 को ही 1561 वि समझने की भूल हुई है। प्रसिद्ध कवि दुरसा आढा की मृत्यु का वष क्षमी तब अधिकांश विद्वान् सवत् 1708 अथवा 1712 मानते रहे परंतु इन पंक्तिों के लेखक ने दूरसा आढा के गाँव पाचेटिया में जाकर उनकी छतरी के शिलालेख को शुद्ध रूप में पढ़ा, तब चारत हुआ कि दुरसा आढा की वास्तविक निर्वाण-तिथि है सवत् 1699 वि (शक स 1565), बगाँस शुक्ला सप्तमी, शनिवार (वरदा भाग 34, अंक 2 3)। यही स्थिति राव बीकाजी के स्वगवास और राव लूणकरण के राज्यतिलक-सम्भघो वष के विषय में प्रतीत होती है।

वास्तविकता की अधिक संभावना तो बीठू सूजा कृत छंद में उल्लिखित स 1554 वि ही प्रतीत होती है, क्योंकि ओप्राजी ने बीकाजी के स्वगवास का वष सवत् 1561 मानते हुए भी तिथि आश्विन शुक्ला तृतीया के स्थान पर आपाड शुक्ला पंचमी माना है (बीकानेर राज्य का इतिहास भाग 1 पृ 109)। राव बीकाजी की जन्म तिथि के विषय में भी इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ लोग उनका जन्म स 1495 में मानते हैं और कुछ सवत् 1497 में। हस्तलिखित स्थातों में भी एकरूपता नहीं है। ऐसी स्थिति में इस ओर नये सिरे से अनुसंधान की महती आवश्यकता है।

(3) सवत् 1570 वि में राव लूणकरण ने हाथियों के गले में बघन डाल कर चारण कवियों को रीझ में भेंट किये थे। यथा—

सतरहउ समीसर राइ समथि । हाथि वरीसि गळहृथि हृथि ।

इळ राइ करन वारउ कि इद । गुणियणां प्रहे बाधा गइद ॥ (61)

इस तथ्य की कतिपय इतिहास ग्रंथों में पृष्टि होती है। बीकानेर राज्य का इतिहास (कुंवर कन्हैयाजू देव कृत, पृ 44) के अनुसार सवत् 1570 में बीकानेर का राव लूणकरण ने मेवाड़ के राणा रायमल की बेटी (सागा की बहिन) से विवाह किया था, उस समय बीस हाथी और सौ पाठे चारणों को दान में दिये थे। कविराज रायमल का कृत वीरविनोद (पृ 481) में भी स 1570 फाल्गुण कृष्णा 3 के दिन राव लूणकरण द्वारा चित्तौड़ में विवाहोपरांत इनाम इकराम में बहुत धन लुटाने का उल्लेख हुआ है। अत उपर्युक्त सवत्सर की घटना इतिहास-सम्मत प्रमाणित होती है।

(4) सवत् 1591, मागशीप कृष्णा 4, शनिवार के दिन कामराँ और जतसो की सेनाओं के बीच युद्ध हुआ, जिसमें राव जतसो की विजय हुई थी। कवि सूजा चौदू ने एक गाथा छन्द में इस तिथि का स्पष्ट उल्लेख किया है—

पनर समत थैकानव पवगरि । पुणि मागसिरि प्रथम पति पूवरि ।

हठमल हृदयइ सउं हयियारे । विद्वियउ जइत चउय सिनिवारे ॥ (371)

इस ऐतिहासिक घटना का पूर्व आधुनिक राजस्थान (डॉ रघुबीर सिंह) जैसे इतिहास ग्रंथ में तो उल्लेख भी नहीं हुआ है। कुछ इतिहासकारों ने घटना का उल्लेख तो किया, परन्तु सवत् आदि का पता ही नहीं है जस बीकानेर राज्य का इतिहास (कुवर कन्हैयाल देव कृत)। कुछ इतिहासकारों ने इस घटना को सवत् 1595 में होना लिखा है परन्तु माघ, पक्ष वार आदि का उल्लेख नहीं किया है जैसे श्यामलगास ('वीर विनोद पृ 483), डॉ करणोमिह (बीकानेर राज्य का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृ 40-41) आदि। डा किशोरसिंह बाहस्पत्य ने इस युद्ध को सवत् 1595 के आषाढ़ मास में होना लिखा है (बरनी चरित्र पृ 205) परन्तु इस तिथि का कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है। इस प्रकार अधिकांश इतिहासकारों को इस युद्ध की सही तिथि का पता ही नहीं था।

'छन्द राउ जइतसी रउ के प्रकाशित होने पर कुछ लोगो ने इस प्रामाणिक तिथि का उल्लेख अवश्य किया है। जैसे 'राजस्थान का इतिहास (तिथिग्रन्थ से पृ 19) में श्री सुयबीरसिंह गहलोत ने ईस्वी सन् में उक्त तिथि को स्वीकार किया है—'सन 1534 (अक्टूबर 26) कामरान से बीकानेर के राव जतसिंह का युद्ध हुआ। कामरान मैदान छोड़ कर लाहौर की ओर भाग गया।'

राजस्थान के प्रसिद्ध चारण कवि स्व हिंगलाजदान जी कविया (सेवापुरा जयपुर) ने अपने स्तुति-काव्य महाई महिमा (रचनाकाल स 1988 वि) में महाशक्ति करणीजी की कृपा से राव जतसो की कामराँ पर विजय 'अकाना वामतो गति' के अनुसार सवत् 1591 मागशीप कृष्णा 4 शनिवार को ही माना है। यथा—

(छन्द मोतीदाम)

1 9 15

पृथी ग्रह पन्द्रह साल पैवार ।

बंदी सह चौथ सनीसर वार ।

पडी नव चद चढपा पटियाळ ।

प्रनामत पाव सरयी भुवपाळ ॥

उप्युक्त छन्द में सह' का अर्थ मागशीप और पैवार का अर्थ विक्रम (सवत्) है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर की एक हस्तलिखित रूपात में भी राव लूणकरण की कामराँ पर हुई विजय का वष सवत् 1591 लिखा हुआ है। इस प्रकार इस ऐतिहासिक घटना का प्रामाणिक वष, महीना, पक्ष तिथि और वार सबप्रथम छन्द राउ जइतसी रउ के द्वारा ही प्रकाश में आया है जो बहुत महत्त्वपूर्ण है।

यह उल्लेखनीय है कि सूजा बीठू ने 'छन्द राउ जइतसी रउ' की रचना विशुद्ध ऐतिहासिक उद्देश्य से ही की है। यही कारण है कि उसने कहीं पर भी चारणी देवी करणी जी के दर्शन, आशीर्वाद अथवा अक्षय तीर चलने जसी बातों का उल्लेख नहीं किया है, जबकि करणी जी की स्तुति में रचे गये द्विगल-काव्यो में बीसियों उदाहरण भेरे निजी सग्रह में उपलब्ध हैं, जिनके अनुसार राव जतसी की कामरौ पर विजय केवल करणी जी के दिग्भ्रमत्कार के कारण ही हुई थी। यह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है कि करणी जी का विवाह देपाजी बीठू (गाँव साठीका) के साथ हुआ था और कवि सूजा नगराजोत भी बीठू शाखा का ही चारण था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चारणी महाशक्ति करणीजी के प्रति राव बीका, लूणकरण और जतसी तीनों ही पीढ़ियों के मन में अपार श्रद्धा थी। राव जतसी के युद्ध में जिन 108 योद्धाओं का घोड़े के नाम सहित उल्लेख हुआ है, उनमें पावूपसाव, करणीपसाइ दवीपसाइ सूरजपसाव पाउडपसाव, करणीकुमेर आदि घोड़ों के नाम हैं, जो देवी देवताओं के प्रसाद रूप में मान कर ही रखे गये होंगे। फिर भी युद्ध में विजय का श्रेय देवी-देवता का न देकर शूरवीर सैनिका को देना, निरचय ही कवि के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को प्रमाणित करता है।

डॉ एल पी टसीटोरी ने सूजा बीठू के इन ऐतिहासिक दृष्टिकोण को विशेष रूप से सराहना की थी। प्रस्तुत संस्करण में विद्वान् सम्पादक श्री मूलचंद प्राणेश ने कुछ छंदों का भावार्थ लिखते समय 'वरनि' शब्द का अर्थ करणी जी माना है जो सही प्रतीत नहीं होता। अपभ्रंश की शली में लिखे गये इस अर्थ में राव लूणकरण के लिए ही करत या वरनि शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे—

(i) घुआहर चाडिय वरनि घज्ज । पाळ के सुती वासइ परज्ज ॥ (52)

(ii) जेसाणइ ऊपरि वरनि जाइ । बाजिन लेय नीसाण वाइ ॥ (65)

वस्तुतः राव लूणकरण ने बीकानेर में देवालय पर ध्वजा चढ़ाई थी और जैसलमेर पर चढ़ाई की थी। करणी जी तो स्वयं उस समय विद्यमान थी और वे आवठदेवी की पूजा करती थीं अतः करणी के देहरे पर जीवन-काल में ध्वजा चढ़ाने की बात न तो परम्परानुकूल है और न ही प्रामाणिक। राजस्थान के ऐतिहासिक काव्य प्रणताओं में इतिहास की दृष्टि कितनी प्रसर थी, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 'राव जतसी री पाण्डी छन्द' (रचयिता अज्ञात) सूजा बीठू द्वारा 'छन्द राउ जइतसी रउ' से बड़ी (कुल 485 छंद) रचना है और 'राव जतसी री रासी' (राजस्थान भारत भाग 2, अंक 2, मार्च, 1948) ग्रंथ भी कामरौ पर जतसी की विजय से सम्बन्धित ग्रंथ है, किंतु किसी में भी अलौकिक शक्ति या करणी जी के चमत्कारों का उल्लेख नहीं मिलता। ये तीनों ग्रंथ राव जतसी के समकालीन चारण कवियों की रचनाएँ प्रतीत होती हैं किंतु ऐतिहासिकता की रक्षा के लिए ही ऐसा विशुद्ध रूप उठाने अपनी लेखनी से अक्षित किया।

करणी जी की दिव्य सीलाओं के अर्थ में राव जतसी की कामरौ पर विजय का श्रेय निरसदेह भगवती की अक्षय शक्ति को ही दिया गया है। इस विषय में स्तुति-काव्यों

के कतिपय उद्धरण द्रष्टव्य हैं—

- (1) बाईं रा बाण वहै विरदत । जोवै जुध कोतक ऊभौ जत ॥ (मेहा बीठू)
- (2) बीको घर बीकांण, घणो बीघो घणियाणी ।
कमरा री कध भाग, कियो ऊपर किनियाणी ॥ (गिरधर)
- (3) कमरा दळ ऊपर कोप कियो । देवी राव नै जत सुजस्त दियो ॥ (गगादान)
- (4) जीतामी राव जत मेछ कमरा दळ मार । (कवि हिमता)
- (5) पलायत जत र करण मन पूरणा, दरस अनपूरणा प्रतल दीघो ॥
(कसरजी खिडिया)
- (6) कर जोड जतमी अरज कीन । ओ देस घरा गड तो अधीन ॥
तद सुणत करनला मात तत । सदेह दरस दीनौ सगत ॥ (रामदान लाळस)
- (7) तहें दोठी कमर चखा ताप । ऐ सब बीसहय लड आप ।
हजै जाण असुर भागो अछेह । लूटाय र डेरा कुजस लेह ॥ (पावूदान आशिया)
- (8) कमर कोप कियो जुध करवा लेवा माल खजाना लोड ।
जत पुकार सुणे जद जगदब, मेहा सधू दियो खळ मोड ॥ (मोहणदास कविया)
- (9) जत पुकारे जोगणी करनी ऊपर कर ।
सगत राव सागे हुवा, कर झाल किरम्मर ।
भागी कमरो पातसाह उडियारिण आसुर ॥ (ठा जूझारसिंह मनाणा)
- (10) जत भूप जत री, हार कमरा री होसी ।
मूड पोसी मूडमाळ, जगतचल कोतुक जोसी ॥ (हिगलाजदान कविया)
- (11) जतमाल जीताडण दईता ताडण कानियो पाडण सींह कळा । (जूझारदान देवा)

उपर्युक्त उदाहरणों में वर्णित अलौकिक तत्त्व देवी-स्तुति, भक्ति भावना अथवा काव्य-कला की दृष्टि से उल्लेखनीय होते हुए भी इतिहास की दृष्टि से प्रामाणिक नहीं बहे जा सकते । मेहा बीठू को छोड़कर उद्धृत स्तोत्र काव्य के गेय रचयिता कवि विश्रम की 18वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के मध्य हुए हैं । इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर छंद राउ जइतसी रउ (सूजा बीठू वृत्त) का ऐतिहासिक महत्त्व तो स्वतः सिद्ध है ।

साहित्यिक मूल्यांकन

छंद राउ जइतसी रउ' डिगल क ऐतिहासिक प्रबन्धवाच्यो की प्रमुख विशेषताओं से अभिप्रेरित एक महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है । इसमें इतिहास और काव्य का गणि-वाचन संयोग है । कुल 401 छंदों में सम्पूर्ण होने वाला यह एक उत्कृष्ट कोटि का और काव्य है । इसमें 11 गाथा, 4 दूहा 385 पाद्यदो छंद और अंत में एक छप्पय (बळग) है । डिगल के प्रबन्धवाच्यों में शीगणश के रूप में गाथा और अंत में 'बळग (पूर्णाकृति) क रूप में छप्पय छंद की परम्परा रही है । 'छंद राउ जइतसी रउ' का

रामिक मगलाचरण एक गाथा से हुआ है और बाद में अधिकांश 'पाघड़ी' छंदों का योग हुआ है। कवि के छंद प्रयोग का परिचय आगे प्रस्तुत है।

(1) पाघड़ी वस्तुतः 'पाघड़ी' शब्द संस्कृत के पदटिका का ही तद्भव रूप है। तादाम त्रोटक, पदटिका एवं भुजगप्रयात जग संस्कृत व लोकप्रिय छंद डिगल में तीदाम, त्रोटक, पदरी और भुजगी छंद के नाम से त्व प्रयुक्त हुए हैं। पाघड़ी पदरी) छंद का प्रयोग राजस्थानी कवियों ने वीरता, भक्ति और शृंगार तीनों रसों समान रूप से किया है। 'राव जंतसी री पाघड़ी छंद (रचयिता अनात) के अतिरिक्त अरणी महाशक्ति देवलबाई (जिनका प्रमुख स्थान गाँव सारोडा उमरकोट है) की 'हिमा में रचित देवलजी री छंद (सूजा देया कृत) में प्रारम्भिक चार गाथा और अंतिम छप्पय (बल्लस) का छोड़ कर शेष 84 छंद पदरी हैं। यथा—

आसत्त छत्त बिहूव असूट। बलिहार नाम देवल बूट।

सूजियो कहै आधा सगत्त। गुणवत्त लहै कुण तूज गत्त ॥ (82)

कविराजा करणीदानजी कविया ने सवत् 1787 में जायपुर के महाराजा भद्रसिंहजी द्वारा अहमदाबाद विजय के उपलक्ष्य में प्रणत महान् ग्रंथ सूरज प्रकाश का सारांश 'विरद सिंगार' पदरी छंद में ही रचा था। स्वयं कवि के शब्दों में—

महाराज निवाजस ऊच मन। कवराज रीम कहियो करन।

जप आसिस 'पदरि छंद' जोड। कायम्भ राज नूप जुग करोड ॥ (135)

मान जस मुक्तावली और 'मीम प्रकाश' के रचयिता डिगल कवि रामदान लाळस वृत्त प्रथ 'करनीजी री रूपग' में भी प्रारम्भिक दो गाथा, दो दोहे और अंतिम छप्पय (बल्लस) के अतिरिक्त शेष 176 छंद पदरी हैं। प्रथ-कर्ता के नामोल्लेख सहित निम्न उद्धरण द्रष्टव्य है—

दास कर जोडे रामदान। दिन रात तूज सरण निदान।

आकार तुहिज तू निराकार। पाव कुण नामा तूज पार ॥ (176)

पश्चिमी राजस्थान में हरसूरजी बारठ (गाँव भीमाड) वृत्त रमण-काय हरसूरजी री गादी' बहुत प्रसिद्ध शृंगारिक कृति है। उसमें भी प्रारम्भिक चार दोहों के पश्चात् स्त्री का शिख नख वणन पदरी छंदों में ही अंकित किया है। स्वयं कवि ने शब्द प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत हैं—

(दोहा)

ले सोभा कामण लछण, त्रिया रूप गुण तास।

विध सू घणा बलाणिया, 'पधरी छंद प्रकाश ॥

पदरी छंद में रूप-वर्णन की वानगी—

सोस रा बाळ ऐसा सुचग। भळकियो पीठ बची भुयग।

लेवत सोम ऐसी लिलाट। निकसियो चंद पूनम निराट ॥

राजस्थानी कवियों का प्रिय छंद पदरी वस्तुतः एक मात्रिक छंद है। इसका एक छंद में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ तथा अंत में जगण (151)

स तुकांत होता है। सूजा बीठू ने 'छद राउ जइतसी रउ' मे इसी छद 'पाघडी' (पढरी) का प्रयोग किया है, जो बीरत्व की विभा और 'घणसगार्ड' अल्कार के कारण चित्ताकपक बन गया है। यथा—

राठउडि रोळि रेवत रघ । विच्छूट जाणि सक्ळी वग्घ ।

पतिसाह सेन हुअतइ पगेहि । माघइ असि पाडिय मारअेहि ॥ (375)

(ii) गाहा ङिगल छद शास्त्र मे गाहा क अनेक भेद मिलते हैं। अधिकाश प्रथमका यो मे गाहा का वही रूप मिलता है, जिसका प्रयोग सूजा बीठू ने इस ग्रंथ में किया है। यह चार चरणो का एक छन्द होता है जिसके प्रत्येक चरण मे 16 मात्राएँ और अंत मे तुकांत होता है। यथा—

दूगरसीह देद बुळ दीपक । राखण देस वस छळ रूपक ।

पडि ऊपडियइ पहिलउ पहिला । गइ गजण ऊठिय रिणगहिला ॥ (231)

(iii) डूहा यह मात्रिक छन्द है, जिसके राजस्थानी रीतिशास्त्र मे कई भेद हैं। इसके प्रथम और तृतीय (विषम) चरण मे 13 तथा द्वितीय और चतुर्थ (सम) चरण मे 11 मात्राएँ तथा अंत में गुरु लघु (ऽः) से तुकांत होता है। यथा—

(डूहउ)

कांठळिअे जीते करन, महिपति अमलीमाण ।

सामहिया सळखाहरइ, साम्हा दळ सुरिताण ॥ (75)

अथवा—

किय दूकळ चचळ कळळ गइ त्रांबक्क गढवक ।

दरिस्यउ सरि सुरिताण दळ चळचळ च्यारे चक्क ॥ (185)

(iv) छप्पय इसे पटपदी भी कहते हैं क्योंकि इसके छह चरण होते हैं। ङिगल के छद शास्त्र मे तो छप्पय के भी कई भेद होते हैं किंतु ग्रंथ के अंत मे 'कळस' के रूप मे प्राय शुद्ध छप्पय का ही प्रयोग मिलता है। छप्पय के प्रथम चार चरण रोला (24 मात्राएँ तथा 11 13 पर यति) और अंतिम दो चरण उल्लाला (28 मात्राएँ और 15, 13 पर यति) के होते हैं। चरणांत मे तुकांत जरूरी होता है। छद राउ जइतसी रउ के अंत मे सूजा बीठू ने कळस के रूप मे छप्पय कवित्त का ही प्रयोग किया है। यथा—

(कळस)

पातिसाह परभविय, अम्ब उत्तारि अमगां ।

कह गिहावि गोमट्ट ताडि आठुए तुरगां ।

कहँ समीर मइमस भोमि लोटइ पाइ भरिया ।

कह हठहठइ सुरग अग असमरि ऊतरिया ।

काबिली घट्ट दहवट्ट किय धोकाहर राइ वयर ।

जइतसी प्रवाहउ किय जमा जाम सूरसतिहर जरु । (401)

छप्पय, मनहर, घनाक्षरी आदि कवित्त के ही भेद माने गये हैं, किन्तु डिगल में छप्पय को ही कवित्त कहते हैं। शेष दो भेद तो विगल (ब्रजभाषा) के माने गये हैं। यही कारण है कि कवित्त शीपक से उपलब्ध डिगल-काव्य में केवल छप्पय ही मिलते हैं। राव जतसी (बीकानेर) की कामरौं पर हुई विजय का वणन एक अत्य समकालीन कवि गोरा ने छप्पयो के माध्यम से किया है, जो 'राव जतसी रा कवित्त' नाम से मिलते हैं। सूजा बीठू कृत 'कळस के छप्पय के लक्षणों से पूणत साम्य रखने वाले कवि गोरा कृत उन कवित्तों में से एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है—

अहि मिसि फनु फुकरइ, पवन मिसि सत्रु सधारइ ।
 सीह जेम उट्टव हाकि हनुमत जिम मारइ ।
 वयरी सउँ बळ ग्रहइ, गहवि गढ कोट उपाइइ ।
 जे अयाय अगव, तिनहि सपत ग्रहि ताइइ ।
 कमधराइ लूणत्रन तन, महि मडळि जसु सभळघौ ।
 जइतसी राउ गोरउ भणइ, मुगल तणउ दळ निदळघौ ॥१॥

छन्द राउ जइतसी राउ एक वीररस प्रधान ऐतिहासिक प्रबन्धकाव्य है। इसमें बीकानेर के राव जतसी के कुल गौरव, धरती प्रेम, स्वातंत्र्य भावना, प्रजा वत्सलता, वीरोचित दप धम रक्षा एवं मर्यादा पालन का सम्यक चित्राकन हुआ है। वीरभूमि राजस्थान के राठौड़ों की रणबाँकुरी छवि को उजागर करने के प्रमुख उद्देश्य से इस ऐतिहासिक काव्य का प्रणयन हुआ है। अतः इसमें वीररस का सामोपाग चित्रण तो सहज और स्वाभाविक ही है। एक चारण कवि की ऐतिहासिक डिगल रचना होने के कारण इसमें राजस्थान की शीघ्र प्रधान संस्कृति के अनेक प्रेरक प्रसंग अवित हैं।

बीकानेर के संस्थापक राव बीका के पुत्र राव लूणकरण के राज्य में देव मंदिरो और राजमंदिरों में पवित्रता एवं प्रतिष्ठा का सुखद वातावरण था। इसीलिए कवि ने देव-पूजन, प्रजा-पूषण शीघ्र एवं औदायिक चित्र प्रस्तुत किये हैं। ध्रुव की तरह अटल, गंगा की तरह पवित्र और सूर्य की तरह तेजस्वी राजा के उस राज्य में मंदिरों में आनन्द पूवक पूजा-उपासना होती थी, देवालियों पर धम की ध्वजा फहराती थी, गरीबों के लिए सदावत चलता था और सभी वर्गों के लोग यशोगान करते थे। स्वयं कवि के शब्दों में—

(छन्द पाघडी)

धूषाहर चाडिय करन धज्ज । पाळ वे सुखी वासइ परज्ज ।
 गडियइइ जेम सापर गइइ । फरहरइ डाल भाये पणीद ॥ (52)
 दवळे पडइ वाजइ दुवारि । झालरी सल सुसबद क्षणारि ।
 आदीत जिसा निरमळा अग । गहवत राउ धू जेम गग ॥ (53)
 नवसहसराइ नोसाण नाद । पूजियइ देव आगी प्रसाद ।
 चउपनउ समीसर करनि घाळि । देवरउ दुनो राक्षी दुकाळि । (54)

करन राउ वरइ कुसमइ कडाहि । मेदिनी उवारी मइल माहि ।

कुजर दुवारि दीपइ करन । वाचइ सुजस अडडार व न ॥ (55)

जागलू प्रदेश की महिमा यक्त करता हुआ कवि कहता है कि जहाँ सुंदर, मधुरभाषिणी एवं लाजवती स्त्रियाँ होती हैं तथा रणबीरुरे पुरुष होते हैं उस मरु मेदिनी पर राव जतसो राम की भाँति राज्य करता था । आयाय और अधम के प्रतीक रावण, तथा याय और भीति के प्रतीक राम को उपमाएँ देते हुए कवि न आक्रमणकारी कामरौ और प्रजापालक राव जतसो का रोचक वर्णन किया है । ऊजळा चवर वस्तुतः उज्ज्वल कीर्ति का प्रतीक है और शक्ति उपासना कुलकमागत मर्यादा का लक्षण है । आध्यात्मिक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक सौंदर्य का समाहित स्वरूप निम्नलिखित पक्तियों में द्रष्टव्य है—

ऊजळा चवर ढळकइ अचीह । सिरि छत्र अविचवळ जइत सीह ।

सत जइतसीह आपा सवत्ति । पइ सेव मनाविय दसपत्ति ॥

तारुणी स ऊजळ सेत दत्त । वाणी मुवाणि नइ लाजवत्त ।

सोहिली भोमि थाका सुभट्ट । झूझार दिवइ करिमाळ झट्ट ॥

नेहली नीर भरिया नयहु । वाकउ दुरग पाखी विहहु ।

सारील जइत मुरिताण साज । रामावतार राठउड राज ॥

कवि सूजा बीठू ने अपने ग्रंथ 'राम' नाम का उल्लेख मर्यादा पुरुषोत्तम, ईश्वर और आर्षावस के उपास्य देव के रूप में अत्यंत श्रद्धापूर्वक किया है । जिस समय तुलसी ने रामचरितमानस की रचना की उससे पहले राजस्थान में मेहा रामायण और रामरासो (माघोदास दधवाडिया) जैसे राम भक्ति के ग्रंथ रचे जा चुके थे, अतः राम नाम के प्रति कवि की अनन्य आस्था उसी पुनीत परम्परा का प्रतिफल थी । राजस्थान की लोक संस्कृति में राम का नाम एक महामन्त्र महीपति एवं चित्त की वितामणि के रूप में मान्य है । यही कारण है कि कवि सूजा बीठू ने राव जतसो और कामरौ के मध्य हुए युद्ध में योद्धाओं के मुख से हरहर महादेव के स्थान पर राम नाम का उच्चारण करवाया है । कवि की दृष्टि में राम न केवल मर्यादापक्षक बल्कि विजय के प्रतीक भी हैं । ये उदाहरण कितने सुंदर हैं—

1 भाषी करन साऊ सनाम । रउद्र ढळ पइठे कहि राम राम । (84)

2 रामण मुगल राठ जइत राम । सपरइ दइत हुइसी सप्राम । (361)

3 आरभ राम जइतसी अत्ति । आवियउ नीर सिरि आघरत्ति । (372)

4 जइ राम जपिय हिंदू जणहि । घातिया ताम घोटा घणेहि । (374)

5 श्री राम जइत सारे निमक । लोहडे लसवकर लियइ लक । (396)

राम बीरकाव्य में युद्ध का सजीव चित्रण तो देखते ही बनता है । युद्ध वर्णन के साथ साथ प्रयाण अथवा एव अश्वारोहियों के नाम, रण वाद्य तथा युद्ध की शाकंतीक के

उपमा उत्प्रेक्षा, रूपक आदि के माध्यम से हृदयहारी चित्र अंकित किये हैं। राव जतसी के चुने हुए योद्धाओं के लिये जो उत्तम नरल के घोड थे, उनका नाम इस प्रकार है—

गगाजळ सिंगार घाट, पानूपसाइ रवतपसाइ पचकल्याण, मोर करनीपसाइ, नवलता, भँवर, गुणसागर, नयणमुख, मेघनाद, देवीपसाइ, करणीकुमार विसनपसाउ, सूरिजपसाउ, कौडीधज, हस दलियो फूलमाळ चाउडपसाउ गुरडियो काळापहाड, माणिक, कबूतर, कबलियो, मिथली झूठियो, मुगटचाळ वताळ, सभेचो आदि आदि।

इन घोडो पर आरूढ योद्धाओं के नाम इस प्रकार हैं—तेजसी रतनसी रामडो, नेतसी, साकरसी, सोडा वीरमदेव, नखवीर नतलो रतनमी सीमलो अमरा मुहता सदारण, घनराज, राम पडिहार ऊगो मेघराज, खडेचा नगराज राभमल, विसन, मांडण, वरजाग, भीदडा रणवीर, मांडण पडिहार, डूगर, नरसिंह इत्या गागा केल्हण, वणवीर आदि आदि।

रण क्षेत्र में प्रविष्ट होते समय मरण को वरण करने का निश्चय करने वाले योद्धा स्नान ध्यान कर गल में तुलसी की पवित्र माला धारण कर राम नाम का उच्चारण करते थे। दिग्गज के वीरकाव्यो की इस परम्परा को क्षणक यत्न तत्र 'छाद राउ जइतसी रउ' में भी दिखाई देती है। यथा—

(1) सनान करे साऊ सकार। होडोळिय तुसो कठि हार। (171)

(2) साथो करन साऊ सनाम। रउद्र दळ पइठ कहि राम राम। (84)

यह विशेषता दोना ही पक्षो में नजर आती है। युद्ध के ताडव नृत्य की विभीषिका प्रकट होते समय मुसलमान मुहम्मद को याद करते और हिंदू राम का। कवि ने ऐसे कई चित्र अंकित किये हैं। एक उदाहरण देखिए—

मुहम्मद नाम जपिय मुहाह। सग गहि ऊठिया मोर साह। (373)

जइ राम जपिय हिंदू जणहि। घातिया ताम घोडा घणेहि। (374)

ऐसे पराक्रमी योद्धा जब रणभूमि में रक्त रजित हो जाते तो ऐसे दिखाई देते मानो नाथों ने अपने शरीर पर गेरुए वस्त्र धारण किए हों। यथा—

विडिवा नर हुआ अउर वान। कया किरि पहिरी मुद्राकानि। (367)

कवि की शक्ति में राव जतसी का व्यक्तित्व इसलिए बदनीय एवं वरेण्य है कि उसने शात्रु घम का पालन करते हुए रणांगण में प्रवेश किया था। राव जतमी युद्धाभ कटिवद्ध हो ज्यों ही अर्धवारूढ हुआ तो कवि ने उम गहडारूढ हुए विष्णु में उपमित किया। कामरा उदधि (समुद्र) है, ता जतसी अगस्त, कामरा तपत्र है तो जतमी गरूड, कामरा रावण है तो जतमी राम। इस प्रकार की थूथ उपमाएँ देते समय कवि क श दो में उसका हृदय योत्ता है। जम—

पउडाहर चडियउ चत्रवत्ति। परमेगर जाणे परपत्ति। (356)

सुडवां तखिषा सिरि पाण तप्य। पइ पइन गहड दसी झटप्य। (360)

रामण मुगुल्ल राउ जइत राम । सघरइ दइत हुइसी संप्राम ।

असपत्ति उअह जइतउ अगतिय । सोखसी सत्र वरिमाळ सतिय । (361)

राव जतसी को ज्योही कामरौ की ओर से धमकी भरी चुनौती मिली तो राठौड़ वीरो के हृदय में क्रोधाग्नि की लपटें ऐसे उठने लगी, मानो अग्नि में घृत सिंचित किया हो। वे शूरवीर इस प्रकार चल पड़े मानो शृंखला से छूटे हुए शेर हो। हाथियों के झुण्ड पर जिस प्रकार शार्दूल झपटता है उसी प्रकार राव जतसी कामरौ की सना पर टूट पड़े। ऐसे ओजस्वी एवं रोमांचक चित्र प्रस्तुत करते हुए कवि सूजा बीठू ने अपने कल्पना कौशल को प्रमाणित किया है। निम्नलिखित उद्धरण अवलोकनीय हैं—

बीकाहर राजा अे बखान । जाळोवळि सीतउ घित्त जाण । (189)

खाफरा जइत वाहइ खडग्ग । वासदे जाण व ने विलग्ग ।

ळतरा सेनि जत्तउ अभीह । सीघरे पईठउ जाणि सीह । (381)

युद्ध वणन में वर्षा का रूपक कवि की प्रतिभा का पुष्ट प्रमाण है। युद्ध के डोल भेय गजन है तनवारो की चमक बिजलियाँ हैं असिधारा रूपी जलधारा बरस रही है जिसे यवन दल सह नहीं सके। स्वयं कवि के शब्दों में—

घडहडइ डोल घूजइ धरति । पडियाळगि वरसइ खेडपति ।

बीकाहर राजा इद घग्गि । खाफरा सिरे खिविया खडग्गि । (389)

पतिसाह फउज फूटति पाळि । ब्रहमड जइत गाजइ विचाळि ।

अम्बहर जइत वरसइ अवार । घुडकिया मोर मुहि खग्ग धार । (390)

सार जळ मेळ नह सहइ सक्कि । करिमाळ काह पडियउ कटक्कि ।

धूधहर वरसता घन्न घन्न । गुरिजा निहाइ वाजइ गिगन्न । (391)

कला पक्ष

भाव पक्ष के साथ कला पक्ष का सुन्दर समन्वय इस ग्रंथ की प्रमुख विशेषता है। विविध अलंकारों का यथास्थान प्रयोग करते हुए कवि ने राजस्थानी के लोकप्रिय एवं मौलिक शैलिकार वणसगाई का आद्योपात सफल निर्वाह किया है। वणसगाई के प्रयोग से नाद सौन्दर्य की वृद्धि के साथ ही काव्य दोषों का स्वतन्त्र निवारण हो जाता है, इसीलिए इसके निर्वाह बिना कवि कम अगूरा ही समझा जाता है। वणसगाई के प्रयोग से निश्चय ही काव्य में रस पोषण होता है किन्तु धीरे रस की अग्नि में दोष स्वतन्त्र मिट जाते हैं। अतः वहाँ इसकी अनिवायता नहीं रहती। महाकवि सूर्यमल्ल के शब्दों में—

वणसगाई वाळिया पेखीज रस पोस ।

धीर हुतासण वोळ में, दीस हेक न दोस ॥

कविवर सूजा बीठू की यह विशेषता है कि उसने 'छन्द राउ जइतसी रउ जसे धीरकाय म भी आद्योपात वणसगाई का निर्वाह किया है। वणसगाई के प्रायः सभी भेद इस काव्य में मिल जाते हैं। निम्नांकित उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

(1) आदिमेल छन्द में प्रत्येक चरण के आद्य और अन्त्य गणों के प्रथमाक्षर समान होने से आदिमेल वणसगार्ई कहनाती है। इसे उत्तम वणसगार्ई भी कहते हैं। काव्य में अधिकांशत इसका यही रूप मिलता है।

उदाहरण — देवळे पढइ वाजइ दुवारि । क्षानरी सल सुसवद झगारि ।

आदीत जिता निरमळा अग । गहवन्त राउ धू जेम गग । (53)

नवसहस राइ नीमाण नाद । पूजिमइ देव आगी प्रसात् ।

चउपनउ समीसर करनि चाळ । देवरउ दुनी राखी दुकाळ । (54)

(2) मध्यमेल जब प्रथम शब्द के आदि अक्षर की आवृत्ति चरण के अंतिम शब्द के मध्य में हो तो मध्य मेल वणसगार्ई कहलाती है। जस—

(i) नदि जगउँ उठीसइ जगप्राप । (129) (ii) चारुँहपसाउ ताजी सचेउ । (299)

(iii) विडियउ जइत चउयि सिनिवारे (371) (iv) सारे मुगुल हुअइ वि बिसुद्ध (386)

(3) अन्तमेल जब प्रथम शब्द के आदि अक्षर की आवृत्ति चरणान्त शब्द के अन्त में हो तो अन्तमेल वणसगार्ई कहलाती है। यथा—

(i) मारियउ रइण साह्यात धम्म । (24) (ii) तारुणी स ऊजळ सेत दत । (100)

(iii) पह जइत गरुड देसी मडप्प । (360)

(iv) रउद्र गति हउँदि भरहरी भेरि । (363)

(4) अरधमेल जहाँ आधे चरण में ही वणसगार्ई कर दी जाती है, अर्थात् चरण की दो भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग में वणसगार्ई की जाए, वहाँ अरधमेल वणसगार्ई होती है। इसे 'अक्षरोट' भी कहा जाता है। जसे—

(i) जीपिवा जग आरुहि अभग । (369) (ii) ठणोळि डल्ल मारिय मुगल्ल ।

रळनळइ रत्त सोषइ सपत्त । समळई सत्त विसयरइ वत्त । (393)

रठवठइ रुठ साडे विसुठ । ताजियां तुठ पडिया प्रचठ । (395)

वणसगार्ई के अतिरिक्त वृत्त्यनुप्रास यमक पुनरुक्ति प्रकाश आदि शब्दालंकारों का प्रयोग इस षय में प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। वस्तुतः अलंकारों के प्रयोग से कवि की उक्ति में यह शक्ति आ जाती है, जिससे पाठक या श्रोता सहज ही उस ओर आकृष्ट हो जाता है। इसीलिए काव्य को भूषित करने वाले उपकरणों को ही अलंकार कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में रीतिकाल के प्रादुर्भाव से कई प्रतापियों पूव रचे गये प्राचीन राजस्थाना के ऐतिहासिक वीरकाव्यों में अलंकरण प्रवृत्ति के पुष्ट प्रमाण मिलते हैं। 'रणमल्ल छन्द (धीधर व्यास कृत) की तरह छन्द राउ जइतमी रउ (मूजा बीठ कृत) में भी वृत्त्यनुप्रास के पुष्कल एवं प्रशस्त प्रयोग हैं। कतिपय उदाहरण अबलोकनीय हैं—

वृत्त्यनुप्रास—एक ही वण की अनेक बार आवृत्ति होने पर वृत्त्यनुप्रास होता है।

यथा— 1 आसउ आरुहियउ अधिक आहि (272)

2 कुरुनेउ कीष बळहग करेय (86)

- 3 सप्तशतक योगि सङ्गीत सन्देश (154) 4 गडदनी गोल्ल गीजा गिरिट्ट (146)
 5 चळवळिय चक्रवद् व्यागि चन् (160) 6 माकन्द मुक्ता मुडा मुगल्ल (148)
 7 राठउडि रोळि रेन त रम्य (375) 8 वेढता विलम्बद् वात वार (392)
 9 सप्रही गारि माभरि मवेय (139) 10 समसेर साहि सुरिताण साण (5)

यमक जहाँ एक गण एक स अधिक बार प्रयुक्त हो और अथ प्रत्येक बार भिन्न हो वहाँ यमक अलंकार होता है। यथा—

- 1 हम मइ हम गह जिमउ हस (327) 2 भारत्य करेवा भीम भीम (251)
 3 सीहूँ चईनळ रतन सीहूँ (236)

पुनरुक्ति प्रकाश जहाँ वाक्य की सौ श्य वृद्धि के लिए एक ही शब्द एक ही अर्थ में पुनरुक्ति किया जाय वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है यथा—

- 1 घूषहर वरमता घन घन (391) 2 रउद्र दळ पइठ केहि राम राम (84)

इसी प्रकार अर्थान्तरो म उपमा उत्प्रेक्षा रूपक आदि का प्रयोग छन्द राउ जन्तमी रउ म अनक स्वानो पर हुआ है किन्तु ये कही भी भार स्वरूप प्रतीत नहीं होते। वस्तुतः ये अलंकार रम क साधक हैं न कि बाधक। उदाहरणाय—

उपमा जहाँ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के समान कहा जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है। यथा—

- 1 डगरसी देव बुळ तीपक (231) 2 दळि दाणवि जइत सरूप दीठ (379)
 3 दोपमा जसि आपमा देस (324)

उत्प्रेक्षा जब एक पदार्थ को दूसरा पदार्थ मान लिया जाए, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। एक वस्तु में दूसरी वस्तु की कल्पना अथवा संभावना के लिए 'मानो, जाना, जैसे' ज्यो आदि प्राचक शब्दों का प्रयोग होता है यथा—

- 1 चउताहर चडियउ चत्रउत्ति परमेसर जाण पखपत्ति (356)
 2 वाकाहर राजा अ प्रमाण जाळोवळि मीनउ घुत्त जाण (189)
 3 उनग मन जन्तउ जवोहूँ सीधर पर्ठउ जाणि सीहूँ (381)
 4 राठउडि राळि रव न रम्य विच्छूँ जाणि सकळी वर्य (375)

रूपक—रूपक का मतलब ही रूप ग्रहण करना है अतः इस अलंकार में 'प्रस्तुत' (उपमेय) अप्रस्तुत (उपमान) का रूप ग्रहण कर लेता है। उदाहरण—

- (1) अम्बहर ज त वरमइ जवार घुडरिया मोर मृहूँ खगधार (390)
 (2) तुम्का तखिउक गिरि पाण तप्य पहूँ जइत गण्ड देसी झडप (360)

उपयुक्त सभी अलंकारों के उदाहरणों में वणसगाई का पूण निर्वाह सोने में सुगंध जमा प्रतीत होता है। वस्तुतः भाव का य की आत्मा भाषा शरीर अलंकार वस्त्राभूषण और छ दाँत उसका निर्माण का ढाँचा होते हैं।

छन्द राउ जन्तमी रउ एन वीररम प्रधान ऐतिहासिक का य है, जिसमें मुख्य रस वीर है और सहयोगी रसों के रूप में रोद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत आदि की यथा

स्थान सम्यक् अभिव्यजना हुई है। घोररस की विभा तो आघोपात आलोकित होती है, जिसके उदाहरण पीछे विवेचन में दिये जा चुके हैं। यहाँ रसो के उदाहरण की बानगी मात्र प्रस्तुत है—

(1) घोररस—डिगल साहित्य में 'उत्तम प्रकृतिवीर' के अनुसार वीर रस को सर्वश्रेष्ठ रस माना गया है। इसका स्थायी भाव उत्साह होता है। इसमें आनन्दन शत्रु, उद्दीपन शत्रु का पराक्रम या रणवाद्य अनुभाव दपयुक्त वाणी या शस्त्र संचालन और संचारी भाव हृष गव उग्रता घति आदि होते हैं। यथा—

(1) सुरिताण आठ सामहइ सलि (165)

(2) काघल्लहरउ कळहुण करेय, वयरियां घडा आयउ वहेय (172)

(2) रौद्र रस—रौद्र रस का स्थायी भाव शोध होता है। इसके अनुभाव ओखें लाल होता शत्रु को ललकारना आदि होते हैं। उदाहरण—

(1) बीकहर राउ सांभळि वचन रीसाइ किया राता रतन (188)

(2) भूझार झडोलउ सीस झाडि, बोत्रियउ घाल फाडी बराडि (165)

भयानक रस—इसका स्थायी भाव भय है, जो किसी भयकर वस्तु बलवान शत्रु आदि को देखकर हो जाता है। यथा—

(1) दळ सुरिताण जाण डूगरि दव कम्पी घरा हुई प्रज सबक्रव (186)

(2) हलहलिय देस हइवइ हुवासि तड वाग पडिया लोक घासि (182)

(3) फडपडइ नाग फाट फुणाळ (201)

घोभंरस रस—इसका स्थायी भाव जुगुप्सा (घणा) है जो घृणा की वस्तु रक्त, मांस दृष्टी आदि के दृश्य से उत्पन्न होता है। उदाहरण—

(1) रळतळइ रत्त सोलइ सपत्त (393)

(2) रडवडइ वड खाडे विखण्ड ताजिया तुड पडिया प्रचण्ड (395)

भाषा शैली की दृष्टि से छंद राउ जइतसी रउ' सोनहवी गतादी की डिगल भाषा का उत्कृष्ट काय प्रय है। इसमें 'स, ल आदि अक्षरों का विशेष प्रयोग हुआ है। अपभ्रंश की शैली द्वित्राक्षर स्वर यजन विकार ध्व यात्मक शब्द आदि के साथ ही प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी भाषा की प्रमुख व्याकरणिक विशेषताएँ मिलती हैं। कहीं कहीं महावती—मुहावरो का प्रयोग भी हुआ है। जैसे पिडतड ससारि दे आम थभ (94) इत्यादि। कवि की बहुलता के प्रमाण स्वरूप इस ग्रंथ में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव देशज और विदेशी शब्दों के निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

तत्सम—घरा अग नर अत असुर, देव, सग्राम, गुण जग नाथ पिण्ड, छंद, प्रचण्ड तुरग, समीर कुजर, नाद।

तद्भव—मेछ अलि जेठि रामण, लूणउ माण हत्य सामि, अत्य जेम फणीद सबइ भोपमा, पायाळ भोमि खिति मेड, खट चक्रवइ नागउर परिगह, जोध, आदीत, सायर, सेत, देवरउ, सेत, साख्यात।

वेशज—रडवडड, रळतळड, हडहडड, ढडोळ, गडवक, घळहळ, हुडिय ।

अरबी फारसी—बाबरी, मीर, ईब्राहिम, मुहमद, खान, असमान बहलोल, खाफरा, पतिसाह मुगल्ल बगतरा ।

समग्र रूप में यही उल्लेख करना समीचीन होगा कि 'छंद राउ जइतसी रउ (बीठू सूजइ रउ कहियउ) चारण शली में रचित एक वीरकाव्य है जिसमें डिंगल के ऐतिहासिक प्रबंध काव्यों की प्रमुख विशेषताएँ विद्यमान हैं। चरितनायक का वण वणन योद्धाओं का वणन अश्व वणन, युद्ध-वणन, अलकारों का महज प्रयोग, आद्योपांत वणसगाई का निर्वाह पंघडी (पद्धटिका) छंद की प्रधानता, मरमापा की व्याकरणिक विशेषताएँ, सरस भावाभिव्यंजना, क्षात्रवट की गौरवमयी झलक एवं इतिहास और काव्य के सम्बन्ध का उत्कृष्ट उदाहरण इस ग्रंथ में दिखाई देता है।

ऐतिहासिक महत्त्व के कतिपय नवीन तथ्यों का उल्लेख इस ग्रंथ में मिलता है, जिन पर अनुसंधान की महती आवश्यकता है। काव्य सौष्ठव ऐतिहासिक महत्त्व एवं सांस्कृतिक बभ्रव के अनेक पक्ष इस वीरकाव्य में उजागर हुए हैं जो मरमापा महाणव से निस्सरित अनमोल रत्नों की भाँति साहित्य-जगत् में अपनी आभा को आलोकित करते रहेंगे।

राजस्थानी साहित्य के मूढय विद्वान् श्री मूलचन्द्र प्राणेश द्वारा सम्पादित 'छंद राउ जइतसी रउ (बीठू सूजइ रउ कहियउ) के प्रकाशन का निणय लेकर भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर ने बहुत ही शुभ कार्य किया है। इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का सम्यक् सम्पादन करने के लिए विद्वान् सम्पादक बघाई के पात्र हैं। प्राचीन काव्य ग्रंथों की युक्तियुक्त एवं प्रामाणिक टीका करने वाले विद्वान् अब विरले ही मिलते हैं। इस ग्रंथ के ज्ञान्य भावाथ के सम्बन्ध में कहीं-कहीं विद्वानों में मतभेद हो सकता है और वह स्वाभाविक एवं शुभकर होता है।

अंत में शोध प्रतिष्ठान के क्रमशः मंत्री तथा निदेशक व उपनिदेशक श्री मूलचन्द्र पारीक श्री सत्यनारायण पारीक एवं श्री रामनिवास शर्मा के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की प्रस्तावना लिखने का मुझे सुअवसर प्रदान किया। राजस्थानी के मनीषी डॉ. मनोहर शर्मा के प्रति भी मैं अपना प्रणति भाव व्यक्त करता हूँ जिनकी प्रेरणा प्राचीन साहित्य के अनुशीलन में मुझ निरंतर अग्रसर करती रही है।

आशा है राजस्थानी साहित्य के अध्येताओं और गोष्ठाधिया के लिए यह ग्रंथ उपयोगी सिद्ध होगा।

'कविद्या निवास

पोलो-2 जोधपुर (राज)

श्री करणी माता जयती स 2048 वि

दि 15 अक्टूबर, 1991

डा. शक्तिदान कविद्या

सह आचार्य

राजस्थानी विभाग,

जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

छन्द राउ जइतसी रउ
वीठू सूजइ रउ कहियउ

मूल पाठ
हिन्दी-भावार्थ एव
विशेष-शब्द चर्चा

अथ छन्द राउ जइतसी रउ

वीठू सूजइ रउ कहियउ

॥ गाहा ॥

अउङ्कार अनाहत अक्षर, सिद्धि बुद्धि दें सारद गुणेशर ।
मंडलीका मोटा कुळि मउडां, रसणि मुवाणि श्रीति राठउडां ॥1॥

आकार कभी नहीं मरत होन वाला अक्षर है । हे मा शारदा ! तू मुझे सद्बुद्धि
और हे भगवान गणेश ! तू सिद्धि प्रदान कर ताकि बहुत बड़े मंडलीक तथा वग
गिरोमणि राठीडा की बीति अपनी जिह्वा से अच्छी तरह बणन कर सकू ॥1॥

॥ छन्द पाघडी ॥

राठउड उदियउ चउँड राउ वेगडइ साड वीरम वियाउ ।
साळयडी थाणउ दे सघीर, हठमल्ल राउ थाणे हमीर ॥2॥

राठीडो म राव चूडा प्रकट हुआ । वह बलशाली वधमक समान अतुल बल वाला
था, मानो वह द्वितीय वीरम ही हो । उसने सालवडो म अपना धाना स्थापित किया
तथा वह स्वयं धान म अमीरो की तरह रहने लगा ॥2॥

चउँट राउ दिय ऊधूळ चाउ, राउत आपहे आप राउ ।
सोहिया प्रवाडा सिद्ध सीस, जम्बुअह दीप जग्गी जगोस ॥3॥

राव चूडा अत्यंत उदार हृदय वाला था । वह स्वयं ही रावत और स्वयं ही
राव था । उसने जा सिंह की गिकार का सुयश अर्जित किया, उसम ममप्र जम्बुद्वीप मे
उसकी जानन की इच्छा जाणून हुई ॥3॥

सळराहर राउ सिरि वधो सेस, दळपति हूअउ मिरि दसां देस ।
मँटावर लियउ मल्लेछ मारि, विह्वारि सत्र मिरियां वहारि ॥4॥

राव सलमा के वशत्र राव चूडा की कीर्ति म अभिरुद्धि हुई । वह दसो देसा का
सारांनी बन गया । उसने यचना का पराजित करके मडावर को हस्तगत कर लिया तथा
अपन यवन शत्रुआ को मार-मार कर भयभीत कर दिया ॥4॥

माळिअे वईठउ बांधमल्ल, मळगहर राउ गुरिताण सल्ल ।
आपणी राद फेराइ आण, समसेर साहि सुरिताण साण ॥5॥

राव मन्गा का वशत्र राव चूडा बाग्गाहो के लिए शल्य-स्वरूप एक अतुल
बलशाली था । वह अपन महता म बठा । उसने अपन हाथा म तलवार धारण कर,
बाग्गाहो के समान अपनी इच्छत बढ़ा कर प्रणेण म स्वयं की शासनाना (आण)
प्रचारित की ॥5॥

हिंदुराइ जीपिय कोट हेळ, वाधियउ जेम सामद्र बळ ।

साथा ब्रहास अति अस्सहास, आसथाम हरि पूगो सुभास ॥6॥

हिंदूराव चूडा ने आनन पानन म दुग जीत लिये । वह समुद्र की उत्ताल तरंगों के समान बढ़ा । उसकी सेना म अतिचपल अश्व थे । आगावित राव की मगवान ने आशा परिपूण की । (यदि पाठ 'आसथान हरि है तो अथ होना 'राव आस्थान के वशज राव चूडा की आशा फलीभूत हुई) ॥6॥

चउँड रा'उ सेन चतुरङ्ग चाल, मारग महाजन लिया माल ।

घर लई मडोवर घणी घाइ, राजवी जेम चाउँड राइ ॥7॥

राव चूडा की चतुरगिणी सेना चलती थी । उसने माग पर चलते हुए महाजनो से माल असबाब प्राप्त किया । राजविद्यो की तरह मडोवर के अधिपति राव चूडा ने आक्रमण करके आस पास की भूमि पर कब्जा कर लिया ॥7॥

पह भलइ लियउ नागउर प्राणि, नवसहस घणी रुडतइ निसाणि ।

डिडवाणउ पालटि घाइ दाइ, रइवास लीघ कासिलइ राइ ॥8॥

राठोडा के स्वामी राव चूडा एक अच्छे शासक थे । उन्होंने नगाडो पर डकक देकर नागौर को जीत लिया तथा अपने प्रहारो से डीडवाण का शासन बल दिया । राव चूडा ने उनका घोरो को भी अपने कालू म ले लिया ॥8॥

छापरउ वियउ छागाँ छयाँह, बळियण्ड राइ फरि फेरि वाँह ।

चउँड रा'उ चडिय मोहिल चीति, राहाचरक्क देसाळि रीति ॥9॥

शक्तिशाली राव चूडा ने अपने हाथो से शस्त्र चलाकर छापर व शासक की सेना को तितर बितर कर दिया । उनके चित्त म मोहिन चढ गये । उन्हें युद्ध की रीति प्रियाई ॥9॥

धामालिय जोइया घाइ घाइ राणिगदे मारिय चउँड राइ ।

चउँड राइ चर्र फरियइ चड्ढि, दारणी देस लीघइ दुरङ्गि ॥10॥

राव चूडा ने राणिगडे का मार गिराया तथा जाहिया को शस्त्र प्रहारों से काट डाला । उसने अपना शासन चक्र इम प्रकार चलाया जिससे अनेक राज्य प्रदेशो के बिलो को हस्तगत कर लिया ॥10॥

चउँड राइ उग्राहइ च्यारि चक्क, कोपिया साह मेल्हइ वटक्क ।

खीजियउ खिदिरिखा हत्य खाइ, राहाळइ उपरि चउँड राइ ॥12॥

राव चूडा चारो ओर म द्र य उगाहने लगा । इससे यवन शासक सेना इकट्ठी करने नग । यवन शासक खीदिरिखा नाधित होकर राव चूडा से शत्रुता रखने लगा तथा उसने राव चूडा पर आक्रमण मी कर दिया ॥11॥

मुलित्ताण तणइ दीवान माहि, परठवियउ वीडउ पातिसाहि ।
साखुले अनइ भाटी सनाहि, विहुँ वीडउ जालिय ऊभि बाहि ॥12॥

मुल्तान के बादशाह ने अपने दीवान में बीड़ा रखा । इस बीड़े की साखला एवं भाटी सरदारों ने सुसज्जित हाकर तयारी के साथ ग्रहण किया ॥12॥

माड रइ राइ मुहि मूछ मोडि, वेल्हणि कटक्क ताणिया कोडि ।
काळइ कलूळि जागळू काजि, रउद्रा दळ ताणिय देवराजि ॥13॥

जसलमेर राव वेल्हण ने अपनी मूछो का ताव देत हुए असह्य सना के साथ प्रयाण किया । देवराज ने अपने प्रबल शत्रु से जागलू हस्तगत करने के लिए यवन सना को भी साथ ले लिया ॥13॥

पतिसाह पञ्चनइ लड्डि पाइ, ऊत्तरियउ कोटि मराटि आइ ।
सुरित्ताण चाचि कीयउ सहाउ, तेवाडि कूप भरिया तळाउ ॥14॥

बादशाह पचनद (पंजाब) का पार करके कोट मरोठ में आ उतरा । चाचि ने मुल्तान की सहायता की । उसने अपने कुए जुतवाकर पानी से तालाब भरवा दिये ॥14॥

सह कळहि कल्ह स नेह सारि, मागिसी वइर चउँड रा मारि ।
ताणिया सेन जागळू तक्क, केसवाळइ पाया कटक्क ॥15॥

राव चूडा की मार कर प्रतिशोध लेने हेतु वे सभी कवच धारण करके तथा तलवारों से सुसज्जित होकर युद्ध के लिए तत्पर हुए । उन्होंने जागलू को लक्ष्य बनाकर अपनी सेना को चलाया तथा जागलू के केशालाव तालाब पर अपनी सेना को पानी पिलाया ॥15॥

गोरिया राउ थळ माळ गाहि, सत्तेरणि आयउ पातिसाहि ।
ग्रहमण्डि लागि वेळ वरीव, नागउरि सेन दूका निक्षोक ॥16॥

यवन पति ने अपने अश्वों द्वारा रत के टीला को रौंद डाला । वह सत्तेरणि नामक गाव में पहुँचा । वे दाना महत्वाकांक्षी उत्साहित हाकर ब्रह्माण्ड तक जा छग तथा चलते हुए नागौर के समीप पहुँचे ॥16॥

माजणउ करिय करि कण्ठि माळ, करिमाळ जालि केवी कुदाळ ।
ऊठियउ जमहरे देय अग्नि, धूधहर राउ लागउ धियग्नि ॥17॥

शत्रुओं के लिए कुठार स्वरूप राव धूधरा का वंशज राव चूडा ने स्नान करके कठ पर माला धारण की । उसने अपने हाथों में तलवार पकड़ी । तत्पश्चात् उसने जीहूर की चिता में अग्नि प्रवर्तित की और अत्यधिक उत्साहित हाकर आकाश तक जा तगा अथवा श्लोधाभिभूत हुआ गया ॥17॥

साँघणइ सत्ति सत्तूछ सत्तिय, हाथउ दुरङ्गि दे आप हत्थि ।

वीरम्म तणउ देसीह-वग्ग, ऊघाडि ताव नात्तिय अलग्ग ॥18॥

जौहर की अग्नि म थाड सं समूह में सतिया न प्रवेश किया । राव वीरम के पुत्र चूडा ने अपने हाथ से अग्नि दी तथा सिंह व समान चलते हुए दुग के किवाडा को खोल कर अलग अलग कर दिया ॥18॥

पाखरिअे पइठउ प्रइज पाळि, वीरम्म तणउ थाटां विचाळि ।

वाजिया डोल दळ हाव वज्जि, गाजिया गोण गइणाग गज्जि ॥19॥

राव वीरम का पुत्र प्रजापालक राव चूडा बवचित होकर दोना सेनाओं के मध्य प्रविष्ट हुआ । डाल बजने लग । वीरो की हाक होने लगी । धनुष की प्रत्यचाए गूजने लगी जिसमें आकाश ध्वनित हो उठा ॥19॥

दस राउत पडिया प्राळि द्वारि, नीजळी नाह सउं आठ नारि ।

सम्प्रतउ राउ चउंइउ सरग्गि, ऊठियउ रइण आवास अग्गि ॥20॥

दस यादवा प्रतोली व द्वार पर काम आय । अपने स्वामियों के साथ आठ स्त्रियों ने अग्नि प्रवण किया । राव चूडा स्वग पहुँचा । इसी समय राव रणमल्ल आवाण में अग्नि व समान प्रवट हुआ ॥20॥

रिणमल्ल धरा छळ रक्खपाळ, गडवियउ साँड गोत्त गोवाळ ।

चउंइ रा वइर ले चतुरग, देवरा मारि ढाहिय दुरग ॥21॥

रणमल्ल पृथ्वी के लिए रक्षक बना तथा अपने कुटुम्बियों की रक्षा के निमित्त बलशाली वृषभ की तरह गजन करने लगा । राव रणमल्ल ने राव चूडा का प्रतिशोध लने के लिए चतुरगिणी (सेना) लेकर देवराज को मार डाला और उसके कोट को ढहा दिया ॥21॥

सोझत्ति कहा सोनिगराह, छडुवावि खग्गि लायउ छराह ।

रिणमल्ल प्रवाडा अे सँसारि, माकळ उवारि महमद मारि ॥22॥

राव रणमल्ल ने अपने हाथ में तलवार धारण करके सोनगिरा से सोझत को मुक्त करवा लिया । उसके युद्ध चरित् नसार भर में प्रसिद्ध हुए । राव रणमल्ल ने महमद को मार कर महाराणा माकल को बचाया ॥22॥

आहाड देस सगळउ उयत्तिल, मेरा नइ चाचा मारि मल्ल ।

वइरिया तणइ सिरि मिरो वाटि, पह भलइ कूम वइसारि पाटि ॥23॥

राव रणमल्ल ने समग्र मेवाड प्रदेश का अस्थिर कर दिया । उसने मरा और चाचा को मार कर मदन किया । यचना ने अपने शत्रुओं पर जो माग बनाया, भले राव रणमल्ल ने उस राकते हुए राणा कृष्ण को मिहामनाच्छ किया ॥23॥

रिणमल्ल राउ कूभेणि राणि, वेसास चूक वूहउ विनाणि ।
 कूभेणि कूड कियउ कदम्म, मारियउ रइण साट्यात्त धम्म ॥24॥

राव रणमल्ल का महाराणा कुभा ने विश्वास भे लेकर उसके साथ घोसे का माग अपनाया । महाराणा कुभा ने असुर्य का माग अपना कर पृथ्वी पर सायात् घम-स्वरूप राव रणमल्ल को मार डाला ॥24॥

प्रतिययउ जोध रिणमल्ल पाटि, नवसहस तिलक सीहइ निलाटि ।
 जणियार जोध जाणइ जगत्त, हिदुवइ राइ जीतउ हलत्त ॥25॥

राव रणमल्ल के बाद राव जाधा सिंहासमारूढ हुआ । राठीइ राव जाधा के नकाट पर राज्य तिलक सुशामित हुआ । जगत्प्रसिद्ध राव जाधा का सभी जानने लग । हिदुपति राव जोधा न हलत्त को विजय किया ॥25॥

जाध राउ अघायउ सदा बुद्धि, बळि भीम जेम सहदेव बुद्धि ।
 जाध राउ कोपइ दिसउ जाह, तरवारि दळइ सिग्गि मिरी ताह ॥26॥

राव जाधा हमेशा युद्ध से अतृप्त रहता था । वह बल में भीम एवं बुद्धि में सहदेव के समान था । राव जाधा जिस पर कोप करता, उसी और यदका, का कलवार, व घाट उतार देता ॥26॥

आपणी जोध फराइ आण, लागुआ मुहे दीह्ठी लगाण ।
 मँडळीक जोधि मेवाट मोडि, कूसाणइ भागा कटक कोडि ॥27॥

राव जोधा न प्रदश में अपनी आण (डुहाई) फिराई । उसने अपने शत्रुओं के मुँह पर लगाम अड दी । मडलेश्वर जाधा ने मेवाड की सेना को परारत करके लौटा दिया तथा कूसाण की बहुसंख्यक सेना को भी पराजित कर दिया ॥27॥

घण अस्सि दुरिज्जण घडिय घाइ, रइणाइर वाधउ जोधि राइ ।
 जोधि मेवाड वाडिय जडीह, भँगवट दीघ मोटा भडाह ॥28॥

राव जोधा ने तलवार रूपी घन व प्रहार से अपने शत्रुआ को नष्ट किया, मानो उसने समुद्र को बाध लिया है । राव जाधा ने मेवाड की जड़ें खोद डाली तथा बड़े-बड़े मुमटो का पराजित किया ॥28॥

आका नइ हाजा तणा अद्ध, पाडिया जेम दीयड पतङ्ग ।
 बळिमूळ जोधि ठोण्य कंधार, हेसा दुरङ्ग मत्तावि हार ॥29॥

युद्धवीर राव जाधा न अपनी सेना को हसा दुग के निकट पहुंचाया और उसके दासक को पराजय स्वीकार करवाई । आका और हाजा का गरीर इस प्रकार नष्ट कर लिया जिस प्रकार दीपक पतंगा का नष्ट कर देता है ॥29॥

मेवाडाँ जोधइ मळिय माण, रेहळिय खेन कूभेण राण ।
 मळखहर वळिय सुरिताणमल्ल, मेवाड गाहि ऊप्राहि मल्ल ॥30॥

राव जोधा ने मवाडियो का गव खडित कर दिया तथा महाराणा बूभा का युद्ध क्षेत्र म गिरा दिया । राव सलखा का वशज एव बादगाहो के लिए शल्य स्वरूप राव जोधा मेवाड को तहस-नहस करता हुआ, उगाही करता हुआ, वापस लौटा ॥३०॥

मेवाड जोध धांसे मनाइ, ऊधरिय मँडोवर देस आइ ॥३०॥(२)

राव जाधा ने अपन प्रहारा स मवाड पर धाक जमाई तथा अपने प्रदेश म पहुचकर मडोवर का उद्धार किया अथवा मडोवर को धारण किया ॥३०॥(२)

॥ बूहउ ॥

पुत्र जांसे पउँण गुण, वाजह तूर अनत ।

मात गया तट पिडडउ, दियइ भुवन्त भुवन्त ॥३१॥

पुत्र क ज म लेन पर और अनेक प्रकार के वाद्य बजाने पर क्या लाभ ! वह (पुत्र) घूमत फिरत कभी न कभा मातस्वरूपा गया व तट पर अवश्य ही पिडदान करेगा ॥३१॥

॥ छद पाघडी ॥

जाधरा जोध जस राति जागि, पुन करण गया पुहतउ प्रियागि ।

सनान करिय करि पिण्ड सारि, तरपणइ पितर सत्तोख तारि ॥३२॥

राव जाधा के दोढाओ ने यगस्वरूपी रात्रि जागरण किया और पुण्य करने हेतु गया एव प्रयाग पहुचे । तत्पश्चात् राव जोधा सहित उ हाने स्नान किया और तपण द्वारा अपन पितरो का सतुष्ट करके तार दिया ॥३२॥

वाळियउ जोधि सुधरम ँविक, आँजुळि पितर पासिय उदविक ।

आवियउ जोध पूजिय अनत, हाथिया लेय पूरव हत ॥३३॥

राव जोधा ने अपन वत्त य द्वारा धम को लौटाया । उसने अपनी अजुलि स उदक दान करके पितरो का पोषण किया । वह भगवान अन त की पूजा-अर्चा करके तथा पूव की ओर स हाथियो को लेकर लौटा ॥३३॥

पट्टाणि परिगह कीध पाण, चापरि नइ काडिय चाहुआण ।

जोध राइ सेन अज्जाणजक्क, कमराळ सीसि कीया कटक्क ॥३४॥

राव जाधा ने अचानक यवना पर चढाई की । उसने अपनी शक्ति स पठानों को रपत बना लिया तथा शीघ्रता के साथ चौहानों को अपने प्रदेश स निकाल बाहर किया ॥३४॥

भाडिजी मेडिराउ निरा भेड, खिति बाहर आयउ धणी मेड ।

मारङ्गसान जोधद सगन, साँकडउ पदसि साहिय सुसत्र ॥३५॥

गड क शासक राव जोधा ने अनेक अश्वों को एकत्र किया तथा पृथ्वी की रक्षा के निमित्त तत्पर हुआ। उसने शक्तिशाली सारगखान के निकट पहुँचकर शस्त्र धारण किये ॥३५॥

सारङ्गखान वहिया सहित, गटदूण खान मोखावि खित्ति ।
पट्टाण फतेपुरी खेति पाडि, चत्रवइ जोधि जस चीधें चाडि ॥३६॥

चत्रवती राव जाधा ने बारह खानों सहित सारगखान पठान को फतहपुर के युद्धक्षेत्र में मारकर पृथ्वी को मुक्त करवाया तथा अपनी कीर्ति पताका फहराई ॥३६॥

पट्टाण प्राण भञ्जियउ पूर, साखियउ जोधि किय सोम सूर ।
पट्टाण जोधि पाघरि पचारि, मनावि मेछ रिणखेति मारि ॥३७॥

राव जाधा ने सूर और चंद्र को साथी बनाकर पठाना की सभ शक्ति को अपने पराक्रम से नष्ट कर दिया। उसने पठाना की सीधे रणक्षेत्र में ललकार कर उह मार भगाया तथा अपनी धान (हुहाई) स्वीकार करवाई ॥३७॥

घण थाटि लियइ आयउ घरेहि, छागिया मेठ घर घाति छेहि ।
जणियार जाध विवनउ जियार, ताडिया वच्छ वथाणि तियार ॥३८॥

राव जोधा अपनी अपार सेना लेकर घर जाया। उसने यवनों को काट काटकर अपनी भूमि से हटा लिया। राव जोधा जिस समय मृत्यु को प्राप्त हुआ, उसी समय उसके पुत्र अपने-अपने स्थान पर गजन करने लगे ॥३८॥

वीकउ नइ सातल अक वविक, गढपत्ति साड उठिया गडविक ।
सातल अनइ वीकउ ससारि, असमानि खग्ग उठिया उभारि ॥३९॥

वीका और सातल एक ही कहे जाते हैं अथवा एक दूसरे से बढ़कर हैं। वे दोनों गढ़पति शक्तिशाली वृषभ की तरह गजन कर उठे। राव वीका और सातल जगत् के समस्त अपनी-अपनी तलवारों आकाश की ओर तान कर उठ खड़े हुए ॥३९॥

जांगळु वीक जाणइ जगत्, छातपति हुअउ ताणावि छत्त ।
ऊणळ अन पळट्ळइ छित्त, चउंड रा जेम राउ वीक चित्त ॥४०॥

जांगलू वीक वीका का समस्त ससार जानता है। वह अपने सिर पर छत्र तनवाकर राजा बना। उसका हृदय राव चूडा के समान उदार था। राव वीका के महा पुंक्त अन और घत का उपयोग होता था ॥४०॥

सेवा वळि ओटइ अञ्चलान्, भूजाइ जीमइ भाख भाख ।
वीवम्म सांड ऊससइ वग्गि, राट्टुआ सटवइ हियइ खग्गि ॥४१॥

राव वीका ने अपनी शक्ति से प्राप्त भूमि का धारण कर रखा है। उसके भावनात्मक साग विभिन्न प्रकार के भोजन कह-कहकर प्राप्त करते थे। राव वीका

अपने वग (राठी सभू) म वृषभ की तरह उमगित हो रहा था। शत्रुओं के हृदय म राव वीका की तलवार हर समय पटकती थी ॥41॥

नरसिंघ मारि ऊपाडि नेस, दीवाण थाण थरहरिय देस ।

भाडङ्ग तर्णा साईं भुरज्ज, राठउडि रोळि विय रज्ज रज्ज ॥42॥

राव वीका ने नरसिंघ को मारकर उसके घोरो का नष्ट कर दिया। परिणाम स्वरूप प्रदेश के अनेक राज्य और घाने सम्पाद्यमान हो गये। राठीड राव वीका ने भाडङ्ग के भुरज (काट) एव परिवारा को तहस-नहस करके धूल म मिला दिया ॥42॥

वीकइ दिवराउरि दोह वाह, लासीक लोक लोडिय लंगाह ।

भूमणहवाहण वीकि मारि, असमाण घाट आगी उतारि ॥43॥

राव वीका ने देरावर पर आक्रमण किया। वहाँ के अनेक प्रतिष्ठित सगा (यवनो) को अपने वग म कर लिया। उसने भूमण वाहण को परास्त कर दिया तथा अपने सैनिक-समूह का भूमण-वाहण के आगे उतारा ॥43॥

देपालपुरइ पुरि पसर देय सरसउ सँघारि सारे सभेय ।

वीठउडउ नइ भटौर वदि, सावइ राइ साधिय ढोल राइ ॥44॥

राव वीका ने देपालपुर नगर पर सैनिक आक्रमण किया। उसने अपनी तलवार के तल पर सरसो का सहार किया। वीठउड और मटनर पर युद्ध म ढोल बजा कर विजय प्राप्त की ॥44॥

वीकउ हिसारि पाधरी वग्ग, आत्रियउ अस्सि सडिय उमग्ग ।

नागड उपाडी नरहडो नस, दिल्लीउर वाडिय महा दस ॥45॥

राव वीका ने उत्साहित होकर अपना अश्व हिमार की ओर धलाया तथा सीधा वही पट्टा। उस अद्वितीय वीर ने नरहड के घोरो को तहस-नहस कर दिया तथा उस प्रदेश मे से दिलावर को निकाल बाहर किया ॥45॥

बहलालसाहि सउँ बालि बाल, ढीली हँडोळि वावाडि डाल ।

पुरफत्ते लाइ शीभणू पाइ, राधिया वाँह दे रोपि राइ ॥46॥

राव वीका ने बहुसो नशाह म वचनबद्ध होकर ढीली एव ढाल नामक युद्ध वाद्य बजाते हुए पतहपुर एव क्षुभण को अपन अधिकार म ल लिया तथा वहाँ के शासकों को रक्षा का वचन (बाह) देकर स्थापित किया ॥46॥

नागउर काट वीरइ नडय बळिवण्डि राइ विहुँ धार वेय ।

वरसिद्ध वदि हँता छडावि, अजमेरि वाटि नीसाण वावि ॥47॥

शक्तिशाली वीर राव वीका ने नागौर का दुग दो बार हस्तगत कर लिया।

उसने नगाड पर ठक की चीट देकर अजमर के किले से वरसिय को वहा की कद से मुक्त करवाया ॥47॥

सेखल राउ ग्रहियउ सीहराइ, ताइयां कन्हा मोखावि ताइ ।
राठउड वीक कुण करइ रीस, छेहडा छत्र मांडइ छत्रीस ॥48॥

सीहराव ने पूगल के राव गेवा की बंदी बना लिया था । राव वीका ने उक्त मंत्रु स राव गेवा को मुक्त करवा लिया । राठौड राव वीका पर कौन क्रोध कर सकता है क्योंकि सभी जातिया के लागो ने एकत्र होकर राव वीका के सिर पर छत्र धारण करवाया (तनवाया) है ॥48॥

छात्रपति उवारिय छत्र छाह, बइताळइ आडी दीध वाह ।
वीवइ दुरङ्ग कजि वीध वत्त, सोभागदीप जाणइ सपत्त ॥49॥

राव वीका ने पद्रह सौ बघालीस के अकाल के समय अपनी प्रजा को शरणागत बनाकर शामन की ओर म उसका बचाया । राव वीका ने दुग के लिए बातचीत की । दुग बनकर तैयार हुआ, जो सोभाग्यदीप नाम स जगत् प्रसिद्ध है ॥49॥

वेगडउ साठ वीकउ विवन, कुळभाण तेथि उदियउ वरन्न ।
ऊधरिय छत्र फरावि आण, ताई मंडोवर मूलताण ॥50॥

अतुल बलशाली वृषभ क समान राव वीका मृत्यु को प्राप्त हुआ । उसी समय वहाँ राव लूणकरण वरा के लिए मूय के समान उदित हुआ । उसने अपने सिर पर छत्र धरा तथा मंडोवर स लेकर मुल्तान तक अपनी आन (दुहाई) फिराई ॥50॥

दीसइ दीवाणि माणिक डण्ड, राइंगर वाळि ऊग्रहइ खण्ड ।
राजा करन राउत रणूध, सूरुा संभ्रामि वेपकत सूध ॥51॥

शासक लूणकरण एसा क्षत्रिय था, जा हर समय युद्ध के लिए तत्पर रहता था । उसके दीवान म माणिक के स्तम्भ सुशोभित हा रहे थे । वह दोनो (मातृ एव पितृ) पक्षों से शुद्ध एव युद्ध म वीरता प्रदर्शित करने वाला था । उसके अश्व लोहे की बडिया म बंधे रहत थ और वह अपने भू लड की उगाही करता था ॥51॥

धूधाहनि चाडिय करनि धज्ज, पाळ वे सुखी वासाइ परज्ज ।
गडियडइ जेम मायर गइंद फरहरइ ढाल माये फणीद ॥52॥

राव धूधा के वराज राव लूणकरण ने राठौडों की कुलदेवी माता करनीजी के दरहरे पर ध्वजा चढाई । ये दोनो रक्षक (माता करनीजी एव राव लूणकरण) अपनी प्रजा को सुख सुविधा पूवक बसाते हैं । राव लूणकरण के हाथी समुद्र के समान गजन करते हैं तथा उसकी ढाल पर वासुकि सुशोभित हा रहा है ॥52॥

देवळे पडइ वाजइ दुवारि, क्षालरी सङ्घ सुसबद झणारि ।
आदीत जिसा निरमळा अङ्ग, गह्वन्त राउ धू जेम गङ्ग ॥53॥

माता श्री करनीजी के देवालय के द्वार पर नगाड़े बज रहे हैं और झालर, ढंग एव सुगन्ध नामक वाद्यो की ध्वनि हो रही है। राव लूणकरण का शरीर गूथ के समान निमल तथा ध्रुव एव गया के समान गौरवावित है ॥53॥

नवसहस्र राइ त्रीसाण नाद, पूजिजइ देव आगी प्रसाद ।

चउपनउ समीसर करनि चाळि, देवरऊ दुनी राखी दुवाळि ॥54॥

राठौड राव लूणकरण नगाडो पर ढका देते हुए राजप्रसाद के आगे देव-पूजा करते हैं। पन्द्रह सौ घोपन के सवत् में अकाल के समय माता करनी के शरणागत बनकर देवालय में प्रजा को सुरक्षित रखा ॥54॥

वरन राउ वरइ कुसमइ कडाहि, मेदनी ऊवारी मइल माहि ।

कूजर दुवारि दीपइ करन, वाचइ सुजस्स अड्डार घन ॥55॥

राव लूणकरण ने अकाल के समय देव-पूजाप सिद्धान्त (कडाही) करके अपने राज्य में प्रजा का बचाव किया। राव लूणकरण के द्वार पर हाथी सुशोभित हो रहे थे तथा सभी वर्णों के लोग उनसे सुयश का बखान करते थे।

तेडिय नट हूँता गुजरात, वीकउत उबारण सुजस वात ।

साजी हसत्ति दीहा तियाइ, रण हूँत पिता माखावि राइ ॥56॥

राव बीका के पुत्र राव लूणकरण ने अपने सुयश रूपी वार्ता को रक्षाय गुजरात से नटो को आमंत्रित किया तथा उन्हें हाथी और घोड़े देकर अपने पिता को ऋण मुक्त करवाया। (शायद राव बीका ने अपने जीवन-काल में उक्त नटो को पुरस्वृत करने का वचन दिया होगा) ॥56॥

नामाणइ अनियइ बीकनेर, वासोघस हूअउ यहइ वर ।

ऊठिया वीपि आमळिय अङ्ग, आकासि अडाविय उत्तिमङ्ग ॥57॥

नागौर और बीकानेर राज्यो में परस्पर शत्रुता चल रही थी। पवित्र शरीर धारी राव लूणकरण कुपित हो उठा। उससे अपना सिर आकाश तक जा भटाया ॥57॥

सम्मेलि धाट सूरा सताल, घडहडिय वीपि वावाडि डोल ।

महमदखान मेल्हाण भाड, चाडिय असि आयउ कळह चाड ॥58॥

राव लूणकरण ने अपने शक्तिशाली वीरो को एकत्र करके सना तयार की। उससे रोषविष्ट होकर डोल बजवाया। महमद खान भी सना जसलमेर प्रदेश में थी। वह युद्ध करने की इच्छा से अश्व पर चढ़कर आया ॥58॥

धूघहर घणी साहस्स घीर, टाळियउ अङ्ग साजी न तीर ।

केकाण हाठ साम्हउ वरन, मैलियउ घाइ विय मोटभन ॥59॥

राव घूषा का उत्तराधिकारी राव लूणकरण घघधारी एव साहसी था। उसने

युद्ध में चलते हुए तीरो से स्वयं को तथा अश्व को नहीं बचाया। अश्व सेना के सम्मुख उदार हृदय राव लूणकरण ने भिड़कर प्रहार किया ॥59॥

राति वाहि विडिया खान राउ, घण घाइ मेछ मन्नावि घाउ ।
अवडउ मुहम्मद अस्समान, खाखरउ गयउ खेरावि खान ॥60॥

राव लूणकरण और महमदखान रात्रि-कालीन युद्ध में परस्पर भिड़े। राव लूणकरण ने अपने शस्त्र प्रहारों से यवन मुहमदखान को पराजय स्वीकार करवा दी। ऐसा अद्वितीय वीर मुहमदखान अपना गव नष्ट करवा कर गया ॥60॥

महमदखान घाबे मनाइ, आपणइ भन्न आयाणि भाइ ।
सतरहउ समीसर राइ समत्थि, हाथी वरीसि गळहत्थि हत्थि ॥61॥

राव लूणकरण मुहमदखान को पराजय स्वीकार करवाकर अपने स्थान पर लौट आया। मत्तरहवें मवत् में हाथियों का दान करने वाले राव लूणकरण ने अपने हाथ से हाथियों के गले में फटा शाला ॥61॥

डळ राइ करन वारउ वि ईंद, गुणियणा ग्रिहे वाधा गईंद ।
ताकुआ रेसि सोभाग तत्ति, हिदुवइ राइ दीहा हसत्ति ॥62॥

इस पृथ्वी पर राव लूणकरण का समय दवराज इन्द्र के समकक्ष था। उसने कवि और गुणीजनों के घर हाथी बंधवा दिये। कवियों का अपने सौभाग्य की कोई चिन्ता नहीं रही। हिन्दूपति राव लूणकरण ने उन्हें हाथा प्रदान कर दिये ॥62॥

कळि काळि परीश्रम अं करन्न, देखियइ दुवापुर दिख्या दन्न ।
कणइट्ठ वहा घर लूणकरनि, मारुअइ राइ ली मोटमन्नि ॥63॥

वर्तमान कलियुग के समय राव लूणकरण का पराश्रम ऐसा था कि उसने अपने समय की द्वापर के समान दिखा लिया। उदार हृदय वाले मारु राव लूणकरण ने अपने छोटे भाई (घडसी) से पृथ्वी प्राप्त की ॥63॥

हीसत्ति थट मेळिय हसम्म, कादमी लई पाखइ कदम्म ।
कोवण वटक्क कीयइ करन्न, छेलियउ मन्नि घातिय छपन्न ॥64॥

राव लूणकरण ने अश्व सेना एकत्र की। उसने कदीमी राह पकड़ी। वह बिना राह के नहीं चलता था। राव लूणकरण ने मेघघटा के समान सेना को सजाया तथा अपने मन में भाटियों को रखकर चला ॥64॥

ऊरुधि चडिय पोवरणि आइ, रहडिया देस वाजा रडाइ ।
जेसाणइ ऊपरि करनि जाइ, वाजिन्न लेय नीसाण वाइ ॥65॥

राव लूणकरण अपनी सेना के साथ चढकर पोवरन पहुँचा। वह युद्ध वाद्यों को बजाकर इस प्रदेश को नष्ट करने लगा। तत्पश्चात् वह अपने घोड़ों को लेकर नगाड़ों पर डवा देते हुए जसलमर के ऊपर चढ़ चला ॥65॥

करनाजण आयउ जोपिकार, लोली देवारी लावि लार ।

घण नेह घाइ मनावि घाउ, अलजेया भाटी करत आउ ॥66॥

राव लूणकरण विजय प्राप्त करव लौटा । लोली और देवारी की प्रजा उसके पीछे हा ली । राव लूणकरण न अत्यंत स्नेह के साथ तिल-त्र घाटियों को पराजय स्वीकार करवाई ॥66॥

अत्रनइ उपाडण माड चकर, कमधजा राद योया वटक्क ।

केवाण वडा मळिया वस्सि, ऊमछिय व्रन्न आरुहिय अस्सि ॥67॥

अत्रवर्ती राव लूणकरण ने भाटियों के शासन का उच्छेदन करने हेतु राठीडों की सेना बनाकर आक्रमण किया । अश्वी को सुसज्जित करके घेरा बनाया तथा स्वयं उमगित होता हुआ अपने अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥67॥

जंसाणइ मारगि जङ्गमेहि खवळिया माल मेहां खुरेहि ।

जागळू राइ जोपिवा जङ्गि, दळ मळि लाग्न डूवउ दुरङ्गि ॥68॥

जसलमेर के मार्ग को सेना के अश्वों के सुरा की घुलि स धूमिल कर दिया । जांगलू का राव लूणकरण युद्ध जीतने के लिए अपनी अनगिनत सेना एकाग्र करने जसलमेर के दुर्ग पर पहुँचा ॥68॥

वारमइ मासि वळि वधि बोल, डूवउ वरन्न वावाडि डाल ।

राउळोइ न पूगउ दीह राडि, मेळियउ ताल समसञ्च माडि ॥69॥

राव लूणकरण अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार बारहवें महीने डोल बजवाता हुआ जसलमेर पहुँचा । जमरमेर के शासक (रावल) दिन के युद्ध में राव व समझ नहीं आ सका । यह ठीक सायकान के समय युद्ध के लिए एकाग्र हुए अश्वों का भिड़ ॥69॥

मेड नइ माड मेने खुरेहि, वाजिया त्रिनइ दळ वारणहि ।

ऊठियउ पिता आगो अवीह सापळइ करण प्रतापसीह ॥70॥

राव लूणकरण एवं जसलमेर की भाटी योगा व दानो दळ अपने अपने हाथियों द्वारा भिडे । युद्ध करने के लिए प्रतापसिंह निभय हाकर अपन पिता से आगे आया ॥70॥

वकरा गुरि वूहउ वळि करन छावडइ सेन भागउ छपउ ।

राउळोइ रतउ गोइद राउ, गडि पइसि गया खराइ गाउ ॥71॥

कुवरा म शिरोमणि प्रतापसिंह युद्ध करने के लिए चला अश्वों की लियुग म कारण के समान चला । भाटी सेना का परित्याग करने भाग (हार) गये । रावळीत रता और गाविंदराव दोनों अपना गव लडित करवाकर गढ़ में प्रविष्ट हो गये ॥71॥

घाजे करनि मनाइ घाउ, राउळ नइ राउत अवे राउ ।

रातिवाहि राउळ भञ्जि राइ, ताजिय वटक्क आयउ सळाइ ॥72॥

राव लूणकरण ने अपन प्रहार से भाटी शासक एव सरदारा को एक ही माग पर लाकर पराजय स्वीकार करवाई । रात्रिकालीन आक्रमण में राव ने जसलमेर के रावळ को पराजित किया तथा अपनी सेना का लेकर तालाब पर पहुँचे ॥72॥

मइगळा नीर पायउ मसट्टि, खेचे चउ आयउ जइत खट्टि ।

ब्रह्म रा माड खेरु करेय, लालावर आयउ जइत लेय ॥73॥

राव लूणकरण ने विजय अजित की । अपन हाथियों को जसलमेर के तालाब पर लेजाकर भीठा पानी पिनाया । राव लूणकरण भाटी प्रदेश को नष्ट छष्ट करके विजय प्राप्त करता हुआ लालावर पहुँचा ॥73॥

गणेवि राइ नागउर गट्ट, साँकडइ घाति भीडिय सनड्डु ।

दीवाणि राउ कीधी दुवारि आविय करन ओळइ उवारि ॥74॥(1)

राव गागा ने नागौर के दुग को अंदर से घेरकर उम अच्छी तरह से कसा । नागौर के शासक ने राव लूणकरण से कहा, हम आपकी शरण में हैं । हमारा बचाव करो' ॥74॥(1)

उभइ वटक्क अ तरी आइ । मोखाणि भेछ भलउ मनाइ ॥74॥(2)

दोनों सेनाएँ परस्पर मिली-मिठी । राव लूणकरण ने नागौर के यथा की मुक्त करवाकर प्रसन्नता प्रकट की ॥74॥(2)

॥ डूहउ ॥

काठळिअे जीत करन, महिपति अमळीमाण ।

सामहिया सळखाहरइ, साम्हा दळ सुरिताण ॥75॥

सीमावर्ती शासकों की रवाभिमानी राव लूणकरण ने जीत लिया । अब राव सलवा के वंशज के समस्त बादशाह (सुल्तान) की सेना थी ॥75॥

॥ छ'द पाघडो ॥

काठळिअे जीते राइ करनि, माम्भइ राइ की पूव मति ।

नवसहसउ ऊपरि नारनौळ, छेलियउ ब्रह्म दे वळ छौळ ॥76॥

सीमावर्ती शासकों को राव लूणकरण ने जीत लिया । महधराधीश ने अपने मन में अपूर्व योजना बनाई । राठीड राव लूणकरण नारनौळ पर जमे समुद्र तरगाइत हाकर लहराता हा उभी प्रकार बढ़ा ॥76॥

चडिया वटक्क नाँबक्क चोट, बापिया सपतइ दीप कोट ।

राजघर कुँअर तडियड राइ, सूरउ सतीन सहवर सिहाइ ॥77॥

राव लूणकरण की सेना नगाडा पर डका देकर चली । उसमें सातों दीप के दुग

कम्पायमान हो गये । उसने बुधर राजघर का आमंत्रित किया क्योंकि वह अत्यन्त बलशाली और सहोदर भ्राता व समान सहायता करने वाला था ॥77॥

पराज विलागउ आइ पाद, राणा उवारि राठउड राइ ।

करनाजण कीअे कट्टेहि, टीडवाणि उग्रहआइ देहि ॥78॥

फीरोजशा राव लूणकरण व परा म आ लगा अर्थात् उसने आधीनता स्वीकार करली । उमन कहा — राठी राव मुझ बचाओ अथवा राणा स बचाओ । राव लूणकरण ने जब अपनी सना तयार की ता डीडवान का गामक कर दन लगा ॥78॥

त्रन रा भअे ग्रासिया काडि, मेवाट तणा गा वाग माडि ।

अहिपुर समापिय तुरी अत्य, हिदुवइ राइ दे पूठि हत्य ॥79॥

राव लूणकरण ने भय म मवा व अनेका ग्रामिया (लुट्ट-जमींदार) अपने अश्वो की लगाम धुमाकर चल गय । हि दूषति राव न नागौर व गामक को सहायता का वचन देकर उमन छोडे एव द्रव्य तोटा दिय अथवा नागौर व गामक न राव लूणकरण को छोडे एव धन समर्पित किय तथा नियदन किया कि आप हमारी पीठ पर हाथ रखे अर्थात् रणा का वचन दे ॥79॥

आरियउ धाट मळिय अथाह सळसहर राउ वागड सिराह ।

दउलत्तिखानि दळ साथि दय, वस्मावि दस विनउ वहुय ॥80॥

राव सल्या का वराज राव लूणकरण अपनी अयाह गना एकत्र कर वागड प्रदम पर चढ़कर आया । दौलतखान न अपनी सना साथ म द दा और प्रश को आबाद करने व लिए दोनो साथ-गाय चलने लग ॥80॥

नहवाँ निजाम शीक्षणू चम्प कावाळ नरहटी काटि कम्प ।

सीघाणउ पाअे गाहि सेन, मल्हाण पंचेरी दोह मेन ॥81॥

नहवाँ क निजाम स शीक्षणू को झपट लिया । कावाल और नरहड का मेल (मनामालि य) निकाल कर दूर किया । सीघाण का सना व परा से रौंकर रात्रि क समय पंचेरी मे डरा (मुकाम) किया ॥81॥

राउ करन जस्स कजि जागि रात, पी बाल चाड दूकउ प्रभाति ।

देठाळउ हूअउ दुह दळीह खिविया खडग साधी लगाह ॥82॥

राव लूणकरण ने यश प्राप्ति व लिए रात्रि जागरण किया । अपन प्रिय वचना की रक्षा की इच्छा स वह प्रमात के समय पहुचा जयवा पीवाल की रक्षा व निमित्त प्रमात व समय पहुचा । दोना सनाए एव दूमर व समभ आइ और लगे (यवनों) व कधो पर तनवारें चमकने लगी ॥82॥

विच्छूटि हवाई डाल वाजि गुण वाण पद्व गइणाग गाजि ।

वाझाळ गयउ ऊटिय क्रमेह भारत्य ब्रह्म आयउ भुजह ॥83॥

हवाई यत्र छूटने लगे और ढोल बजे । धनुष की प्रत्यञ्चा तथा बाणों के पक्षों की आवाज स आकाश गूजने लगा । कायर (साथी) दौड़कर उड़न छू हो गया तथा युद्ध का मार राव लूणकरण की मुजाओं पर आ पड़ा ॥८३॥

साथी करन्न साऊ सनाम, रउद्र दळि पइठ कहि राम राम ।

पातलइ कुँअरि रूठइ पवङ्ग, जाडे ले होयउ देखि जङ्ग ॥८४॥

राव लूणकरण के साथी नामी थे । व यवना की सेना म राम राम कहते हुए प्रविष्ट हुए । कुबर प्रतापसिंह अपने अश्व के रुट हाने पर उसे युद्ध की सघनता देखकर उसम ले गया ॥८४॥

वइरसी तुरी वीरत्ति वाइ, घण झूझइ भेळिय मुहर घाइ ।

धौकारव धुण ही वाजि धार, आमाल फिरी पाखी अयार ॥८५॥

झुझारू वीर वरसी अपन अश्व को वीरता क साथ चला कर सेना के अग्रभाग मे प्रहार करते हुए भिड गया । धनुष की प्रत्यञ्चा और तलवारों की धारें बजने लगी । अपने पक्ष की अश्व सेना शत्रुओं के इद गिद फल गई ॥८५॥

मुहता प्रधान घाजे मिळेय, कुरमेत कीध कळहण करेय ।

प्रतापसीह वइरउ पतङ्ग, अणिअे सरग्गि गा चाडि अग ॥८६॥

मुहता और प्रधान भिड कर प्रहार करने लग । उ हाने लडते हुए रणक्षेत्र को कुरुक्षेत्र बना दिया । कुबर प्रतापसिंह और वरसी भात्रों की अणियों पर अपने अगों को चलाकर स्वग पहुंच गय ॥८६॥

हिन्दुआ देखि हयियारि हार, असपत्ति तणा लूउइ अयार ।

फारि चडिअे कीधउ भड फेर मारअउ राउ डोलइ न मेर ॥८७॥

हिन्दुओं ने शस्त्रा द्वारा अपनी पराजय देखी । बादशाह (सुतान) के गुप्तचर इधर उधर घूम रहे थे । वीरा ने पुन चढकर परा डाला परंतु मरुधराधीश राव लूणकरण मुमेरु पवत की तरह अग्नि रहे ॥८७॥

घमरोळइ थाटा घरिय धूप, राठउड राउ हुउ पञ्चरूप ।

चन्नउइ वरन पीवोल चहु, ओइला हुअउ पदलाँ अगहु ॥८८॥

सनाओं ने तलवारों को धारण करके घमराळ मचा दी । राठोड राव लूणकरण सिंह के समान बन गया । चन्नवर्ती राव पीवोल की सहायता की इच्छा से पक्ष एवं विपक्ष वालों म अचल (स्विर) बना रहा अथवा अपने प्रिय वचनों की रक्षा के निमित्त युद्ध म स्विर बना रहा ॥८८॥

वाराह त्रत पडठउ विचाळि, नीझरडइ चाडिय मेळ नाळि ।

वोकउत विछूटा रहिर वाद, पडिनाळ जाणि पासे प्रसाद ॥८९॥

राव लूणकरण वराह के समान सेना के मध्य मे प्रविष्ट हा गया । यवन उस

बदूको के द्वारा पायन कर रहे थे अथवा उसने यवन सना को प्रहार करके घायल किया। राव वीका के पुत्र क पावा से रुधिर बहने लगा मानो किसी प्रासाद क समीप प्रनाली चल रही हो ॥८९॥

राठउड राउ रुठइ रउद्, साँकडइ पइठ साई समुद् ।

सइ गत्त करन सत्ते सलीह, डम्बरे कि छायाउ जाणि दीह ॥९०॥

राठीड राव यवनो पर दृष्ट हुआ। वह उनके समीप पहुँचा मानो समुद्र से आलिंगन बढ हो रहा है। राव लूणकरण अच्छी तरह से शत्रुओं के लिए शल्य-स्वरूप बन गया। यवन सना के मध्य वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सूय बालो से आच्छादित हो गया हो ॥९०॥

मारुअउ राउ मुणिसत्त मत्तिल, भाथद ज्यउं भरियउ सेल भल्लिल ।

मारकाँ हाथ तउ पडिय पील, जे करन जेम भरियउ कँदील ॥९१॥

राव लूणकरण यवना का मदन कर रहा था। उसका शरीर तूणीर की तरह भालो रूपी बाणो से भर गया। उसका हाथी शत्रुओं के हाथ पड़ा। फिर भी वह युद्ध की इच्छा से परिपूर्ण था ॥९१॥

करनाजण कूते असुर वेह, कोठार जेम भरियउ वणेह ।

करनाजण विवनउ करिय कत्थ, हत्थियअ मछ तउ पडिय हत्थ ॥९२॥

राव लूणकरण ने अपने भाले से अनेक यवना का सहार किया। वे ऐसे प्रतीत होते थे मानो कोठार अन्न-बणो से भरा है। राव लूणकरण उल्लसनीय काय करके मृत्यु का प्राप्त हुआ, तब जाकर उसके हाथी यवनों के हाथ लगे ॥९२॥

विलेवाँ सँगामि विवनउ करन, थरहरिय सवे मरआडि थन ।

हइकम्पि देस दूअउ हुलाउ, राठउड विवनउ करन राउ ॥९३॥

राव लूणकरण यवनो के साथ युद्ध में काम आया। उसमें मारवाड के सभी घाने सम्पायमान हो गये। राठीड राव लूणकरण मृत्यु को प्राप्त हो गया यह जाकर पूरे प्रदेश में हड़कम्प मध गया माना शीतकानीन पवन बन रहा हो।

असमानि जइत्त उठियउ अमम्भ, थिडतइ गेंमारि दे आभि थम्भ ।

थिर प्रजा कही घर घणी थाइ राखियउ राज जइत्तसी राइ ॥९४॥

मरु प्रदेशीय आकाश में राव जतसी अग्निशिखा के समान प्रकट हुआ। उगने विचलित सप्तरूपी आकाश को घमा दे दिया। स्थिर प्रजा ने कहा—राव जतसी ने राज्य की रक्षा की है अतः स्वामी ऐसा ही होना चाहिए अथवा स्थिर प्रजा ने कहा कि राव जनसी ने पृथ्वी का स्वामी बन कर राज्य को रखा ॥९४॥

मारअउ राउ सहदेव मत्ति, ताणावि छत्र बइठउ तपत्ति ।

ऊजळा चेंवर दळणइ अवीह, सिरि छत्र अविच्चळ जइत्तसीह ॥९५॥

माह राव जतमी बुद्धि म सहदेव क समान प्रत्युत्पन्नमति था । वह अपने सिर पर छत्र धारण करके राय सिंहासन पर बठा । राव जतसी क ऊपर उज्ज्वल चक्र फिराये जाते थे । निर्भीक जैतसी क सिर पर अविचल छत्र सुशोभित था ।

हड वालि खम्भि सोहद हसति, गटपत्ति जइतसी अउवगति ।

दस देसपत्ति सेवइ दुवार, ओळगू जन आगी अठार ॥१६॥

दुगपति राव जैतसी की चाल-ढाल गजब की है । उसके अरन लाहे की कडिया स और हाथी स्वभा स बंधे दृष्ट सुगामित हाने थे । अनेक राजा राव जतमी के द्वार पर हाजिरी देते थे तथा सभी जातियों के साथ भवक थे ॥१६॥

घरहरिय मीर धाणा धरक्कि, वमि किया अइति गट देस वक्कि ।

आउघा वेळ रुछळिय अत्ति, गडडियउ जइत सामन्द्र गत्ति ॥१७॥

बहुत हैं—राव जतसी ने अनेको गड एव बन्न सी भूमि अपने अधिकार में करली जिगस अनेक धानों म हडकम्प मचा हुआ है । राव जैतसी समुद्र के समान गजन करता है तथा उसके शास्त्रान्न समुद्र की नहरों के समान परिपूर्ण हैं अथवा अनगिनत हैं ॥१७॥

हठमल्लि जइति मन्नावि हीर, हल्लात्रि हक्कि हिदू हमीर ।

सत जइतसीह आपा सकत्ति, पइ सेव मनाविय देसपत्ति ॥१८॥

धीर गिरोमणि राव जतमी ने अपना शीघ्र सभी से स्वीकार करवाया । उसकी हाथ म हिदू एव यवन दोनों अपनी अपनी राह पर समान रूप में चलते हैं अथवा अपनी हाथ से हिदू तथा यवनों का चलाता है । राव जतमी को स्वयं माता करणी न सक्ति प्रदान की अतः अनेक राजाओं का अपनी पत्न सवा स्वीकार करवाई ॥१८॥

नवसहस जइत नरवड नरेस, देसाधिपत्ति जागळ् देम ।

जिणि भोमि पट्ट पहरिजइ चीर, मुणियइ धर जगळ् कासमीर ॥१९॥

राठोड राव जतसी राजाओं का भी राजा है क्योंकि वह जागळ प्रदेश का स्वामी है । जिग भूमि पर स्त्रियाँ रेशमी चीर धारण करती हैं, इसके कारण यह जगळ धरा द्वितीय बरभोर बही जाती है ॥१९॥

सागणी सऊजळ सेतदन्त, वाणी मुगणि गड गजवन्त ।

साहिनी भोमि वांवा सुभट्ट, यूवार दियट करिमाळ इट्ट ॥१००॥

जागस प्रदण की नवयौवनाओं की दत्त-पत्तिया श्वेत एव उज्ज्वल होती हैं । उनकी वाणी मुहावनी एव व स्वयं लज्जागण होती हैं । उक्त मुहावनी भूमि म बाण गुप्त उच्यन्त होते हैं जो झूझार बन कर तजवार का प्रहार करते हैं ।

वाळिया वघइ धरि-धरि ग्रहाम, ग्रामिया सपूरित ग्राम वास ।

सावन धन घजवघ माह, राठउड राजि रहउहइ राह ॥१०१॥

राठोड जतमी क राय म घर पर लाह की कडियो में अश्व बंधे रहत है । छोट

जागीरदार अपनी जमीन एव निवास स सतुष्ट हैं । स्वण एव अय मुद्राओं से युक्त धजबद शाह (धुंधी) हैं । राठौड़ जतसी के राज्य म सभी वण धर्मों क लोग अपने अपने धम पर चरत हैं ॥101॥

लाप्पीय मिळद माडही लोक, चउहट्ट हाट माणिक्य चोक ।

अतरी गउख ऊजळा आप, अम्मळी कोट खाई अलोप ॥102॥

यगस्वी लोग बाजार म एकत्र होते हैं । वहा अनेक चौहट्टों तथा माणिक्य चौक में हाटें (दुकानें) लगी हुई हैं । अमदनीय कोट, अलध्य परिस्रा एव समीप ही उज्ज्वल काति वाले गवाल हैं ॥102॥

नेहली नीर भरिया नयड्ड, वौकउ दुरग पाखी विहड्ड ।

सारीख जइत सुरिस्ताण साज, रामावतार राठउड राज ॥103॥

नेहली तलाई एव नाड जल से परिपूण हैं । अतीव सुन्दर दुग विस्तृत खाई से युक्त है । राव जतसी बाग्शाहो की सी साज-सज्जा वाले हैं । उनका राठौड़ राज्य रामराज्य की तरह का है ॥103॥

भटनेर भजि सरसउ संधार, हिसार कोट मघावि हार ।

नरहड मुहिम्म मांडियउ नास, वडसी नह हासी करइ वास ॥104॥

भटनेर का भजन किया । सरसे का सहार कर दिया । हिमार के कोट पर शासन करने वानो को पराजय स्वीकार करवा दी । अपनी सेना द्वारा नरहड को नष्ट कर दिया तथा वडसी और हासी म अपना मुकाम किया ॥104॥

सीहनदि समाणा लिया सद्धि, ऊग्रहड असुर आधो अयद्धि ।

कसव सुरक्क छूटइ न कोट, जेजियउ दिमइ जालिघरोइ ॥105॥

यवन बादशाह ने सीहनद और समाणा को अपना वशवर्ती बना लिया । वह यहा की उगाही मे आधा हिस्सा लेने लगा । यवन बाग्शाह मे कोई भी कस्बा बच नहीं सका । जालंधर के शासक को भी जजिया (कर) देना पडता था ॥105॥

भूसिल्लमाण सुरिस्ताण मग्गि, लाहउर राउ सुरिस्ताण लग्गि ।

कळळियउ खुरासाणी कघार सज वीजइ रेवैत सिलह सार ॥106॥

यवन मुल्तान खुरासान के माग से लाहौर के शासक तक जा पहुचा । बाग्शाहो सेना में कोलाहल होने लगा तथा अश्वो को क्वचित करके तयार किया जाने लगा ॥106॥

॥ गाहा ॥

सर सिलह वीजइ ससमारी, असपति राउ हुइसइ असवारी ।

भडा भडिज विलहीजड भारी, वाविल कळळद सेन कंधारी ॥107॥

अश्वो पर क्वच कसे जा रहे हैं क्योकि बादशाह की चढाई होगी । सुभट भारी

मात्रा म अश्वो पर आरुढ होने लगे । कधार प्रदेशीय यवन सेना मे कोलाहल हाने लगा
अथवा काबुल के माग म कधारी सना का कोलाहल हुआ ॥107॥

॥ छन्द पाघडी ॥

काबिली तणा अइयार कोडि, नीसाण रोडि हुद छाडि छोडि ।

जरवादि जडिय जगमे जीण, दळ मीर चडइ मुखि दीण दीण ॥108॥

काबलियों के अनक सनिक नगाडे बजाते हुए 'अश्वों को छोडो—अश्वो को छोडो कहने लग । अश्वो पर कवच-पाखर इत्यादि कसकर जीन कसी जाने लगी । यवन सना चढ रही है । उनके मुह स 'दीन-दीन शब्द का उच्चारण हो रहा है ॥108॥

सुरिताण तणा सम्मूह सत्य, अवथरइ सेन साम्हा अगत्य ।

सह मीर तणउ दरियाउ सद्धि, भीरजा पईठउ देस मद्धि ॥109॥

सुल्तान का सय-समूह मीर की असत्य सेना के सम्मुख प्रकट हुआ । उसने मीर के समुद्र को साघ लिया अर्थात् अपने काबू मे कर लिया । तत्पश्चात् मीरजा दश के मध्य प्रविष्ट हुआ ॥109॥

आविया कटक थटइ अपार, धर घणी उठी पम्मार धार ।

देवद्वर तणउ पाखर अटोल, ठूकउ मुगुल्ल दळि वाइ डोल ॥110॥

अपार सय समूह आया देखकर पृथ्वीपति धार का परमार उससे लोहा लेने के लिए उठा । परमार देवकण क अश्व का कवच सुस्थिर था । वह मुगलों की सेना के सम्मुख डोल बजाता हुआ पहुँचा ॥110॥

कळहियउ रइण सामई काजि, भागली गया दळ भाजि भाजि ।

पहिलउ पछाडि सामई पाणि, सामाहर साचिय सूलिताणि ॥111॥

अपने स्वामी के लिए रतन व्याकुल ही गया अथवा लडा । कायर सनिक दौड कर चले गये । रतन न अपने स्वामी की शक्ति से शत्रु को पछाड दिया । सामा के पौत्र ने सुल्तान का सहार किया अथवा मार गिराया ॥111॥

सइलोट कीघ सामई साहि, मारियउ सलहदी मीर माहि ।

सूमरइ जिसा आमुर सँघारि, महिपत्ति बढा ग्रासिया मारि ॥112॥

अपने स्वामी की सहायता के लिए रतन ने सलहदी मीर माही को मार कर सोषा कर दिया । सूमरे जस असुर का सहार किया तथा उस पृथ्वीपति ने बडे बडे लुटेरा को मार गिराया ॥112॥

वीडरिय विमुहि गउ निदइ वच्छ, काबिली कूत्ति काछियउ कच्छ ।

भाखर अरोड वे चाडि मल्लि, मत्थिया देस मूगळी मल्लि ॥113॥

निदयी वच्छ भयात्रान्त होकर भाग गया । काबुलियों ने अपने भालो को कसकर पकन । भाखर तथा अरोड दोनो को भालों पर चढा दिया अथवा अचलवीर काबुलियों

ने दाना को भाला पर चढ़ा दिया। मुगल ने देग का मर्दन करते हुए उस मानो भय
शाला ॥११३॥

वसि करिय मीर गढ वास वत्थ, पाधरा विया तरहइ पत्थ ।

हईवरा भडा दुहुँ हइ हुत्ति, मुलिताण मी न घातिय मुगुल्लि ॥११४॥

मुगलों ने युद्ध द्वारा मीर के गढ़, निवास स्थान को अपने काबू में कर लिया तथा
उन्हें सीधा करके तितर वितर कर दिया। अशवा और सुभटा दानों का हल्ला हुआ।
उस मुगल ने मुल्तान को अपने मन में बसाया ॥११४॥

कपिलसिद्ध बाटा विवाड, मूगले वियउ पइमाल भाड ।

खड्गरू खडि चलावि खेर, मूगले घूणि सातल्लमेर ॥११५॥

कपिलसिंह दुर्गों का रक्षक था। फिर भी मुगलों ने बाटा प्रान्त का नष्ट कर
दिया। उसने अपने अश्वों के साथ सेना को चलाया तथा सातलमर को घुनकर रख
दिया ॥११५॥

गडि वाइ न लागी हाथ लग्ग, पास्टा गा करिय पग्ग ।

मूगले ऊच सम्भारि मनि, दिवराउर लीयउ अेक दिन्नि ॥११६॥

गढ़ में कोई भी अच्छी वस्तु हाथ नहीं लगी। अंत में उल्टे पर वापस चल दिया।
मुगल बादशाह ने अपने मन में ऊच का स्मरण किया तथा चलते हुए एक ही दिन में
देरावर को अपने कब्जे में ले लिया ॥११६॥

मूमणहवाहण नइ मराट, वाविली लिया पहर महि कोट ।

ऊपरि ऊच फेरावि आण, अदिया भिरी सिरि मूलताण ॥११७॥

मूमणवाहण और मरोट के दुर्गों को बाबुली मुगल सेना ने एक प्रहर में काबू
कर लिया। उसने ऊच पर अपनी दुहाई फिराई तथा मुल्तान के यवना का मर्दन
किया ॥११७॥

भेहरउ वगउ विय भञ्जि भूक, रिणजङ्गि मुगुल्ले दाखि रुक ।

भम्भेरि भञ्जि मंगलउर मारि, प्राजाळ जमू वेव पहारि ॥११८॥

युद्ध क्षेत्र में मुगल बादशाह ने तलवार दियाकर मरहूठ और वगउ को तोड़कर
चूरा बना दिया अथवा कच्चापूर निकाल दिया। तत्पश्चात् भम्भेरी को तोड़ा और मंगलउर
को पराजित किया तथा जम्बू के दोना पहाड़ा को जला दिया अथवा जम्बू को दोना ओर
के प्रहारों से प्रज्वलित कर दिया ॥११८॥

सिरमउर अनइ लाहउर सिधि, वावरी साहि ल्या गळइ वधि ।

देपाळपुरइ पुरि दे दवट्ट हेनारसि लूटिय कोट हट्ट ॥११९॥

सिरमौर और लाहौर की सीमा तक के लोगों को बादशाह बाबर गले में बघन
ढालकर ले आया। देपालपुर पर आक्रमण करके आनन फानन में उसका दुर्ग तथा बाजार
स्थित दूकानों को लूट लिया ॥११९॥

सत जानू खोखर मल्लणास, घोडे वाहा वीघ पास ।

वरिहाउ अनइ जादव विरुद्ध, वाणासि वोटि वीया विसुद्ध ॥120॥

बादशाह बाबर ने अपने शत्रु जानू खोखर और मल्लणास को घोड़ों को पास हातन का राम सौपा । वरिहा और जादवों को विरोध करने अथवा विरुद्ध बनकर तलवारों से काटकर सनाहीन कर दिया ॥120॥

पण्डघार पाडि नारु निवाडि, चूरिया तामिनी गिरेंदि चाडि ।

तूअरइ गया पाहाड तविक, चहुआण चूरि चाडिया चविय ॥121॥

पहिहारो को नष्ट करके नाश्यों को पैरा पर नमाया । उन्हें रात्रि के समय पहाडा पर चढाकर नष्ट कर दिया । तमर पहाडा का लक्ष्य बनाकर चले गये । चहुआणो को नष्ट करके चक्र चढा दिया अर्थात् विचलित कर दिया ॥121॥

असपत्ति उवह दळ आवरत्ति, छलियउ छत्त छत्तीस छत्ति ।

चानाधि वाह किय चक्क चूर, पतिसाह पडइ पइ लङ्घ पूर ॥122॥

बादशाह बाबर समुद्र के समान सारा संधिरा हुआ रहता है । वह पृथ्वी के सभी भागों को वश में करके परिपूर्ण बना हुआ है । चुनाव पर आक्रमण करके उसे चबना चूर कर दिया । लोग नदी का बहाव लाप कर बादशाह के परो में पडते हैं ॥122॥

बजवाडउ कोठी सहर वेव, हालिया हुयइ आगी हरेव ।

नामिया समाणा सीहनहि, रणतूर सहि पाखर रवहि ॥123॥

बजवाडा की कोठा और नगर दोनों (के लोग) सना क आग आगे दौड पडे । युद्ध वादा एव पात्रग की ध्वनि करते हुए समाणा और सीहनह को लुका लिया अथवा पराजित कर दिया ॥123॥

जळ पयि आइ साम्हइ जुडेय, भारत्य इब्राहिम किय भिडेय ।

मूगले वहिय रिण खेत माहि, पतिसाहि प्रवाडइ पातिसाहि ॥124॥

इब्राहिम ने पानी के भाग से आकर बादशाह बाबर की सेना के साथ युद्ध किया । उसने अनेक मुगलों का युद्ध क्षेत्र में वध कर दिया । फिर भी बादशाह के युद्ध चरित बादशाहों के ही समान होते हैं ॥124॥

अके लाख असी अयार, धुणहार पडिय हज्जार घर ।

खाडे खेसोळि डीली डेंडोळि, ईब्राहिम नागिय अडतोळि ॥125॥

पवन सनिक एक लाख अस्सी की सह्यार मध । उनकी हजारों तलवारों से ध्वनि हुई । इब्राहिम ने डीली नामक वाद्य को बजवाते हुए असह्य सनिका को तलवारों की धार से काटकर डाल दिया ॥125॥

आहज्जिन मीर आगरइ आर, रहडिया देस बाजा रुडाइ ।

पहिलउ खडगि चाडिय पठाण, आगरइ वयानई फेरि आण ॥126॥

गीघ्रता के साथ यवन (मुगल) आगर आय । उन्होंने युद्ध वाद्य बजाते हुए
अनेक देशों को विचलित कर दिया । सबप्रथम पठाण उसकी तलवार पर चढ़ा ।
तत्पश्चात् आगरे और बयाने पर अपनी आन (दुहाई) फिराई ॥126॥

पट्टाण प्राण नाखिय पछाडि, चदेरी ताई चविक चाडि ।
जउँणपुरि अजोघ्या खडिय जाइ, रइयति लोक किय मुगुलराइ ॥127॥

मुगल बादशाह ने अपनी शक्ति से पठानों को पछाड़ लिया । उसने चदेरी तक
के लोगों को अस्थिर बना डाला । वह चलकर जौनपुर व अयोध्या पहुँचा और वहाँ के
लोगों का अपनी प्रजा बना लिया ॥127॥

नहवाणी भागा छाडि नेस, दाणवा धणी साभिया देस ।
विडि काडि प्रिसण हूँता विहार, सीवाळ सबइ कीधा समार ॥128॥

नहवाणी अपने घर छाड़कर दौड़ गया । यवनाधिपति न देग की स्ववश कर
लिया । उसने अपने शत्रुओं को लड़कर विहार से निकाल दिया तथा सभी सीवालो को
मार गिराया ॥128॥

वइरिया मीरि देखाळि वड्डु, गोरिया राइ गाहिया गड्डु ।
हिंदुआ तुरुक्काँ दासि हाथ, नडि लगउँ उडीसइ जगनाथ ॥129॥

मुगल बादशाह ने अपने शत्रु यवनों की शस्त्रों की धार दिखाकर उनसे गडों को
नष्ट कर दिया । वह हिंदू एक यवन दोनों को अपने हाथ दिखाते हुए उडीसा के
जगन्नाथ तक जा पहुँचा ॥129॥

विच्ची विहार वम्भणवाह, समसमा देस ग्रहिया सिराह ।
ओइला नइर कुण गिणइ अग, पण्डवइ लगउँ फेरिय पवग ॥130॥

मुगल बादशाह ने बीच में विहार एवं बम्भणवाह जैसे अच्छे-अच्छे देशों को
आतंकित करके ले लिया । अपने पक्ष के नगरों को युद्ध में कौन गिनता है । बादशाह
ने पण्डवइ तक अपना घोड़ा फिरा दिया अर्थात् पण्डवइ तक की भूमि अपने काबू में
करली ॥130॥

पूरव्व घरा हइ खूदि पाइ, वळियउ मुगुल्ल नीसाण वाई ।
पिडि भुइ पह गोवरधन पहारि, खण्डियउ माण खाडे खँडारि ॥131॥

पूर्वी प्रदेश का मुगल ने अपने अश्वा के परा से रौद डाला तथा नगाड़े बजाते
हुए लौटा । उसने युद्ध भूमि में गोवर्द्धन पहाड़ के राजा को अपनी तलवार से मार कर
गव खंडित किया ॥131॥

वइरागर मुगला विठण वाद, मेवाड राण आडउ अजाद ।
सुरिताण सल्ल सुरिताण सड्डु, आवियउ आगरइ दियण अड्डु ॥132॥

मेवाड का महाराणा मुगल बादशाह से युद्ध में मिटने के लिए वदरागर की

मर्यादा स्वरूप आग आया । बादशाहो के लिए शल्प स्वरूप एव बादशाहो की लज्जा रखने वाला महाराणा आगरे के समीप रोक लगाने के लिए आया ॥132॥

चीत्रउद घणी चञ्चळि चडेय, खरहण्ड लेय आयउ खडेय ।

मेवाड राण परभोमि माहि, सीकरी सेन आयउ सनाहि ॥133॥

चित्तौड का शासक मेवाड का महाराणा अपने अश्व पर चढ कर साथ मे अपनी कवचित् सेना लेकर पराई भूमि मे सीकरी तक आ पहुँचा ॥133॥

वाणासि वेवि वळि वधि वोल, धुडहडिय दमामा धुधिय डोल ।

सग्राम सजिय सूरु सधीर, मेवाड राण मुहि चडइ मीर ॥134॥

मेवाड का महाराणा एव मुगल बादशाह दोनो अपनी-अपनी तलवारें लेकर बचन-बद्ध हुए । डोल और दमामे जोर से बजने लगे । धयधारी शूरवीर युद्ध के लिए सजे अर्थात् तयार हुए । मेवाड के महाराणा के सम्मुख मुगल बादशाह चढा ॥134॥

वेलवख लोह ऊडियउ वूर, सर पाए छाह सूझइ न सूर ।

मूगले मळिय मेवाड माण, रेहळिय भेति रूमाण राण ॥135॥

तीरो के फलो से बुरादा उडने लगा । उन बाणो के फलो की छाया स सूर तक भी नही निखाई देता था । मुगल बादशाह ने मेवाड के महाराणा का गव खडित कर लिया । उस मृगानवशीय राणा को युद्ध क्षेत्र म धूल म मिला दिया अथवा पराजित कर दिया ॥135॥

सग्राम राण सीकरी सारि, हाथिया गमिय गउ हेळ हारि ।

मेवाड राण मुहि चडिय मीर, समसेर भाल सोखिय सरीर ॥136॥

महाराणा सीकरी के समीप तलवारो से युद्ध करते हुए जल्दी ही पराजित हो गया और उसन अपने हाथियो को भी खो दिया । मुगल बादशाह के सम्मुख मेवाड का महाराणा चढा पर तु उस (बादशाह) ने तलवार पकड कर उस (महाराणा) का शरीर सोख लिया अर्थात् सुखा दिया ॥136॥

अलव्वरि सेन चडिया अथाह, सोवन लूटि वधिगया साह ।

लागुअे गमिय मेवात लोप, कछवाहा साम्हउ कियउ कोप ॥137॥

अलवर पर अथाह सेना चली । वहा पर सोना लूटा गया और श्रद्धियो को बाँदी बनाया गया । शत्रुओ ने मेवात के गावो का उल्लघन करके कछवाहा पर कोप किया ॥137॥

आवेरि घणी आहवि अचल्ल, मूगले मारि पूराणमल्ल ।

सेखाउत कहता सारि सण्ड, दळिया खडगि हैकलिया डण्ड ॥138॥

अबिर का स्वामी पूरणमल्ल युद्ध म अविचल रहने वाला था परंतु उसे मुगलो

ने मार डाला । नेगावत कहा करते थे 'तलवार उठाओ', उह भी बादशाह ने तलवार के बल पर काट डाला और ऊपर से दड़ भी लिया ॥138॥

निरवाण गया भाजिय नरीद, पतिसाह भजे सेवइ पुलीद ।

डूगराँ धणी गा डण्ड देय, सग्रही सारि सांभरि सवय ॥139॥

बादशाह का भय म निर्वाण नरेश दौड़ गय और निम्नतर जातियो म रहने लग । पवतीय शासक दण्ड देकर गये । केवन सांभर वाला ने तलवार धारण की अपवा सभी सामग्री प्रदेश को तलवार के बल पर अपने काबू म कर लिया ॥139॥

विस्सहर पुर पत्त बहइ वाणि, पह दियइ भेट पूजइ न प्राणि ।

सेसइ खडगि नाणउ खराइ, करिमाळ भाल ऊभइ न कोइ ॥140॥

विस्सहरपुर एव पतेहपुर म मुगल बादशाह का वचन चलता है । वहा के शासक शक्ति मे उसकी बराबरी नहीं कर सकते, अत भेंट देते हैं । मुगल बादशाह अपनी तलवार के बल पर लोगों को मार भगाते हैं तथा उनस परा द्रव्य प्राप्त करते हैं । उसके सम्मुख तलवार पकड़कर खडा होने की किसी मे भी हिम्मत नहीं है ॥140॥

राठउडाँ पासइ अउर राइ, लोक विय मूगुले पाइ लाइ ।

छात पति हेक अम्मळी छत्त, गिरमेर प्रमाणइ तास गत्त ॥141॥ (1)

मुगल बादशाह ने राठोडा को छोड़कर अय राजाओ को परो लगवाकर रयत बना लिया । एकमात्र राव जतसी ही पवित्र छत्र वाला शासक है । उसकी चाल-ढाल हिमालय के समान अचल है ॥141॥ (1)

राठउड राउ जावण रहाडि । मन्नि विय मूगुले मार आडि ॥141॥ (2)

मुगल बादशाह ने राठोड राव जतसी की मनोवांछा जानने के लिए अपना मन मारवाड आने के लिए बनाया ॥141॥ (2)

॥ गाहा ॥

आई या बीजी घर आणी, पटहोडा पवखरिय पलाणी ।

पह केतउ केता विचि पाणी, सेड सिरइ खिडिया खुरसाणी ॥142॥

और अधिक पृथ्वी जीतने की आज्ञा हुई । मुगल बादशाह ने अपने अश्वो का पावर एव काठी बसकर तयार किया । राव जतसी कितने अतर पर और कितने पानी मे है यह जानने हेतु यवन सड (मारवाड) की ओर चल पडे ॥142॥

॥ छन्द पाधडी ॥

खुरसाणि खाफर खेड खत्ति । पारम्भ वियउ उत्तराध पत्ति ॥143॥

बादशाह के सैनिको ने खड (मारवाड) को मन म बसाया तथा उसे प्राप्त करने के लिए तयारी की ॥143॥

साहजरी सेन सम्मिलइ लख, पाखरिजइ तेजी मूध पवख ।
सम्मिलइ साहि आलम समान, सिद्धि सतरि बहत्तरि मिळइ खान ॥144॥

साहजरी में लाखों की सख्या में सनिक एकत्र हुए अथवा यवनो की लाखों की सख्या में सनिक एकत्र हुई । शुद्ध पशु वाले अश्वों पर पापर डाले जाने लगे । वे आलमशाह के ममान एकत्र हुए तथा सतर एव बहत्तर खान सम्मिलित होकर चले ॥144॥

दीवाण तथा फिरिया दरवन, कळळिया ठाहि ठाहै षटवक ।
चमराळा हुई असंस चाळ, छोगाळ छिलड करिमाळ काळ ॥145॥

गासन की सार से सुतर-सवार घूम । स्थान-स्थान पर सना का कौलाहल सुनाई देन तथा । अश्वय यवन चल पडे । यम स्वरूप अद्वितीय वीरो के हाथों में तलवारें सुशोभित हा रही थीं ॥145॥

जोडाळ मिळइ जमदूत जोध, नाइरा कपोमुक्खी सग्राध ।
कुवरत्त केवि काळा किरिट्ट, गढदनी गोळ गौजा गिरिट्ट ॥146॥

यवन सनिक यमदूतों की तरह एकत्र हान लग । उनमें कई टेढ़ी आखों वाले, कई बर मुखी, कई जोधो, कई विघर्षी, कई काले-बलूटे, कोई गोल मटोल गदंन वाले, कई गजे और कई मुटले थे ॥146॥

वेसे विचित्र सिद्धर प्रन, कूडी कपाल के छाज कन ।
बद्दी बररिग, बाचइ कुराण, मुसवीण मुला के मुसलमाण ॥147॥

उन यवन सनिकों में कुछ विचित्र वेश भूया वाले, कई सिद्धर के समान लाल घण्डे वाले, कईया के कपाल कुटों के समान अन्तर की ओर धसे हुए और कंदियों के कान सूप जस थे । उनमें कई मुदा के बड़े मुल्ला लोग एव मुसलमान भी थे, जो हाथों में कुरान लेकर उसका पाठ करते थे ॥147॥

बाका विचित्र पाघोर उद्ध, ताणइ कमाण पईतीस टद्ध ।
आयासि पहि पाडइ अभुल्ल, माकडमुवन मुण्डा मुगुल्ल ॥148॥

उन मुगल सनिकों में कई बांक वीर कई विचित्र शरीर वाले तथा कई टेढ़े चलने वालों का शोषा करने वाले थे । वे पतीस टक का कमाण (धनुष) खिंचते थे । उन कपि मुखी और दृढ मुठ सनिका का निशाना दतना अचूक था कि आकाश स्थित पक्षियों को अपने बाण से मार गिराते थे ॥148॥

मुहरली द्रुठि पाठिली मूठि, साझइ मिरिग्य गुण वाण सूठि ।
सेलार मीर के सखि साह, बावरीवाळ आजानवाह ॥149॥

उन सनिकों में से द्रुष्टिक वाण की धनुष की प्रवधा पर चढ़ा कर अपनी दृष्टि बाण की नोक पर जमा कर तथा बाण के पीछे वाले भाग का मुट्टो में कमकर दोड़ने हुए वृष्टों को मार शालन थे । मुगल बादशाह की सेना में अष्ट्रे अश्व, अमीर एव खेटी थे । उनमें से अनेक सनिक लंबी जटाओं वाले तथा आजानवाह थे ॥149॥

वद्री व्रधक्क के वेधवत्ति पद्धियाँ जु प्रासइ दूरि पत्ति ।

असपत्ति तणइ दळि अस्सराळ, काविली केवि धारा कराळ ॥150॥

बादशाह की असह्य सेना में अनेक युद्धों में शत्रुओं का विनाश करने वाले, लक्ष्य वेधी, कई दूर से ही पक्षियाँ का फसाने में प्रवीण एवं कई मयकर तलवार धारण करने वाले थे ॥150॥

मोटा मुगुल्ल महोनमत्त, अमिळित्त दियइ अरि आवरत्त ।

कम्मरइ कोपि वीया वटक्क, हइमराँ हीस भड हूइ हवक् ॥151॥

बादशाह के कई सैनिक मुटल्ले एवं मगो-मत्त थे। वे मिलते ही शत्रु के इद गिद घेरा डाल देते थे। इस प्रकार के सैनिकों को साथ लेकर कामरा ने क्रोधित होते हुए अपनी सेना बनाई। अश्वों की हीस और योद्धाओं की हाक (वीरहक्क) होने लगी ॥151॥

काळवा कुही वरडा कियाह, हाँसला हरेवी नइ हलाह ।

रोळडा महूडा पोतरङ्ग, तोरवी केवि ताजी तुरङ्ग ॥152॥

उपर्युक्त पद्य में वर्णित सभी नाम और जातियाँ घोड़ों की हैं ॥152॥

डूगरी मसवकी वेसि दीय, अइराक् ततारी आरबीय ।

सुरसाणी मकुराणी खतङ्ग, पतिसाह तणा छूटइ पवङ्ग ॥153॥

उपर्युक्त पद्य में तीनों चरणों में घोड़ों के नाम और जातियाँ हैं। चौथे चरण का अर्थ होगा—मुगल बादशाह कामरा के इस प्रकार के अश्व छूटे ॥153॥

जङ्गमाँ जीण पूठी जडेय, लाहउरी ऊठिय खग लेय ।

ताणावि तग चडिया तुरेह, खडखडइ खोणि खईगाँ खूरेह ॥154॥

अश्वों की पीठ पर काठियाँ बसी गई। यवन तलवार लेकर उठे। उन्होंने अश्वों के तग खींचे और उन पर सवार हो गए। चलते हुए अश्वों के परो (सुमो) से पृथ्वी खट खट करती हुई बजने लगी ॥154॥

सुरिताण सेन सुरिताण सीव, हालिया कि हइदळ जाणि हीव ।

दविखण देस सिर रडवड दीण, लाहउर हुँता हालिया लीण ॥155॥

सुल्तान की सीमा मेंचल सुल्तान की ही सेना है अर्थात् उसकी बराबरी करने वाला कोई नहीं है। उस सेना का अश्वदल चलता हुआ ऐसा प्रतीत होता था मानो हिमालय हो। दक्षिण दिग पर आक्रमण करने हेतु यवन लाहौर से चल पडे ॥155॥

असतरे सलीता अस्मराळ, कामाळी पूठी के वँठाळ ।

ऊमारि तडणी पूरि अम्म, वाँसइ सहारि वूहा विखम्म ॥156॥

अनेको घञ्चर नदी के समान चलते थे। अश्वों की पीठ पर कई सैनिक सिंह के समान दिमाई देत थे। जल से परिपूण बहुत बड़ी नगी की पीछे छोड़कर वे डरवाने सनिक चले ॥156॥

हासयार मार साथी हजार, वानगह बहुत का०१ बजार ।
जोगिणीपुरा जे अङ्ग जीत, दिसि बडी तणा वड्डा दईत ॥१५७॥

होजियार मुगल बादशाह के हजारो साथी हैं । अनेक बनियो की दूकानें,
कोठिया और बाजार साथ चलते हैं । दिल्लीपति जो हमेशा युद्ध में विजयी रहते हैं,
वे अच्छी दिशा के बड़े दाय हैं ॥१५७॥

आसमुद्र साधि आप असाध, ऊलटियउ आवइ उत्तराघ ।
डउडै दमाम नोसाण नद्, सम्प्रत जाणि घण मेघ सद् ॥१५८॥

स्वय अविजित रहते हुए मुगल बादशाह ने समुद्र पर्यंत पृथ्वी को स्वयंश कर
लिया । ऐसा यवनों का दल उमड़ा हुआ आ रहा है । दउडो, दमामे तथा नगाडो की
ध्वनि हो रही है मानो प्रत्यक्ष में मेघ गजन हो रहा हो ॥१५८॥

निरवहइ अति रोजा निवाज, सम्बळीवाळ के तवलवाज ।
जब्बा पलीत मुगुल्ल जूह, सारक्क जाणि बोळइ समूह ॥१५९॥

मुगल बादशाह कामरा के कई तबला वादक एवं बम्ब वादक रोजे का अत एव
नमाज का निर्वाह करते थे अर्थात् वे रोजा रखते एवं नमाज पढ़ते थे । मुगल समूह
की बोली अशुद्ध थी । परस्पर बोलते हुए ऐसे प्रतीत होते थे मानो सारिकाओ का झुंड
मम्मिलित स्वर से कुचर कुचर कर रहा हो ॥१५९॥

चळचळिय चक्रवइ च्यारि च'द, दळ रजो पाइ छायाउ दुणि'द ।
मूगले जिनावर वाणि मारि, आयास हूँत आणइ उतारि ॥१६०॥

चारो दिशाएं चलायमान हो गई । मुगल बादशाह कामरा की सेना की पदरज
से मूय ढक गया । मुगल सैनिक पक्षियों का बाण मार कर आकाश से उतार लाते
हैं ॥१६०॥

जोगळ राउ उपरइ जम्फ, सतलज्ज सङ्घि सुलिताण सम्फ ।
वीठउँडइ अब्भोहर विचाळि, नीसरिय वटक् सइजप्प नाळि ॥१६१॥

मुगल बादशाह कामरा की सेना ने सतलज को पार किया तथा वीठउँड और
अब्भोहर नगर के मध्य से निकली । पूरी सेना तोषो से युक्त थी । यह आक्रमण जोगळ
के शासक राव जतसी पर हुआ ॥१६१॥

पतिसाह सेन वहतइ प्रमाणि, जळदुग्गम माघइ रोछ जाणि ।
मूगली घडा भटनेर माळि, ऊडाइ असणिवि ससीवाळि ॥१६२॥

बादशाह की सेना चलती हुई ऐसे प्रतीत होती थी मानो जल दुग् (समुद्रीय
पक्ष) पर हल्की बदळिमाँ छा रही हों । मुगल सेना भटनेर पर आई । उनकी व दूकें
चलती थी माना बिजली चमक रही हो ॥१६२॥

मुमरिया देय पाखी भमेय, आडाविय तम्बू ऊनरेय ।

खेतसी सामहा खान, परठिया साहि आलमि प्रधान ॥163॥

जिस प्रकार पक्षी गोलार्ध में घेरा बनाकर उड़ते हैं, वस ही मुगलो की सेना न उतरते हुए एक-दूसरे से सटा कर तम्बू खड़े कर दिये । तत्पश्चात् बादशाह ने अपने प्रधानों को खेतसी के पास भेजा ॥163॥

वातऊरत कहियउ विचार, डंड देहि नमिय लइ धम्मद्वार ।

अरडककमल्ल सम्भ्रम अवीह, सांभळिअे कयिने खेतसीह ॥164॥

उक्त प्रधानों ने वाता ही बातों में अपना मत य प्रकट किया कि खेतसी दंड देकर बादशाह का मनन करे तथा साथ ही मुसलमानों धर्म भी अंगीकार करे । अरड कमल्ल के पुत्र निभय खेतसी ने उक्त कथन को सुना ॥164॥

झूसार झंडीलउ सीस झाडि, बोलियउ बाल फाडी वराडि ।

ठाहरियउ परधान ठेलि, सुरिताण आउ सामहइ सेलि ॥165॥

योद्धा खेतसी वृष पर टपी पताका के समान श्लोष से वापता हुआ ऐसा बोलना मानो कोई लकड़ बौरा जा रहा हो । थोड़ी देर बाद उमने प्रधानों को वापस भेज दिया तथा कहा—बादशाह अपने गत्यास सम्हाल कर आ जाये ॥165॥

दीवाणि दियउ नह नमिय दाउ, घडिया हरि जायउ दिवण घाउ ।

ऊससिय खेतसी आप अडि, अइयार सार चाडिय अलडि ॥166॥

शासनाध्यक्ष खेतसी ने कुछ भी नहीं दिया और झुका मो नहीं । जिस प्रकार घडियाल पर प्रहार करने के लिए व्यक्ति उठता है उसी तरह खेतसी उठा । वह अपने शरीर से उत्साहित हुआ अथवा खेतसी के अंग उत्साह से भर उठ । उसने अपने अनेक शत्रुओं को तलवार की धार पर चढ़ा दिया ॥166॥

सीघलउ माहि खेतसी सेर, भारी दुरङ्ग गढ भट्टनेर ।

रउद्रमइ फेरियउ चत्र राह, गाजिया गोण चउहूँ गमाह ॥167॥

सीघला में खेतसी गिह के समान है । उसका भटनेर दुग बहुत बड़ा है । यवना ने अपना चत्र चलाया अर्थात् युद्ध प्रारम्भ कर दिया । चारों ओर घनुष की प्रत्यन्वार्य गजने (ध्वनित होने) लगी ॥167॥

सुरिसाण तणे वाहिय खतङ्ग, आखरे कियउ भटनेर अङ्ग ।

काविली तणा नाखिय करेह, सरजाळ कोट वीयउ सरेह ॥168॥

बादशाही सेना ने तीक्ष्ण बाण चलाये । अततो गत्वा भटनेर पर युद्ध शुरू हो गया । यवन सैनिकों ने अपने हाथों से अग्नि बाण चला कर दुग को जला दिया ॥168॥

कविलउ कलूळ क दळ करेय, फारका पूठि फिरणी फिरेय ।

नीछँटिया गोळा तत्र नाळि, पावक जाणि पडठउ पलाळि ॥169॥

मुगल बादशाह फूर बराह की तरह युद्ध कर रहा था। वह अपने सनिकों के पीछे फिरकी की तरह घूम रहा था। उसकी तोपों से गोले छूटने लगे। वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो बचरे के ढेर में अग्नि प्रविष्ट हो गई हो ॥169॥

मूगले कहिय मुहि मारि मारि, धूणियउ कोट काळइ बँधारि ।
पतिसाह तणे झालिय पखाण, जुधि चडिय लङ्क बनरा जाण ॥170॥

मुगल सनिकों ने अपने मुह से मारो मारो कहा। महाकाल रूपी मेना ने दुग को धुनकर रख दिया। तत्पश्चात् बादशाह के सनिकों ने हाथों में पहपर पकड़े। वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो लका में बन्दर युद्ध के लिए चढ़े हो ॥170॥

चडिया नीसरणी चढी चोट, काविली बटवके भेळि कोट ।
सत्रान करे साळ सकार, हीडोळिय तुळसी कण्ठि हार ॥171॥

यवन सनिक सुरत फुरत नीसरणी पर चढ़े और बोट की भेळ दिया अर्थात् बोट के बन्दर प्रविष्ट हो गये। उसी समय बोट के निवासी भल भले यत्तियो ने स्नान करके अपने अपने गले में तुलसी का मालाएं धारण कर ली ॥171॥

बाँधलहरउ बळहण वरेय, बडरियाँ घडा आपउ वहेय ।
साम्मूह मरण साळ सयळ, करिमाळ माहि वाडिय बळळ ॥172॥

राव बाँधल के पौत्र सेतसी ने शत्रुओं की सेना में प्रवेग करके युद्ध किया, परन्तु जब बोट भेळ लिया गया, तब उसने समूह मरण का निणय लिमा तथा स्त्रियों को तलवार के घाट उतार दिया ॥172॥

पतिसाह सल्ल उघाडि प्रोळि, उतेडि अड्ढि आउघ इतोळि ।
वानइत जेस राणिङ्गदेव, बोलिया वाघ जिहूँ वाँह वेव ॥173॥

बादशाहों के लिए शन्य-स्वरूप सेतसी ने तदुपरांत अपने बोट का मुख्य द्वार मीन दिया। क्रोध से उसकी आँखें चढ़ गई तथा वह अपने शस्त्रास्त्रों की जांच करने लगा। युद्ध वेगधारी (वानेत) जसा और राणिगन्धेव दोनों सिंह के समान हुंकार भरते हुए दाना हाथ उठाकर बाँधे अथवा दाना वानेत बाघ के समान दहाड़े और रक्षक के रूप में वे मनमी के साथ चलने लगे ॥173॥

भटनेर प्रोळि हेता भटविण, बाँधलाँ राउ पड्डउ बटविण ।
सेतल रिणि ससइ खुरासाण, जुघ घसइ मत्त गइ जह जाण ॥174॥

बाँधल राव मनमी भटनेर की पील से चलकर मेना में प्रविष्ट हुआ। वह गुड में बादशाह की गाता (यवनों) को मौत के घाट उतारा लगा। वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो युद्ध क्षत्र में गज-गूष प्रविष्ट हो रहा है ॥174॥

सुरिताण तणाँ सलार सवय, सगमूलइ उपरि लुत्रि नवम् ।
छलियउ सेतसो मग्ग छोहि, लसवरी साम् उपरइ चोहि ॥175॥

बादशाह कामरों के बहुमूल्य अश्व बहुत बढ़ी सख्या में खेतसी व ऊपर झूमने
 गिर रहे थे। राव खेतसी तलवार पकड़ कर रोपाविष्ट हो गया तथा सासों की
 सख्या बाल लश्कर पर घात चलाया ॥175॥

पडियउ रिणि खेतल पिसण पाडि, मालहरि चाडि धज मारुआडि ।

काँधल किवाड वसी करेय, लोपियउ भीर भटनेर लेय ॥176॥

राव खेतसी युद्ध में अनेक क्षत्रियों की मारता हुआ स्वयं भी गिर पड़ा। राव
 माना व वश और मारवाड पर वश की ध्वजा फहराई। काँधल-कपाट खेतसी का वश
 में बरबरे तथा भटनर पर अधिवार बरबरे बादशाह आग बढ़ा ॥176॥

रोमाइ रोडि बाजा रउद्रि, मेखळा जाणि मेह्ही समुद्रि ।

मोटा गढ जीपिय हेळ मत्त, छहलण्ड खिडइ सिरि खेड छत्त ॥177॥

यवन मन्त्रियों ने प्रोद्युक्त होकर बाजे बजाये। वे ऐस प्रतीत होते थे मानो
 समुद्र ने अपनी सीमा छोड़ दी हो। यवन बादशाह ने बड़े-बड़े गढ़ आनन-फानन में जीत
 लिये। अब वे यवन सेड के शासक राव जतमी पर चढ़ कर च ॥177॥

गाजणइ तणा चडिया गरट्ट, थळवाट पईठा गिडिय घट्ट ।

हालिया सेन हइ वाजि हम्म, हिंदुवइ राउ साम्हा हसम्म ॥178॥

मुगल बादशाह कामरों की सेना घड़ी। वे चलकर थली प्रदेश में प्रविष्ट हुए।
 हिंदूपति राव जतमी के सम्मुख सना चली। उसमें चलते हुए अश्वों की हम्म हाने
 लगी ॥178॥

सुरिसाण खदंग ऊडो गुरेह रवि छायाउ अम्बर रजो रेह ।

चमरालाँ पाये ऊडि चीघ, गूदळइ त्रिवख भूखइ गइंध ॥179॥

मुगल बादशाह के अश्वों के परों (मुमों) से जो बारीक धूलि उड़ी, उससे
 आकाश स्थित मूय आच्छादित हो गया। इसी तरह अश्व अश्वों की परों से जो धूलि
 उड़ी, उसमें वृक्ष अस्पष्ट दिखाई देने लगे तथा हाथी घुटने लगे ॥179॥

असि पाइ यह ऊडो उलुयक, गो गइण विची मिळि गोघुळुवक ।

वरहास खिडइ ऊलळी वग्ग, कळहिवा वमइ वम्माण वग्ग ॥180॥

मुगल बादशाह के अश्वों के परों से जो स्पष्ट सेह उड़ी वह गगन के मध्य
 गोघुलि का में मिल गई अथवा गोघुलिका सा वातावरण बन गया। अश्व डौली लगाम के
 साथ चल रहे थे तथा सनिक युद्ध करने हेतु हाथी में बरमाण धारण करके चल रहे
 थे ॥180॥

मूगळी घडा आवइ मजूस, जासूस फिरइ पसत जापूस ।

मुहरम आवि कहियउ मुहाह, असपति सेन आवइ अयाह ॥181॥

मुगला की सना तलवारा की बाह म आई । पशता जानने वाले उसके जासूस
 पूम रहे थे । राव जतसी को अपने जासूसों ने आकर कहा—बादशाह की अथाह सेना आ
 रही है ॥१८१॥

भारी कटकक घर घुसने भारि, आविया वाउसू सरि उतारि ।
 हनहलिय देस हइवइ हुवासि, तडवागे पडिया लोक त्रासि ॥१८२॥

सेना इतनी जबरदस्त है कि उसके भार से पृथ्वी धसो जा रही है । जासूस उसे
 तानाब के पास उतार कर आये हैं । बादशाह की सेना के भय से पूरा देस चलायमान हो
 गया और सेना के भय से लोग दुखी हो गये ॥१८२॥

देसपति उवारइ का दईव, जीवासणि भागी लेय जीव ।
 मेदनी वेडि मूसल्लमाण, जितावर चिडिया पडिय जाण ॥१८३॥

जीवित रहने की आशा स्वय अपना जीव लेकर भाग गई । ऐसी स्थिति में देश
 का राजा ही रक्षा कर सकता है अथवा देव । रमत के पीछे यवन इस प्रकार पड गये हैं
 जमे चिडियो म बाज पडता है ॥१८३॥

थरहरिय प्रजा जिम नीर थाळ, भाखरे भाजि चडिया भुवाळ ।
 आगळी प्रजा आई अबीह, सरणइ विजपञ्जर जइतसीह ॥१८४॥

समग्र प्रजा थाली के पानों के समान अस्थिर हो गई । बहुत म छुटभया शासक
 दौडकर पहाड़ पर जा पडे । मरु प्रयेण की प्रजा निडर वज्रपजर राव जतमी की शरण
 म आई ॥१८४॥

॥ दूहउ ॥

विय हूवळ चञ्चळ वळळ, गइ प्रावक गडवक ।
 दरस्यउ सरि सुरिताण दळ चळचळ च्यारे चक्क ॥१८५॥

अश्वों ने हीस कर को ताहल किया और नगाणा की ध्वनि दूर दूर तक पञ्ची ।
 ऐसी स्थिति में तानाब के पास बादशाह कामरा की सेना शक्तिगोचर हुई जिससे चारों
 दिशाएँ चलायमान हो गई अथवा वापने उगीं ॥१८५॥

॥ गाहा ॥

दळ सुरिताण जाण डूगरि दव दम्पो धरा हुई प्रज लवत्रव ।
 अह सुरिताण आत्रियउ अवधरि, वरन तणा ऊठिय गज केसरि ॥१८६॥

बादशाह कामरा का साथ दन माना पवतीम अग्नि हो । उसे दबकर समग्र
 पृथ्वी की प्रजा चलायमान हो गई । बादशाह कामरा रूगो सप उतर कर आया तो उसके
 सम्मुख गज शान्त राव जैतमी उठा ॥१८६॥

॥ छन्द पाण्डो ॥

मेल्हिय प्रधान कहियउ मुगुल्लि, धर साजि मुहर हू म करि दित्लि ।

छाँ छत्र सरिस मम जाहि छहि, दस कोटि द्रव वीवाह देहि ॥187॥

मुगल बादशाह कामरां न अपने प्रधानो का भेजकर राव जतसी से कहलवाया कि तुम अब समग्र पृथ्वी बादशाह को समर्पित कर दो । इसमें डील मत करो । कामरां जेने बादशाह की छत्रछाया को देख कर अलग मत जाओ । बस, दस करोड़ रुपये और एक कन्या विवाह के लिए दे दो ॥187॥

वीकहर राउ साभळि वचन, रीसाइ त्रिया राता रतन ।

ऊससिय वीमि लागउ अवीह, सांभळिअे त्रियिने जइतसीह ॥188॥

राव बीका के वंशज राव जतसी ने मुगल प्रधाना के वचन सुनकर शोध से आँसू लाल कर लीं तथा उत्साहित (प्रपुल्लित) होकर आकाश तक जा उगा ॥188॥

केसरि कथिय सांभळि कथि, घाउळि कि वधि लागउ वहुनि ।

वीकाहर राजा अे घसाण, जाळोवळि सीतउ घित्त जाण ॥189॥

सिंह स्वरूप राव जतसी ने अपने श्वशुरों से बादशाह का कथन सुना तो मांगो बबूल के धन में आग जग गई हो अथवा जल की आग में वात्याचक्र उत्पन्न हो गया हो । राव बीका के पीत की यही शोभा है । उसके मन रूपी अग्नि में माना कथा रूपी घत की आतृति डाल दी गई ॥189॥

ठलिअे प्रधाने राइठीड मालइ जिम वोलिय वसि मीड ।

मालइ जिम मारिय त्रति मीर, जीव ले भाजि गउ नेमजीर ॥190॥

राव जतसी ने प्रधाना का लौटा लिया । जिस प्रकार रावळ मल्लीनाथ बोला था उसी प्रकार यह वंशिशिरोमणि बोला कि जिस प्रकार राव मल्लीनाथ ने युद्ध क्षेत्र में यवनों को मार भगाया था तथा नेमजीर अपना जीव लेकर भाग गया था, उसी प्रकार मैं भी यवनों से भिड़ूंगा ॥190॥

तिम करइ जइत तुडिमल्लि तोइ, कमरा कमघ भाजइ न वोइ ।

वीजुळीखान चउंटेइ विभाडि, तारावटि वाडिय छहि ताडि ॥191॥

अद्वितीय वीर जतसी भी उसी प्रकार करेगा, जसा आचरण रावळ मल्लीनाथ ने किया था । हे कामरां ! राठीड क्षत्रिय तेरे आगे से दौड़कर नहीं जायेंगे । राव चूडा ने विजुलीखान को युद्ध में मित्कर अपनी तलवार के बल पर प्रदेश के किनारे तक पहुँचा दिया था ॥191॥

सतसल्लि राइ धार वळि सोइ, परोजखान भागउ पलोइ ।

महमदखान रिणमल्लि मारि, अखियात वात आपा उवारि ॥192॥

शत्रुशत्रु राव चूडा ने अपनी तलवार के बल पर फीराजगान का पराजित

कर के मगा दिया था। राव रणमल्ल ने महमूद खान को मारा था तथा अपने बंध की मुयश वार्ता की रक्षा की थी ॥192॥

सारङ्गखान जोधइ समतिय, हिंदुवइ राइ वहि आप हतिय ।
बङ्गाळ कहा मोखावि धान, सातल राइ भागउ सेरधान ॥193॥

राव जोधा ने सारङ्गखान को मथ डाला। हिंदूपति राव ने स्वयं अपने हाथ से उसका बंध किया। राव सातल ने शेरखान को पराजित करके बंधनों से अपने ऐश्वर्य की रक्षा की अथवा बंधनों में अपनी आन-दान का छुड़ाया ॥193॥

जोगणीपीठि वीकइ जुडेय, काढिया नाळ करवइ करेय ।
पाधरइ वेति दूदइ पचारि, सूडाळ लिया सिरियउ सेंघारि ॥194॥

राव वीका न तिली के बंधनों के साथ भिड़कर अपनी तलवार के बल पर उन की शेरिया निकाल बाहर की। राव दूदा ने समतल मैदानी युद्ध में सिरियाखान को सतकार कर उमका सहार किया और उसके हाथी छीन लिये ॥194॥

लूणकरि राइ महमूद लभि, खेसिधउ सान ऊजळइ खणि ।
नागउर तथा भाँजिया नरीद, गङ्गावे राइ लीया गइँद ॥195॥

राव लूणकरण ने मुहम्मद खान के साथ भिड़कर उसे अपने उज्ज्वल खडग में पराजित किया। राव गागा ने नागौर के शासकों को पराजित करके अनेक हाथी हस्तगत कर लिये ॥195॥

माराविस साथी मीर माउ, रहवर हुइ हालइ नही राउ ।
पाछा प्रधान गा पातिसाहि, मछरियउ जइत गढ द्रुग माहि ॥196॥

प्रधान सौत वर मुगल बादशाह कामरा के पास गया। उन्होंने बताया कि राव जतसी अपने बोट में रोया मत्त हुआ बटा था। उसने कहा है कि बादशाह अपने घमंड के बगोभूत होकर अपने साथी मंत्रियों का मरायगा। राव जतसी उसका भोमिया बनकर नहीं चलना अर्थात् नहीं रहेगा ॥196॥

जागळुअउ मरणइ घाति जग, त्रिनि मिति न दी साहइ खडग ।
रउद्री वाजा वाजि राडि, गइणाग जाणि घउहडिय गोडि ॥197॥

जांगळू राव जतसी ने अपनी रथ को अपनी शरण में लिया। उसने जरा-सी भूमि भी बादशाह को नहीं दी तथा उमक सम्पुस्त खडग धारण की। बंधनों ने युद्ध वाजा को बजाया जिसकी गजना में आकाश भी गजने लगा ॥197॥

चऊवलि चडेय वाधिय चुगुल्ल, मुर छय माडि माथइ मुगुल्ल ।
पुहतइ पतनि पव्वउ पराह, सुरिताण चडइ सामइ सराह ॥198॥

मुगल बादशाह कामरा ने अषा अश्व की पीठ पर अपनी चुगुनी बांधी तथा

अपने पर तीन छत्र तनवाये । तत्पश्चात् वह पवन की तरह बस्ती म पहुँचा । अब मुगल बादशाह सरो के सम्मुख चलेगा ॥198॥

पावरणउ कीयउ पातिसाहि, मूचइ मिरिगघ हइ थहु माहि ।

थळ थूळ मूळ हइउर थहु, पाघरा किया पाअे पहहु ॥199॥

बादशाह कामरा की सेना के अश्वों का क्वचित किया जाने लगा । इस अश्व समूह में मृग घुटने लगे । सना के अश्वों ने अपने ओठों और पंखों से रत के टीकों एवं धुपों की जडा में एकत्र हुई धूल का सपाट (समतल) बना दिया ॥199॥

साहण समद ऊछळिय सारि, साइयर वउण सकइ सहारि ।

रहचडियउ आवइ रीस रोम, बाजाँ सबहि फाटइ वयोम ॥200॥

अश्व सेना रूपी समुद्र में तलवारें प्रकट हुईं अथवा वह तलवारों से परिपूरित हो गया । इस कामरा रूपी समुद्र का सहार कौन कर सकता है? वह शोध में मरा हुआ भिड़ता हुआ आ रहा है । युद्ध वाद्यों की ध्वनि में आकाश फट रहा है ॥200॥

पाअे हसम्मि हालइ पयाळ, फडफडइ नाग फाटइ फुणाळ ।

राया राउ ऊपरि असुर राइ, जळराट जाणि मेलही अजाइ ॥201॥

मुगल सेना के अश्वों के पदाघात से पाताल हिल रहा है । वासुकि फटफट रहा है (यादुन हा रहा ट) क्योंकि उसके पंख पट रहे हैं । राजाओं के राजा राव जतसी पर यवन बादशाह चक्र आया है मानो समुद्र ने अपनी मर्यादा छोड़ दी है ॥201॥

पुड सातद धूजिय पवंग पाइ, नागोद नाचि नावति निहाइ ।

झूबाग आगी भिखइ च्याळ, मुस्साहळ जाणे नखत माळ ॥202॥

बादशाह कामरा के अश्वों के पदाघात से माता पाताल कम्पायमान हो गये । युद्ध-वाद्यों की ध्वनि से वासुकि नाचने लगा । यादवाओं के सम्मुख अग्नि की लपटें चमकती हुईं लिंगाई देती हैं । सना के इन् गिद जलती हुईं मशालें ऐसी प्रतीत हो रही हैं माना नश्व माना है ॥202॥

पतिसाह मेन दीवी परिसय उडियड किरि आवद अन्तरिखय ।

रेवत मेडि चउ पहर राति पतिसाह सेन ठूका प्रभाति ॥203॥

बादशाह कामरा की सेना ने घेरा बनाया । वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो आकाश में म तारे उतरकर आ गये हों । बादशाह की सेना ने अपने अश्व चार प्रहर राति के समय बनाये थे वे प्रभात के समय पहुँचे ॥203॥

मुजनमौ पग वाजिया माळ, रवि च्याळ समी ऊडी रिवाळ ।

धमधमइ घण्ट पापर घिसत मल्हपता आवइ मदीमत्त ॥204॥

अश्वों के पदाघात से पृथ्वी ध्वनित हो उठी । मूख की निरणों के समान धूलि

उठने लगी । हाथिया व गल मे बध घटे घमघमा उठ और पालरा के घपण स ध्वनि हुई । इस प्रकार मदा मत्त यवन सनिक क्षपट्टा मारते हुए आ रहे है ॥204॥

पटहसति सूडि फेरइ प्रचण्ड, ब्रिख दिसा वोम नाराइ वयण्ड ।

पटहसती छाया पवखरेह, पाहाड जाणि हालइ भगेह ॥205॥

हाथी अपनी सूड म बहुत बडे-बडे फटट पकड कर घुमा रहे थे तथा वृक्षो को उगाड उताड कर आकाश की आर फेंकत थे । पट्टहस्तो पवखरित विय हुए ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो पवत ही परा पर चलने लग हो ॥205॥

गति इसी डाल पूठी गडद, विरहणो कि पासे जाणि वीद ।

सोहियउ मुगुल्ला सिविवरेह, माही कि मच्छ ताणियउ मेह ॥206॥

हाथियो की पीठ पर हींग बसा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो विरहणो स्त्री के पास उसका पति बठा हा । मुगल बादशाह की सना टीबो पर इस प्रकार शाभित हा रही था, मानो बादलो के अन्दर मच्छ (विशेष प्रकार की मूय किरणों) तन गया हा ॥206॥

पारसीपोस आहीनपोस, रेवन्त खेडि आया सरोस ।

तलहटी बाइ रोडिय तवल्ल, ढईचाळ पूठि ढळवती ढल्ल ॥207॥

पारसी के पाता एव वानून के शाता यवन रोदाश्रात हाते हुए अश्व चलाकर आय । उहान तलहटी म पहुच कर तवल्ल वजाने शुरू किये । हाथिया की पीठ पर ढाले सटव रही थी ॥207॥

इम कहिय असुरि आउघइ ताळि, पसरिस्स्या देस गड खेधि प्रोळि ।

ऊळटउ मुगुल देगिय अभत्ति, प्रज आडउ हूमउ देसपत्ति ॥208॥

मुगल बादशाह कामरां न हाथियार उठाते हुए इस प्रकार कहा—गड की पीठ को अवरोध करके फिर देस म फेंकेंगे । इस प्रकार निडर होकर उनटते हुए अर्थात् आप्रमण के लिए तबरा व साथ आत हुए उम देखकर दश वा अधिपति राव जतसी प्रजा का रक्षक बना ॥208॥

दुरवेस कहा गरहावि देस, नमि कोट विची न रहिय नरेस ।

पतिमाहि सेन दीठइ प्रमाणि, नोसरिय जइत रुडतइ निसाणि ॥209॥

यवन का प्रदेश देकर तथा उग्र आगे झुककर राव जतसी काट के अन्दर नहीं रहण । यह बादशाह की सेना का दमत ही अपन नगाडा का बजात हुए निकल पडा ॥209॥

उरि वरिय प्रजा जइतसी राउ घर वरि चलिय दे डोलि घाउ ।

भारत्य जइतसी भळिय भार, लसन्नी विलाया आप लार ॥210॥

राव जतसी ने अपनी प्रजा को हृदय में बैठीया तथा उन्हें घर घर डाल पर

हका दते हुए चला । रात्र जतसी ने मुद्र का दायित्व अपने ऊपर लिया तथा अपने सनिकों की अपने पीछे कर लिया ॥210॥

आविया मीर तेजी उलाळि, वाराह विठवा वाग वाळि ।

गहवत जइत साम्हउ मुगुल्ल, तढमल राउ चिहॅराइ तुल्ल ॥211॥

मुगल बादशाह कामरा के सनिक वराह के समान आश्रमण करने के लिए अपने घोड़ा की वाग घुमा कर उन्हें तेज चाल से चलते हुए आये । मुगल बादशाह के सम्मुख गर्वीला राव जतसी था जो अद्वितीय याददा नसिहराव के समान था ॥211॥

आघारि वग आयासि लग्ग, खुरिमाण सडि सिविया सडग्ग ।

असपत्ति मेन सउं खलि आळि दाटाळ जेम आग्यउं दिखालि ॥212॥

राव जतसी अश्व की लगाम पकड़कर आकाश तब जा लगा । यवना और राठीडा के मध्य तनवारों घमकन लगी । बादशाह कामरा की गना से छेड़झानी करके राव जतसी ने वराह के समान अपनी आँखें दिखाई ॥212॥

दळ जइतसीह उरि कियइ डारि, पतिसाह तण न सक्थि पचारि ।

वीकहर देथ विसमउ वराह, ताणिया मुगुल्ले पाउ ताह ॥213॥

राव जतसी रूपी वराह ने अपना सना रूपी डार का छाती के आग लिया । बादशाह कामरा की मेना उस तनवार नहीं सही । रात्र बीका के पीत्र की प्राधाविष्ट वराह के समकग देखकर मुगल ने अपने पर चलाय ॥213॥

असिपत्ति राइ वीवानेर आइ, छावाण तेंगोटी रही छाड ।

गुरमगइ अनइ गूडर सडोइ, जोजन रहिय मेल्हाण जाइ ॥214॥

बादशाह कामरा वीवानेर आया । उसने तम्बू लगाटिया, गुरमगह, साइवान इत्यादि तनवा दिये । इस गना का पडाव चार कास की परिधि में पना हुआ था ॥214॥

सावाण ताणि ताणिय सराइ वाइ नेजउ भूलइ अद्वयाइ ।

पुरि पाटणि आयउ पातिसाहि, मावइ न मेछ सनाह माहि ॥215॥

बादशाह कामरा नगर के मध्य आया । यवन अपने कबचा में नहीं समा रहे थे । उन्होंने सावाण तथा मराय नामक शत्रु तनवाय । उसका नेत्र (ध्वज) हवा से अघर में झूल रहा था ॥215॥

दुरवस प्रोळि आयइ दुमारि, मावउ भोजि प्रउंघिजइ सारि ।

झुवार भोज घट सारि चालि, पडिवाळ हूअउ पडिय प्राळि ॥216॥

बादशाह कामरा गड की पास के पास आया । भात्र न उह तनवार से पीसा (सन्तुन किया) । याददा भात्र तनवारों द्वारा अपना शरीर बटवा कर स्वयं तनवार बन कर पाल के माथे गिर रहा ॥216॥

जस्तूग रहिय जाणइ जगत्त, छप्पन कोडि ऊजाळि छत्त ।
अहोनिंसि कहइ धायउ अवीह, सीधरे मुगुल्ले जइतसीह ॥217॥

जतुग भोज जगत्प्रसिद्ध था । उसने छप्पन कोटि भाटिया को उज्ज्वल किया ।
मुगल मन्त्रि दिन रात वही कहते रहत थे—अरे ! वह निडर जतसी आया । मुगल
रूपी गजपूथ म जतसी सिंह के समान था ॥217॥

जइतसी भअे बटकाँ न जाइ, पउरिसि पडूर रापियइ पाइ ।
सावन्न देइ कीधी न साँति, खुरिमाण खेड दुह वधो खाँति ॥218॥

मुगल सैनिकों व मन त राव जतमी का भय दूर नहीं हो रहा है । प्रचुर पौरुष
वाला राव अपन पर जमाय हुए है । उसने मुवण देकर गाँति नहीं की । अब यवनो और
राठीवों दोनो म युद्धेच्छा बनी हुई है ॥218॥

ऊमरमइ राजा जइत अगि, दीवाणि देखि लीयइ दुरगि ।
घण झूयउ जोवइ कळह घत्त, वाँसोघस हूई बहइ वत्त ॥219॥

राव जतमी का शरीर शीघ्र से भर रहा है । दीवान एव दुग दोनो शत्रुओं ने ले
लिय हैं । अत्यन्त बली मोटा राव जतसी युद्ध की चाल देख रहा है । ऐसी बातें आग से
आगे बढ़ रही हैं ॥219॥

आँवळइ मूछ चप आरगत्त, मुरिताण जइत विडिस्यइ संपत्त ।
बोकाहर राजा बहइ वहि, मुरिताण सेन स्यउँ डोल सहि ॥220॥

राव जतसी अपनी मूछा पर ताव दिय तथा आँखा का लाल बिय हुए बटे हैं ।
अब राव जतमी और बादाशाह कामरा स्पष्टत भिदेंगे । राव बोका का पौत्र राव जतसी
बादाशाह कामरा की पीज से भिदन हेतु दान पर डका देकर चल पडा ॥220॥

घाटी थडवक छडियइ ठाँइ, जुघ परतइ जिवे के घडयउँ जाइ ।
रेवत पूठि घर वरइ राउ, घण मोर तणइ सिगि दियण घाउ ॥221॥

राव जतमी की सना व जवाना न अपने-अपने स्थान छाडे । यवन बादाशाह की
सेना पर आक्रमण (प्रहार) करन व लिए राव जतसी ने अपन घोडे की पीठ पर ही
अपना घर बनाया तथा मन्त्रिका स बहा—जिह मुद्ध प्रिय नहीं है, य इस घड़ी चल
जाएँ ॥221॥

जागवइ जइत परछठघउ जाइ, वाजिन पूठि चडियइ विहाइ ।
यळि भरियउ वासा वरइ वेडि, वान हउरउ जाणि कसाम वेडि ॥222॥

राव जतमी ने घोडे की पीठ को छोटा और शीघ्रता के साथ सन्त्रिकों को
जगाया । वह शक्तिशाली राजा मुगल मन्त्रिका का पीछा बत ही करता है जसे श्रीकृष्ण
ने बस का पीछा किया था ॥222॥

सुरिताण सेन घापइ न रासि, चापडइ जइत जोयउ चवासि ।

बगाळि जइति विहुँ ऊभि वाह, वाढिजइ वाह पइसिय विचाह ॥223॥

राव जतसी का प्रत्यक्ष म चमत्कार दखकर मुगल सनिक अपने श्वासों स भी वृप्त नहीं हो रहे हैं। अपने अपने शस्त्रास्त्रा स स नद्व यवन बादशाह और राव जतसी दोनो युद्धस्थल के मध्य प्रविष्ट हाकर प्रहार (वाह) करेंगे ॥223॥

हिंदुवइ राइ देस्ताळि हत्थ, साकडउ वियउ सुगिताण सत्थ ।

आपणइ पाणि आपणइ अगि, नवसहस धणी लागउ निहगि ॥224॥

हि दूपति राव जतसा ने अपन हाथ (प्रहारक शक्ति) दिस्ता कर बादशाह कामरा की सना का विपत्ति म डाल दिया। आनी शक्ति और अपने ही शरीर म राठोड गव जतसी आकाश तक जा गया ॥224॥

ऊग्रहण भंडावर अहिपुराह छडावण अहिप्पुर छहतराह ।

तुरुक् ग्रह छडावण मेडतोड, ससाराइ जाणइ जइत सोइ ॥225॥

राव जतसी वही है जिसने मडावर क शासक द्वारा जब नागौर पर ग्रहण लगाया गया था तब इसी राव जतसी ने उस बचाया था। यवन रूपी ग्रह स महत का भी इसी राव जतसी ने मुक्त करवाया। ये सभी बातें जगत्प्रसिद्ध ह ॥225॥

सुरिताणि जइतसी समी सडड, ऊजळइ खागि आडउ अगड्ड ।

नवसहस वधारण जइत नाद, सारति हूअइ साहणी साद ॥226॥

मुगल बादशाह क सम्मुख राव जतसी को अपनी लज्जा रखनी है। वह अपने उज्ज्वल खडग से पवत की तरह अचल खडा है। राठोडो की कीर्ति बढान वाले राव जतसी के सम्मुख साहणियों न आकर पुकार की ॥226॥

लूणन्न समोभ्रम आइ लास, विलहणा हुअइ छूटइ व्रहास ।

अति तेजि अचप्पळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ग्रहइ नापि ॥227॥

हे राव लूणकरण के पुत्र। अश्व सेना आ पहुँची है। अश्व छूट रह हैं और चलाई (विलहणा) की तयारी हो रही है। अत आप हम अति तीव्रगति वाले चपल अश्व दीजिये जो सूय के घाडो के समान क्षपट कर लगाम ग्रहण करते हा ॥227॥

॥ गाहा ॥

दोपम जेम अद्यह दुहूँ दळि छळ राउ जइत काट धर युळ छळि ।

झूझार गुरु उठियउ चळहळि वळि मत्थण नेजसी करण कळि ॥228॥

समुद्र के समान विस्तार वाली दाना मनाभा का किनारा दिखाई नहीं देता है। राव जतसी कोट पृथ्वी और कुल क लिय तथा झूझार गिरोमणि तजसी युद्ध करन एव युद्ध मे सना की मयन के लिए कोपाविष्ट होकर उठा ॥228॥

निडुर हियद नाहुर नेठदइ, बूकिय हरि जिम रिणवट बद्धइ ।
खित वाहर तेजल अणखीयउ, अम्बर धरि असमाणि उठीयउ ॥229॥

निडुर हृदय वाला मिहा व गल म बघन डालने वाला, मिह के समान गजने वाला, क्षत्रियत्व की वृद्धि करने वाला अणखीला (स्वामिमानी) तजसी पृथ्वी की रक्षा व लिए तलवार धारण करके आसमान तक जा लगा अथवा विपम रूप से उठा ॥229॥

राम रतनसी भञ्जण रिम घड, झूझार गुरु दियण खण्ड झड ।
धीरा खडग वहिस्यइ धीरा, हुयमी जुघ हिदुआ हमीरा ॥230॥

भगवान राम व समान शत्रुओं की सेना का भजन करने के लिए योद्धा गिरोमणि रतनसी अपनी तलवार से प्रहार करने के लिए तत्पर हुआ । धीरा ! अपनी तलवार जरा धीम चलाना । हि दुआ और यवनों के मध्य अब युद्ध होगा ही ॥230॥

डूगरसीह देद कुळि दीपक, राखण देस बस छळ रूपक ।
पडि ऊपडियइ पहिलउ पहिला, गइ गञ्जण ऊठिय रिणगहिला ॥231॥

डूगरसिंह दण्ड के बस का दीपक है । वह दश की रक्षा करने वाला तथा वग की शान्ता है । वह युद्ध में सबसे पहले घायल होने वालो में है । रणामत्त डूगरसिंह हाथियों का पछाड़ने के लिए उठा ॥231॥

अमर अनद पीथल अचागळ, वरविय राइमल्ल अतुळीवळ ।
जोडाळा मुट्टि दिम जवोडा, राम सिहाइ हुअउ राठोडाँ ॥232॥

अमर और पीथल अद्वितीय वीर हैं । अणवर की तरह रायमल्ल भी अतुल बल वाला है । शत्रुओं के मुंह को पकड़ कर झटका देने वाला राजा राम की तरह राठोडों का सहायक बना ॥232॥

॥ दूहउ ॥

वाळउ कोटा वारणइ, विडिवा वीरति वाइ ।
ससमय जरदि न सम्मवइ, असुराइ थट्टि न माइ ॥233॥

वाला दुग की रणा के लिए वीरता के साथ युद्ध करेगा । वह सामर्थ्यवान वीर अपने कवच में नहा समा रहा है, उसी प्रकार यवनों की सेना में भी नहीं समायेगा ॥233॥

॥ छद पाधडो ॥

पइनउ तुरङ्ग जेठी पवन्न, ग्रीवा विरेह ऊळू गयन ।
साँधरि मुगुल भेळण समत्थ, हरिराज चडिय करिमाळ हृत्य ॥234॥

तीव्र स्वभाव वाला एव पवन में भी तज चलने वाला अथवा जिसकी गदन आकाश में उड़ते हुए शत्रु की तरह दिखाई देती है एसे अश्व पर मुगल बादशाह की

सुरिताण सेन घापइ न सासि, चापडइ जइत जोयउ चवासि ।

बगाळि जइति विहुँ ऊभि वाह, वाढिजइ वाह पइसिय विचाह ॥223॥

राव जतसी का प्रत्यक्ष म चमत्कार दत्तकर मुगल सनिक अपने श्वासा स भी तृप्त नहीं हो रहे हैं। अपने अपन शस्त्रास्त्रा स स नद यवन बादशाह और राव जतसी दोनों युद्धस्थल के मध्य प्रविष्ट होकर प्रहार (वाह) करेंगे ॥223॥

हिंदुवइ राड देसाळि हत्थ, साकडउ वियउ सुरिताण सत्थ ।

आपणइ पाणि आपणइ अगि, नवसहस घणी लागउ निहगि ॥224॥

हिंदूपति राव जतसी न अपन हाथ (प्रहारक शक्ति) दिखा कर बादशाह कामरा की सत्ता का विपत्ति म डान दिया। अपनी शक्ति और अपने ही शरीर स राठौड राव जतसी आकाश तक जा गया ॥224॥

ऊग्रहण मंडावर अहिपुराह, छडावण अहिपुर छहतराह ।

तुरुक ग्रह छडावण मेढतोड, ससाराइ जाणइ जइति साइ ॥225॥

राव जतसा वही है जिसने मंडावर क शासक द्वारा जब नागीर पर ग्रहण लगाया गया था, तब इसी राव जतसी ने उस बचाया था। यवन रूपी ग्रह स मंडते का भी इसी राव जतसी ने मुक्त करवाया। ये सभी बातें जगत्प्रसिद्ध ह ॥225॥

सुरिताणि जइतसी समी सडट, ऊजळइ खागि आडउ अगडड ।

नवसहस वधारण जइत नाद, सारति हूअइ साहणी साद ॥226॥

मुगल बादशाह क सम्मुख राव जतसी की अपनी लज्जा रखनी है। वह अपने उज्ज्वल खडग स पवत की तरह अचल खडा है। राठौण की कीर्ति बान बाल राव जतसी के सम्मुख साहणिया न आकर पुकार की ॥226॥

लूणकन समाभ्रम आड तास, विलहणा हुअइ छूटइ ब्रहास ।

अति तेजि अचप्पळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ग्रहइ नापि ॥227॥

ह राव लूणकरण के पुत्र। अश्व सेना का पहूची है। अश्व छूट रह हैं और चढाई (विलहणा) की तयारी हा रहा है। अत आप हम अति तीव्रगति वाल चपल अश्व दीजिये जा सूय के पाठा के समान क्षपट कर लगाम ग्रहण करते हा ॥227॥

॥ गाहा ॥

दापम जेम अछह दुहुँ दळि छळ राउ जइत काट धर कुळ छळि ।

झूभार गुरु उठियउ पळहळि, कळि मत्थण तेजसी करण कळि ॥228॥

समुद्र ने समान विस्तार वाली दाना मनाआ का किनारा दिखाई नहीं देता है। राव जतसी काट पृथ्वी और कुन क लिये तथा झूभार निरोमणि तेजसी युद्ध करने एव युद्ध म सना का मधन के लिए कोपाविष्ट हाकर उठा ॥228॥

निदुर हियइ नाहुर नठदइ, बूकिय हरि जिम रिणवट वदइ ।

खिति वाहर तेजल अणखीयउ, अम्बर घरि असमाणि उठीयउ ॥229॥

निदुर हृदय वाला सिंहा व गल म वधन डालने वाला, मिह के ममान गजने वाला, शत्रुपत्व की वृद्धि करने वाला, अणखीला (स्वामिमानो) तजसी पृथ्वी की रक्षा व लिए तलवार धारण करके आसमान तक जा लगा अपवा विषम रूप से उठा ॥229॥

राम रतनसी भञ्जण रिम घड, झूझार गुरु दियण खण्ड झड ।

घोरा खडग वहिस्यइ घोरा, हुयसी जुघ हिंदुआ हमोरां ॥230॥

भगवान राम व समान शत्रुओ की सेना का भजन करने क लिए योद्धा निरोमणि रतनसी अपनी तलवार स प्रहार करने के लिए तत्पर हुआ । घोरा ! अपनी तलवार जरा घीम चलाना । हिंदुआ और यवना के मध्य अब युद्ध होगा ही ॥230॥

डूगरसीह तेद कुळि दीपक, राखण देस वस छळ रूपक ।

पडि ऊपडियइ पहिलउ पहिला, गइ गञ्जण ऊठिय रिणगहिला ॥231॥

डूगरसिंह देव के वग का शेषक है । वह दश की रक्षा करने वाला तथा वग की धामा है । वह युद्ध म सबसे पहले घायल होन वालो म है । रणोन्मत्त डूगरसिंह हाथियों का पछाडन क लिए उठा ॥231॥

अमर अनइ पोयल्ल अचागळ, वरविय राइमल्ल अतुळीवळ ।

जाटाळा मुहि दिय जवोडां, राम सिहाइ हुअउ राठोडा ॥232॥

अमर और पोयल अद्वितीय वीर है । अणवर की तरह रायमल्ल भी अतुल बल वाला है । शत्रुओ के मुह को पकड कर झटका देने वाला राजा राम की तरह राठोडा का सहायक बना ॥232॥

॥ दूहउ ॥

काळउ काटा वारणइ, विद्धिवा वीरति वाइ ।

ससमय जरदि न सम्मवइ, अमुराइ थट्टि न माइ ॥233॥

काला दुग की रक्षा के लिए वीरता के साथ युद्ध करेगा । वह सामर्थ्यवान वीर अपने कवच म नहीं समा रहा है उसी प्रकार यवनों की सेना म भी नहीं समाया ॥233॥

॥ छंद पाघडो ॥

पइनउ तुरङ्ग जठी पवन, ग्रीवा विरेह ऊळू गयन ।

सांघरि मुगुल्ल भेळण समत्य, हरिराज चडिय करिमाळ हत्य ॥234॥

तीव्र स्वभाव वाला एव पवन स भी तज चलन वाला अश्व जिसकी पदन आकाश मे उडते हुए उन्मू की तरह दिवाई देती है, ऐसे अश्व पर मुगल बादशाह की

सेना का सहार करने वाला, लम्बे में समय हरिराज अपने हाथ में तलवार लेकर चढा ॥234॥

गङ्गाजल निरमल जेम गङ्गा, आइत धीर ओपित्त अग ।

भारत चडिय तेजसी भल्ल, परवाडमरल परचक्कपल्ल ॥235॥

गंगाजल नामो अश्व गंगा के समान पवित्र, युद्ध में घाय रखने वाला तथा अग देग की पदाइश है । इस पर युद्ध चरित वीर एव पराये शासन को स्वोकार नही करने वाला श्रेष्ठ तेजसी युद्ध करने के लिए चढा ॥235॥

जेवहुअ अजणि आखइ अँघाल, फुरणी रयत्य जिम फउरि फाल ।

सिगार थाटि सोझउ सलोह, सीहरू चईनउ रतनसीह ॥236॥

जसा बंदर होता है वसा ही (चपल) यह अश्व कहा जाता है । यह सूफ के अश्वों के समान हल्की बुदान भरता है । शृगारथाट नामक यह अश्व विशुद्ध एव सीधे स्वभाव का है । सीहरू रतनसिंह ने इस अश्व को अपने लिए निर्वाचित किया अथवा अपने लिए चुना ॥236॥

पावू पसाउ चम्पियउ पाइ, रईगरू कुळाछा छोहि खाड ।

धर सुछलि उडावण धार धूप, रामडउ चडिय नवसहस रूप ॥237॥

पावूपसाव नामक अश्व परो से दवाने पर पृथ्वी पर कुत्रिँ भरने लगता है । पृथ्वी की रक्षा क निमित्त राठीडा की शोभा स्वरूप रामडा अपनी तलवार की धार से शत्रुआ को उडाने के लिए इस अश्व पर चढा ॥237॥

रेवतपसाउ रय पवन रग, पट्टुली पारि पइनउ पवग ।

भाडिजी देय पाइडइ भार, ततमी कुअर चडियउ निडार ॥238॥

रेवतपसाव नामक अश्व पवन के समान वेग वाला है । वह चल पिडलिया वाला बडा तीखा अश्व है । इस अश्व के रवाय पर भार देकर निर्भीक कुवर नेतसी चढा ॥238॥

ग्वालेर ठमइ पइ पात गति, ऊहुउ उछेह ऊछलइ अति ।

सागलउ चडिय करि साहि सार, भारत्य तणउ जइ भुञ्जि भार ॥239॥

ग्वालेर नामक अश्व अपने परो की नतकी के समान रखता है । यह अत्यन्त तीव्र स्वभाव का है तथा बहुत वृद्धता पादता है । सागला अपने हाथ में तलवार लेकर चढा । इसकी भुजाआ पर इस युद्ध का दायित्व (भर भार) है ॥239॥

वालहुउ ससोझउ रग वग्ग, पडनउ पवग दइ त्रिणे पग्ग ।

वाळासि चडिय डूगरउ कुत्त, भ्रिग्गवाहुअउ किरि भग्गदत्त ॥240॥

वालहा नामक अश्व रान और लगाम का शुद्ध है । यह तीव्र स्वभाव का है, अत

पृथ्वी पर तीन पैर ही रखाता है । दूगर अपने भात का रेकर तीव्र गति से अश्व पर चला,
मानो ऋषि भगु अथवा भगदत्त चडे हा ॥240॥

जगली फुरणि जगि रेखि जाणि, सण्डीर निस्सि हइ तासि खाणि ।
चापहइ देद चडि भोमि चहु, उत्तराथ तणा देमा अगट्ट ॥241॥

जङ्गली नामक अश्व के नागासपुट माना अग्नि शिखा हा । इस अश्व की उत्पत्ति
सूय क अश्व से हुई ह । दद शोघ्रता क माप चला । यह भूमि की रक्षा के निमित्त यवना
के देश मे पवत की तरह अचल रहन वाला है ॥241॥

मांडइ कुलाच पहि जेम अग्घ, समीर वक्सि पसवान सिग्घ ।
तठमल्ल खवासइ तग ताणि, जइमलउ चडिय पण्डीर जाणि ॥242॥

समारवक्सि नामक अश्व की रोमावली दीपक की ली के समान दीप्त है । यह
इस प्रकार कृदान करता है मानो मृग (बादर) हा । अद्वितीय धीर अश्व का तग सच
कर सवास जमल उस अश्व पर चढा माना सिंह चढा हो ॥242॥

पल्लाणि वेगि करयाणपञ्च, नाचणी तालि ताचइ निवञ्च ।
साकरसी चडियउ लोह सज्जि, वाविली उथेडण जइत वज्जि ॥243॥

पञ्चवल्याण नामक अश्व का गीघ्रता क साध जीन कम कर तयार किया
गया । यह इस प्रकार चलता है मानो ननकी ताल पर झुक-झुक कर नरय कर रही हो ।
राज जतसी के लिए यवनो का तितर बितर करने हेतु सांकरसी आयुधो स मुमग्जित
हाकर उक्त अश्व पर चढा ॥243॥

पञ्चरत्न पडनउ पथ पाद, मारग सिद्ध साहइ सिहाइ ।
नारायण चडिय ताजी नरीद, वरिमी विचित्र घाद घटा वीद ॥244॥

पञ्चरत्न नामक अश्व अपने परो ग माग तय करन म घटा होता है । यह मृगा
एव सिंहा को पकडने म मदद करता है । दम अदर पर नरेन्द्र नारायण चढा । यह पुच्छा
बनकर यवना की कुंवारी सना को अपन प्रहारो स यरण करेगा ॥244॥

कळियप्प ग्रीव निस्सिनाथ वत्त, मरवट्ट चित्ति ताजी समध ।
वूरम्म जगउ हरिणोठि वापि, रिमराह चडिय रिणवट्ट रोपि ॥245॥

हरिणोठि नामक अश्व मयूर क समान गदन वाला उल्लू के समान कामा वाला
एव बादर के समान मनावृत्ति वाला है । वूम जग्गा कुपित होकर इस अश्व पर चढा ।
यह शत्रुओ के लिए राहू स्वरूप एव क्षत्रिय धम की स्थापित करन वाला है ॥245॥

ताजि सुरग तीन्हउ सतार, मावडा जेम दइ फाळ मार ।
जोमरद चडिय दूगरउ जग्गि, खुरिसाण खान खवमी ग्वडग्गि ॥246॥

मयूर नामक अश्व ताजिकस्तानी है और उसका वंसा ही स्वभाव है । यह क दरो

सेना का महार करने वाला, लड़ने में समय हरिराज अपने हाथ में तलवार लेकर चढा ॥234॥

गङ्गाजळ निरमळ जेम गङ्गा, आइत्त धीर ओपित्त अग ।

भारतय चडिय तेजसी मल्ल, परवाडमल्ल परचकरपल्ल ॥235॥

गंगाजल नामो अश्व गंगा के समान पवित्र, युद्ध में धैर्य रखने वाला तथा अग देग की पदांश है। इस पर युद्ध चरित वीर एवं पराये शांति की स्वीकार नहीं करने वाला श्रेष्ठ तेजसी युद्ध करने के लिए चढा ॥235॥

जेवहुअ अजणि आखइ अँघाळ, फुरणी रयत्थ जिम फउरि फाळ ।

सिंगार थाटि मोझउ सलीह, सीहरू चईनउ रतनसीह ॥236॥

जसा बन्दर होता है वसा ही (चपल) यह अश्व कहा जाता है। यह सूय के अश्वो के समान हल्की कुदान भरता है। शंगारथाट नामक यह अश्व विशुद्ध एवं भीषे स्वभाव का है। सीहरू रतनसिंह न इस अश्व को अपन लिए निर्वाचित किया अथवा अपने लिए चुना ॥236॥

पावू पसाउ चम्पियउ पाइ, खईंगरु कुळाछा छोहि खाइ ।

घर मुछळि उडावण धार धूप, रामडउ चडिय नवसहस रूप ॥237॥

पावूपमाव नामक अश्व परा से दवाने पर पृथ्वी पर कुलाँचें भरने लगता है। पृथ्वी की रक्षा के निमित्त राठोडो की शोभा स्वरूप रामडा अपनी तलवार की धार से शत्रुआ को उड़ाने के लिए इस अश्व पर चढा ॥237॥

रेवँतपसाउ रथ पवन रग, पट्टली पारि पइनउ पवग ।

भाडिजी देय पाइडइ भार तेतसी कुँअर चडियउ निडार ॥238॥

रेवतपसाव नामक अश्व पवन के समान बग वाला है। वह चंचल पिंडलियो वाला बड़ा तीखा अश्व है। इस अश्व के रक्षा पर भार देकर निर्भीक कुँवर नेतसी चढा ॥238॥

ग्वालेर ठपइ पइ पात गत्ति, ऊहुउ उछेह ऊछळइ अत्ति ।

सांगलउ चडिय करि साहि सार, भारतय तणउ जइ भुज्जि भार ॥239॥

ग्वालर नामक अश्व अपने परो को नतकी के समान रखता है। यह अत्यंत तीव्र स्वभाव का है तथा बहुत ब्रूता-पादता है। सांगला अपने हाथ में तलवार लेकर चढा। इसकी भुजाआ पर इस युद्ध का दायित्व (भर भार) है ॥239॥

वालहुअ मसोझउ रग वग्ग, पइनउ पवग दइ त्रिणे पग्ग ।

काळासि चडिय डगरउ कुत्त, भ्रिग्गवाहुअउ किरि भग्गदत्त ॥240॥

वालहा नामक अश्व रान और लगाम का शुद्ध है। यह तीव्र स्वभाव का है, अतः

पृथ्वी पर तीन पैर ही रखता है। दूसरे अपने भाले का लेकर तीसरे गति से अश्व पर चढ़ा, मानो ऋषि भृगु अथवा भगदत्त चढ़े हा ॥240॥

जगली फुरणि जगि रेखि जाणि, खण्डीर निस्सि हइ तासि खाणि ।
चापडइ देद चडि भामि चहु, उत्तराध तणा देसां अगहु ॥241॥

जङ्गली नामक अश्व के नासासपुट मानो अग्नि शिखा हो। इस अश्व को उत्पत्ति मूय क अश्व स हुई है। देद शीघ्रता के साथ चला। वह भूमि की रक्षा के निमित्त यवनों के देश में पवत की तरह अचल रहने वाला है ॥241॥

माडइ कुलाच पहि जेम म्निग्घ, समीर वक्खि पसवान सिग्घ ।
तडमल्ल खवासइ तग ताणि, जइमलउ चडिय पण्डीर जाणि ॥242॥

समीरवक्खि नामक अश्व की रोमावली दीपक की लौ के समान दीप्त है। यह इस प्रकार बुदान भरता है, मानो मृग (बंदर) हा। अद्वितीय वीर अश्व का तग रख कर खवास जमान उस अश्व पर चला मानो सिंह बठा हो ॥242॥

पल्लाणि वेगि कल्याणपञ्च, नाचणी तालि नाचइ निवञ्च ।
साकरसी चडियउ लोह सज्जि, वात्रिली उथेडण जइत्त कज्जि ॥243॥

पञ्चकल्याण नामक अश्व का शीघ्रता के साथ जौन कम कर तयार किया गया। यह इस प्रकार चलता है मानो नदी ताल पर झुक-झुक कर नृत्य कर रही हो। राव जतसी के लिए यवनों का तितर बितर करने हेतु साकरसी आगुधो से मुमज्जित होकर उत्त अश्व पर चढ़ा ॥243॥

पञ्चरत्न पइनउ पथ पाइ, सारग सिद्ध साहइ सिहाइ ।
नारायण चडिय ताजो नरीद, वरिसी विचित्र घाइ घडा वीद ॥244॥

पञ्चरत्न नामक अश्व अपने परा से माग तय करने में बड़ा तेज है। यह मृगा एवं सिंहो को पकड़ने में मदद करता है। इस अश्व पर नरेन्द्र नारायण चढ़ा। यह दुर्हा बनकर यवनों की कुवारी मना को अपन प्रहारो से धरन करेगा ॥244॥

कळियप्प ग्रीव निसिनाथ कन्न, मरकट्टु चित्ति ताजो समत्त ।
कूरम्म जगउ हरिणोटि कोपि, रिमराह चडिय रिणवट्टु रोपि ॥245॥

हिरणोटि नामक अश्व मयूर के समान गदन वाला उल्लूक समान बाना वाला एवं बन्दर के समान मनोवृत्ति वाला है। कूरम जग्गा कुपित होकर इस अश्व पर चढ़ा। यह शत्रुओं के लिए राह स्वरूप एवं क्षत्रिय धर्म को स्थापित करने वाला है ॥245॥

ताजि सुरग सीन्हउ सत्तोर, माकडा जेम दइ फाळ मोर ।
जोमरद चडिय डूगरउ जग्गि, खुरिसाण खान खवसी खडग्गि ॥246॥

मयूर नामक अश्व ताजिकस्तानी है और उसका बसा ही स्वभाव है। यह व दरा

के समान बुगान भरता है। धीरवर डगर युद्धाय उत अश पर चटा। बाग्गाह एव
सान उसकी तलवार का प्रहार सहन करेंगे ॥246॥

फुरणी वयवत वनी फुरत्ति, गडदानइ अरणो ग्रीभगत्ति ।
करनी पसाइ जुधि करण नत्थ, हइ सड अमर हू पदम हत्थ ॥247॥

वरनी पसाव नामक अश्व की नासिका अग्नि रेखा के समान सीधी है तथा यह
स्फूर्ति वाला भी है। -गकी गदन नबूतर व समान है। अमरा युद्ध में सुपथ प्राप्त करने
के लिए हाथ में तलवार लेकर इस अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥247॥

चामठी सहइ नह मुवुटचाळ, सुरिसाण सेत जइ सूध खाळ ।
त्रिहुटाळ काळ गांगउ तरस्सि, आवज्जि खग्ग आरहिय अस्सि ॥248॥

मुवुटचाल नामक अश्व चिमठी तक सहन नहीं करता है। इसका उत्पत्ति
स्थान सुरासान है तथा यह विशुद्ध बण का है। वीर गागा तलवार बांध कर त्वरा क
साथ इस अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥248॥

जगरेस जाणि समीर जोळ, वूदइ सुछद पइ धरिय काळ ।
करिमाळ करेवा कळह काज रिणि रूपव चडियउ प्रिथीराज ॥249॥

जगरेस नामक अश्व मानो वायु के समान है। यह पृथ्वी पर बराह व समान
पर रखते हुए स्वतंत्र रूप से वृद्धता है। युद्ध की शोभा स्वरूप पृथ्वीराज अपने हाथ में
तलवार लेकर युद्ध के निमित्त इस अश्व पर चढा ॥249॥

वाळियइ दूवि वीटळी वाळि, घर पाअ मूदइ चउंर ढाळि ।
सिघलग्ग चडिय सुरित्ताणसल्ल मळवट्टण भोगर राइमल्ल ॥250॥

चँवरढाल नामक अश्व की पूछ के डार बाध कर वीटुली बाघी। यह अपने
परी से पृथ्वी को रौंद रहा था। बादशाह के लिए शल्य स्वरूप एव उसकी सेना का
मदन करने के लिए सिद्धलग्ग रायमत इस अश्व पर चढा ॥250॥

अग्घि जम फाळ माँडइ मिरिग्घ, सुवुमार सार साहणा सिग्घ ।
सजि सार हाधि चडियउ सनीम, भारत्य करेवा भीम भीम ॥251॥

मिरिघ नामक अश्व मृग के समान ही छलांग लगाता है। यह सुवुमार अश्व
सभी अश्वों में शिरमोर है। हाथों में तलवार धारण करके युद्ध के निमित्त बलवान
भीम की तरह भीम नियमपूर्वक इस अश्व पर चढा ॥251॥

केवाण मार कियइ कळाइ, पेरणी कि नाचइ पात्र पाइ ।
सोढउ समत्थ चडियउ सँगाम, हथियार हियइ पूरवण हाम ॥252॥

मार नामक अश्व मयूर के छत्र की तरह कलाव करता है। इसके पाव ऐसे पड़ते

य माना फिरकी अथवा तत्की नल्प कर रही हो । समय सोडा वीर सशाम इत अश्व पर चढा । यह अपने शस्त्रो से अपने हृदय की अभिलाषा पूरी कनेगा ॥252॥

रेवतपसाउ राजवी रत्य, सूरउ सतेज सोषउ समरथ ।

वासइ आरहियउ दंद वाज, बुळ लाज सुचारण सामि वाज ॥253॥

रेवतपसाव नामक अश्व राजाओं के अश्वों के समान है । यह शूरवीर, तेजवान, विशुद्ध एवं सामर्थ्य वाला है । इस अश्व की पीठ पर देद अपने स्वामी का काय मुधारने के लिए एवं अपने वश की मज्जा रखने के लिए चढा ॥253॥

चिड कुलउ जेम ऊडड चिडाह, वढणउ पयि छडि वाह वाह ।

आरहिय अस्सि आउधि अपाल, मृगुलना मळेया जइतमाल ॥254॥

चिड कुला नामक अश्व चिडियां के समान उगता है । माग में आगे बढ़ने पर लोग वाह-वाह कर उठते हैं । गस्त्रासो से नहीं करने जाला वीर जइतमाल मृगल वादशाह कामरा की सेना की मदन करन हेतु इस अश्व पर आरूढ हुआ ॥254॥

घडहडड घरा पइ मगर घज्ज, वेगयैत जेम गरणागि व्रज्ज ।

जुधि दिवड साखि ससार जास, दोनाळी चडियउ विसनदास ॥255॥

मकरघज्ज नामक अश्व के परों से पृथ्वी कांपायमान होती है । यह ऐसा वेगवान है मानो आकाश में विद्युत् हो । युद्ध में जिसकी साक्षी समय जगत् देता है वहीं वीर विसनदास दुनानी लेकर इस अश्व पर चला ॥255॥

फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊँचास अम्मि आरिखि अमूल ।

वणवीर चडिय तेवहि ब्रहासि, अहिवारि धम्म आडइ अयासि ॥256॥

ऊँचास नामक अश्व के लक्षण बहुमूल्य हैं । यह हल्की फुत्की पताका के समान चाल चरता है । बड़ कपन के समान सिले हुए अश्व पर वणवीर चढा । यह अपने स्वाभिमान से आकाश के सम्मुख स्तम्भ देने वाला है ॥256॥

सल्लूण तुरी सोझउ सुचग थापडइ नेजि ती हउ सुरग ।

पडिमाळ धूणि रघुनाथ पासि, विडिसी संप्रत चडियउ ब्रहासि ॥257॥

सल्लूण नामक अश्व विशुद्ध और गुंजर है । ताजिकस्तानी अश्व जिस प्रकार भीट लगाता है, उसी प्रकार यह अश्व भी डोडता है । रघुनाथ अपनी सलवार धुनका हुआ इसी अश्व पर चला । अब यह प्रत्यक्ष में हो युद्ध करेगा ॥257॥

नामियइ कधि नीझरउ नीर समयग पूछ सोहइ सरीर ।

वाखरे पलाण हस वाज, रिणि रूपव चडियउ मेघराज ॥258॥

हस नामक अश्व के कंधे झुकाने पर मुह से पानी क्षरने लगता है । इसकी मुँह पर पूछ शरीर पर शोभायमान होती है । इस अश्व पर युद्ध की सामग्री बस कर युद्ध की शोभा स्वरूप मघराज चला ॥258॥

नवलराउ तुरी गिहजोति नेत, सत्युली सडेंग खुरिसाण सेत ।

चापडइ चडण चञ्चळि चडव, दारण दुरग वीरमदेव ॥259॥

नवलगा अश्व के नत्र दीपक के समान थे । यह प्रशिक्षित अश्व है तथा इसका उत्पत्ति स्थान गुरासान प्रान्त है । मुर दुर्गों का विध्वंस करने वाला वीरमदेव प्रत्यक्ष में युद्ध करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥259॥

मिरिघुलउ तुरी साहण मुग्दु वाउ ग्रहद मूठि वाजिन विछुट्टु ।

दूदडउ चडिय गाजण दुषस, नवसहम नाद राखण नरेस ॥260॥

मिरिघुना नामक अश्व अश्या म शिगेमणि है । इसे दीडाने पर वायु को मुट्टी म पकड़ा देता है । राठोवा का सुयश रखने एवं यवना को विनष्ट करने हेतु नरेग दूदडा इसी अश्व पर चढ़ा ॥260॥

चादिणउ मँजाणउ कळ्ह चल्लि, सिरि वाळसोट्ट हारड न हल्लि ।

रौउउउ सुकरि साहियद सग्गि, लाम्बीक चईनउ वोमि लग्गि ॥261॥

चोण नामक अश्व युद्ध की सभी गति विधियों को जानता है । इस पर घालछा फिराने के बाद यह चढ़ने म कभी भी पराजित नहीं होता है । सीवडा अपने हाथों में खडा धारण करते हुए एम यशस्वी अश्व को अपने शिर निर्वाचित करके आकाश तक जा लगा ॥261॥

भीगार भाति भत्ती भडिज्ज, लळवळइ अग्गि लेजम्मालज्ज ।

वोदडउ चडिय हूइ खणीवट्टु दामिय्या सीसि दवा दनट्टु ॥262॥

भीगार भाति नामक घोड़ी बहुत मंत्री है । यह अपने जगों का संचालन इस प्रकार करती है मागो एक गनज्ज वश्या (नन्की) हा । वीरडा एम घोड़ी पर क्षत्रिय धम धारण करके गनुआ पर प्रहार करने हेतु चढ़ा ॥262॥

वागारि कन्न कुग्गट्टु कथ, वडेंगणा वेस तुहमणी वध ।

वीरमद चडियउ भउरि वग्गि, लग्गावि अन्सि असमाण लग्गि ॥263॥

भउरि वग्गि नामक घोड़ी उल्लू के समान बाना वाली और कबूतर के समान कधो वाली है । इसका यमनी रंग का परिधान है तथा अनक लूवियाँ बंधी हुई हैं । वीरम न इस घोड़ी पर चढ़ कर इसे आग बढ़ाया ता वह आकाश तक जा लगा ॥263॥

रेसग्ग पुन वामी रयत्थ हाकियद ताळि मेळइजु हत्थ ।

मळराइत्तद चडियउ मालदेउ, वाळासि कूत वळहण करेउ ॥264॥

रसग्ग नामक अश्व पवन प्रवाह के समान चलता है । इस हाकने पर यह हाथों स तागियाँ मित्रा देता है । स्वमिमानी मालदेव अपने हाथ म भागा पकड़कर युद्ध करने हेतु शीघ्रता स इस अश्व पर चढ़ा ॥264॥

मोहलउ तुरी वांकउ सहजिज, केकाण कोड पूरवइ वज्जि ।
सग्रहिय सुकरिनगराज सारि, वाजिनि चडिय रिणजग वार ॥265॥

सीहलउ नामक अश्व सहज एव सुंदर है । यह अश्व युद्ध म योद्धा की उमग की पूति करता है । नगराज अपन हाथो म तलवार पवड कर युद्ध क्षेत्र मे जान के लिए इस अश्व पर चढा ॥265॥

गुणसागर बूदइ अउव गति राही किरि अवसरि रमइ रति ।
सण्डरण घडा मूगळी खागि, लखधीर चईनउ घ्यागि लागि ॥266॥

गुणसागर नामक अश्व अद्भुत गति क साथ बूदता है । यह एसा प्रतीत होता है माना नतकी रात्रि मे नत्य करत समय घूम घूमकर मलती हा । अपनी तलवार से मुगल मना की विनष्ट करन के लिए लखधीर इमी अश्व को चुन कर के आवाश तक जा गया ॥266॥

सजि साकति आणउ नइणसुवख, रोपतउ फाळ सतलक रवख ।
नेतलउ चडिय माधी निडार, सत्रुहरा सीसि फेरण सेंघार ॥267॥

नयणमुख नामक अश्व को तयार करके लाया गया । यह हनुमान (बंदर) की तरह छलाग लगता है । निभय एव मुखिया नेतल अपने शत्रुओ के ऊपर महार करने के लिए इसी अश्व पर चढा ॥267॥

जामिनीसत्र जङ्गमा जत्ति, गोअे गयन सासत्त गति ।
चारहडउ सुरिजन चडिय चीति, राठउड दिखाळण रूक रीति ॥268॥

जामिनी सत्र नामक घोडा अश्वों म यति के समान है । यह अपने कानो को दबोचे हुए शाशवत गति म चलता है । यह अश्व चारहडा सुरिज न के चित्त म चढ गया । राठीड अपनी तन्त्रार की रीति दिखाने के लिए इसी अश्व पर चढा ॥268॥

छुरीवार अस्सि सफरी छोहि लाखियउ चडइ सामहइ लोहि ।
ऊदउत अर्भंग आहवि अहल, सीहरू चडिय दूजणा सरल ॥269॥

छुरीवार नामक अश्व तेज म मउली के समान है । इस चलाने पर यह शस्त्रो के सम्मुख जा डटना है । अजेय वीर, युद्ध म स्थिर रहने वाला तथा शत्रुओ के लिए गत्य-स्वरूप उदावत सीहरू इसी अश्व पर चढा ॥269॥

जगजोति जाति जगन्व जत्ति, मोयउ सरास सत्तेज सति ।
वाहिसइ सत्रां तारावयट्ट, परवतउ चडिय दमा प्रगट्ट ॥270॥

जगजोति नामक अश्व की ज्योति मूय क समान है । यह विशुद्ध, रापवान सजवाला तथा सत्त्व वाला है । जो अपने शत्रुओ पर तनवार चलाएगा ऐसा जगत्प्रसिद्ध योद्धा परवन इसी अश्व पर चढा ॥270॥

नवतपुत्र तुरी ग्रिहजाति नेत, सत्युली सङ्गं तुरिसाण येत ।

चापडइ चडण चञ्चळि चडव, दारण दुरग वीरम्मदेव ॥259॥

नवतपुत्र अश्व के नेत्र दीप्य के समान थे । यह प्रशिक्षित अश्व है तथा इसका उत्पत्ति म्याग तुरासान प्रदेश है । मुद्दं दुर्गों का विध्वंस करने वाला वीरमदेव प्रत्यक्ष में युद्ध करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥259॥

मिरिधलउ तुरी साहण भुग्दृ, चाउ ग्रहउ भूठि वाजिन विछुट्ट ।

दूदडउ चडिय गाजण दुधेस, नवसहस नाद राणण नरेस ॥260॥

मिरिधुना नामक अश्व अश्व म शिरोमणि है । इसे दोड़ाने पर वायु की मुट्टी म पकड़वा देता है । राठीडा का सुयश रखने एवं यवना को विनष्ट करने हेतु नरेस दूदडा इसी अश्व पर चढ़ा ॥260॥

चादिणउ गेजाणउ कळह चत्ति, सिरि वाळसोह हारड ७ हत्ति ।

खीवडउ सुवरि साहियइ खग्गि, लाखीक चईनउ वामि लग्गि ॥261॥

चाण नामक अश्व युद्ध की सभी गति विधियों को जानता है । इस पर बालछा फिराने के बाद यह चरणे म कभी भी पराजित नथा जाता है । खीवडा अपने हाथों म खडग धारण करते एवम यशस्वी अश्व को अपने लिए निर्वाचित करने आकाश तक जाता लगा ॥261॥

भीगार भाति मत्तो भटिज्ज, लळवळइ अग्गि राजम्मालज्ज ।

वीदडउ चडिय हइ मन्नीवट्ट, दागिया सीसि देवा दग्दृ ॥262॥

भीगार भाति नामक घोड़ी बहुत मन्नी है । यह अपने जगों का सवात्न इस प्रकार करती है माता एक मन्त्र बंध्या (नतकी) हो । वीदडा इस घोड़ी पर क्षत्रिय धर्म धारण करने मन्त्रुआ पर प्रहार करने हेतु चढ़ा ॥262॥

वागारि कन कुम्भट्ट कथ, वईगणा वेस लुहमणो वध ।

वीरमद चडियउ भउरि वग्गि, लग्गावि अस्सि असमाण लग्गि ॥263॥

उरि वग्गि नामक घोड़ी उल्लू के समान बाना वाली और कबूतर के समान कपो वाली है । इसका बगनी रंग का परिधान है तथा अतक लूबिया बंधी हुई हैं । वीरमद न इस घोड़ी पर चढ़ कर इस आगे बढाया तो वह आकाश तक जा लगा ॥263॥

रेयम्म पुन वामी रयत्थ हाकियड ताळि मेळइजु हत्थ ।

मछराइतइ चडियउ मालदेउ, वाळासि कूत कळहण करेउ ॥264॥

रेयम्म नामक अश्व पवन प्रवाह के समान चलता है । इस हाकने पर यह हाथों स ताणियों मिला देता है । स्वभिमानी मादव अपने हाथ मे भाना पकड़कर युद्ध करने हेतु शीघ्रता स इस अश्व पर चढ़ा ॥264॥

सीहलउ तुरी वाकउ सहज्जि, केवाण कोड पूरवइ वज्जि ।
सप्रहिय मुकरिनगराज सारि, वाजिनि चडिय रिणजग वार ॥265॥

सीहनउ नामक अश्व महज एव मुदर है । यह अश्व युद्ध म योद्धा की उमग की पूति करता है । नगराज अपने हाथों में तलवार पकड कर युद्ध क्षेत्र म जाने के लिए इस अश्व पर चढा ॥265॥

गुणसागर वृद्ध अउव गति राही किरि अवसरि रमइ रति ।
खण्डरण घडा भूगळी खागि, लखधीर चईनउ ध्यागि लागि ॥266॥

गुणसागर नामक अश्व अद्भुत गति के साथ बूढता है । यह ऐसा प्रतीत हाता है मानो नतकी रात्रि म नत्य करते समय धूम धूमकर खलती हा । अपनी तलवार से मुगल-मना को विनष्ट करने के लिए लखधीर इसी अश्व को चुन कर के आकाश तक जा लगा ॥266॥

सजि साकति आणउ नडणसुवख, रोपतउ फाळ सतलक खख ।
नेतलउ चडिय माधी निडार, सनुहरा सोसि फेरण सँघार ॥267॥

नयणमुख नामक अश्व को तयार करके लाया गया । यह हनुमान (बन्दर) की तरह छत्राय लगाता है । निभय एव मुगिया नेतल अपने शत्रुआ के ऊपर सहार करने के लिए इसी अश्व पर चढा ॥267॥

जामिनीसत्र जङ्गमाँ जत्ति, गोअे गयन सासत्त गति ।
चारहडउ मुरिजन चडिय चीति, राठउड दिखाळण रूक रीति ॥268॥

जामिनी सत्र नामक घोडा अश्वो मे यति के समान है । यह अपने कानो को दबाके हुए भाषवत गति म चलता है । यह अश्व चारहडा मुरिज न के चित्त म चढ गया । राठो अपनी तलवार की रीति दिखाने के लिए इसी अश्व पर चढा ॥268॥

छुरीकार अस्सि सफरी छोहि, लाखियउ चडउ सामहइ लोहि ।
उदउत अमम आह्वि अहल्ल, सीहरू चडिय दूजणा सल्ल ॥269॥

छुरीकार नामक अश्व तेज म मछत्री के समान है । इसे चलाने पर यह शस्त्रो के सम्मुख जा डटता है । अजेय वीर युद्ध मे स्थिर रहने वाला तथा शत्रुआ के लिए गत्य-स्वरूप उदावत सीहरू इसी अश्व पर चढा ॥269॥

जगजोति जोति जगरूव जत्ति, सोझउ सरोस सत्तेज सत्ति ।
वाहिसइ सत्रा तारावयट्ट, परवतउ चडिय देसा प्रगट्ट ॥270॥

जगजाति नामक अश्व की ज्योति मूय के समान है । यह विशुद्ध, रोपवान, तत्रवाला तथा सत्त्व वाला है । जो अपने शत्रुओ पर तलवार चलाएगा, ऐसा जयप्रसिद्ध योद्धा परबन इसी अश्व पर चढा ॥270॥

मल्हपति इसी परि रूपमल्ल, सरी रम्भ गति समसरि सुचल ।

पातलउ चडिय हरि सज्जि पाणि, असुराह घाट भेळण अराणि ॥271॥

रूपमल्ल नामक अश्व इस प्रकार झपटा मारता है, जस नतकी अप्पराओ की घाट से चलती हो । युद्ध मे गवनों की सना क साथ भिडने हेतु पातल अपने हाथो मे शस्त्र धारण करके इसी अश्व पर आहूढ़ हुआ ॥271॥

हाटकी नीर हरि हीर हल्लि, चञ्चळे राउ चावुकी चरिल ।

आमउ आरुहियउ अधिक् आहि, सुरिताण सेन सउं खग्ग साहि ॥272॥

हाटकी नामक अश्व सेना मे नदी के समान चलता है । इस अश्वराज पर चावुक चलाकर आमा अत्यन्त अहभाव के साथ बादशाह की सना के सम्मुख तलवार धारण करके चला ॥272॥

परिजास पाइ धानर प्रळम्प, अक्की प्रहासइ पाणि अम्ब ।

ऊलाळि कूत साम्हउ अयास, दोमज्जि भुवानी चडिय दास ॥273॥

परिजास नामक अश्व के पर कदर क समान लवे हैं । यह एक हाथ की हथेली से पानी पीता है । आता क सम्मुख अपना भाला उठाते हुए भवानीदास युद्ध क लिए इस अश्व पर चला ॥273॥

ढेलियउ सुरी आपइ धमम्स, हसा सुहस वासइ ह्वस्म ।

खेडेचउ नगराज चडि खेधि, वत्तवा हुआउ सउ सय वेधि ॥274॥

ढेलियउ नामक अश्व इस प्रकार की दौड़ दौडता है मानो अनेक अश्वों के पीछे चलने वाले अश्वों की ध्वनि हो । खेडा नगराज युद्ध क इसी अश्व पर चला तो वारें हान लगी कि यह अवश्य ही शत्रुवेध करेगा अर्थात् शत्रुओं को मार मगायेगा ॥274॥

वछनाग वाउ जालइ विवाण, सीराजी वासइ खुरासाण ।

भोजलउ चडिय भारतथ भलन, मँडळीक पितामह जास मल ॥275॥

वछनाग नामक अश्व चलन पर वायु के प्रवाह को पकड लेता था । इसने पीछे खुरागान प्रयेग है । भोज युद्ध का दायित्व स्वीकार करके इसी अश्व पर चला । इस यांटा के पितामह मरि उनाथ थे ॥275॥

पीवति अम्ब जवणी पाणि, खड्गम् तास ऊचास खाणि ।

वाजिनि चडिय चरचरइ वीर, नवसहसी राखण नाद नीर ॥276॥

चरचर नामक अश्व एक हाथ की अजुलि से पानी पीता है । इसका उत्पत्ति स्थान वट्ट ऊंचा है । राठोडो का मुयग और आक (इज्जत) रखने हेतु वीर इसी अश्व पर चला ॥276॥

कपिफाळ रिणह आवद्ध कथ, गळि गोण जास गण्डइ गयथ ।

ऊजाळइ भीमउ चडिय अप्प झूलाळ सीसि देवा झडप्प ॥277॥

वपिपाल नामक अश्व कुक्कुट व समान कघो वाला है। यह हाथिया के गल म धनुष की प्रत्यञ्चा डलवा देता है। अपने पानी (इज्जत) को उज्ज्वल करने हेतु तथा यव ॥ पर झपटा मारने हेतु भीम वस अश्व पर चढा ॥277॥

गडदनी विकिरि सत्थोर गत्त, साफरी छोह के लङ्क सत्त ।
जावुअउ ओधि सापत्तजीह, आरहिय तेणि आसउ अवीह ॥278॥

जावुआ नामक अश्व की गदन कुक्कुट व समान है और गति अत्यन्त तीव्र है। यह रोप म मत्स्य अपवा हनुमान के मत्स्य है। इसकी उत्पत्ति मूय के अश्वों से हुई है। निभय धीर आमा इसी अश्व पर आरूढ हुआ ॥278॥

राडउ ब्रहास लाखीक लीण, जर साकति पूठि जडिय जीण ।
प्रोहित चडिय गज्जण पळास दैइदास समोभम विसनदास ॥279॥

राडो नामक अश्व का एक लाभ रुपये मूल्य म लिया है। इस अश्व की पीठ पर जरी की पडछी बिछाकर ऊपर जीन बनी गई है। यवना का नष्ट करने व त्रिए पुरोहित देवीगाम का पुत्र किमनगाम एमा अश्व पर चढा ॥279॥

वाजित्त मेघनादह वग्गाणि, जळहरि सिंहण्ड तण्डवइ जाणि ।
रतनमी चईनउ रिम्मराह, साकडइ सना सामी सनाह ॥280॥

मेघनाद नामक अश्व की शोभा सुनो। यह अश्व बलाव करने पर ऐसा प्रतीत होता है माना मेघजन के समय मयूर ने छत्र ताना हा। शत्रुआ के लिए राहू स्वरूप रतनमी ने शत्रुओं को विपत्ति म डालने के लिए अपना कवच कसा तथा उक्त अश्व को चुन करके एम पर आरूढ हुआ ॥280॥

लाखीउ तुरङ्गम मूलि लवख, पूरउ प्रचण्ड जइ सूघ पकरा ।
गगराज चडिय मुहत्तउ निवीह, मामि छळिकळट्टिया जेम सीह ॥281॥

लाखाव नामक अश्व का मूल्य एक लाख रुपये है। यह चलन म जबरदस्त और दोना पशों (माता पिता) स गुड है। निभय धीर मुहता नगराज अपने स्वामी के लिए मुड करने हेतु जैसे गिह झपटता है वग ही झपटकर उस अश्व पर चढा ॥281॥

गिरिघा पगत्तपइ वनव गत्ति, पागारि वग्घ पोथी वि पत्ति ।
पीयणउ नगीनइ चडिय पट्टि सामी सिहाइ सीर मि सट्टि ॥282॥

नगीना नामक अश्व पवर्तों का अपने परों स नाप जाता है। इस परा की गति वन्दर व समान है। इस व घे मयूर के समान तथा नासायुट पत्ते व समान है। स्वामी की गहायाप एव उनसे सबध मधुर बने रह एतन्ध पीचल इगी अश्व की पीठ पर आरूढ हुआ ॥282॥

मत्हपति इसी परि रूपमल्ल, सरी रम्भ गति समसरि सुचल्ल ।

पातलउ चडिय हरि सज्जि पाणि, असुराह घाट भेळण अराणि ॥271॥

रूपमल्ल नामक अश्व त्त प्रकार झपटा मारता है, जसे नतकी अप्सराजा की चान से चलती हो । युद्ध म यवना की सेना के साथ भिडने हेतु पातल अपने हाथा म घातन धारण करके इसी अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥271॥

हाटकी नीर हरि हीर हल्लि, चञ्चळे राउ चावुकी चल्लि ।

आसउ आरुहियउ अधिक आहि, सुरिताण सेन सउं खग्ग साहि ॥272॥

हाटकी नामक अश्व सना म नदी के समान चलता है । इस अश्वराज पर चावुक चलाकर आसा अत्यंत अहंभाव के साथ बादशाह की सेना के सम्मुख तलवार धारण करके चला ॥272॥

परिजास पाइ वानर प्रळम्भ अक्खणी प्रहासइ पाणि अम्भ ।

ऊलाळि कूत साम्हउ अयास, दामज्जि भुवानी चडिय दास ॥273॥

परिजास नामक अश्व के पर बंदर के समान लवे है । यह एक हाथ की हथेली से पानी पीता है । आकाश के सम्मुख अपना भाला उठाते हुए भवानीदास युद्ध के लिए इस अश्व पर चला ॥273॥

ढेलियउ तुरी आपइ धमस्स, हसा सुहस वासइ हवस्म ।

खेडेचउ नगराज चडि खेधि, वत्तवा हुअउ सउ सन वधि ॥274॥

ढेलियउ नामक अश्व इस प्रकार की दौड़ दौड़ता है मानो अनेक अश्वों के पीछे चलने वाले अश्वों की ध्वनि हो । खेडेचा नगराज युद्धय इसी अश्व पर चला तो बातें होने लगी कि यह अवश्य ही शत्रुवध करेगा अर्थात् शत्रुओं का मार मगायेगा ॥274॥

वछनाग वाउ झालइ विवाण सीराजी वासइ सुरासाण ।

भोजलउ चडिय भारत्य भल्लन, मँडळोक् पितामह जास मल्ल ॥275॥

वछनाग नामक अश्व चलन पर वायु के प्रवाह को पकड़ लेता था । उसके पीछे सुरागान प्रयोग है । भोज युद्ध का दायित्व स्वीकार करके इसी अश्व पर चला । उस योद्धा के पितामह मल्लिनाथ थे ॥275॥

पीवत्ति अम्भ अक्खणी पाणि, खड्गुरू तास ऊचास राणि ।

वाजिन्नि चडिय चरचरइ वीर, नवसहसी राखण नाद नीर ॥276॥

चरचरइ नामक अश्व एक हाथ की अजुलि से पानी पीता है । इसका उत्पत्ति स्थान बहुत ऊँचा है । राठीडो का मुयंग और आव (इज्रत) रखने हेतु वीर इसी अश्व पर चला ॥276॥

कपिफाळ रिणह आवद्ध कध, गळि गोण जास गण्ठइ गयध ।

ऊजाळइ भीमउ चडिय अप्प थूलाळ सीसि देवा इडप्प ॥277॥

कपिफाल नामक अश्व कुक्कुट के समान कथा वाला है। यह हाथिया के गले में धनुष की प्रत्यञ्चा ढलवा देता है। अपने पानी (इज्जत) को उज्ज्वल करने हेतु तथा यवनो पर क्षपट्टा मारने हेतु भीम इस अश्व पर चढ़ा ॥277॥

गडदनी विक्किर सत्योर गत, साफरी छोह के लङ्क सत्त ।
जावुअउ ओधि सापत्तजीह, आरहिय तेणि आसउ अवीह ॥278॥

जावुआ नामक अश्व की गदन कुक्कुट के समान है और गति अत्यन्त तीव्र है। यह रोप में मत्स्य अथवा हनुमान के सश है। इसकी उत्पत्ति सूय के अश्वो से हुई है। निम्न वीर आमा इमी अश्व पर आरूढ हुआ ॥278॥

एणउ ग्रहास लास्तीक लीण, जर साकति पूठि जडिय जीण ।
प्रोहित चडिय गज्जण पळास, दैइदास समोभ्रम किसनदास ॥279॥

एणो नामक अश्व का एक लाख रुपये मूल्य में लिया है। इस अश्व की पीठ पर जरी की पड़ली बिछाकर ऊपर जीन बसी गई है। यवनों को नष्ट करने के लिए पुराहित देवीनाम का पुत्र किसनदास इमी अश्व पर चढ़ा ॥279॥

वाजिन्न मेघनादह वग्वाणि, जळहरि सिहण्ड तण्डवइ जाणि ।
रतनमी चईनउ रिम्मराह, साकडइ सना सामी सनाह ॥280॥

मेघनाम नामक अश्व की शोभा सुनो। यह अश्व बलाव करने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो मधुगन्ध के समय मयूर ने छत्र ताना हा। शत्रुओं के लिए रात्र स्वरूप रतनमी न शत्रुओं का विपत्ति में डालने के लिए अपना वचन करता तथा उक्त अश्व का पुत्र करने हम पर आरूढ हुआ ॥280॥

लासीर तुरङ्गम मूलि लवत्त, पूरउ प्रचण्ड जइ सुध पक्क ।
नगराज चडिय मुहत्तउ निवीह, मामि छळि कळहिरा जेम सीह ॥281॥

लासीर नामक अश्व का मूल्य एक लाख रुपये है। यह चलन में जबरदस्त और सोना पशों (माना पिता) में शुद्ध है। निम्न वीर मुहता नगराज अपने स्वामी के लिए युद्ध करने हेतु उस गिह क्षपट्टता है वग ही क्षपट्टकर उस अश्व पर चढ़ा ॥281॥

गिरिधा पगन्नपइ वनक गत्ति, पांगारि कथ पोधी कि पत्ति ।
पोथनउ नगीनइ चडिय पट्टि सामी सिहाइ सीर मि सट्टि ॥282॥

नगीना नामक अश्व पवता की अपने परो से नाप जाता है। इस अश्व की गति उत्तर के समान है। इस अश्व मयूर के समान तथा नागापुत्र पत्ते के समान है। स्वामी की गहापनाय एक उन्नत शब्द मधुर वन रह एतन्म पोथन इमी अश्व की पीठ पर आरूढ हुआ ॥282॥

पारेवड घावतड अति पाइ, नीधसइ धरा पुड तिणि निहाइ ।

पञ्चाइण चडियउ ऊभि पाण, मूगली घडा अहिवा माण ॥283॥

पारवा नामक अश्व अपन परो म अत्यन्त तीव्र गति स चलता है तो इससे पदचाप स पृथ्वी-तल घसने लगता है । पञ्चायण युद्ध के लिए तत्पर होकर, मुगल सेना का मान मदन करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥283॥

वीखरइ वडि आवइ न वकिर, धरियइ पलाणि करि वेस डकिर ।

सोमनउ चडिय देवीपसाइ, घड मीर सैमैळण मुहर घाइ ॥284॥

देवीपसाय नामक अश्व युद्ध के समय इतना विकर जाता है कि कहन म नहीं आता । इस पर अपने हाथों से बस्त्र बिछाकर उस पर काठी रखी । यवन बादशाह की सेना के अग्रभाग म प्रविष्ट होकर प्रहार करते हुए भिडने हेतु सोमला गी अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥284॥

पसाइतउ घातड मीरी प्रास, लाखीक मौलि सिरि सोह लास ।

सद्धारण साहिय सम्मसेर, मूहतउ चडिय करणी कुमेर ॥285॥

करणीकुमेर नामक अश्व यवनों के गले म फागो डनवा देता है । अश्व-समूह म मुशोभित यह अश्व एक लाग रूपसे मृत्यु का है । मुहता सद्धारण अपने हाथ म तखवार लेकर इसी अश्व पर चढ़ा ॥285॥

सारीस रिप्प मणिमत्थ सिग्घ, वग्गडी बनक मनि सारा अग्घ ।

सुत अमर मता उरि नाटसल्ल, मछरादतड चडियउ सहसमत्तल ॥286॥

वग्गडी बन्क नामक घोड़ी मानो बन्दर है । यह मयूर गिगा के समान है । शत्रुओं के हृत्प म शय के समान चुभने वाला अमर का पुत्र सहस्रमत्र रोप म परिपूण होकर इसी घोड़ी पर चढ़ा ॥286॥

रेवत पलाणउ मदारङ्ग, वम्माण गोण घातइ कुरङ्ग ।

घण घाइ उतारण मेछ घाण, रिणजङ्ग करेजा चडिय राण ॥287॥

सत्तारण नामक अश्व को काठी बँध कर मुसक्तित किया । यह मृगों के गले म धनुष की प्रत्यञ्चा डलवा देता है । अपने जबरनस्त प्रहारा द्वारा यवन सेना को एक साथ मारने के निष्ठ तथा युद्ध करने हेतु राण इसी अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥287॥

रेवत पसाउ साहणे राउ वाकोड वधि मेत्तइ वळाउ ।

लाखणमी चडियउ झालि लोह, सळखाहरि चाडण सारि सोह ॥288॥

रेवत पसाउ नामक अश्व अश्वों म राजा के समान है । यह बुबकूट के समान कर्णों वाला कलाव किये गड़ा रहता है । राव मन्सा का वगत्र सापणमी सत्तारण धारण करके अपनी तखवार से शोभा प्राप्त करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥288॥

नवदखी पञ्च ओपत्ति नहि, सम्मइ न थट्टि रणतूर सद्दि ।
सोभ्रमियउ चडियउ सार सज्जि, गाजणइ सोसि जिम मेघ गज्जि ॥289॥

नवदखी नामक अश्व घोड़े का उत्पत्ति स्थान पंजाब प्रदेश है। यह युद्ध-वाद्यो के वजने पर सेना में नहीं समाती है। सोभ्रमियउ तलवार से सुसज्जित होकर यवनो पर मेघ के समान गजता हुआ उसी घाटी पर चढा ॥289॥

खड्गए वह गति नदघोख, मछराळ अचप्पळ पमण भोख ।
अगराण पूठि आहवि अवीह, सुजडाहथ चडियउ वरमसीह ॥290॥

नदघोख नामक अश्व विशेष लय के साथ चलता है। यह मात्स्ययुक्त चलता तथा जल हवालुनी हो ऐसा है। युद्ध से न बरने वाला वरमसीह हाथ में तलवार लेकर इसी अश्व की पीठ पर सवार हुआ ॥290॥

मञ्जरी बंध पइ साखभ्रिग्ध, भवणे सुवङ्ग सद्धन सिग्ध ।
साळेवइ चडियउ सन्तनाथ, हडवइ रोउ ऊपरि ऊभि हाथ ॥291॥

मालेया नामक अश्व के बंध बुक्कुट के समान एवं पर बन्दर के समान हैं। इसके बान सुन्दर हैं और यह सीधी नासायुक्त वाला है। बादशाह के विरुद्ध राव जतसी की महापताप खड्ग हाथों सन्तनाथ उसी अश्व पर चढा ॥291॥

खण वडाल मुलियक्क सिग्ध, मन पवन जेम त्रापइ कि भ्रिग्ध ।
उगइ कोडीघज दे अभङ्ग, अरि लाख हूँत टाळइ न अङ्ग ॥292॥

कोडीघज नामक अश्व के बान बित्ती के समान और मुहफाड दीपक की ली के समान है। यह मन, पवन एवं मृग के समान दौड़ता है। अपराजेय वार ऊगा का यह अश्व लिया गया। यह लावों-लाय शत्रुओं के मध्य भी अपना शरीर बचाकर नहीं निकलेगा अर्थात् शत्रुओं के मध्य अवलम्बता ॥292॥

रपि जेम सुदिह पइ तीख वन्न, राजित जेम ऊन्हउ वहन ।
साहणाह दीउउ वाग साहि, मँटळेसर चडियउ वट्ट माहि ॥293॥

साहणाहणीवा नामक अश्व वार के समान हट पंरा वाता एवं तीगे बानो वाला है। यह स्वभाव से अति के समान उत्पन्न है। मडलेधर इस अश्व की तमाम पण्ड कर अपने अश्व-समूह में सम्मिलित हुआ ॥293॥

निसभ्रपसाउ भोगउ सुवत्ति, गुणरळा जेम पइ ठहइ गत्ति ।
त्रगाळ सीमि वावाहि बोलि, धनराज चटिय वाजतइ ढोलि ॥294॥

विमनपमाव नामक अश्व विशुद्ध एत अच्छी चान वाता है। इसके पर चलते समय प्रशिक्षित नवकी के समान पड़ते हैं। यवनो पर भोग (प्रतिनायक) जनारक धनराज ढोल के साथ उसी अश्व पर चढा ॥294॥

नइणाहिसुक्ख ताचइ निटाळ, नाविकक सम्य थोडइ जु ताळ ।

वाधुलउ चडिय वीरत्ति वग्ग, सुरिसाण सीसि साहियउ खग्ग ॥295॥

नइणाहिसुक्ख नामक अश्व निश्चित गति के साथ नाघता है । यह नगाडा की ताल पर सम मिला देता है । बादशाह पर राडग धारण करके वाधुल वीरता के साथ इसी अश्व पर चढा ॥295॥

फरगटइ नट्ट जिम फूलमाळ, फुरणि घण जेम नांसत्ति फाळ ।

सायइत जइत करिव सिहाय, राइमल चडिय नक्कोट राउ ॥296॥

फूलमाल नामक अश्व नटा के समान स्फुर्ति प्रदर्शित करते हुए चलता है । यह अपने नासा सपुट म बादलों के समान फेन डानता है । राव जतसी की महामताय नक्कोट का राव राइमल इसी अश्व पर चढा ॥296॥

सोनइयउ साकुर वालि सार, असि तीहउ उहउ अस्सवार ।

प्रहसतइ वदनि पउरिस्सि पूर, वाहउ चडिय कळहणि करूर ॥297॥

सोनइया नामक अश्व को लोहे की बन्डी से तोला । यह अश्व जगा तेज स्वभाव का है वसा ही इसका मवार है । पूण पुरुपाथवाला एव युद्ध म शीघ्र प्रदर्शित करने वाला पाहा हसते हुए इसी अश्व पर आरूढ हुआ ॥297॥

हालतइ वि जायण हुयइ हस, अइराक रोत असिराइ अस ।

माडेचउ झालिय करिम्माळ, चापलइ राम चण्डियउ सचाळ ॥298॥

चांपला नामक अश्व चतत ही दो योजन की गति (एक घड़ी म) पकड लेता है । इसका उत्पत्ति धेर इराक है तथा यह अश्वराज से उत्पन्न हुआ है । माडचा राम अपने हाथो मे तनयार पकड कर सावधानी के साथ इसी अश्व पर चढा ॥298॥

चाउँडपसाउ हाजी सचेउ, हड जास रोत वासइ हरेउ ।

आउधे वधारण किसन आघ, वाजिन चडिय वेवथ वाघ ॥299॥

चाउडपसाव नामक अश्व हमशा सावधान रहन वाला है । इस अश्व की उत्पत्ति को पीछे से दखना चाहिए । किसन अपने शस्त्रासो का मान बढाने के लिए बोधित सिंह के समान झपट कर इसी अश्व पर चढा ॥299॥

घाटे सुघट्ट लिय मोलि लक्खि परतविस जास रेवत्त पविस ।

परवाळइ दे डूढइ पवग्ग ऊठतउ अणी टाळइ न अग्ग ॥300॥

परवाल नामक अश्व अच्छी बनावट का है । इस एक लाख रुपये मूल्य म लिया है । प्रत्यक्ष ही इसका पिता (पविस) सूय क रथ का अश्व रवत है । डूढा का यह अश्व दिया गया । यह उठत हुए कभी भा सेना क मध्य अपने शरीर को नहीं बचायेगा ॥300॥

नाळरुड आपद् रिणे नक्ष, सूरुड सतेज सूरिज्ज सबस ।
पाखरि पताणि काळुड पहाड, वरिजाग चडिय वइरा विभाड ॥301॥

काता पहाड नामक अश्व नारियल पर अपन तीनो सुभों को रख दता है । यह
पूरवीर सतेज एव सूय से उत्पन्न है । वरजाग न इस अश्व पर बचच एव बाठी कसी
और सधुआ को नष्ट करने हेतु इसी अश्व पर चढा ॥301॥

चञ्चळ नाळेरुड मिरि चलत्थ, रूपक्क जास जगवस रत्य ।
धातिसइ कुंभारी घडा घाड, रिणि, घोघर चडियउ पिथमराउ ॥302॥

रण घाघर नामक अश्व नारियल पर चल सकता है । इसका स्वरूप (या
गामा) मूष के अश्वों के समान है । कुवारा (यवन) सना पर प्रहार करने हेतु
पिथमराव इसी अश्व पर चढा ॥302॥

चापलउ तुरी साहणा चण, ऊपडी घाम वुदइ अलग ।
भुजि गहिय वूत भारत्थि भाळ, पिडि चहण चईनेउ राइपाल ॥303॥

चापल नामक अश्व सभी अश्वों में सुन्दर है । इसकी लगाम उठाते ही यह
जोर जार से कूदन लगता है । युद्ध की स्थिति देखकर, युद्ध में जाने के लिए हाथ में
भाला लेकर राइपाल न इमी अश्व को अपने लिए चुना ॥303॥

जया वहन मुत भात जास, तेवइ न धनि वेसास तास ।
चह नतसीह लइ पूलचोट, कुळलाज अजइपुर जास कोट ॥304॥

पूलचोट अश्व को मी वायु है । यह उसी का पुत्र है, अत यह उसका (वायु
का) भी विश्वास नहीं करता है अर्थात् वायु के शोक मात्र से बिफर जाता है । अपने
दुल को लाज बचाने के लिए नतसीह इमी अश्व पर चढा । उसके पीछे अजयपुर
(अजमर) का दुग है ॥304॥

पाळारि पवम्प ताजी मुज्जन, निळ रत्य प्रति अत्ति छोहि मन ।
सुरिजन पदमि चडियउ सिहाइ, घण झूझउ भेळण मुहर धाइ ॥305॥

पदमा घोड़ी के वान उल्लू पत्नी के समान हैं । वायु प्रवाह के प्रति इनके मन में
शांति रहता है । यवन सना के अग्र भाग में भिड़ने हेतु घण झूझा सुरजन इसी घोड़ी को
पकड़ कर आरट हुआ ॥305॥

चापळउ तुरी दीपवच चक्क, नाटारेंभि नाचइ मूत नक्क ।
साफरां राडग वाहण सखुद, रिणि किसन चडिय भांजण रउद ॥306॥

चापला नामक अश्व के त्रेत्र दीपक के समान हैं । नक्ष में जिस प्रकार नक्षक
नाचना है उसी प्रकार यह अश्व भी नचन करता है । विधमिया पर महग चवान एव
यवना को नष्ट करने हेतु किशन क्रोधित होकर युद्ध के लिए इस पर चढा ॥306॥

वाजिन्त सत्त तामसी बग्ग, मन पवन सरीखउ जास मग्ग ।

अलखियइ लखउ हुअउ असवार, सामन्तहरउ ऊछजिय सार ॥307॥

अलखिया नामक अश्व सतीगुणी है, पर तु लगाम को छूते ही यह तमोगुणी बन जाता है। यह मन तथा पवन के समान माग तय करता है। सावत का वशज सलाहापा म ततवार को शाभित करते हुए इसी अश्व पर सवार हुआ ॥307॥

अगराण न हालइ उवरि अम्भ, वाहु असोस जिग तेवि अम्भ ।

जडलग साहि गेतसी जगि, वइरौ वराह चडियउ विडगि ॥308॥

अगराण नामक अश्व पर बठने क बाद पट का पानी तक नहीं हिलता है। उसके वाहु परिपुष्ट हैं माना उन्हें प्रह्ला ने निर्मित किया हो अथवा उसका वाहु परिपुष्ट है वसी ही उसकी हीस भी जबरदस्त हाती है। सतसी अपन हाथो मे ततवार लकर युद्ध म धर का प्रतिशोध रने हेतु इसी अश्व पर चला ॥308॥

साकळइ सोह अगलउ ऊर, पीड प्रचण्ड पट्टाड पूर ।

वरनी पमाइ बनियउ कडच्छि, आरुहिय अस्सि हूअउ अगच्छि ॥309॥

वरणीपसाव नामक अश्व साकल की शोभा था तथा चलान पर आग रहता था। उसका पीड मजबूत था तथा पटाड म पूरा समा जाता था। उसी अश्व पर बनिया चला क साथ आरूढ हुआ तथा स्थिर हो गया ॥309॥

वाळियइ दूवि पल्लाण यधि, वट्टूतर लङ्की जिसइ यधि ।

साहण सिंगार चडियउ सुसाळ, पागडइ पाउ द राइपाळ ॥310॥

अदवा क शृगार स्वल्प सुखाल नामक अश्व क दुमची लगा कर बाठी बसा। इसके कंधे लकी वट्टूतर के समान हैं। इसी अश्व के रकावो म पर रतकर रायपाल चला ॥310॥

धिरहरी खमइ वाघउ न ठाणि, असिराइ अमोलिक आणि आणि ।

देवानउ जाघइ रैसि दविर, सूरति दियइ ससार सविर ॥311॥

धिरहरी नामक अश्व ठाण (स्थान विरोध) पर बधे रहना सहन नहीं करता है। इस प्रकार के अमूल्य अश्व राजा को ला कर दिए जाते हैं। दीवान योद्धा क समान दिखाई दे रहा है। इसकी वीरता की सासी पूरा ससार देता है ॥311॥

गुरडियउ दियइ गुण अण ग्रीव, दळ नवस्य धिमेल्हि जु वेसि दीव ।

मांडणियउ चडियउ मोटमन्न, कुळि जास पितामह लूणन्न ॥312॥

गुरडिया नामक अश्व मृगो के गल मे रस्ती (हारी) डलवा देता है। यह अपने पर इस प्रकार रवता है मानो नतकी रख रहा हो। जिसका वश म पितामह लूणकरण है, उत्तार हथ्य वाला मांडण इसी अश्व पर चला ॥312॥

लाहणियउ पाष लँगूळि लाइ, ताचतइ भोमि वाजइ निहाइ ।
ग्रहि वाग नरइ गडियउ गरदु, हउकारे हूअउ पूठि हट्टु ॥313॥

लाहणिया नामक अश्व अपने पर लगूर की तरह रखता है । यह जब नत्वरत होता है तब पीडो की ध्वनि स पृथ्वी ध्वनित होन लगती है । दउ शरीर वाला गडिया हुकारे क साथ लगाम पकड कर इमी अश्व की पीठ पर सवार हुआ ॥313॥

वाजिन समचउ वगवत्त, आडी पटाड कूदइ अनत्त ।
वणवीर चडिय न वरइ विमाळ, तरवारी मेळण मेछ ताळ ॥314॥

समचा नामक अश्व अत्यन्त वेगवान है । यह आडी पटाड (तिरछा) बहुत सून्ता है । अपनी तलवार से यवनों में युद्ध में भिड़न के लिए बिना दर किये इस अश्व पर वणवीर चढ़ा ॥314॥

नवल्लो अरिसि आगी निसाण, जिम ठवइ पाइ गतिपात जाण ।
माडचउ जाधउ जुद्ध मूळ, केवाणि चडिय वविलउ वलूळ ॥315॥

नवल्लो नामक घोडो सभी अश्वो में श्रेष्ठ है । यह अपने पर इस प्रकार रखती है, माना पातर हो । दूर बराह के समान लगई की जड (अर्थात् मूलत जिस पर इस युद्ध का दारोमदार है) माडेचा जोधा इसी अश्व पर चढ़ा ॥315॥

वरहास नास चाचर विशेरि, फारवक जेम असि फिरइ फेरि ।
आसिरा तणउ उजळइ आसि, वेताळि केरह चडियउ व्रहासि ॥316॥

वताल नामक अश्व अपने नथुना (घुड़ प्रहार) से कपाल ताड देता है । यह अपना मवार जिम प्रकार चलाता है, उसी प्रकार चल लेता है । यह उज्ज्वल अश्वराज में उत्पन्न है । इसी अश्व पर बल्ल चढ़ा ॥316॥

अचपळउ अउव उरळउ उरुदि, जाणइ जु पइसि नीसरिय जुद्धि ।
रौटलइ अरउ चडियउ सविद्ध, साहिय खडग आखाडसिद्ध ॥317॥

रौटला नामक अश्व बडा ही बचल है । इसका वसस्थल (छातो) काठी चौडा है । यह युद्ध में प्रविष्ट होने तथा निबलन की विधि जानता है । अखाड सिद्ध अगा रापपूण हाकर अपने हाथा में तलवार धारण करके इसी अश्व पर चढ़ा ॥317॥

बगुलियउ समपइ मिरि वरि, केवाण सेंजाणइ वळह वरि ।
समसेर साहि गाऊ मओघ जाळपउ चईनउ जगि जोघ ॥318॥

बगुनिया नामक अश्व यवना (गन्धुओं) का शाना देने वाला है अथवा युद्ध करने वाला है । यह अश्व युद्ध की सभी बातें (चानें) जानता है । मानशानो योद्धा तथा स्वभाष में मने जाणता ने युद्धाघ इसी अश्व को निवाचन किया ॥318॥

चीत्राग दमूडी छाहि चक्कि, फरहरइ ऊपरि फिरियउ फरक्कि ।
वाघुलउ वाघ वाणी वखाणि, वाजिन चडिय चडिसइ विमाणि ॥319॥

चित्रांग (अश्वी) दमूडी त्रयोप स परिपूण (छवी) है । यह एते चलती है मानो ध्वजा लहरा रही हो अथवा चकरी घूम रही हो । वाघुला की स्वयं भगवती ने सराहना की है । यह अश्वारूढ होकर आग विमानारूढ होगा ॥319॥

कान्हवउ जेम कूदइ कुरग, भापतउ न टाळइ भीति पग ।
नेतसी खग आध्रज्जि नदि, वाजिनि चईनउ चडिय वदि ॥320॥

काहवा नामक अश्व मृग व समान कूदता है । यह युद्ध में प्रवेश करते समय मय से अपने शरीर को नहीं बचाता है अर्थात् अचल रहता है । नेतसी न अपनी खडग बसकर बाधी तथा इसी अश्व को निर्वाचित करके युद्धाय चढा ॥320॥

वाजिन समचउ रत्थ वाइ, पायाळ द्विमइ जइ थम्प पाइ ।
झूझार चडिय झूझारझल्ल, भूगर्ला मळेवा भारमत्तल ॥321॥

समचा नामक अश्व वायु प्रवाह व समान चलता है । इसका पद प्रहार से पाताल ध्वनित हो जाता है । योद्धा शिरोमणि झूझार भारमत्त भूगर्ला का मदन करने हेतु गती अश्व पर चढा ॥321॥

वाखाणि सलामी वग वारि, दीवाण राज सोहइ दुवारि ।
जगमाल चडिय जसहइ जुवाण, पतिसाह परिवखण पउरि प्राण ॥322॥

सलामी नामक अश्व की शोभा उसके जल प्रवाह के समान चलने से होती है । यह राजा महाराजाओं के दीवान (दीवान पात) के द्वार पर सुशोभित होता है । ब्राह्मण का पोष्य एवं शक्ति को परखने के लिए युवा जसोड जगमाल इसी अश्व पर चढा ॥322॥

धूजइ गुलाल पाअे धरत्ति, ग्रहि कोल पाउ जिम पात्र गत्ति ।
सुरिताणी सुणि वाजा सबइ, नेतसी वधारण चडिय नइ ॥323॥

गुलाल नामक अश्व के परो से पृथ्वी सम्पाद्यमान हा जाती है । इसका पर बराह के समान तथा गति (चाल) पातर के समान है । बादगाही वाघों की ध्वनि सुनकर नेतसी अपने सुयश में वृद्धि करने हेतु इसी अश्व पर चढा ॥323॥

वाजिन जम पइ ठवइ वस, दापमाँ अस्सि आपमा देस ।
माणिकव लियउ भीदडइ मागि, वयरियाँ सिरे वाहण व्रजागि ॥324॥

माणिकव नामक अश्व अपने पर वक्ष्या (नेतकी) के समान रक्षता है । इस अश्व को समुद्र की उपमा में उपमित किया जा सकता है । अपने शत्रुओं पर खडग चलाने हेतु भीदडा ने इस अश्व की माग कर लिया ॥324॥

भाकडा फाळ जाणइ जु मण्डि, लइंगर करइ उर भीति खण्डि ।
रणवीर बबूतर लिय रहस्मि, तरवारि ताल मेलण तरस्सि ॥325॥

बबूतर नामक अश्व बंदरा व समान चौकडी भरता है । यह अश्व अपन बडा
(बांडू) म भीत को डहा दता है । रणवीर ने मन्त्रणा करने के बाद इस अश्व को लिया ।
यह भीघता के साथ युद्ध क्षम म तलवार स मिडेगा ॥325॥

हेलियउ करावइ घाउ ढल्ल, चउरहिं चालि जाणइ सुचरल ।

वाजिनि, चडिय वाहण वियास, दाणवा दळेवा साइदास ॥326॥

दनिया नामक अश्व तलवार स विय जान वाते प्रहारो को डाल पर ले लिता
है । यह युद्ध की सभी चीजा का चलना जानता है । यवना को विचूणित करने हेतु
ध्याय साईनाम इस अश्व पर आह्व हुआ ॥326॥

हट्ट समाह असिराड अस, हसमइ हस मह जिसउ हस ।

अधपत्ति चाड पावर अगाहि, सकतिमउ चडिय भुजि राग साहि ॥327॥

हट्ट नामक अश्व अश्वराज न बग व समान है । सना म यह अश्व हस के
समान सिगाई देता है । राव जतसी की सहायताय पावर डालकर तथा अपन हाथो म
सडग धारण करने सकता इसी अश्व पर चना ॥327॥

पम्प नीरि परथे (?) पवङ्ग, अगिराइ साख अमहाम अन्न ।

हीरइ सतेज ऊहइ हटाळ, रणगहिलउ चडिय राइपाळ ॥328॥

हीरा नामक अश्व तेजवान तथा शूरवीर है । यह अश्वराज स उत्पत था, अत
राशेर स चल है । युद्धामत (रणगहिला) रायपाल इसी अश्व पर चढा ॥328॥

पइ छाह जम ऊउइ वि पडि, आपडइ मिरी विचि फीर अडि ।

जगजेठि चटिय लूणउ जवार, पासर अडाल वाहा पगार ॥329॥

जवार नामक अश्व पंरा की साभा एगा है मानो पक्षी उठ रहा है । यह
पंरा व पम्प जानर अपनी भीने बदनात हुए, उन्हें पकड लेता है । अचर बचघारी,
बाहुओ का काट एव तवधेष्ट राजा लूणा इसी अश्व पर चढा ॥329॥

चंतरदाळि सोटइ सारि चलत्य, हाथिअे जु घामइ जुडि हत्य ।

मूगना मळेवा गुडि माण, चडिय तिणि नरवइ चाहुजाण ॥330॥

चंतरदाळ नामक अश्व घने पर शाभा प्राप्त करता है अथवा चलत हुए
गुणामित होता है । यह युद्ध म हाथिया स भिड जाता है । युद्ध म यवना का मानमदन
करने हेतु नरव चौदान इसी अश्व पर चढा ॥330॥

पउतर छछान जिम ब्रमइ कप्पि, विरवट्टु जम ऊहउ जु वप्पि ।

ऊधरण सपूरण साभि अत्य, हथियार चडिय ले सेन हत्य ॥331॥

कउतर नामक अश्व इतना पुर्तिला है मानो बन्दर चल रहा हो। यह शरीर से अग्नि के समान ऊष्ण भिजाज का है। अपने स्वामी के समग्र धन का (प्राण का) उद्धार करने हेतु अपने हाथ में भाला लेकर हृदियार इसी अश्व पर चढ़ा ॥331॥

हरिणागळ आगळ हरिण हल्लि, वेणी रयज्ज वप्यात्त वल्लि ।

सेलहय मेघ चडियउ सिहाइ, मोगर मुगुल्ल भेळिसी माहि ॥332॥

हरिणागळ नामक अश्व चलने में हरिणों से आगे रहता है। इस की धनी सुन्दर है और यह बल में प्रसिद्ध है। भाला हाथ में लेकर मेघ राव जतसो की सहायता के लिए इसी अश्व पर जाकर चढ़ा। यह यवना की सना में जाकर भिड़ेगा ॥332॥

चर सुरति निसाचर सपत्तचार, परिम्ढ वयत्तर मसिपहार ।

आरहिय अस्सि वनियउ अकूप, रणताळि रयवत्तण देस रूप ॥333॥

मसिपहार नामक अश्व की मनोवाछा सूय के समान रागसो (यवनो) का घरन ही की है अर्थात् नष्ट करने की है। यह बंदर के समान है। युद्ध क्षेत्र में अपने प्रवेश के स्वरूप की रक्षा करने के लिए निष्कलक बनिया इसी अश्व पर आरूढ हुआ ॥333॥

साहर्णाहदीवउ तेज सार, वळियाइ जु चीत्रइ गइण वार ।

गोमादे चडियउ वरि गरज्ज, लाखाहरि राखण लोहि लज्ज ॥334॥

साहर्णाहदीव नामक अश्व तीव्रता में अग्नि के समान (ताता) है। यह दौड़ने में चीते के समान गिना जाता है। साखा का वंशज गोमादे गरजता हुआ अपने शस्त्रासो की लाज रखने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥334॥

साभाउ असि साहण सार, किलिछार भरइ जिम वाळियार ।

तरवारि भालि ऊगउ तरस्सि, ईदउ अभङ्ग आरहिय अस्सि ॥335॥

साभाउ नामक अश्व सभी अश्वों में श्रेष्ठ है। यह कालियार के समान चौकड़ी भरता है। ईदा ऊगा अपने हाथ में तलवार पकड़कर इसी अश्व पर त्वरा (शीघ्रता) के साथ आरूढ हुआ ॥335॥

झूठियउ दियइ जिम वाज झट्ट, धरहरइ माहि पइसइन थट्ट ।

इदउ अभङ्ग तरसिङ्ग अग्नि, तरसाइ चडिय तीहउ तुरगि ॥336॥

झूठिया नामक अश्व बाजपक्षी के समान क्षपटता है। यह धरहरता हुआ सना का स्पन्द तक नहीं करता है। अपराजेय वीर इदा नरसिंघ युद्धार्थ इमी अश्व पर शीघ्रता के साथ चढ़ा ॥336॥

मुगुटियउ न हालइ घट्ट माहि, सेलियउ सि^{५५} साहि ।

मांडणियउ चडियउ मीरमार, काबिली धार ॥337

मुगुटिया नामक अश्व सना के मध्य नहीं चलता है। यह भूरे रंग वाला घोड़ा लगाम पकड़ने पर पागल की तरह बन जाता है। यवनों को मारने वाला माडण इसी अश्व पर च।। यह यवनो की सना से भिडेगा ॥337॥

पाट सूत्र पदनउ पहि पगहि, छाया नह धोजइ छिलइ ठेहि।
तरवारि चालि हरिराज तन, केवाण पूठि चडियउ करन ॥338॥

पाटगूत्र नामक अश्व परो से बड़ा ही तीव्रगामी है। यह अपनी छाया पर भी विश्वास नहीं करता है तथा उससे किनार हो जाता है। हरिराज का पुत्र कण तलवार पकड़ कर इसी अश्व की पीठ पर सवार हुआ ॥338॥

मिग्घान वखण मिधुलउ समीर, गळि जत्र जत घातण गहीर।
डूगरउ चडिय राहड दुभल्ल प्राझउ अयार परथट्ट पल्ल ॥339॥

मिघला नामक अश्व मगो का एव वायु को पकड़ लेता है। यह मगो के गले में धनुष की प्रत्यन्त्रा डलवान में भी समथ है। अपराजेय वीर राहड डूगरा इसी अश्व पर चला। यह शत्रुओ के लिए चतुर तथा पराई सना को राकने वाला है ॥339॥

साळेवउ असि सोझउ सववन, वाधडा जु वूदइ जेम ववक।
सासदूत सुहड राहड सकार, रूपियउ चडिय रिणजङ्ग वार ॥340॥

साळेवा नामक अश्व को सभी लोग विशुद्ध कहते हैं। यह बदरो के समान वृन्ता है। मुभट राहड रपा युद्ध के समय लड़ने हेतु इसी अश्व को स्वीकार करके चला ॥340॥

सूरिजपमाउ सायउ सुमन, जाणे कि रत्य दाहनजन।
जइत छळि वरेवा राम जग, पडिहार चडिय पूठी पवग ॥341॥

सूरजपसाव नामक अश्व विशुद्ध एव अच्छे मन वाला है। चलने में ऐसा है माना वायु का प्रवाह हो। राव जइतमो के लिए युद्ध का बरण करन हेतु पडिहार राम इसी अश्व की पीठ पर चला ॥341॥

वविलियउ तुरी ताजी किलम्म, सारीख सम्ब जाणइ सरम्म।
धिर निलहिय माडण सबइ थट्ट, पडिहार चडिय कोट प्रगट्ट ॥342॥

वविलिया नामक अश्व ताजिकस्तान की उत्पत्ति है। यह वाघों की सम पर नश्य करना जानता है। कोटे का सुप्रसिद्ध पडिहार माडण सभी अश्व सेना को साथ लेकर इसी अश्व पर चला ॥342॥

विलहिया तुरी सह राजवम, हदमरां भदां हूई हमस।
जइ जिसउ तुरी तइदीह जाणि, पाठ रउ पवंग पण्डव पलाणि ॥343॥

सभी राज-वगियों ने अश्व प्राप्त कर लिये। अश्वों और मुभटा की सम्मिलित

ध्वनि हुई । जा जगा था, उगे जा बूमकर बसा ही अश्व दिया गया । अब पाठ व अश्व की सर्दंग पराकर लायेंगे ॥343॥

॥ गाहा ॥

इल आरत्ति जर साकति आणउ, पठहोडउ पण्डवा पलाणउ ।

मोरबळा म्रिगसाखा मने, वूकड कध काकअरि वन्न ॥344॥

पृथ्वी पर दु स आ पडा है अतएव धन और अश्व लाओ । अश्व की अश्वरक्षक वसें । वह मयूर के समान कलाव (छत्र) करने वाला, व दर के समान मन वाला कुक्कुट के समान कधो वाला तथा उत्कू व समान कानो वाला हो ॥344॥

॥ छन्द पाघडी ॥

वूकडा कध तालम्म वन्न, रेवत जाति दीवा रतन ।

पाणेण पियइ जळ पोव पथ, सोहइ सरूप धुरि वाळि सथ ॥345॥

जा अश्व कुक्कुट के समान कधो वाला बिल्ली के समान कानो वाला हो तथा जिराकी आँवो की उमाति दीपक के समान और जो एक हाथ की चुल्लु से पानी पी स एव वायु के समान चल उस प्रकार का रूपवान अश्व लोहे की कडी से बधा हुआ सुशोभित होता है ॥345॥

पडछी सतुच्छ पीडे प्रचण्ड, सण्डरइ जु आँठू भीति सण्ड ।

पूछी तउच्छ सत्योर पग्ग, वाजिन विछोडइ मिरी वग्ग ॥346॥

जिस अश्व की पडछी छोटी हो, पीडे (जाँघें) जबरदस्त मजबूत हो जो अपने आँठू से नीत का गिरा दे जिसकी पूछी छोटी हो तथा पर फुर्तीले हो इस प्रकार का अश्व यवन सेना को पीछ छोड देगा ॥346॥

पाण्डव आइ केनाण पासि, वाई धरत्ति पाअ त्रहासि ।

जागळराइ सम्पसि जोर, वूदइ वळारि वीयइ किसोर ॥347॥

अश्व रक्षक पाठक अश्व के समीप गध तो उसने अपने परा से पृथ्वी का बजाया । राव जतसी ने उस अश्व की शक्ति को देखा । यह मयूर के समान कलाव क्रिय हुए वूद पाठ करता था ॥347॥

सीडारि तास मुहि वाडि घास, असि कीध कध ओरी अयास ।

ऊपरि लेंगूळ फरियउ अङ्ग, पण्डवा हाथि नावइ पवन्न ॥348॥

इस अश्व के नयुने साफ करव मुह से घास निकाला । तब इस अश्व ने अपने कधे आकाश की आर ऊंचे क्रिये । तत्पश्चात् अपने शरीर पर पूछ घुमाई । यह अश्व सर्दंगा के वश में नहीं आ रहा था ॥348॥

रेवत भणइ राठउड राउ, असवार हुइस तउ आप आड ।

राइ जइति आइ गारुडियरत्थ, सूरिज्जवस साँभळि समत्थ ॥349॥

अश्व बहून् लगा—राठीड राव, आप मेरे पर मवार होंगे ता आप स्वय
आइए । राव जतसी गारुडिय रत्थ (पाट का अश्व) के पास जाकर बोले—हे समय
मूपवशीय मरी बात सुनो ॥349॥

वसि तू सूर वसि मू वीक, नेजे सँवूह घातउँ निझीक ।
वग्गविय राइ हाकलि ब्रहास, नेठहिय तुरी निनेडी नास ॥350॥

राव जतसी ने कहा—हे अश्व ! तू सूय वगी है और मैं राव वीका का वशज ।
मैं अपने समीप ही भाले से प्रहार करूंगा । राव ने अश्वों के गुणा का वणन करत हुए उसे
हवाला । तब अश्व ने अपने नासा सपुन को पुनार राव की बात को निश्चयपूर्वक
स्वीकार किया ॥350॥

वेससिय तुरी माभळी वत्त, सारगर पञ्च झूविय सपत्त ।
मुहरउ उत्तारि ताजी मुहाह, पडवय परा वीया पगाह ॥351॥

राव की बातें सुनकर अश्व आश्वस्त हो गया । पाँच अश्व रक्षक उमने इद
गिन् झूमे । उस अश्व के मुह से मुहरा उतारा तथा परा के पडव घ रोल दिय गये ॥351॥

सामीन मुक्खि दीहउ लगाण, पडछि विछाइ माडिय पलाण ।
तणियउ तग उरि ताण ताणि, सीरम्म गाठि दीही सपाणि ॥352॥

उक्त यशस्वी अश्व के मुह म लगाम दी पीठ पर पच्छी विछा कर बाठी बसी,
तत्पश्चात् वन पर तङ्ग खन मन कर बाधा और मजबूत सीरम्म गाठ दी ॥352॥

उरि फेरि सजापित आगिव घ, सारगरि गाठि दीही सव घ ।
चञ्चळ सतेज मुहि चउँर चाडि, मूगला छडावण माआडि ॥353॥

अश्व की सजापट के लिए उमने वश पर आगिव घ बाधा तथा अश्व रथको ने
उमको मजबूत गाठ नेर बाध दिया । मुगलो से मारवाक को मुक्त करवाने के लिए
उक्त अश्व ने सिर पर चँवर लगाया ॥353॥

पाअेडा सोहइ त्रिहूँ पासि, वाखरे चडी चानी ब्रहासि ।
सईगह ढळी चहुँ पासि रोळ, रणवासर घुघुर ऋगिय रोळ ॥354॥

उक्त अश्व के शोनां ओर रखायें मुशोभित हा रही थी । सजावट से उसकी
शोभा बढ़ गई । तत्पश्चात् अश्व के ऊपर चारो ओर खोज हाज दी । युद्धोपयोगी
सामग्री एवं घुघुरओ की ध्वनि होने लगी ॥354॥

सणठविय गळड गजगाह सिक्ख, वागुळि कि टाळि विलम्बी त्रिक्ख ।
ढाल कजि कियउ घडघडउ ढोइ, जगतोइ रहइ वउत्तिग जोइ ॥355॥

उक्त अश्व के गल मे गजगाह बाधी । वह एसी प्रतीत हो रही थी मानो वृक्ष की
टहनो पर बागुन (चमगादड़) लटक रही हो । चलने को उद्यत अश्व ने धूनी खाई ।
समीप ही लडे हुए लोग इस अश्व का चमत्कार देत रहे थे ॥355॥

घबनि हुई । जो जसा था, उसे जान नूमकर बता ही अश्व दिया गया । अथ पाठ क अश्व को सईग वसकर लायेंगे ॥343॥

॥ गृहा ॥

इल आरत्ति जर साकति आणउ, पठहोडउ पण्डवा पलाणउ ।
मोरकळा म्रिगसासा मत्रे, वूकड कध काकअरि कत्र ॥344॥

पृथ्वी पर दु स था पडा है अतएव धन और अश्व ताओ । अश्व को अश्वरक्षक वसें । यह मयूर व समान कलाव (छत्र) करने वाला व दरक समान मन वाला कुक्कुट के समान कधो वाला तथा उररू के समान कानो वाला हो ॥344॥

॥ छद पाधडो ॥

वूकडा कध कालम्म कत्र, रेवत जोति दीवा रतत्र ।
पाणेण पियइ जळ पोव पथ, सोहइ सरूप धुरि वाळि सथ ॥345॥

जो अश्व कुक्कुट के समान कधों वाला, बिल्ली के समान कानो वाला हो तथा जिसकी आंखा की ज्याति दीपक के समान और जो एक हाथ की चुल्लु से पानी पी ले एक वायु से समान चर् इस प्रकार का रूपवान अश्व लोहे की कडी से बधा हुआ शुशोभित होता है ॥345॥

पडछी सतुच्छ पीडे प्राण्ड, सण्डरइ जु आठू भीति सण्ड ।
पूछी तउन्ठ सत्थार पग्ग, वाजि न विछोडइ मिरी वग्ग ॥346॥

जिस अश्व की पडछी छोटी हो, पीडे (जाँपें) जबरदस्त मजबूत हो जो अपने आठू से भीत को गिरा दे जिसकी पूछी छोटी हो तथा पर पुर्तल्ले हा, इस प्रकार का अश्व मवन सेना को पीछे छोड देगा ॥346॥

पाण्डवे आइ केराण पासि, वाई घरत्ति पाअे व्रहासि ।
जांगळूराइ सम्पेसि जोर, वूदइ कळाइ कीयइ विसोर ॥347॥

अश्व राव पाटव अश्व के समीप गय तो उसने अपने परा से पृथ्वी को बजाया । राव जतसी ने इस अश्व की शक्ति को देता । यह मयूर के समान कलाव किय हुए वूद पाद करता था ॥347॥

सीडारि नास मुहि वाळि घास, असि कीध कध ओरी अयास ।
ऊपरि लेंगूळ परियउ अन्न, पण्डवा हाथि नावइ पवन्न ॥348॥

इस अश्व के नयुन साफ करक मुह से घास निकाला । तब इस अश्व ने अपने कधे आकाश की आर उंचे किये । तत्पश्चात् अपने शरीर पर पूछ घुमाई । यह अश्व सईशा के वश में नहा जा रहा था ॥348॥

रेवत भणइ राठउठ राउ, असवार हुइस तउ आप आड ।
राइ जइति आइ गारुडियरत्त्य, सूरिज्जवस सामळि समत्थ ॥349॥

अश्व कहने लगा—राठीड राव, आप भरे पर सवार होंगे तो आप स्वयं
 बाइए। राव जतसी गाहडिय रथ (पाट का अश्व) के पास आकर बाले—हूँ समथ
 मूयवशीय मरी बात सुनो ॥349॥

वसि तू मूर वसि मू वीक, नेजे सँवूह घातउँ निझीक ।
 वरनयिय राइ हाकलि ब्रहास, नेठहिय तुरी निनेडी नास ॥350॥

राव जतसी ने कहा—हे अश्व ! तू सुय वशी है और मैं राव वीका का वशज ।
 मैं अपने समीप ही भाले से प्रहार करूंगा। राव ने अश्वों के गुणों का वर्णन करते हुए उसे
 बताया। तब अश्व ने अपने नासा सपुट को पुनः राव की बात को विश्वयपूर्वक
 स्वीकार किया ॥350॥

वससिय तुरी माभळी वत्त, सारगर पञ्च झूत्रिय सपत्त ।
 मुहरउ उतारि ताजी मुहाह, पइवध परा वीया पगाह ॥351॥

राव की बातें सुनकर अश्व आश्चर्य हो गया। पाँच अश्व रक्षक उसके दूध
 गिरा भूमे। उस अश्व के मुँह से मुहरा उतारा तथा पैरा के पञ्च ध सोल दिय गये ॥351॥

नाग्यीक मुकिस दीहउ लगान, पउछि बिछाउ माडिय पलाण ।
 तणियउ तग उरि ताण ताणि, सीरम्म गाठि दीही मपाणि ॥352॥

उत्त यशस्वी अश्व के मुँह में लगाम दी पीठ पर पडछी बिछा कर काठी बसी,
 तत्पश्चात् वश पर तद्ग यन यच कर बाधा और मजबूत सीरम्म गाठ दी ॥352॥

उरि फेरि सजोपित आगिअध, सारगरि गाँठि दीही मत्रध ।
 चञ्चळ सतेज मुहि चउँरि धाडि, मूगला छडावण माअाडि ॥353॥

अश्व की मजबूत के त्रिण उगके वश पर आगिअध बाधा तथा अश्व रक्षक ने
 उगवा मजबूत मोठ देकर बांध दिया। मुगलो से मारवाच की मुक्त करवाने के लिए
 उत्त अश्व ने मिर पर चकर लगाया ॥353॥

पाअेठा सोहइ त्रिहूँ पागि, वाखरे चडी वानी ग्रहामि ।
 सउँग टळी चहँ पागि खोळ, रणवाअर घुघुर ऋगिय राळ ॥354॥

उत्त अश्व के दाना आर राखें मुजोभित हा रही थी। मजबूत से उगकी
 माभा घट गई। तत्पश्चात् अश्व के ऊपर चारों ओर गाल डाल दी। मुदापवागो
 सामग्री एवं घुघुरवा की ध्वनि होने लगी ॥354॥

सण्ठविय गळ मजगाह सिअय, वागुळि त्रि टाळि विलम्वी त्रिवग ।
 टाल वजि वियउ घडघडउ टाउ, जगताइ रहउ वउतिअग जोउ ॥355॥

उत्त अश्व के गले में मजगाह बांधी। वह सभी प्रतीत हो रही थी माना वृष की
 टहनी पर वागुन (घमगाह) सटक रही हो। चलने को उद्यत अश्व ने धूनी मारी।
 गमीन ही गड़े हुए वागुन अश्व की समन्वय हुए रहे थे ॥355॥

परठियउ प्राण पागउइ पाउ रेवति चडिय जउतसी राउ ।

चउँडाहर चडियउ चनवति, परमेसर जाणे पद्वपति ॥356॥

राव जतसी अपनी शक्ति के साथ रवाना पर पर रग पर उक्त अक्षर पर चढ़ा ।
चनवती राव चूहा का बगल हम अक्षर पर चढ़ा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो
भगवान विष्णु गहड़ पर चढ़ हा ॥356॥

छत्तीस डाबि अशि चडिय छोहि, लूणत्रा समोभम विटण तोहि ।

रेवति चडिय चम्पवि रग, वीवहर राइ यधि वोमि लग्ग ॥357॥

राव लूणत्रण का पुत्र शत्रो से लड़ने के लिए साराप इस अक्षर को दबाने पर
चढ़ा । राव वीका के बगल राव जतसी ने अक्षर पर चढ़कर राव दबाई । उम समय यह
बढ़कर आकाश तक जा लगा ॥357॥

ऊपाडि वग्ग लद्धावि अस्सि पाटपति जेम सूरिज प्रहम्सि ।

वेकाण बुदाविय जेम वप्पि, थोर ह्य राइ हइ कधि थप्पि ॥358॥

सिंहसनाधीश राव जतसी ने अक्षर की तगाम उठाई और उम आगे बढ़ाया ।
वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो मूष का स्पश करेंगे । उहोने रग अक्षर को बन्दर का सामान
बुदाया तथा अपने पुर्तियों हाथो से उतके कंधे घपघपाये ॥358॥

उदइगिरि जेम जादीत ओपि, वूभनी साभि आरहिय तोपि ।

गईवरा मीर उतरइ गाउ, राठउड रठ जउतसी राउ ॥359॥

उदइगिरि पर जम आदित्य की शोभा हाती है उमो प्रवार यह पृथ्वीपति राव
जतसी मुशोभित होते हुए सरोप इसी अक्षर पर आरुण हुए । राठीय राव जतसी यचना
और उनके हाथियो पर रुठ गया है अत उका गव गडित होगा ॥359॥

तुम्हा तगिअर सिरि पाण तण्ण, पह जइत गम्ह देसी वटण्ण ।

मइगळ मुगुल्ल जउतसी मेह, सारे भँप्रागि भाजइ साह ॥360॥

तक्षक रूपी यचना पर अपने हाथो के उत्ताप से राव जतसी रूपी गह्व शपट्टा
मारेगा । यवन वाणगाह कामरा हाथी स्वरूप है उम का राव जतसी रूपी गिह मुद्ध से
तलवार से शन शन मार गिरायगा ॥360॥

रामण मुगुल्ल राउ जइत राम, सङ्खरइ दन्त हुइसी सँप्राग ।

असपत्ति उअह जइतउ अगत्थि सोखसी सन्न वरिमाळ सात्थि ॥361॥

मुगल वाणगाह कामरा रावण है और राव जतसी राम । युद्ध होने पर यचना
का नाश होगा । बादशाह कामरा समुद्र है तो राव जतसी अगम्त । यह अपनी तलवार
से शत्रु समूह को मोख लगा अर्थात् नष्ट कर देगा ॥361॥

चडिया वटण्ण चावक्क चाळ, वडिसी जइत न करइ विमाळ ।

असराळा ताजी उमगेहि, पनगाँ नेस धूजइ पगहि ॥362॥

नगारो की चोट पर सना चढ़ी । राव जतसी अब लडने में दर नहीं करेगा ।
अनेक अश्वों के भाग में चलने पर (अथवा उमंगित होने पर) उनके पैरों से शेषनाम का
स्थान कम्पायमान होन लगा ॥362॥

नीसाण वाजि नरगा नफेरि, रजद्रगति डउँडि भरहरी भेरि ।
मरवाडि सेन हालिया मसत्त, साइयर जाणि फाटा सपत्त ॥363॥

नगाह निसान एव नफीरी बजने लगे । डूढ़ी बड़ी तीव्र गति से बज रही थी
तथा भरी भी भरभराने लगी । सभी मरप्रदेशीय सेना चली मानो साता ममुद्र एव साथ
फट गय हों ॥363॥

नळ वाजिय तुरिया वाजि नास, वाजिय पयाळ पाअे ग्रहास ।
जइतसी राउ जगमा जोळ, कापियउ सेस बूरम्म वोळ ॥364॥

नळ बजने लगे तथा अश्वों के नघुने भी । अश्वों के पदतल प्रहार से पाताल
बजने लगा । राव जतसी के अश्व समूह (अश्व सेना) से शेषनाम, कच्छप एव वराह
कापन लगे ॥364॥

जडलग फरी पडखडइ जोड, पटहोडा वाजिय पूरि पोड ।
ऊक्धि असुर रइ सेन आइ, सिलाहादार जइतर सदाइ ॥365॥

बटारियां करियां और कवचों की सधियां परस्पर रगड़ खाकर बजन लगी ।
अश्वों का पीछा का आघात ध्वनित होने लगा । मवता की सेना चढकर आ गई है । इसी
अवसर पर राज जतसी के शस्त्रागाराधक आये ॥365॥

तामाळ पूठि छोडिय कँटाळ, सिलाहादार दइ जीणसाळ ।
मारोगा दरपण सखतराँह, पटहोडे घातिय पक्कराह ॥366॥

गिह स्वरूपी मवारों ने अश्वों की पीठ छोड़ी । शस्त्रागाराध्यक्षों ने उन अश्वों
की कवच पहनाये । वे अश्व दण्ड के समान दमक रहे थे । तत्पश्चात् उ ह पागर
पहनाय ॥366॥

वगतरीं टईयल जाणवद्ध, गूरा सनाह पहिरद सनद्ध ।

विट्टिया नर हूआ अउर ग्रनि कथा विरि पहिरी मुद्राक्नि ॥367॥

कवच दस्तावे एव जानुबंध बांध कर सभी और कवचित्त हारन तयार हुए ।
मुद्र में लडने के लिए ये और और ही (दुगरे ही) वन क हा गण थे माना गायो न अपने
शरीर पर कथा (गण रग का घोरा) पहन रची हा ॥367॥

एवटी जगह सउँ अणि छाइ रापियउ टोप सिरि जइत राइ ।

राइ जइति पारि रगाउळीय, सज सइ करि हायल सद्धवीय ॥368॥

उ कथिया वाग कवच न अपने शरीर की आच्छादन करन राइ जतगी ने

अपने गिर पर टोप धारण किया, रङ्गावली (जाधो का वक्त्र) पहनी तथा दस्ताने पहन कर अपन आपको मुसज्जित कर लिया ॥368॥

ताजी सुरग ताणैय तग, जीपिवा जग आरहि अभग ।

घघहर राउ उरि करिय घूस, मचवियउ लेय बाळउ मजस ॥369॥

राव जतसी ने अपने ताजिकस्तानी जश्न का तग सीचा और युद्ध को विजय करने हेतु यह अपराजेय वीर उस पर आरूढ़ हुआ । राव घूधा व वशज राव जतसी ने अपनी सना को आगे किया और यह बालिय गाय ततवार लेकर मुद्राध तत्पर हुआ ॥369॥

धूधहर धार राज करिय सार, भूगलाँ मार हिलिया हजार ।

हुरमार हीस हईवर हुलाउ, रउद्रा सिरि आयउ जइत राउ ॥370॥

राव घूधा का वशज ततवार लेकर मुगजित हुआ । मुगला का मारने के लिए हारो सनिह गम्मित हुए । अशो की हीस एवं बालाहन होते लगा । यवनो पर राव जतसी गत कर आया ॥370॥

॥ गाहा ॥

पनर समत अेवाणव पवखरि, पुणि मागसिरि प्रथम पखि पूवरि ।

हठमल हइवइ सउँ हथियारे, विदियउ जइत चउथि सिनिवारे ॥371॥

सबत प द्रह सो एकानवे के मागनीप मास ने कट्टण पण म गर श्रच्छ अन्तीय वीर राव जतसी मुगजित हाकर मानशाह के साथ दस्तनारो से भिडा । उस दिन चतुर्थी तिथि एवं शनिवार था ॥371॥

॥ छन्द पाधडी ॥

वळिपति जइति वावाडि बालि, ढोइया घाट वाजतइ ढालि ।

आरम्भ राम जइतसी अत्ति, आवियउ मीर सिरि आधरत्ति ॥372॥

शक्तिशाली राव जतसी प्रतिनाबद्ध होकर ढोल को बजाते हुए अपनी सना लेकर पहुचा । राव जतसी ने राजाराम की तरह बहुत अच्छी तयारी कर रखी थी । वह आधी रात व समय यवना पर आ पहुचा ॥372॥

धूधाहर सामी सेन ढोर हइवइ नळि हुई होइ होइ ।

मुहम्मद नाम जम्पिष मुहाह तेण गहि ऊठिया भीर साह ॥373॥

धूधा के वशज राव जतसी ने अपनी सना को यवनो व गम्मुख चलाया । यह देखकर बादशाह कामरा की सेना में हाय हाय होने लगी । यवन तब अपने मुह में मुहम्मद का नाम ले रहे थे । वे तनवारें लेकर उठे ॥373॥

ताणिय कमाण कनाढ तूग, वाणाउळि ऊडिय लोहि बूग ।

जइ राम जैपिय हिंदू जणैहि, घातिया ताम घोडा घणैहि ॥374॥

हिंदू सनिको ने अपने मुख से राम की जय कहा तथा कमान को कानो तक सींचा । वाणा से खत की धारा छूटी । उसी समय अन्य भी बहुत से अश्व यवनसेना पर छाह ॥374॥

राठउडि रोळि रेवत रघ, विच्छूट जाणि सङ्गळी वग्ध ।

पतिमाह सेन हुअतइ पगेहि, माथइ असि चाडिय मारुअेहि ॥375॥

राणा के अश्वो की ध्वनि सुनाई देने लगी । वे ऐसे प्रवेश कर रहे थे मानो माकल से बंधे बाघ छूट कर आ रहे हों । बादशाह की सेना के सडे होते ही उन पर राठौडो के घोड़े आ चडे ॥375॥

वरकोइय तेजी नाळि विज्ज, भाइअे किया भेळा भडिज्ज ।

सागुलइ राग वागा सँमोहि, लाखियउ तुरी सामहइ लोहि ॥376॥

राठौड भाइया ने अपने अश्व यवनो पर डाल दिये । उन अश्वो की नालो से दिजली के समान स्फुलिङ्ग प्रकट हो रहे थे । सागा ने रान और वाग को सम्हाल कर अपने अश्व को शस्त्रो के सम्मुख चला दिया ॥376॥

सग्रामि घोरि सामहइ सारि, मेरिहयउ तुरी मोगर मझारि ।

जइतसी राइ मच्चावि जग, अम्मलीमाणि टाळिय न अग ॥377॥

सग्रामघोर राव जतसी ने अपना अश्व यवन सेना के अन्य शस्त्रों के सम्मुख ला गडा किया । वे युद्ध करने लगे । उस अमलीमाण ने युद्ध में अपने शरीर का नहीं बचाया ॥377॥

रेवत घानियउ जइत राइ, नवसहस घणी कान्ह नियाउ ।

सेड रइ राइ पोहणि गँघार, डोयउ सरूप वाजती धार ॥378॥

राठौड राव तूणवरण (पाण्डव कण) की तरह राव जतसी ने अपना अश्व यवन सेना के मध्य डाला । सेड के राव ने यवन सेना में तलवार बजाते हुए अपने आपको पहुँचाया ॥378॥

दळि दाणवि जइत सरूप दीठ, नेठाहि घोरि नाखिय नित्रीठ ।

हिंदुआ तुस्वना हुविय हक्क, कारिमाळ वाजि कळळिय बटक्क ॥379॥

यवनों की सेना ने राव जतसी के स्वरूप को दृष्टा अथवा सेना ने राव जतसी को दानव-स्वरूप देखा । वह अपने भाले को विश्वास के साथ चला रहा था । यवनो और हिंदुओ की हाक पर हाक होने लगी तथा तलवारा के टकराने से (बजने से) सेना में कोलाहल होने लगा ॥379॥

पडियाळ घूणि पउरिस्सि पूरि, गाजणइ तणइ पइठउ गररि ।
 रुरिसाण विवाणे वेड खागि, वाजिया घाउ ऊडी व्रजागि ॥380॥

पोरुप से परिपूण गर्बीला राव जतसी अपनी तलवार चलाता हुआ यवन सना मे प्रविष्ट हुआ । वेडके स्वामी राव जतसी की तलवार से यवन विमानो पर चढने लगे । परस्पर प्रहार होने से ब्रह्माग्नि उढने लगी अर्थात् चिनगारियाँ फूटने लगी ॥380॥

खाफरा जइत वाहइ खडग्ग, दासदे जणि वने विलग्ग ।
 ऊतरा सेनि जइतउ अबीह, सीघरे पईठउ जाणि सीह ॥381॥

राव जतसी ने यवनो पर अपनी तलवार चलाई तब एसा प्रतीत होने लगा मानो वन म अग्नि लगी हो । निमय जतसी यवनो की सेना म इस प्रकार प्रविष्ट हुआ माना हाथियो के झुड मे गिह प्रविष्ट हुआ हो ॥381॥

वूभाथळ भाँजड मीर कध, ऊवुरुड चडइ दळ अनिवघ ।
 आवद्धि टोपि ऊभरी अग्गि, खीटिया थाट वेवे खडग्गि ॥382॥

राठोड सनिक् क्रोध के वशीभूत होकर वघर उघर फन गये । वे यवन बादशाह व सनिक्को के कधो को हाथी का गडस्थल मानवर तोड रहे हैं । आयुधों से सिरस्त्राणो पर अग्नि प्रकट होने लगी तथा दानो सेनाओ ने अपनी अपनी तलवारो से परस्पर विनाश किया ॥382॥

गहगहिय थाट वेऊँ गरीठ राठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ ।
 सूरुा सधीर वाजइ सरोस पडिकाळे ऊडइ जिरहपोस ॥383॥

दाना सनाए अत्यंत गौरवावित हुइ । राठीडो और यवनो के मध्य झडी (गस्त्र प्रहारो की) नग रही थी । जो धैरवान शूरवीर थे वे रोपपूण होकर लड रहे थे तथा तलवारो के प्रहार से कवच कट रहे थे ॥383॥

राठउडा हाथे रिम्मराह, सद्धरड मीर सहिता सनाह ।
 जरदाउळि फूटइ मेल जीह अरि उर अणी ठलइ अबीह ॥384॥

शत्रुआ के लिए राहू स्वरूप राठीडो के हाथो यवन सनिक् कवच सहित कट रहे हैं । सेलो (भाला) की नोक से कवच विनैप फूट रहे हैं । इस प्रकार वे निडर योद्धा अपने भालो से शत्रुओ का हृदय वीध रहे हैं ॥384॥

घण घाइ मुगुल्ला घडिय घट्ट रहचिवा थट्ट हुड आहरट्ट ।
 सेलार सहइ सारीर सार भाले भँभार घट्ट पहार ॥385॥

जिम प्रकार लुहार घा से लोहे को बूटता है उसी प्रकार राठीडो ने अपने प्रहारो से मुगनो व शरीर का बूटा । परस्पर मिडने से ध्वनि होने लगी । अरब अपने शरीर पर तलवारो को सहन करते हैं । भाले का प्रहार तो इस प्रकार का हो रहा है कि जिममे पहाड पट जाये अर्थात् सीधे हो जाय ॥385॥

ताइयाँ तणे वाजइ तिघग्ग, ऊतरइ गात हूँता अलग ।

राठउड विढइ रिणि रस लुद्ध, सारे मुगुल्ल हुअइ वि विसुद्ध ॥386॥

राजपूतों के शरीर पर तलवार बज रही है जिससे उनके शरीर में कट-कट कर अलग हो रहे हैं। राठीड रण रस में पग कर (रण रस विलुब्ध होकर) लड रहे हैं उनकी तलवारों की मार से मुगल सैनिक सनाहीन हो रहे हैं ॥386॥

अइराळि अणी पाया अठाहि, मतवाळा घूमइ मीर माहि ।

वाहइ खडग वेसे विरत्त, रिणठाह रत्त आवद्ध रत्त ॥387॥

सेना के ऐरावी अश्वों के पर यथा स्थान नहीं पड रहे हैं। उनके मध्य यवन मतवाले बने घूम रहे हैं। वे युद्ध स्थल एवं शस्त्रास्त्रों में तो अनुरक्त हैं, पर अपनी आयु से विरत होकर तलवार चला रहे हैं ॥387॥

रउद्र दळ रहच्चइ जइतराउ, होहू कि मह वाजइ हुलाउ ।

ताइया उरे छइ कूत तेह, मारुअड राउ मातउ कि मेह ॥388॥

यवन सेना के साथ राव जतसी भिड रहा है। वह ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो वर्षा हो रही है और शीतलहर चल रही है। राजपूतों के हृदय में भाला शोक कर मानो उड़ जल सिकता (तेह) दी जा रही है। इस प्रकार मारुआव जतसी मचा (युद्ध करने लगा) मानो मह मचा (मूसलाघार बरसा) हो ॥388॥

घडहडइ ढोल घूजइ धरत्ति, पडियालुगि वरसइ खेडपत्ति ।

बीवाहर राजा इद वग्गि, खाफरा सिरे खिविया खडग्गि ॥389॥

ढोल बजान पर पृथ्वी कम्पायमान हो रही है। खेडपति राव जतसी तलवार बरसा रहा है। राव बीका का वज्र राव जतसी इद्र है। यवना पर तलवारों चमकने लगी ॥389॥

पतिसाह फउज फूटन्ति पाळि, ब्रह्मण्ड जइत गाजइ विचाळि ।

अम्बहर जइत वरसइ अवार, घुटु विया मीर मुहि खग्ग धार ॥390॥

बादशाह की फौज तालाब की पाल में समान फूट गई। इसके मध्य राव जतसी ब्रह्माण्ड (आकाश के बादल) की तरह गजने लगा। राव जतसी निरंतर अथवा बिना श्रुतु के बादलों की तरह बरसने लगा। यह यवनों पर तलवार से घारा के समान गडगडाने (गजने) लगा ॥390॥

सार जळ मेछ ३ सहइ सक्कि, वरिमाळ काह पडियउ वटक्कि ।

घूघहर वरसता घन्न घन्न, गुरिजाँ निहाइ वाजइ गिगन्न ॥391॥

तलवार रूपी जल की वर्षा यवन सह नहीं सक। उन पर तलवार रूपी बहुर गिरा। घूघा के वज्र के बरसने पर लाग घन्न घन्न कह उठे। गुजों की ध्वनि से आकाश गन्नने लगा ॥391॥

सुरिसाण सीसिवाजइ सडग्ग, ऊभरइ बूर आकासि लग्ग ।

वेठतीं विलम्बइ वात वार, धउसिया भीर मुहि सग्ग धार ॥392॥

मुगल बादशाह कामरा की सना पर सडग बज रही है। उनकी धाराओ स निक्लन वाला घुरादा आकाश तक पहुँच रहा है अथवा आकाश तक भर रहा है। सडते हुए बात करने के समय तक भी नहीं ठहरते हैं अर्थात् धीघ्रता स लड रहे हैं। यवनो पर सडग धारा गजने लगी ॥392॥

मरदिया जेम जगमल्लत मल्ल, ढण्णेळि टल्ल मारिय मुगल्ल ।

रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त, सम्भळइ सत्त विसथरइ वत्त ॥393॥

मुद्र म जिम प्रकार जगमाल मालावत न यवना का मदन बिया था, उसी प्रकार राव जतसी ने डोल बजाकर यवना को मार डाला। शोणित इपर उधर पत रहा था, जिस योगिनियाँ (अथवा सूप) सोख रही थी। इस प्रकार के वीरतापूण काय के बारे में जो भी शत्रु सुनता है वह आग बात बढाता है ॥393॥

अणिजे असत्त पूरिया पत्त, तिम छडइ गत्त साळि जिम सत्त ।

राठउड राह सेलार साह, गळवाहू धाति भञ्जइ गडाह ॥394॥

मना के मध्य योगिनियाँ अपन-अपने पात्र शत्रुरत्त स भर रही है। यवनो (गत्रुआ) का गरीर हम प्रकार छडा (कूटा) जा रहा है। जस चावल निवालन के लिए धान का छडा जाता है। राठोड राव जतसी और मुगल बादशाह कामरा गले में गलवाइयाँ डालकर उसे गडो (पत्थर के गोला) स तोड रहे हैं अथवा नष्ट कर रहे हैं ॥394॥

रडवडइ रण्ड साडे विखण्ड, ताजिया तुण्ड पडिया प्रचण्ड ।

सइघणी भोमि वाहरु सीत, देवता राउ पाडइ दर्ईत ॥395॥

तलवारों स कट हुए कवच इधर उधर लुढ़क रहे हैं। बहुत स अदबो के तिर भी काटे गये हैं। असली स्वामी सीता रूपी भूमि को लौटा लाने में सहायक है। राजा रामचंद्र की तरह राव जतसी भी दत्य रूपी यवना का नष्ट कर रहा है ॥395॥

स्रीराम जइत सारे निसङ्ग, लोहडे मसक्कर लियइ लङ्ग ।

राठउड राउ गळवळइ रोम, वावणउ विलागउ जाणि वाम ॥396॥

श्रीराम रूपी राव जतसी तलवारों के बारे में निश्चक है। उसने गस्त्रधात में सभ रूपी लङ्का का ले लिया है। यवन गलबल (अस्पष्ट शब्द) करते हुए कहते हैं कि राव जतसी ता वामनावतार है, जो आकाश तक जा लगा है ॥396॥

आहणिय जेकि असिमरि उलाळि, पहटिया विया गमिया पयाळि ।

पाठे पाजे किय पहारि, मारिया मेछ वाजिन मारि ॥397॥

जिस प्रकार देवताओं द्वारा तलवार भावकर एक दत्य का मारा गया तो दूसरे सब दौडकर पाताल में चल गये उसी प्रकार राव जतसी द्वारा एक यवन के मारे जान

पर दूमर यवना पलायन कर गये । उसने अपने पर जमाकर प्रहार किये और अनेक म्छा (यवनो) और अश्वो को मार गिराया ॥397॥

गोरिया तथा गाळा ग्रहाह, बड्ढावि आइ वाळी विचाह ।
गाळउ गळाह मोखावि गाइ, राजवी जेम राठउडि राइ ॥398॥

सुप्रसिद्ध राजविधो की तरह राठौड राव जतसी ने यवना द्वारा गले में बधन डालकर पृथ्वी रूपी गाय को ले जाते समय बीच में ही उसके गले का बधन काट दिया तथा उस गाय को गले बधन से मुक्त करवा दिया ॥398॥

चउंडाह सामी कूति चाडि, ऊतरा सेन नाखिय उपाडि ।
चूलाळा किया झाडि झाडि, मोटा ग्रह मोखी मारआडि ॥399॥

राव चूडा के वधज राव जतसी ने यवन सेना को अपने भाले की नाक पर चढ़ा कर उभरवा डकैना । उसने यवना को तितर बितर (झाड़-झाड़ के पास) कर दिया तथा बादशाह कामरा रूपी बहुत बड़े ग्रह से मारवाड को मुक्त करवाया ॥399॥

सङ्घारि मीर मूगळीं साय, लाहउरि गयउ बेरात्रि लाख ।
मुरधरा वधिय उछव मण्डाण, सिवहरिय गयउ धरि खुरासाण ॥400॥

इस युद्ध में मुगल बादशाह कामरा अनेक अमीरों का मरवाकर, मुगलों की प्रतिष्ठा नष्ट करवा कर तथा अपना सुयश नष्ट करवा कर लाहौर चला गया । मुरधरा पर अनेक उल्लास का प्रारम्भ हुआ और वह बादशाह कामरा अपने घर का स्मरण करते खुरासाण चला गया ॥400॥

॥ कळस ॥

पातिसाह परमविय अम्ब उतारि अमगा,
वहें गिळावि गोमट्ट ताडि आंठुअे तुरगा ।
वहें समीर मंदमत भोमि लोटइ घाइ भरिया,
वहें हडहडइ तुरग अग असमरि ऊतरिया ।
काविली थट्ट दहवट्ट किय, वीकाहर राइ वधरु,
जइतसी प्रवाहडउ किय जमा, जाम मूर ससिहर जरू ॥401॥

अपराजेय धीर राव जतसी ने मुगल बादशाह कामरा का पराजित करने उसका पानी उतार दिया । कहीं पर शूकर, और कहीं पर सियार अश्वों व आठुओं (वशा) को पसीटते हैं । कहीं पर मदो मत्त अमीर घोड़ों से भर हुए भूमि पर पड़े हुए हैं । कहीं पर तनवार की धार से कट हुए अंग वाले अश्व हिन हिना रहे हैं । मुगल बादशाह कामरा की सेना का तितर बितर करने वाला राव धीका का वधज राव जतसी सिंह के सदृश अपने युद्ध चरित्र (यश) को जमा रखा (बढ़ाया), जो सूय और चंद्रमा के रहने तक (रक्षा के साथ) स्थिर रहेगा ॥401॥

शब्दार्थ

- 1 अघ्राहत=जो नष्ट नहीं हो सके। अव्यर=अक्षर अविनाशी। सारद=गारदा। गुणेमर=गणेश। मडलीकी=गासनाध्यक्षी। मोटी=बड़े। कुळि मउडी=वग के सिरमौर। रसणि=जिह्वा स।
- 2 उदियउ=प्रकट हुआ। वेगडइसांड=अतुल बलशाली वृषभ व समान। विमारउ=दूमरा। सघीर=घयवान ने। हठमल्ल=हठप्रतिन वीर।
- 3 ऊयूळ=अत्यंत विस्तृत। चाउ=स्वभाव। आपहे=स्वय ही। सोहिया=सुशोभित हुए। प्रवाडा=युद्ध चरित थप्ट माग। सिद्ध=सिंह के। जगो=जाग्रत हुई। जगीस=इच्छा युद्ध की कामना।
- 4 सिरि=ऊपर। वषी=अभिवृद्धि हुई। सस=कीर्ति। दसां देस=दमा देगो म। मल्लेछ=यवन, शत्रु। विहारि=भयभीत करव। सत्र=शत्रुभा को। मिरिया=यवनो को। वहारि=भारकर।
- 5 कांघमल्ल=बलशाली। सुरिताण सल्ल=सुल्तानो के लिए शल्य-स्वरूप। राइ=राव ने। आण=शासनाना दुहाई। साहि=धारण करवे। साण=शान।
- 6 जीरिय=जीते। हेल=सम्मिलित होकर, बात ही बात म। वाघियउ=बड़ा। सामद्र वेळ=समुद्र की तरफें। सापा=सय म। बहास=अश्व। अस्सहास=चञ्चल। पूगी=परिपूण की।
- 7 चतुरङ्ग=युद्ध क लिए। चाल=चलते समय। मारग=माग म। लई=ली। घणी-स्वामी। घाइ=आक्रमण करवे। जेम=जसा।
- 8 पह=राजा। मलइ=अच्छी तरह से। नागउर=नागीर। प्राणि=शक्ति स। नव सहस धणी=राठीठ राव म। रुडतइ=बजाते हुए। निसाणि=नगारे युद्ध वाद्य। पालटि=बदल दिया, पराजित किया। घाइ=अस्त्र प्रहारो से। दाइ=अवतर। रइवास=निवास स्थान।
- 9 छापरउ=छापर। छांणी छायांह=छह यूया म तितर बितर। वळियण्डि=वीर। फरि=शस्त्र विशेष। फरि=चलाकर। वांह=हाथो से। चडिय=चडा। चीति=चित्र म। राहाचरव=युद्ध की। देवाळि=दिखाई।
- 10 घामलिय=मारे बूटे। घाइ घाइ=प्रहारो से। चत्र परियइ=चत्र चलाया, आण दुहाई फिराई। चङ्ग=भली प्रकार से। लीघइ=लिये। दुरङ्गि=दुग, कोट।
- 11 उग्राहइ=उगाहता है। च्यारि चक्क (मु)=चारो बार। कोपिया=कुपित हुए। भेल्हइ=एकत्र करते हैं भेजते हैं। वटक्क=सेना। खीजियउ=त्रोधित।

हृत्थ खाइ (मु) = गत्रता रखता है। राहाळइ = आक्रमण करता है।

- 12 दोवाण = राज्य सभा। माहि = म। परठवियउ = रखा। बीडउ = पान का बीडा। अनइ = और। मनाहि = कवचित होकर। बिहुँ = दोनो ने। शालिय = पकडा। ऊमि बाह (मु) = हाथ खडा करके, सस्त्र धारण करके।
- 13 माड रइ = भाणियो के। राइ = राव ने। मुहि = मुह पर। मोडि = मरोडी। कटव = सेना। ताणिया = चलाई। कोडि (मु) = कोटि, असभ्य। काळइ = वीर। कळ्ळि = अश्व, शत्रु। काजि = लिए। रउद्रा = यवतो का। ताणिय = चलाई।
- 14 पञ्चनइ = पचनद। लड्ढि = लाघकर। पाइ = परा से। ऊरियउ = उतरा। सहाउ = सहायता। तेवाडि रूप = कुआ जुतवा कर। भरिया = भरे। तळाउ = तालाव।
- 15 सह = सभी। कळहि = लडने के लिए। कल्ह = युद्ध। सनेह = कवच। सारि = बाघकर। मागिसी = मागेगा। बडर = प्रतिशोध, बदला। ताणिया = चलाई। तक्क = लक्ष्य बनाकर। केसवाळइ = इसी नाम का तालाव। पाया = पानी पिलाया।
- 16 गारिया राउ = यवन शासक। थळ माळ = टीलो के समूह। गाहि = रींते हुए। ब्रह्मण्डि सागि (मु) = आकाश तक जा लगे, अत्युत्साहपूर्ण। वेऊ = दोगो। वरोक = खेठ मोडा। डूका = पहुँचे। निझोक = पास।
- 17 माजणउ = स्नान। करिय = करके। करि = की। कणि = कठो म। करिमाल = तलवार। सालि = पकडी। केवी कुदाळ (मु) = शत्रुओ के लिए कुठार स्वरूप। जमहरे = जीहर मे। देय = देकर। अगि = अग्नि। घूघहर राउ = राठोड राव। लागउ घियगि (मु) = आकाश तक जा लगा, अति उत्साहित हुआ।
- 18 साँघणइ = जीहर की अग्नि मे। सत्ति = मतिपयाँ। सत्तूछ = थोडी। सातिय = समूह म। हायउ = हाथो से। दुरिङ्ग = अग्नि। आप हतिय = स्वय के हाथो से। ऊघाडि ताक = दुग के कपाटों को। नाविय = डाले।
- 19 पासरिअे = कवचित होकर। पइठउ = प्रवेश किया। प्रइज पाळि = प्रजा का पालन करने वाला। घाटाँ = सेना के। बिचाळ = मध्य। हाव = हुंवार। वज्जि = शत्रुपमान हुई। गोण = प्रत्यञ्चारण। गइणाग = आकाश। गजि = गजने लगा।
- 20 पडिया = पापल हाकर गिर पडे। प्राळि द्वारि = प्रतोली के आगे। नीजळी = जली। अग्निस्नान किया। नाह मउ = स्वामिया के साथ। सम्प्रतउ = पहुँचा। गरगि = स्वर्ग में। ऊठियउ = उठा। रण्ण = रिणमल। अगि = अग्नि की तरह, आगे।
- 21 घरा = पृथ्वी। छळ = क लिए। रक्मवाळ = रक्म। गडकियउ = गजने लगा साँइ = बन्गाली वृषभ। गोत्र गावाळ (मु) = वन की रक्षा करने वाला। बडर = प्रतिशोध। चतुरङ्ग = युद्ध म। डारिय = गिराकर। दुरङ्ग = दुग को।
- 22 क'हा = पाम से। छट्टावि = छुटा लिया। सगि = तलवार। छराह = हाथ म।

शब्दार्थ

- 1 अन्नाहत = जो नष्ट नहीं हो सक। अवसर = अवसर अविनाशी। सारद = सारदा। गुणेशर = गणेश। मडलीकी = गामगाध्यक्षा। माटी = बडे। बुळि मडडी = वन के तिरमोर। रसणि = जिह्वा से।
- 2 उदियउ = प्रकट हुआ। येगडइसाई = अतुल बलशाली वृषभ से समान। वियाउ = दूसरा। सघोर = धयवाग न। हठमल्ल = हठप्रतिन घोर।
- 3 ऊपूळ = अत्यंत विस्तृत। चाउ = स्वभाव। आपहे = स्वय ही। सोहिया = सुशोभित हुए। प्रवाडा = युद्ध चरित, श्रेष्ठ माग। सिद्ध = सिंह के। जग्गी = जाग्रत हुई। जगीस = इच्छा, युद्ध की कामना।
- 4 तिरि = ऊपर। वधी = अभिवृद्धि हुई। सस = कीर्ति। दसा देस = दसा देशो म। गल्लेछ = यवन, शत्रु। विहारि = भयभीत करके। सत्र = शत्रुआ को। मिरिया = यवना को। बहारि = मारकर।
- 5 कांधमल्ल = बलशाली। सुरिताण सल्ल = सुल्तानो के लिए शल्य स्वल्प। राइ = राव ने। आण = शासनाना दुहाई। साहि = धारण करके। साण = शान।
- 6 जीविय = जीते। हेल = सम्मिलित होकर बात ही बात मे। वाधियउ = बडा। सामद्र वेळ = समुद्र की तरफे। साषा = शय म। ग्रहास = अश्व। अस्सहास = चंचल। पूगी = परिपूण की।
- 7 चतुरङ्ग = युद्ध के लिए। चाल = चलते समय। मारग = माग म। लई = ली। धणी स्वामी। धाइ = आत्रमण करके। जेम = जसा।
- 8 पह = राजा। भलइ = अच्छी तरह से। नागउर = नागौर। प्राणि = शक्ति से। नव सहस धणी = राठीड राव ने। रुइतइ = बजाते हुए। निसाणि = नगारे, युद्ध वाद्य। पालटि = बदल दिया, पराजित किया। धाइ = अस्त्र प्रहारों से। दाइ = अवसर। रइवास = निवास स्थान।
- 9 छापरउ = छापर। छांगी छयाह = छह मूषो म, तितर बितर। वळिवण्डि = घोर। फरि = शस्त्र विधेय। फेरि = चलाकर। वाह = हाथो से। चडिय = चढा। चीति = चित्र म। राहाचरक = युद्ध की। देलाळि = दिताई।
- 10 वामलिय = मारे कूटे। धाइ धाइ = प्रहारो से। चक्र फेरियइ = चक्र चलाया, आण दुहाई पिराई। चङ्ग = भली प्रकार से। लीघ = लिये। दुरङ्गि = दुग, कोट।
- 11 उग्राहइ = उगाहता है। च्यारि चक्क (मु) = चारो ओर। कोपिया = बुपित हुए। मेल्हइ = एकत्र करते हैं भेजते हैं। वटक्क = सेना। खोजियउ = प्रोधित।

हृत्प खाइ (मु) = गन्तुता रखता है। राहाळइ = आश्रमण करता है।

- 12 दीवान = राज्य सभा। माहि = मे। परठवियउ = रखा। बीडउ = पान का बीडा।
अनइ = और। सनाहि = कवचित होकर। बिहुँ = दोनो ने। झालिय = पकडा।
रुमि बांह (मु) = हाथ खडा करवे, शस्त्र धारण करके।
- 13 माइ रइ = माटियों के। राइ = राव ने। मुहि = मुह पर। मोडि = भरोडी।
कटक = सेना। ताणिया = चलाई। कोडि (मु) = कोटि, असम्प। षालइ =
वीर। कळळि = अश्व, शत्रु। काजि = लिए। रउद्री = मवनो का। ताणिय =
चलाई।
- 14 पञ्चइ = पचनद। लङ्घि = लाघकर। पाइ = परो से। ऊतरियउ = उतरा।
सहाउ = सहायता। तेवाडि वृप = कुआ जुतवा कर। भरिया = भरे। तळाउ =
तानाव।
- 15 छह = सभो। कळहि = लडने के लिए। कल्ह = युद्ध। सौह = कश्च। सारि =
बाघकर। मागिमी = मागेगा। वइर = प्रतिशोध, बदला। ताणिया = चलाई।
तक्क = लक्ष्य बनाकर। वेसवाळइ = इसी नाम का तानाव। पाया = पानी
पिलाया।
- 16 गोरियों राउ = यवन शासक। यळ माळ = टीलो के समूह। माहि = रोते हुए।
ब्रम्ण्डि लागि (मु) = आकाश तक जा लगे, अत्युत्साहपूर्ण। वेऊ = दोना।
वरीक = थपठ मोढा। ढूका = पहुँचे। निझीक = पास।
- 17 माजणउ = स्नान। करिय = करवे। करि = की। कण्ठि = कठो म। करिमाल =
तलवार। झालि = पकडो। केवी कुदाळ (मु) = शत्रुओ के लिए कुठार स्वरूप।
जपहरे = जौहर म। देय = देकर। अग्नि = अग्नि। धूधहर राउ = राठीड राव।
लागउ धियगि (मु) = आकाश तक जा लगा, अति उत्साहित हुआ।
- 18 साँघणइ = जौहर की अग्नि मे। सत्ति = सतियाँ। सत्तूछ = थोडी। सातिय = समूह
म। हापउ = हाथो से। दुरङ्गि = अग्नि। आप हतिय = स्वयं के हाथो से। ऊघाडि
ताव = दुग के कपाटों को। नाखिय = डाले।
- 19 पापरिअ = कवचित होकर। पइठउ = प्रवेश किया। प्रइज पाळि = प्रजा का
पालन करने वाला। घाटा = सना वे। विचाळ = मध्य। हाक = हुकार। बजिज =
गन्तव्यमान हुई। गोण = प्रत्यञ्चाएँ। गइणाग = आकाश। गजिज = गजने लगा।
- 20 पडिया = घायल होकर गिर पडे। प्रोळि द्वारि = प्रतौली व आगे। नीजळी = जली।
अग्निस्नान किया। नाह सउं = स्वामिया के साथ। सम्प्रतउ = पहुँचा। सरगि =
स्वग म। ऊठियउ = उठा। रइण = रिणमन। अग्नि = अग्नि की तरह आगे।
- 21 घरा = पृथ्वी। छळ = के लिए। रक्खपाळ = रक्षक। गडवियउ = गजने लगा
सौड = बसगाली वृषभ। गोत्र गोवाळ (मु) = वग की रक्षा करने वाला।
वइर = प्रतिशोध। चतुरङ्ग = युद्ध मे। डारिय = गिराकर। दुरङ्ग = दुग को।
- 22 क हा = पास से। छडडावि = छुडा लिया। अग्नि = तजवार। छराहि = हाथ मे।

प्रवादा=युद्ध परित, श्रेष्ठ गागी । उधारि=घषाया ।

- 23 आहाद देग=मवाह प्रदेश । सगळउ=समग्र । उमरि=उगट कर । मलि=मल करवे, योर ने । मदरिया=शत्रुभो । तणइ=म । मिरि=घपनों को । पाटि चाटि=काट कर । पद्द मलइ=श्रेष्ठ दायाव । यदसारि=बटाया । पाटि=सिंहासन पर ।
- 24 वेगाग=विदवाग । वूव=घात, भारने वा पडयन । वूहुउ=पला । विनाणि=जान वूमकर । वूड=अगरय, अयम । वण्म=पग डग । रण=रिणमल वा । सारपात=गाशा । धम्म=धम वा ।
- 25 प्रतपियउ=तपा । पाटि=सिंहासन पर । निपाटि=सला पर । जणिगार=सुप्रसिद्ध । जाणइ=जाता है । जगत=गगार । हिन्दुवइ राइ=हिन्दवति राव । जीतउ=जीता ।
- 26 अघायउ=अतप्त । जुडि=युद्ध मे । वळि=पराजय म । भीम=भीमसेन । जेम=जसा । सह्ये=इमी नाम वा पाटय । कोपइ=क्रुपिा होता है । दिगउ चाह=जित दिशा म । दळइ=विनष्ट कर देता है । मिरि=मातक । मिरि=यवनों के । ताह=उस दिगा ने ।
- 27 आपणी=स्वय की । पेरइ आण=आण-गुहाई विराई । तामुभ्रा=मनुओ व । मूहे=मुख पर । दाहा=दिया । तगाण=तगाम । मळ्ठीव=सामाध्याग । मोडि=घापस करव परास्त करवे ।
- 28 घण=बहुत । अहिग=तमवार रूपी । दुरिजण=शत्रुओ वा । पळिय=पडे । घाइ=प्रहारो स । रइणाइर-चापउ (मु)=रत्नाकर को बाधा मर्याग बापी । काडिय=तिबावनी । जणह=जडे । भौवट=पराजय । दीप=दी । मोटी=वडे-वड । भडाह=गुभटा की ।
- 29 अङ्ग=गरीराङ्ग युद्ध । पाडिया=गिराये । नीवइ=दीपक मे । वळिमूळ=युद्धवीर । दोहिय=निवट बहुधाकर । कंधार=सना को । मनावि हार=पराजय स्वीकार करवा दी ।
- 30 मळिय माण=मान मदन बिया । रेहळिय=भगा दिया, गिरा दिया । मत=युद्ध म । पळिय=लीटा । गाहि=नष्ट करवे । उधाहि=उगाहना है । मन्व=वीरवर ।
- 30 पाजे मगाइ (मु)=अपनी सामग्य को स्वीकार करवा दिया । प्रहारा के द्वारा वश म कर लिया । ऊपरिय=उद्धार बिया ।
- 31 पुत्र=पुत्र के । जाजे=जम से । वउण=वीन सा । गुण=गाम । तूर=वाय । तटि=तट पर । विण्डडउ=पिड । दियइ=देता है । भूव त भूव त=धूमते घामते ।
- 32 जोष=बीर । जस राति=गुमश रात्रि । जागि=जगपत रह कर । पुन करण=धम करने के लिए । पुहुतव=पहुचा । करि=हाथो से । पिड सारि=पिड दान किया । तरपणइ=तपण से । पितर=पित्री को । स तोग=सतुण कर ।
- 33 पाळियउ=गौटाया । वविन=बहुत है । औजळि=अतुल्यता स । पोसिय=

पापिन क्रिय । उदक्कि=जन स । पूजिय=पूजा करव । अनत=भगवान रिष्णु
को । हापिया लेय=हाथो लवर । पूरवहत=पूर दिशा मे ।

34 परिगह=रैयन । पाण=शक्ति स, हाथो से । चापरि=गीघ्रता से । वाहिय=
निवाले । अज्जाण जरु=अकस्मात । कमराळ=यवना । सीसि=उपर ।
कट्टर=स'य प्रयाण ।

35 भाडिजी=अश्व । निरा भेड=बन्त से एक्त्र किये । गिति=पृथ्वी । बाहर=
सहायताय । घणी छंड=भेड वा इनामी । सगत्र=सगव, शक्तिमान । माकडइ=
विपत्ति म, निकट । पइमि=प्रवेश करके । साहिय=धारण किये । सुसत्र=सस्त्र ।

36 वहिया=मारे, चले । सहित्ति=सहित । खटदूण (सख्या)=चारह । मोखावि=
मुक्त कराई । चित्ति=पृथ्वी को । नेति=युद्ध मे । पाडि=गिरावर । चप्रइ=
चक्रपति । जस चीघ चाडि (मु)=यस पतावा चलाई ।

37 प्राण=शक्ति को । मजियउ=ता' दिमा । पूर=सना बहाव । सागियउ=साक्षी ।
सोम=चन्द्र । सूर=सूर्य को । पापरि=सोधे, मैदान म । पचारि=तलवारा ।
मनावि=म्बीवार कराई । मछ=यवनो को । रिणनेति=युद्ध म । मारि=
पराजय ।

38 धण घाट=अत्यन्त सै य समूह । धरेहि=घर पर । छागिया=काटे । मेछ=यवनो
को । धर=पृथ्वी । घाति=डाला । छेह=कितारा । जणियार=सुप्रसिद्ध ।
विचनठ=स्वगस्थ हुआ । जियार=जय । ताटिया=गरजे । वच्छ=वस्त्र । च
घाणि=उसी स्थान पर । त्तमार=तभी ।

39 अेर वविक (मु)=एक दूसरे से चत्पर । साडि=चुपभ । उठिया=उठे । गडिकु=
गजन बरत हुए । अनर=और । मसारि=ससार म । असमानि=आकाश की
ओर । खग=तलवार । उभारि=तानकर ।

40 जाणइ=जानता हे । छातपति=पृथ्वीपति । हूअउ=हुआ । ताणावि छस=छत्र
तनवाकर । ठपूळ=अत्यन्त । अन्न=भोजन । धळहळइ=परामा जाता हे । जेम=
जैमा । चित्त=मन स्वभाव ।

41 भूत्राइ=भोजन । जोमइ=वाते हैं । भाल भाव्य=बहु-बहुकर । साडि=चुपभ,
घोर । ऊमसइ=उत्तमगित हो रहा है । बगिग=समूह म । साळुआं=शत्रुओ के ।
गटकरइ=गटकता है । हियइ=हृदय म । रमिग=पइम ।

42 उपाडि नैस=घरा को नष्ट करके । घरहरिय=कषाय मान हुआ । देग=समग्र प्रदेश ।
तणा=व । गार्ई=परिखा । गुरज्ज=वाट । राळि=नष्ट करव । किघ=विषा ।
रज रज=घृति म मिला दिया ।

43 दोह=दी । बाहू=शस्त्र प्रहार । तालीक लोक=यगस्वी लीग । रोडिय=स्ववश
किये । लद्दाह=यवनो व । मारि=मारकर । असमाण=असामा य । घाट=मय
समूह । आथो=आगे । उगारि=उतार, चलाय ।

44 यसर दय=मम य आश्रयण करवे । सघारि=गहार किये । मारे=तलवारा स ।

सभेय=सभी का । नद=नीर । वहि=युद्ध म । साधिय=नष्ट कर दिय । डोल
सहि=डांग बजावर ।

45 पाघरो=सीधी । वग्ग=बग्गा, जगाम । अस्सि=अश्वा को । गहिय=चलावर ।
उमग्ग=उत्साहित होकर । तगड=धीर । उपाढी=विनष्ट कर दिण, उठा दिये ।
नेस=पर । महा देस=प्रदेश म स ।

46 तउं=मे । योनि-योन=प्रतिभा-बद्ध होकर । ढाली ढालि=युद्ध वाद्य बजावर ।
वावाणि डोल=डांग बजावर । लाइ=लाये । पाए=परो म । रामिया=रम ।
वाह दे=अभय देकर । रापि राइ=राय ने स्थानापन्न किया ।

47 नडेय=स्वयंश किया नष्ट किया । वळिवण्डि=वीरवर । विहुं वार=दो वार ।
वेय=दोनों को । वदि दूता=बद म । छडावि=छुडाया । निसाण वावि=नगाडे
बजा कर ।

48 यहियउ=पकड लिया । तादयी=जन्मा से उासे । मोवावि=मुक्त करवाया ।
ताउ=उम । कुण=कौन । रीस=पीछ । छेहहा=तातिया । छन मांडइ=छत्र
माडत हैं ।

49 छात्रपनि=शासक । उवारिय=उवारे । छत्र छीह=छत्र की छाया म । बाही
दीघ=गम्भुज दी । बाह=आश्रवासा सहायता का बचन । दुरद्व पजि=दुग्ग के
निण । वत्त=वारता । सोभागदीप=विठ का नाम । सपत्त=सत्तार ।

50 वेगडउ गां=अतुन वणी युग्म । विवण=मृत्यु को प्राप्त हुआ । वृळभाण=वण
का मूय । तेवि=वहा । उन्वियउ=उदित हुआ । उपरिय छत्र=छत्र धारण करके ।
फेरावि भाण=भाण दुर्गा निराई । ताई=तक ।

51 दीवाणि=राज्यमप्रा म । गएगए=अश्व । वाळि=लोथे की बन्धियो मे । उयहइ=
उगाही होती है । राए=प्रवेश मे । रणूघ=रणो मत्त । गुरा मघामि=युद्ध वीर । ब
पवम्भ=दोना पक्षा म । मूय=विशुद्ध उत्तम ।

52 चाणिय=चढाई । वरनि=दशरथ की माता व । पउज=ध्वजा । पाव=रक्षक ।
वे=लोना । धामए=बसात हैं । परउज=प्रता को । गणियहइ=गजन हैं । सायर=
समुद्र के ममान । गइए=हस्ती । गाये=उपर । पणीद=सप ।

53 देवळ=देवालय । पए=नगाड । दुवारि=द्वार पर । सुमयद=वाद्य यंत्र ।
सणारि=ध्वनि । आदीत=सूय । निरमळा=निमग । अह्न=शरीर । गहवत=
गीरवाचित । घू=ध्रुव । गङ्ग=गङ्गा ।

54 तीमाण नाड=तगारो की ध्वनि । प्रसाद=दुग्ग के । समीसर=सबत् । चाळि=
ओट म । देवरउ=देवालय मे । कुी=प्रजा । दुवाळि=दुष्वात के समय ।

55 बुसमय=अज्ञान के समय । वडहि=पूजाय सिद्धान्त । मदनी=अन साधारण
प्रजा । मए=पृथ्वी । कूजर=हस्ती । दुवारि=द्वार पर । दीपइ=सुसाभित
होत हैं । वाचइ=पढते हैं । गुजरम=मुपश । अडार वन्न (मु)=सभी जातिया ।

86 छन्द राव जइतसी रउ

- 56 तेदिय=बुलवाय । नट=नतक जाति । हूँता गुजरात=गुजरात से । मुजस=सुयस । बात=वारता । ताजी=अश्व । हमति=हस्ती । दीहा=दिय । तियाइ=उहें । रणहूँत=ऋण से । मोखावि=छुडवाया ।
- 57 नागणइ=नागौर । अनिमइ=और । वोकरनर=बीकानर । वाँसोपस (मु)=परस्पर । बहइ=चलता है । वर=बर, शत्रुता । आमळिय=पवित्र । अङ्ग=शरीर । अगविय=अढाया । अत्तिमङ्ग=मस्तक ।
- 58 सम्मेलि घाट=सय एकत्र करके । सतोळ=बलवान । कापि=शुद्ध हाबर । वावाडि=वजाया । मेल्हाण=मम्मिनित करव । माड=भाटिया की । असि=अश्व पर । कळह=युद्ध की । चाड=इच्छा से ।
- 59 साहस घोर=घयवान थ माहसो । टाळयउ=बचाया । अङ्ग=शरीर । ताजी=अश्व । तीर=तीरो से । केकाण हाठ=अथ सेना । साम्हउ=सम्मुप । मळियइ=भिडकर । घात=प्रहार । मोटमत्र=उदार हृदय वाले न ।
- 60 राति वाहि=रात्रिकालीन युद्ध म । विडिया=लडे । घण=बहुत । घाइ=प्रहारो म । मत्रावि घाउ=हार स्वीकार करवाई । अवेडउ=ऐसा । अरसमान=बलशाली । मेरावि=कटवा कर ।
- 61 घाजे मनाइ=पराजय स्वीकार करवा कर । आयाणि=रथान पर । आइ=आया । हाथो वरीमि=हाथिया को दान म देने वाला । गळहत्थि=गल-बध बना । हत्थि=हाथो के, हाथ स ।
- 62 वळ=पृथ्वी पर । वारउ=समय । कि=मानो । इद=इद्र या । गुणियणां=कविजना के । ग्रहे=घरो मे । वाघा=वघा दिय । गइद=हृती । ताकुआं=कवियो । रमि=मिटार्ई । सोमाग तति=शोभाग्य की चिता, सुयस व लिए । हमति=हाथा ।
- 63 कळि-वाळि=कलियुग क समय मे । परीक्रम=पराक्रम । अे=यह एस । देनियइ=लिखाई देता है । दुवापुर=द्वारपर । दिर्या दन=दिन देख । वणइद्रु=मघु प्राता । कहा=पास से ।
- 64 होमलिपट=अश्व समूह । मेळिय=एकत्र करके । हसम्म=सना । वादमी=कदीमा । लई=केर । पावइ=पथ म, विना । वदम्म=पैर । कोवण=मेघ घटा । कीयइ=की । छेलियउ=भर लिया । मन=हृदय । घातिय=प्रहार करने । छपन=भाटियो का ।
- 65 ठकधि=सना । रहडिया=नष्ट किया । दस=पाकरण के आस-पास वा प्रदश । वाजा=युद्ध वाध । गडाइ=बजवा कर । जाइ=गया । वाजिन्न=अश्व । नीसाण=नगारे । वाइ=बजा कर ।
- 66 जीविकार=विजय करके । लोवि=जा-सामाय । एर=पौछे । घण नेह=अत्यन्त रनह से । घाइ=प्रहार करके । अलजेया=नित्य बनानाकर ।
- 67 चक्रवइ=चक्रपति । उपाडण=उठान उठाकर फेंकन । माड=भाटियो का ।

- 88 घमरोळ = प्रहार करते हैं। घाटी = तोनाओ म। धरिय = धारण करके। धूप = तलवार। पञ्चरूप = सिंह के समान। चत्रवद् = चक्रपति, शासन पति। पी = पिता के। बोल = वचनो की। घडु = सहायताप। ओइला = पक्ष बालो के लिए। हुअउ = हुआ। पइला = शत्रुआ के लिए। अगडु = अचल।
- 89 वाराह = शूरवीर। पइठउ = प्रवेश किया। विचालि = मध्य म। नीसरडइ = प्रहार करते हैं। चडिय = चडा। गळि = ब दूका म। विछुटा = फूटी लगा। रुहिर = रुधिर। वाद = युद्ध म। पडिगळ = प्रतापी। जाणि = मानो। पास = पास्य मे। प्रसादि = घर के।
- 90 रुठइ = दष्ट हुआ। रउडु = यवतो पर। तांविडइ = शक्तिवट, विपत्ति म। पइठ = प्रविष्ट हुआ। साई समुद् = प्रसन्नता रा आलिगन बिया। सइ गत्त = अच्छी तरह से। सत्ते सलीह = शत्रु सत्य। इम्बरे = मेघमाल से। कि = अथवा। छायउ = आच्छादित हुआ हो। जाणि = मानो। दीह = सूर्य।
- 91 मुणिसत्त = शत्रु वा। मल्लि = मदन करके। भाथइ = तूणीर। ज्यउं = जमे। भरियउ = भर गया। सल भल्लि = सल और भाला स। पारवां = शत्रुआ के। तउ = तब। पडिय = पडा। पील = हस्ती। जेम = जैस। कंदोल = युद्ध से।
- 92 कूते = भालो स। असुर = यवन। बह = कई। कोठार = अन्न भंडार। वणह = अनरणो से। विवनउ = मृत्यु की प्राप्त हुआ। करिय कत्य = सुयश अर्जित करके। हत्थिअे = हाथियो को। तउ = तब। पडिय = गिराये। हत्थ = हाथो से।
- 93 किलवां = यवनो के। परहरिय = कम्पायमान हो गय। सवे = सभी। यन = स्थान घाने। हइकम्पि = हाहावार, कम्पायमान। देस = प्रदेश म। हुअउ = हुआ। हुलाउ = विचलित मृत्यु रूपी शीत वायु स।
- 94 असमानि = अद्वितीय वीर। उठियउ = उठा। असम्भ = वीर। थिडतइ = गिरत पडते। ससारि = ससार को। आभ = आवाश। धम्भ = स्तम्भ, सहारा। प्रा = रयत। धर घणी = पृथ्वीपति। पाइ = हुआ। राधियउ = रखा। राज = शासन।
- 95 सहदेव मत्ति = बुद्धि म सहदेव के समान। ताणावि = तनवाकर। बइठउ = बठा। तलत्ति = सिंहासन पर। ऊजळा = उज्ज्वल। चवर = चामर। दळवइ = घुमाये जाते हैं। अबीह = निभय। अविचल = सुस्थिर।
- 96 हइ = अश्व। वाळि = लोहे की बडियो म। रम्भि = घमा पर। सोहइ = सुशोभित होते हैं। हयत्ति = हस्ती। अउव = आश्चयजनक। गत्ति = चाल-दाल। दस देसपत्ति = दसियो शासक। सेवइ = सेवा टहल करते हैं। दुवार = द्वार पर। ओळगू = सबक। वन अठार (मु) = सभी जातियां। आगी = आगे।
- 97 धरहरिय = कम्पायमान हुए। भीर = यवना के। धरविकु = कम्पित। गढ देस = विभिन्न प्रदेशो के गढ। बविर = बहकर। आउर्धा = शस्त्रो की। वेळ = सहर्षे।

उच्छ्रिय=प्रकट हूँ। अत्ति=बहुत। गडडियउ=गर्जा। सामद्र गत्ति=समुद्र की तरह।

- 98 हठमल्लि=वीरगिरोमणि। मनावि=स्वीकार करवाकर। हरि=गौय। हन्लावि=चलाता है। ह्विक=हाँक से। हमीर=यवन। सत=पराक्रम। आपा=दिया। सकत्ति=भगवती करणी ने। पइ=परा की। मनाविय=स्वीकार करवाई। देसपत्ति=देश के शासको को।
- 99 नरवइ=नरपति। नरस=शासक। जिणि=जिस। भोमि=भूमि पर। पट्ट=वस्त्र, उन के पट्टू। पहरिजइ=पहन जाते हैं। चीर=चीर की तरह। मुणियइ=कहत जाता है। धर=पृथ्वी। कासमीर=कश्मीर।
- 100 ताण्णी=तहणियाँ। सऊजळ=पवित्र। सत दत=श्वेत दाता वाली। वाणी=वचन। सुवाणि=सुमधुर। नद=और। लाजवत=लज्जागील। सोहिली=सुहावनी। भोमि=पृथ्वी। वांका=बाके। झूमार=योद्धा, सिर करने पर। दिपइ=देते हैं। करिमाळ=तलवार का। झट्ट=प्रहार।
- 101 वाळियाँ=लोहे की बडियो से। वषइ=बापे जाते हैं। ब्रहास=अश्व। शासिया=ग्राम शासक। सपूरित=परिपूण। प्रास=खाने-पीने। वास=निवास योग्य भूमि। सोवन=सुवण। घन=घन धातु। घजवघ=ध्वजा बाधने वाले। साह=श्रेष्ठी। रह=घम। वहइ=चलता है। राह=अपने माग पर।
- 102 लाधीक=यास्वी। मिळइ=सम्मिलित होते हैं। माहही=बाजार। लोक=जन सामान्य। घउहट्ट=चौहट्टो पर। हाट=हाटें, दूकानें। माणिक चोप=माणिक चोप। आरी=समीप। गउस=गवाय। ऊजळा=उज्ज्वल। आप=शोभा। अम्मली=अभय। खाई=परिता। अलोप=अलक्ष्य।
- 103 नीर=तल। भरिया=परिपूण। नयइ=नाडे छोटे तालाब। वावउ=बावा। दुरप=दुग। पाष्ठी=परिसा। विहड्ड=विस्तृत चौडी।
- 104 मञ्जि=भजन करके। सघार=सहार करके। मनावि हार=पराजय स्वीकार करवाई। मुहिसग=सेना द्वारा। मोडियउ ताश=विनाश रचाया। वास=निवास।
- 105 तिया गडि=गाघ निण स्ववश कर लिए। उपहइ=उगाटते हैं। अगुर=यवन। आपा अपडि=आषा आषा।
- 106 गुरिगाण मणि=गुरासात के माग से। बळडियउ=बोलाहल करता हुआ। गुरागाणी कघार=गुरामानी सेना। मज कीयइ=तपारी की। रेवैत=अर्धों को। गिनह सार=दस्तर बाँधकर अश्व रक्षक न।
- 107 मर=उपर। ममपारी=माहात्म्य कर। अगपति=बाणसाह। हूस=होयी। अगपारी=पड़ार्थ। भडा=गुप्त। भडिज=अर्धों पर। विहोत्रइ=माराहू होये। मेन क पारी=कपारी सेना।

- 108 काबिली तणा=घबनों के । अइयार=सन्निक । काडि (मु) =बरोहो । तीसान=नगारे । रोडि=बजाकर । छोटि छोटि=चढ़ने की तयारी । जरकाणि=बबच पाखर इत्यादि । जडिय=रस । जगम=अदबो पर । जीण=काठी, पलाण । मुखि=मुह स । दीण दीण=दीन दीन कहत हुए ।
- 109 सुरिताण तणा=सुल्तान के । समूह सत्य=सय समूह । अवथरइ=प्रबट हुए । अगत्य=अत्यत । सह=समी । दरियाउ=समुद्र, नदी । मद्धि=साधकर । पईठउ=प्रविष्ट हुआ । देस मद्धि=प्रदेश म ।
- 110 बटनय घटइ=स प समूह । घर घणी=पृथ्वीपति । उठी=उधर स, उठे । पम्मार धार=धार के पंधार क्षत्रिय । पावर अडोल=स्थिर बच । डूकउ=पहुंचा । मुगुल दळि=मुगल स प । वाइ डोल=डोल बजाते हुए ।
- 111 बळहियउ=याकुल हुआ । रइण=रता । सामइ बाणि=स्वामी के लिए । भागली=कायर जन । भाजि भाजि=दोड़ दोड़कर । पहिनउ=ग्यु को । पछाडि=पछाडा । सामइ पाणि=स्वामी की शक्ति स सम्मुख हाथों से । समाहर=मुद्ध म । सासिय=मार गिराया । सुलितानि=मु तान नी ।
- 112 गडलाट=सीधा । सामइ=सम्मुख, स्वामी की । साहि=पाखर सहायता स । मारियउ=मार गिराया । गिसा=जसे । आमुर् > आसुर=राजस यवन । सघारि=मारकर । महि पति=पृथ्वीपति । बडा=बडे । पागिया=लुटेरे । मारि=मारे ।
- 113 बीडरिय=भयभीत होकर । विमुहि=विमुग । गउ=गया । निदयी=देवर । वच्छ=भाछ । वृत्ति=भाता । पाडियउ वच्छ=कतकर बाधा । भासर=पवत व समान । अरोड=नहीं स्वन जाता । ब=दा । भनि=भाले । मत्तियया=रोटे । देस=प्रदेशों को । भूगळी=मुगल का । मलि=मदन किया ।
- 114 वसि करिय=बश म किये । वतिय=युद्ध द्वारा । पाधरा किया (मु) =सीधे कर दिये । तरहइ पत्य (मु) =तितर बितर । हइवरां=अश्वा । भडी=सुभटो । दुर्गे=तेनो की । हई हल्लि=आक्रमण हुआ । मनि घातिय (मु) =मन म वसाया । मुगुतिन=उस मुगल ने ।
- 115 कोटी किवाड (मु) =दुर्गों का रक्षक । विधउ=रिया । पइमाळ=नष्ट । माड=भाटी प्रदेश को । खईगरु=अश्व । रोडि=भेड ती तरफ । चतवावि=चलाया । मर=मना को । घूणि=घुन दिया ।
- 116 काइ न=कोई भी नहा । हाय लग (मु) =बुछ नहीं मिला । पग्ग=पर, बदम । सम्भारि म न=मन म स्मरण करव । एकदिनि=एक ही दिन म ।
- 117 न=और । पहर महि=एक प्रहर म । फरावि आण=आण दुहाई पिराई । अहिया=मदन किया गष्ट किया । गिरी=यवता ने । सिरि=ऊपर ।

- 118 भञ्जि भूष (मु) = तोड़ मरोड़ कर चूरा बना दिया । रिणजगि = युद्ध क्षेत्र म । दासि ह्व = तलवार दिखाकर । भञ्जि = भजन करके । मारि = विजय की । प्राजाळ = जलाये । वेवे = दोनो । पहारि = प्रहारा से, पहाडो का ।
- 119 अनइ = और । सवि = सीमा तक । बावरी साहि = बाबर शाह । ल्या = लाये । गळइ वधि (मु) = स्ववश करके । दे दवट्ट = आक्रमण कर । हेला रसि = सम्मिलित रूप से, आक्रमण करके । लूटिय = लूटे । हट्ट = दूकानो को ।
- 120 सन = शत्रु । घास = लूट । अनइ = और । विरुद्ध = विलाफ । बाणासि = तलवार । बोटि = काट कर । बिसुद्ध = अचत ।
- 121 पण्यार = यवनो को । पाडि = मारकर । नारु = द्विजो को । निवाडि = झुका कर । चूरिया = नष्ट किये । तामिनी = रात्रि मे । गिरदि = पहाडो पर । चाडिया चक्कि (मु) = चक्र पर चढा दिया, विचलित कर दिया ।
- 122 असपत्ति = वादशाह । उवह = समुद्र के समान । दळ = सना । आवरत्ति = घेर कर । छेलियउ = परिपूण किया । छत्त = शासक । छत्तीस (मु) = छत्तीस, अनक । छत्ति = पृथ्वी पर । चानावि = चिनाव नती । वाह = प्रवाह । चक्क चूर = नष्ट कर दिया । पडइ = पडते है । पइ = परा स । लघ = लाघा । पूर = वहाव ।
- 123 बेव = दोना । हालिया = चले । हुयइ = होकर । भागी = भागे । हरेव = मेना के अग्रभाग मे । नामिया = नवाये । रणतूर सद्दि = युद्धवाद्यो की ध्वनि । पापर रवद्दि = कवचा की ध्वनि ।
- 124 जळ पयि = जल भाग से । जुडेह = भिडे । भारत्य = युद्ध । मिडह = भिडकर, सुभटो ने । वहिय = मार । रिण खेत = युद्ध क्षेत्र । प्रवाडइ = युद्ध चरित, श्रेष्ठ भाग ।
- 125 अपार = यवन, गुप्तचर । घुणहार = ध्वनि । पडिय = टूई । हजार (मु) = अनेना । धार = तलवारो की । साडे = तलवारों से । सवोळि = विनोडित करके । टीली = युद्धवाद्य । डंडोळि = बजाकर । नाधिय = शाना । अइतोळि = बहुत ।
- 126 आहृच्चि = शीघ्रता के साथ । रहडिया = विचलित किया । वाजा रुडाइ = युद्ध वाद्य बजाकर । पहिलउ = शत्रु । खडगि = तलवार क भाग । चाडिय = चढ़ाया । फेरि धाण = आण टुहाई फिराई ।
- 127 प्राण = शक्ति से । नाखिय पछाडि = पछाडा श । ताई = तक । चक्कि चाडि (मु) = चक्र चढ़ा दिया विचलित कर दिया । जउणपुरि = जीनपुर । खडिय = चलाकर । जाइ = गय । रइयति = रण । लोण = जन सामान्य को । किय = बनाया ।
- 128 छाडि नस = पर छोडकर । दाणवी वणी = शत्रुनि बाणशाह न । सा देग = सभी प्रदेशो को वश म कर दिया । तिरु = वाकर ।

प्रिसण=शत्रुओ को। हुँता विहार=विहार प्रयेग मे। सबइ=सभी को।
ममार=मार से।

- 129 बइरिया=शत्रुओ को। मोरि=यवनो ने। देवाळि बढ (मु)=शस्त्रा की
घार दियाकर। मोरिया राइ=यवनपति ने। गाहिया=रोये। दासि
हाय (मु)=हाय दिसाकर, गति प्रसित कर। लगउ=लगा, तक।
- 130 बिचो=मध्य म। बम्भणवाह=ब्राह्मण पट्टी। समगमा=अच्छ अत्रे।
ग्रहिया=ग्रहण किये। सिराह=आतचित करके। ओइला=इधर के, पगवाके।
नइर=नगर। अङ्ग=युद्ध म। लगउ=तक। फेरिय पवङ्ग=अश्व घुमाया।
- 131 पूरज घरा=पूर्वी प्रयेग। हइ खुदि पाइ=अवों के परो स रोइ। बळियउ=
लौटा। गिमाण वाइ=युद्ध वाद्य बजा कर। पिडि=युद्ध। भुइ=पृथ्वी।
पह=राजा। पहारि=पराजित किया। लण्डियउ मीण=सम्मान सणित
किया। खाँटे खँडारि=तलवार के द्वारा मार कर।
- 132 बिडण=लहन। वाइ=युद्ध। आडउ=मम्भुग। अजाइ=मर्णा स्वरूप,
सुरिताण सल्ह=सुरतानो क लिए शल्य स्वरूप। सुरिताण महु=मुलानों की
लाज। आगरइ=आगरे म। दियण=देने क लिए। अडइ=आड, रोक।
- 133 चञ्चलि चडेय=अश्व पर सवार होकर। सरहण्ड=सेना अश्व। लेय=
केकर। आयउ=आया। राडेह=चलकर। परभोमि माहि=परार्थ भूमि म।
सनाटि=बचचित करके।
- 134 बाणासि=तलवार। बवि=दोनो। बळि=बलवान, पुन। बघ वाल (मु)=
प्रतिभा के अनुमार। घुइहडिय=रजे। दमामा=एक युद्ध वाद्य। धुबिय=जोर
स बजा। सग्राम=युद्ध। मूरा सधीर=धयधारी वीर। मुहि चडइ (मु)=
सम्भुव चढा।
- 135 बेलवम=बेलक वाण के। तोह=पना म। ऊडियउ चूर=घुराण उडा।
सर पांग=तीर के पंखा की। छाण=छाया से। सूझान=दिसाई नहीं देता
है। मूर=मूष। मळिय=रोइ मदन किया। मेवाड माण=मेवाड का गौरव।
रेहळिय=धूल म मिला दिया बिचलित कर दिया। मूमाण राण=भीषोदिपो
को।
- 136 सारि=तलवार म। हाथिया गमिय=हाथी सोये। गउ=गया। हेल=
सम्मिलित प्रहारो म। हारि=पराजित हो गया। मुहि चडिय (मु)=सम्भुव
चण। समसेर=तलवार। क्षात=पकडकर। मोलिय=मुणया।
- 137 सोबन=स्वण। लूटि=लटा। बषिया राह=अस्थियो का वाधा। लामुअे=
शत्रुओ ने। गमिय=गावो को लाया। सोप=उरलघन कर।
- 138 आहवि अचलन=युद्ध म स्थिर रहने वाला। सारि सण्ड=तलवार सम्हात
कर। दळिया=नष्ट किया दल लिया। अग्गि=तलवार स। हेकलिया=
एकाकी। लिया ढण्ड=दण्ड लिया दहित करके।

- 139 गया भात्रिय नरींद=गासक दौड़ गये। भञ्जे=भय से। सेवइ=परि पालन करत हैं। पुर्ली=बय नातिया का। गा=गये। सप्रही=धारण थी। सार=तलवार। सबम=मभी को।
- 140 विस्तर=बुरी शोभजनक। पुरपत्ते=पतपुर। महइ=धतती। बाणि=वचन। पह=शामक। पूजइ=पहुष पात हैं। प्राणि=गति से। ससइ=मारत हैं। सडगिग=तलवार म। नाणउ=घन द्रव्य। रारोई=राश। करिमाळ=तलवार। साल=पषड पर। ऊभइ न बोई=नाई भी सटा नहीं रह सकता।
- 141 पानइ=बिना, रहित। अउर राइ=अ य शामक। साब किय=रमत बना लिया। पाइ साइ=परा म समाकर, स्वयं करने। छातपति=शासक। हेव=एक। अम्मळी छत=पवित्र छत्र वाला। गिर मेर=सुमेरु पयत से। प्रमाणइ=प्रमाणित करते हैं, तरह। तात गत=उसकी गति। जोषण=देखने के लिए। दहाडि=चात-खाल, इच्छा। मन किय (मु)=मन किया। मूगले=मुगल बादशाह ने। भारवाडि=जासूस प्रदेश की ओर।
- 142 आई मा=आना, आण दुगई। बीजी=अय। आणी=लाग व लिए, लाये। पटहाटा=अश्व। पत्ररिय=व्यवित्त किया। पनाणी=गोन बसकर। पह=शामक। वतउ=कितने। विचि=मध्य। पानी=शक्ति इज्जत, आबरू। सेड सिरइ=छेड पर। गिडिया=प्रस्थान किया।
- 143 खाकर=यवन। सति=मन म रान कर। पारम्भ=सैगारी। उत्तराघपति=यवनपति मुगल बादशाह ने।
- 144 सम्मिळइ तवण=लाखा की सख्या म एकत्र हुई। पासरिजइ=कयचित्त किये जात है। तजा=अश्व। मूप पयस=शुद्ध पग वाल। सम्मिळइ=मिलत हैं। साहि बालम=आसमगाह। तिडि=बले। सतरि=सतर (सख्या)। बहतरि=बहतर (सख्या)। सान=यवन सरदार।
- 145 दावाण=गासन। ठणां=के। किरिमा=धूमे। दरवक=ढँट। कळळिया=कोलाहल करने लगीं। टाहि टाहै=स्थान-स्थान पर। कटवक=सेनाएं। चमराळां=यवनो की। घाळ=चतने को उद्यत। छोणाळ=वीरवर। छिलइ=मुशोभित होत हैं। करिमाळ=तलवार। काळ=यम स्वरूप।
- 146 गाहाळ=यवन। वाइरा=नीली-पीली आलों वाल। कपिमुवसी=बदर की आकृति वा। कुवरत्त=विद्यर्मी। केवि=शत्रु। बाळा किरटठ=अरयत श्याम वण क। गडदनी=गदन। गांजा=गजे। गिरिटठ=मुट्ठन।
- 147 सिदूर व्रन=सिदूर क समान लाल वण। छाज-वन=सूप के समान कान वाले। मुमकीण=पुदा के बदे।
- 148 वाका=बाक। विचित्त=विचित्र। पाघार बड्क=टेढ़ चलने वाली का सोधा करने वाले। ताणइ=खचते हैं। कमाण=घनुप। पईतीत टड्क=पैतीत टक

तोल का। आयासि=आकाश स। पक्षि=पक्षिया की। पाइइ=मार निराते हैं। अमूलन=विना भूल किय। माकडा मुक्क=बंदर की आवृति घाल। मुण्डा=रण्डमुण्ड।

- 149 मुद्ररळो=अग्रिम। ट्रेटि=दृष्टि। पाछिलो=पीछे की। मूठि=मुठ्ठी से। सासइ=मारते हैं। मिरिम्प=मृग। गुण बाण=धनुष की प्रत्यक्षा द्वारा। मूठि=जच्छी तरह स। रासार=अश्व। क=कई। सत्थि=साथ मे। बावरी वाळ=लवी जगओं वात्। आजानवाह=आजानुवाहु।
- 150 बइरी=शत्रु। अघक=मारने वाले, बढाने वाले। वेधवत्ति=युद्ध म युद्धाय। पत्रिया=पक्षियो की। जु=जो। प्रासइ=पासत हैं। दूरिपत्ति=दूर स। तणद=वे। अस्सराळ=असह्य। बवि=शत्रु। धारा कराळ=गस्त्रो से भयानक डरावने।
- 151 मोटा=बडे। अमिल्लित्त=शत्रुओ के। दिवइ=दत्त हैं। आवरत्त=पेरा। कोपि=द्रुढ हाकर। कटकक=स य प्रयाण। ह्दमरा=अश्वो की। मड=वीरो की। हक=हाक।
- 152 करडा कियाह=मजबूत किये। केवि=कई। अय अश्वा क विणेपण हैं।
- 153 तणा=वे। छूटइ=छूटे। पवन्ना=पोढे।
- 154 जङ्गर्मा=अशवा की। जीण=काठी। पूठी जडेय=पीठ पर बसी। लाहउरी=साहीर के यवन। ऊठिय=उठे। धग्ग लेय=तलवार लेकर। ताणावि तङ्ग=तग खचकर। चडिया=चढ। तुरह=अशवा पर। उडखडइ=सांदायमान हुई। खोणि=पृथ्वी। खड्गा=अश्वो क। खुरेह=खुरो स।
- 155 सुरिताण सीय=मुल्तान ही सीमा है सीमा स। हालिया=चल। ह्ददळ=अश्व सय। जाणि=माना। हींय=हिमालय। देस सिर=प्रदेश के ऊपर। रडवड दीण=प्रयाण किया। हुता=से। हालिया=चले। लीण=यवन।
- 156 असतरे=वच्चरो की, अस्त्रो की। सलीता=नदी। अस्सराळ=बहुत। कामाळी=अश्वो की। पूठी=पीठ पर। के=कई। कठाळ=सिंह। ऊभारी=बहुत बडी। तडङ्गी=नदी। पूरि अम्भ=जल स परिपूण। वांसइ=पीछे। वूहा=चल। विसम्म=विषम।
- 157 वनिगह=दुकानें। कोठी=प्रकोष्ठ। जाणिणो पुरा=दिल्लीपति यवन। जे=जो। जङ्ग जीत=युद्ध विजयी। दिसी वडी तणा=बडी दिगा के। वहा दईत=मड दरय।
- 158 आसमुद्र=समुद्र पयत। साधि=वग म कर लिया। आप=स्वय। असाप=वशीभूत नहीं हुए। ऊळटियउ=उमडा हुआ। उत्तराघ=यवन सय। डडई=डूडी। दमाम=दमामा। निसाण=नगारे। नह्=ध्वनि। सम्प्रत=साक्षात्। जाणि=मानो। मेघ सह्=मेघ गजन हो।

- 59 निरबहि=रखते हैं। वृत्ति=वृत्त। निवाज=नमाज। के=कई। जब्बा पलौत=अशुद्ध बोली वाले। मुगुल्ल जूह=मुगलो का समूह। सारक्क=मैना। जाणि=मानो। बोलइ=बोलती हो। समूह=समूह में, एकत्र होकर।
- 60 चळवळिय=चलायमान हुए। चक्रवइ=शासक। च्यारि चक्क=चारो दिशाओ के। दळ=सेना के। रजी=घुड़ि से। पाइ=परो की। छायउ=छा गया। दुणिद=सूय। जिनावर=पशु। मारि=मार कर। आयास हूत=आकाश से। आणइ=भाते हैं।
- 61 जांगळूराउ=राव जतसी। ऊपरइ=ऊपर। जम्फ=आक्रमण। लङ्घि=लाप कर। सम्फ=सय पक्ति। विचाळि=मध्य। नीसरिय=निक्ले। सइजप्प नालि=तोपें जोडे हुए।
- 62 बहतइ=चलते हुए। प्रमाणि=प्रमाण है। जळ दुग्गम=समुद्रीय पवत। मायइ=ऊपर। रीछी=झीनी बदलिया। घटा=सैय। माळि=ऊपर। ऊडाइ=उठती है। असणि=विजली। कि=अथवा। ससीवाळि=बदूकें।
- 63 मुमरिया देय=धरा बना कर। पाखी=पक्षी। भमेय=घूमते हैं। आढाविय=एक दूसरे स सटाकर। तम्बू=छोलदारियां। ऊतरेय=उतरे। परठिया=भेजे। साहि ओलमि=बादशाह ने।
- 64 वातउ वत्त=बात पर बात आने पर। कहियउ=कहा। विचार=मन्तव्य। डड देहि=दण्ड देओ। नमिय=नमस्कार करो। लइ=लेकर। धमद्वार=धम। मम्भ्रम=पौत्र। अबीह=निभय योद्धा। सांभळिअे=सुनने पर। कथिने=वचन।
- 65 झुझार=योद्धा ने। झडीलउ=यवनों के। सीस=ऊपर, सिर। झाडि=पटकार कर उतार कर। बोलियउ बोल=ऐसा वचन कहा। फाडी बराडि=मानो लट्टा पटा हो। डेलि=बापिस भेज कर। आउ=आओ। सामहइ सलि=सेलों के सम्मुख मिडने के लिए तयार होकर।
- 66 दीवाण=गासनाध्यक्ष ने। दियउ नह=दिया नहीं। नमिय दाउ=अवसर पर झुका नहीं। आयउ=आया। दिवण घाउ=प्रहार करने के लिए। ऊतसिय=उत्साहित हुआ। आप अङ्गि=अपने शरीर में। अइवार=शत्रु को। सार चाडिय=तलवार की धार पर चढ़ाया। अलङ्गि=वीरवर ने।
- 67 माहि=मध्य। सर=सिंह के समान है। भारी दुरङ्ग=भारी दुग। गड भट्टनेर=भट्टनेर का किला। रउद्रभइ=यवनों ने। फेरियउ=चलाया चालू किया। चक्रराइ=मुद्र। गोण=प्रत्यन्चाएँ। चउहूँ मभाह=चारो ओर।
- 68 वाहिय=चलाकर। सतङ्ग=तीर। आघरे=अत म। अङ्ग=मुद्र। नांखिय बरेह=हाथों से काट डाले। सरजाळ=सज्जतित। कोट कियउ=कोट में किया। सरेह=अग्नि स सरो से।

- 169 कविपउ=वीर । कल्ल=कूर । कदल=युद्ध । करेय=करके । फारवा=मनिको क । पूठि=पीछे । फिरणी फिरेय=चकरी की तरह घूमता है । नीछटिया गोळा=गोल छूटे । तत्र नाळि=तोपो मे । पावक=अग्नि । जाणि=मानो । पइठउ=प्रविष्ट हुआ हो । पलाळि=पास-फूस मे ।
- 170 कहिय मुहि=मुद्ग से कहा । मारि मारि=मारो मारो । घुणियउ कोट=किल को घुन डाला । काळइ=वीर । कधारि=यवन सनाने । तण=क । झालिय=पकड । पलाण=पत्थर । जुधि चडिय=युद्ध मे चढ । सद्ध=लका के । वन्नरा=बंदर । जाणि=मानो ।
- 171 चदिया नीसरणी=निसानी स चढे । चडी चोट (मु)=तुरत फुरत । कवने=सेना न । भेठि कोट=कोट को भेल दिया, प्रविष्ट हुए । सनान=स्नान । साऊ सवार=सभी भल लागी ने । हिडोळिय=लटवाई । तुलछी=तुलसी । कण्ठ हार=कगे मे हार की तरह ।
- 172 कळहुण करेय=युद्ध करने । वइरिया घडा=शत्रु स य म । वहेय=चलकर । सम्मूह मरण=एक साथ का मरना । साउ सयय=सब अच्छा है । करिमाळ माहि=तलवारो स । बाढिय=निवाला । कळव=स्त्री जन ।
- 173 पतिमाह सल्ल=बादगाह के लिए गल्य-स्वरूप । ऊषाडि प्रोळि=प्रोल को खोलकर । उतेडि अलि=आँखें खडा कर, रोप म भरकर । आउघइ तोलि=शस्त्रो को मोलना हुआ । वानय्त=युद्ध का बाना धारण किये हुए । बोलिया=बोले । वाघ=सिंह । बिटटु=दोनो । दाहि देव=दोनो परस्पर रक्षक ।
- 174 प्रोळि हुँता=प्रोल से । भटविक=आगे चलकर । पइठउ=प्रविष्ट हुआ । कटविक=सना म । रिणि=युद्ध मे । सेसइ=नष्ट करता है । सुरासाण=यवनो को । जुध घसइ=युद्ध मे घसता है । मत्त=मद्यो-मत्त । गइ जूह=गज ग्रूथ ।
- 175 सुरिताण तणा=सुल्तान के । सेलार=अश्व । सक्व=सख्या । सल मूनइ=लाखो के मूल्य वाले । ऊारि=ऊार । लूबि=धूमते हैं । सक्व=लाखों । छेलियउ=भर गया । खग=तलवार । छोहि=रोप से । ससकरी=सेना । लोहि=शस्त्र चलाया ।
- 176 पडियउ=गिरा । रिणि=युद्ध मे । पिसण पाडि=शत्रुओ को गिरा कर । मालहरि=राव मल्नीनाथ के वंशज । चाडि घज माइआडि (मु)=मारवाड का सुपण बढाया । किवाड=कपाट । वसी करेय=वंश मे करके । मीर=यवनपति । भटनेर लेय=भटनेर लवर ।
- 177 रोसाइ=कुपित होकर । रोडि वाजा=घुड वाद्य बजा कर । रउद्रि=पद्मपति । मेलळा=मर्यादा । मे-ही=छोड दी हो । समुद्रि=समुद्र ने । मोटागढ=बड़े बड दुग । जीपिय=जीते । हेल मत्त=सम्मिलित प्रहारो से मस्त होकर । सिडउ=चलते हैं । सिरि=ऊपर । खेड छत्त=खेडपति राव जतसी ।

- 178 गाजणइ=यवन पति । गरट्ट=साय समूह । थळवाट=थळी प्रवेश मे । पईठा=प्रविष्ट हुआ । खिडिय=चलाकर । थट्ट=सेना । हालिया=चले । सेन=सेना म । हइ=अश्वो की । वाजि हम्म=ध्वनि गूजी । साम्हा=सम्मुख । हसम्म=सना ।
- 179 सुरिमाण=यवन-पति के । सइंग=अश्वो के । ऊडी=उडी । सुरेह=सुरों स । रवि=सूय । छायउ=छा गया । अम्बर=आकाश । रजी रेह=धूलि रेखा स । चमराळा=यवनो के । पाअे=परो से । चीघ=धूलि । गूदळइ=मलिन, अस्पष्ट । त्रिबल=वृक्ष । मूझइ=घुटते हैं । गइघ=हस्ती ।
- 180 असिपाइ=अश्वो के परो से । खेह=धूलि । अलुक्क=प्रकट अत्यंत । गो=हुआ । गइण बिची=गणन के मध्य । मिळि=मिल गया । गोघुळुक्क=सायकाल जमा । वरहास=अश्व । विडइ=चलाते हैं । ऊनळी वगग=वाग छोड़ कर । कळहिवा=लहने के लिए । क्रमइ=चलते हैं । कम्माण=कमान । नग=हाथों में लिए ।
- 181 मूगळी घडा=मुगल सैन्य । आवड=आई । मजूस=तनवारो पर । जासूस=गुप्तचर । मुहरखे=अग्रिम दूता ने । आवि=आकर । कहिपउ=कहा । मुहाह=मुख से सम्मुख । आवइ=आ रही है । अथाह=अपार ।
- 182 भारी कटकक=बहुत बड़ी सेना । घर=पृथ्वी । घुसइ=घस रही है । भारि=यजन मे । आविया=आय । वावसू=गुप्तचर । सरि=तालाव पर । उतारि=उतारकर । हुनहलिय=विचलित हुआ । देस=प्रदेश । हइव=वाशहाह क । हुवासि=हविस के कारण । तडवागे=सेना के भयम । पडिया=पडे । लोक=रैयत । त्रासि=दुखी ।
- 183 दैसपति=गासक । उवार=बचाता है । का=अयवा । दर्ईव=भाग्य । जीवासणि=जीवित रहने की आशा । भागी ग्य जीव (मु) =जान बचा कर चली गई । केडि=पीछे । जिनावर=बाज । चिडिया=चिडियो म । पडिय=पडा ।
- 184 घग्हरिय=कम्पायमान हुई । नीर थाळ=थाली के पानी के समान । भाखरे=पवता पर । भागि=दौड़कर । चडिया=चढ गये । भुवाळ=शामक । आगली=आगे वाली । अवीह=निभय । सरणइ=शरण म । विजयपञ्जर=वज्रपञ्जर । जतमीहु=जतमो के ।
- 185 हूळ-कळळ=ध्वनि । चळचल=अश्वो ने । गई=पहुंची । वावक गडक=नगरों की आवाज । दरम्यउ=दिवाई दिया । सरि=तालाव क पास । थळचळ=चतायमान । च्यारे चक्क=चारो दिगाएँ ।
- 186 ळ सुरिमाण=वादशाह की सेना । जाण=मानो । डगरि दव=पवत की अग्नि हो । कम्पो घरा=पृथ्वी कापन लगी । लवत्रव=विचलित भयभीत ।

अहूँ=सप रूपी। सुरिताण=बादशाह। आवियउ=आया। अवयरि=उतरकर।
वरन तणां=लूनकरण का तनय। ऊठिय=उठा। गज=हस्तियो में। केसरि=
मिह के समान।

- 187 मेल्हिय=भेजे। मुगुल्लि=मुगल कामरान ने। घर साजि=पथ्वी दो। मुहर
हू=पहले ही। म=मत। करि=करो। डिल्लि=मिथिलता, डील। छाँ छत्र=
छत्र की छाया। सरिस=भमान। म म=नही। जाहि=जाओ। छेहि=
बिनारा करके। छोड कर। अस कोडि द्रव=दश करोड द्र य। विवाह देहि=
लडकी प्रदान करो।
- 188 बीकहर=राव बीका के वंशज। राउ=राव जैतसी। सांभळि=सुनकर।
वचन=वचन। रोसाइ=श्रोधित होकर। राता=रक्त, लाल। रतन=आँखो
को। ऊमसिय=उत्साहित होकर। बोमि लागउ (मु)=आकाश तक जा लगा।
अबीहू=निभय योडा। सांभळिअे=सुतने पर। कथिन=वचन।
- 189 केसरि=मिह। कथिन=वचन। सांभळि कथ=बानो स सुनकर। वाउळि=
वात्याचक्र, -पाकुल हुआ। कि=अथवा। वनि=वन म। लागउ=लगी।
वहनि=अग्नि। अ=ऐसी। वसाण=शोभा। जाळोवळि=अग्नि। सीतउ=
सीचा। घृत=घी। जाण=मानो।
- 190 ठेलिअे=लोटाये। मालइ=राव मल्लीनाथ के। जिम=जसे। बोलिय=बोला।
वसि मोड=वश सिरमोर। जीव ले (मु)=जीव लेकर। भाजि गउ=दौड
गया।
- 191 तिम करइ=वसा ही करेगा। तुडि मल्लि=बीर वर। तोय=तरे से भी।
कामरा=हू कामरान। कबध=राठीड क्षत्रिय। भाजइ=दौडेंगे। विमाडि=
भिडकर डरा कर। काडिय=निवाला। छेहि=रोप पूवक। ताडि=चलाकर
दोडा।
- 192 सत सल्लि=शत्रुओ क लिए शल्य स्वरूप। धार बळि=शस्त्र बल स। सोई=
सुशोभित होता है, वही। भागउ=पराजित होकर। पलोइ=दौडो। मारि=
नष्ट किया। अखियात वात=मुयश वार्ता। आपा उवारि=स्वय ने बचाया।
- 193 समात्थि=रौं डाला। वहि=वध किया। आप हत्थि=अपने हाथ स। बङ्गाळ
=यवन। कहा=पास से। भोग्वावि=मुक्त कराया। वान=शोभा। भागउ=
पराजित किया।
- 194 जोगणी पीठि=ठिल्ली म। जुडेय=भिडकर। काडिया=निवाले। पाघरइ
खेति=गीघे क्षेत्र म। पचारि=ललकार कर। सूडाळ=हस्ती। सघारि=सहार
करके।
- 195 उगि=भिडकर, सलप्र होकर। मेसियउ=पराजित किया। ऊजळइ क्षगि=
उज्वल तनवार से। नागउर तणां=नागौर के। भाजिया=पराजित किये।
नरीद=शासको को। गइद=हस्ती।

- 196 माराविस=मरायेगा । सायो=साधिया को । भीर=बादशाह । रहबर=सोमिया । हुइ=होकर । हालइ नही=चलगा नही । गा=गये । मछरियउ=राय पूण । गढ दुग्ग माहि=दुगम गढ मे ।
- 197 जागळुअउ=जागलू का अधिपति । सरणइ=गरण में । घाति=टालकर । जग्गि=समार को । विठि=पख्वी । मिति=जरा सी भी सत्या । साहइ=घारण करके । सडग=तलवार । रउत्री=यवनो ने । वाजा=युद्ध वाद्य । वाजि रोडि=बजाये । गइणाग=आकाश । घटहडिय=गढगढाया । गोडि=गजेन से ।
- 198 चञ्चलि चडेय=अश्व पर चढकर । वाधिय=बाधी । चुगुल्ल=मुसलमानी चाटी यवन । मुर छन=तीन छत्र । माडि=घारण किये । माघइ=ऊपर । मुगुल्ल=मुगल बादशाह कामरान ने । पुहतेइ=पहुचकर । पतङ्गि=बस्ती मे । पत्रइ=पवता के । पराह=समान । चडइ=चढा । सामइ सराह=तीरो के सम्मुख ।
- 199 पाखरणउ=कवचित करन के लिए । कीयउ=किया । मूचइ=घुटते हैं । मिरिग=मृग । हइयट्ट माहि=अश्व सय म । घळ=टीके । पूळ=बडभारी । मूळ=धुपों का स्थान । हइ उरे=अशवा के दनों से । पट्ट=समूह । पाघरा किया=सीधे कर दिये । पाजे=पैरा से । पहट्ट=रौदकर ।
- 200 साहण=अश्व सना । समद=समुद्र मे । ऊठळिय=प्रकट हुई । मार=तलवारी । साइयर=समुद्र । सहारि=नष्ट । रहचणियउ=मिडता हुआ सहार करता हुआ । रोम=यवन । वाजा=वाद्य के । मरहि=ध्वनि स । वयोम=आकाश ।
- 201 पाजे=परा से । हम्मि=सेना के । हालइ=श्रिता है । पयाळ=पाताल । पडपडइ=तडपडाता है । नाग=वासुकि । पुगाळ=फन । अमुर राइ=यवनपति । जळराइ=समुद्र । जाणि=माना । मेल्ही=छाड दी हो । अजा=मर्षादा ।
- 202 पुड सातर=सातों तल । धुजिय=कम्पासमान हुए । पवंग पा=अश्वों के परा मे । नागीद=वासुकि । नावि=नाचन लगा । नीवग=युद्ध वाद्या को । निहाइ=ध्वनि से । आगो=भाग, अग्नि । मिध=चमक रही है । झाल=ज्वाला । मूसाहळ=मराले । नखत माळ=नखप्रमाना हों ।
- 203 दोबी=नी । परिवल=घरा । उडिय=नक्षत्र । बिरि=मानो । अनरिस=आकाश ने । रेवत घडि=अश्व चलाकर । चड=घार । पहर=प्रहर । राति=रात्रि मे । टुका=पहुची । प्रघानि=घात काल के समय ।
- 204 मुअना=अशवा । पये=परी को । माळ=पृथ्वी आभूषण विनय । रविताळ=सूय की किरणा के । ममा=सम्मुख । रिवाळ=रजो । पमपमइ=वज्रत है । घण्ट=घण्टियाँ । पागर विमन=परम्पर रगड मान हुए पाखर । मल्हवता=तेजी के गाथ ।

- 205 पट=हाथिया के सूड म पक्का का अस्त्र पट्टा । हमति=हस्ती । फेर=घुमात हैं । त्रिस=वृथो को । दिसा वीम=थाकाश की ओर । नाखड=पकत हैं । वण्ड=हस्ती । पट हसती=प्रधान हाथी, पाटो वाल हाथी । छाया=आच्छादित । पक्करेह=कवचो स । हालड=चलते हैं । पगेह=परा स ।
- 206 इसी=ऐसी । मूठी=पीठ पर । गडड=हाथियो के । बि=अथवा । पासे=पास मे । वीद=दुहा हो । साहियउ=शाभित हुआ । मुगुल्ला=मुगल साथ स । सिक्करेह=शिरार । माटी=अदर । मच्छ ताणियउ मेह=मेघों के मध्य सूय की किरणा न मच्छ बनाया हा ।
- 207 रेवत भेडि=अथ चला कर । सरोम=सरोप । आर=आकर । रोडिय=बजाया । तबान=युद्ध वाद्य । डडवाळ=हाथियो की । पूठि=पीठ पर । ढळकती ढल्ल=ढालें लटक रही थीं ।
- 208 इम कहिय=ऐसा कहा । अगुरि=यवन-पति ने । आउघड तोति=शत्रो को तोलते हुए । पसरिस्सी=फलेगे । गड=किल की । रुधि प्रोळ=प्राल को अवरुद्ध करक । ऊळटउ=उलटा उमडा । अभति=विपत्ति । प्रज=रयत । आउ हूअउ=रक्षक हुआ । देसपत्ति=प्रदेश का शासक ।
- 209 दुरवेस=यवन पति । कहा=स । गरहावि=गृहीत करवानर । नमि=नमन करके । कोट विची=किल के मध्य । रहिय=रहेगा । नरस=गासक राव जतसी । दीठड प्रमाणि=सम्पदा ऐत ही । नीसरिय=निबलर । रुडतड=बजाते हुए । निसाणि=नगर ।
- 210 उरि करिय=हृदय म करने, साथ म करके । देडोनि घाव=दोन पर डका देकर । भारतम=युद्ध का । भळिय नार=भार गम्हाना । लसकरी=फौज । विलाया=ले ली । आप सार=अपने पीछे ।
- 211 मीर=यवन । तेजी=शब्द । उनाळि=तेजी के साथ चला कर । वराट=यवन । विडवा=लडन के लिए । वाग वाळि=लगाम घुमाई । गहवत=गीरवा वत, अभिमानो । साम्हउ=सम्पुय । तडमल्ल=अपराजेय वार । निहराड=मसिहराव क । तु ल=ममाल ।
- 212 आघारि वग्न=लगाम पक्क कर । आयाग लग्गि=जाकाश तक जा लगा । सुरिसाण=यवन पति । भडि=राओड शासक । तिविया=बमकी । खडग्न=तलवारें । असपत्ति=बादशाह की । सन सउं=गना म । धलि आळ=छुटवानी करक । दाढाळ=वराह । नम=जसी । आण्यउ दिग्वाळि=औस दिग्वाई ।
- 213 उरि कियड=छाती क आगे किया डघर किये । डार=समूह । पतिसाह तण=बाणगाह क लोग । सकिय पचारि=ललकार सके । विसमउ वराह=विषम यवन पति का, आश्चय चकित हो गया यवन । ताणिया=चलाय । मुगु ले=मुगलो ने । पाउ=पर । ताह=तब ।

ऊमि बाहू=सडे हाथ। बाढिजइ=काटते है। बाहू=प्रहारो से। पइसिय=प्रविष्ट होकर। बिचाहू=मध्य म।

- 224 देनालि हथ (मु) =हाथ दिखाये। साँकडउ कियउ=विपत्ति म डाल दिया। मत्य=सना को। आपण पाणि=स्वय के हाथो से। आपणइ अङ्गि=स्वय क शरीर स। नव सहम घणी=राठोड राय। निर्हाङ्गि=आकाश म।
- 225 ऊप्रहण=छुडाने वाला, उगाहने वाला। छडावण=मुक्त कराने। अहिपुर=नागोर वाला से। छहतरह=शासक। तुरुक ग्रह=मवनों द्वारा गृहीत। ससारोइ=जगत्। जाणइ=जानता है। सोइ=वही, सोभा।
- 226 समी सहू=सामन लज्जा है साँड। ऊजळइ=निष्कलक। खागि=तलवार। आदउ=सम्भुष्य। अगहु=स्थिर, पवत। नवसहस=राठोडो की। यघारण=बढाने वाला। नाद=याग। सारति=आतुरता के साथ। साहणी=अश्वरथको का। साद=शत्रु, ध्वनि।
- 227 आइ लास=सना आ गई। वितहणा हुअइ=चढने की तमारी के लिए। छूटइ बहास=अश्व छोडे गये। अति तेजि=अत्यधिक उग्र। अचप्पल=चचल। तुरि=अश्व। आपि=दिये। तहणि रय=सूय के अश्वो। जेम=जस। निळ ग्रहइ=लगाम ग्रहण करते हैं। प्रापि=तडप कर।
- 228 दोपम=समुद्र। अछेह=विस्तृत। दुहूँ दळि=दोनों सेनाए। छळ=युद्ध। कुळ छळि=दश के लिए। झूमार गुरु=योद्धाओं म श्रेष्ठ। उठियउ=उठा। सळहळि=प्रकाशमान। वळि=युद्ध म। मत्पण=मपन के लिए। करण वळि=युद्ध करने।
- 229 निहुर=निभय। हियइ=हृदय स। नाहुर=सिंहो को। नेठळइ=बांधने वाला। बूकिय=गजन किया। हरि जिम=सिंह के समान। रिणवट=क्षत्रिय घम। वढइ=प्राथकर। खिति=पृथ्वी की। बाहर=सहायताय। अम्बर घरि=भाला धारण करवे। असमाणि=आकाश तक।
- 230 भञ्जन=भांगने वाला। रिम घड=सन्नुसै य। झूमार गुरु=योद्धाओं म श्रेष्ठ। दियण=देने। खण्ड सड=तलवार का प्रहार। खडग=तलवार। वहिस्यइ=बलायेगा। घीरां=घँघ क साथ। हुयसो=होगा। हमीरां=मवनो म।
- 231 कुळि दीपक=वग का दीपक। रावण देस=देग की रक्षा करने। छळ=के लिए। रूपक=गभायमान। पडि=युद्ध म। उपडियइ=गिरेगा। पहिलउ=गन्। गइ=हस्ती। गञ्जन=मदन करने वाला। रिणगहिला=रणो मत्त।
- 232 अनइ=ओर। अचागळ=धीर। बरविद्य=बर का साथी। जोहाली=यवनों के। मुहि=भूह पर। जबोडां=जबाव जबाडे को पबड कर हिलाना। सिहाइ=सहायक।
- 233 काळउ=धीर। कोटीं कारणइ=गटा क लिए। ससमय=समय। जरदि न सम्मवइ=बबच म नहा समते है। अमुराइ=मवनो की। यट्टि=सना म। माइ=समाते हैं।

- 234 पइनउ=तीव्र । तुरङ्ग=अश्व । जठी पवन=वायु से बड़ा । ग्रीवा=गदन ।
किरेह=माना । ऊळू गपन=आकाश स्थित उलूक के समान । साँपरि=युद्ध
म । भेळण=भिडने म । करिमाळ हत्य=हाथ में तलवार लेकर ।
- 235 जम गङ्ग=जस गंगा । आइत्त=युद्ध में । ओपत्ति=उत्पत्ति । अङ्ग=अग
दशीय । भरत्य चडिय=युद्ध में चढ़ा । भल्ल=अच्छा । परवाड मल्ल=युद्ध
चरित, वीर । पर चक्क पल्ल=पराये शासन को नहीं स्वीकारने वाला । चक्क=
चक्र=सना ।
- 236 जेवहउ=जमा । अजणि=सहस्रवाहू बदरो । आखइ=बहा जाता है ।
अपाळ=जश्व । फुरणी रयत्य=सूयक अशवा । जिम=जसी । फउरि फाळ=
वायु ह की कुत्तन वाला । सोपउ=शुद्ध, निष्कलक । सलीह=सीधा ।
चईनउ=अपनाया स्वीकारा, निर्वाचित किया ।
- 237 चम्पयउ पाइ=पर से दवाने पर । खइगरू=अश्व । कुळाछा=कुलाचें ।
छाहि=पृथ्वी पर, सराप । खाइ=भरता है । घर सुछळि=पृथ्वी के लिए ।
उढावण=उठाने । धार धूप=तलवार की धार । नवसहस रूप=राठोडो की
गोमा स्वल्प ।
- 238 रय पवन=पवन वग । रङ्ग=वाह-वाह । पड्डली=पिड्डली । पार=चपल ।
पन्नउ=तीखा तीव्र । पवङ्ग=अश्व । भाडिजी=अश्व । देय=देकर ।
पाउइ भार=रकात्र पर भार । निहार=निभय वीर ।
- 239 ठवइ=रखता है । पइ=पर । पात गत्ति=पात्र की तरह । ऊहउ=तेज,
ताता । अछेह=अपार । अत्ति=बहुत । करि=हाथ में । साहि सार=तलवार
लेकर । नारत्य तणउ=युद्ध का । जइ मुज्जि=जिसकी मुजाओ पर । भार=
उत्तरदायित्व है ।
- 240 ससामउ=प्रसिद्ध विशुद्ध । रग=रानो । वग=वाग, मुहरा का । पइनउ=
तीखा तज । पवङ्ग=अश्व । दई=देता है । त्रिणे पग=तीनों पर । काळासि=
धारण कर । चडिय=चढ़ा । कुत=माले को । भिगवा=भगु । हुवउ=
हुआ । किरि=माना । भगदत=भगदत्त ।
- 241 जङ्गली=अश्व । फुरणि=नयने । जगि रेखि=अग्रिरेखा । खण्डीर निस्सिहइ=
सूय का अश्व । तासि=उसकी । खाणि=पदाईश, उत्पत्ति स्थान । चापइइ=
शीघ्रता स । चडि=चढ़ा । भोमि चहड=पृथ्वी की चाह, सहायताय । उतराध=
पवना । तर्पा=के । देमा=देगा म । अगहू=अचल ।
- 242 माइइ=भरता है । कुलाच=कुलाचें । पहि=माग म । अगिग=हरिण ।
समोर=वायु का । बकिव=पकड़ लेता है । पसवान=रोमावली । सिग्य=
दीपक की लौ के समान । तडमदन=वीर वर । तङ्ग ताणि=तग खँच कर ।
पण्डीर=सिंह ।

- 243 पल्लाण वेगि=काठी के लिए शीघ्रता से काठी बसकर। नाचणी=वेग्या, पात्र। तालि=तास पर। नाचइ=नाचती है। निवञ्च=बुझकर। सोह सजिज=शस्त्र सजा कर। काबिली=यवनो की। उधेडण=चोरन क लिए, तितर वितर करने के लिए। जइत कजिज=राव जतसी क लिए।
- 244 पइनउ=तीखा। पय पाइ=परो से माग तय करने मे। सारङ्ग=मृग। साह=पकडने मे। सिहाइ=सहायक। ताजी=अश्व पर। वरिसी=बरेग। विचित्र=यवनो की। घाइ=प्रहारो से। घडा=सना का। वीद=दुल्हा बनकर।
- 245 कळियप्प=कवूतर के समान। शीव=गदन। निसिनाय=उल्लू, चन्द्र। वन=कान। मरकट्टु=ब दर का। चित्ति=स्वभाव। ताजी=अश्व। सम न=तुल्य। कोपि=रोपावित होकर। रिम राह=घनुओ क लिए राहु के समान। चडिय=चढा। रिणवट्टु रोपि=क्षत्रित्व का माग अपना कर।
- 246 ताजी तुरङ्ग=ताजी जाति का अश्व। ती हउ=उसकी। सतोर=दशा स्वभाव। माकडी जेम=ब दरो के समान। दइ=देता है। फाळ=कुदान। मोर=युद्ध के लिए अग्रिम पक्ति म। जोमर=वीर। जगिग=सचेत हाकर। सुरिसाण खान=यवनपति के खान। खवसी=सहेंगे चमकेगी। घडगिग=तलवार।
- 247 फुरणी=नयुने। वयक्क=रेखा के समान सीधा। वनी=अग्नि। फुरति=जाज्वल्यमान। गढदानइ=गदन। अरणी श्रीभ=कवूतर के। गति=समान। जुधि करण कत्य=युद्ध म सुयस करने। हइ=अश्व। रुड=चढा। पन्म=तलवार। ह्य=हाथ मे लेकर।
- 248 चामठी=घिमटी। सहइ नह=सहन नही करता है। सुरिसाण घेत=सुरासान की पदाईश। जइ=जिस की। सूध साळ=विशुद्ध वग। त्रिहुगळ=अश्व। काळ=वीर। तरसिस=शीघ्रता से। आवजिज=बांधकर। राग=तलवार। आरुहिय=चढा। अरिस=अश्व पर।
- 249 जगि रेल जाणि=अग्नि रेखा मानो। समीर जाळ=वायु के तुल्य। वूदइ=उछलता है। मुछ द=स्वतंत्र। पइ=पर। धरिय=रखता है। कोळ=बराह के समान। करिमाळ=तलवार से। करेवा=करने। कळह काज=युद्ध के लिए। रिण रूपक=युद्ध की शोभा।
- 250 वाळियइ=भेकर, बसकर। डूवि=पूछ की डोरी। वीटळी वाळि=पगडी लगा कर। धर=गृधरी। पाजे=परो से। खूदइ=रौंता है। चडिय=चढा। सुरिसाण सल्ल=मुल्तानों के लिए शल्य स्वरूप। मळवट्टण=मदन करने। मागर=सेना को।
- 251 न्निध जेम=मृग के समान। फाळ मांडइ=छलाग भरता है। साहणी सिग्घ=अश्व म सिरे। सजि सार=तलवार लवर। पारत्य करेवा=युद्ध करने। भीम=पांडव भीम के समान।

- 252 क्वाण=अश्व । मोर=मयूर की तरह । क्वाड=छत्र । परणी=फिरकी ।
 कि=अथवा । पात्र=वेदया । पाद्र=परो से । हिमइ=हृष की । पूरवण=
 पूति करने । हाम=इच्छा ।
- 253 राजवी ररथ=राजाआ के अश्वो की तरह । मूरउ=मृष से भूर । सोमउ=
 शुद्ध । वासइ=पीछे । आरुहियउ=चढ़ा । वाज=अश्व पर । कुळ लाज=
 वण की लज्जा । सुवारण=सवारने ।
- 254 ऊडइ चिडाह=चक् उडता है । वदणउ=वढने वाना । पिय=माग मे ।
 खडि=चलाने पर । आरुहिय=चढ़ा । अस्सि=अश्व पर । आउधि=शस्त्रों
 का । अपाल=नही रुकने वाला । मळेवा=मदन करने ।
- 255 घडहडइ=घडवती है । पइ=परो से । गयणागि=आवाणीय । वय्य=
 विजली । जुधि=युद्ध म । साख=साक्षी । जास=जिसकी । दोनाटी=
 दुनाली कर ।
- 256 परहरि=फहरा रहा है । पउरि=हन्की । फरि=ध्वजा के समान । अपरि=
 धूमता है । ऊँचाम अस्सि=अश्वों में उच्चतर । आरिखि=चिह्न । अमूल=
 अमूल्य । तेवहि=उसी । ब्रहास=अश्व पर । अहिकारी=गव से । धम्म=
 धमा आधार देता है । आडइ=सामने ।
- 257 सल्लूण=मुदर, लावण्यमय । तुरी=अश्व । सोमउ=शुद्ध । सुचङ्ग=अच्छा
 त्रापडइ=कुत्तन भरता है । तेजि=अश्व तीव्रता म । ती हउ=वह । पडियाळ
 पूणि=तलवार से घुनेगा । विडिमी=लडेगा । सम्प्रत=प्रत्यक्षत । ब्रहासि=
 अश्व पर ।
- 258 नामिय=शुक्ता है । कधि=कधे । नीशरइ नीर=झरने के जल की ।
 समयग=अच्छी फवने वाली । वाखरे=युद्ध सामग्री अश्व कवच इत्यादि ।
 पलाणे=कसे । वाज=अश्व पर । रिणि रूपक=युद्ध की गोभा ।
- 259 तुरी=अश्व । प्रिह जोति=दीपक । नेत=नत्र । खइग=अश्व । मुरिसाण
 सत=जिसकी पनाइश सुरासान की है । चापडइ=युद्ध मे शीघ्रता क साप ।
 चडण=चढने के लिए । चवळि=अश्व पर । दाणण=विदारक भयकर ।
 डुरङ्ग=डुगों को ।
- 260 माहण मुण्टु=अशवा म सिरमोर मय मुकट । वाउ ग्रहइ=हवा को पकडा
 दता है । मूत्रि=मुट्टि में । वाजिन=अश्व । विष्टुटु=चग्ने पर । वाजण=मारने ।
 दुपम=यवनो को । नवसहस=राठीडो का । नाद=मुयश
- 261 सैजाणइ=जानता है । कळह चलि=युद्ध का तरीका । सिरि=ऊपर ।
 वाळसोह=बाणछा । हारइ न हल्लि=चलन मे हारता नहीं है । सुवरि=हाप
 म । साहियइ=धारण कर । खगि=तलवार । लाखीक=यशस्वी । चईउउ=
 निर्वाचित स्वीकार करके । वोमि लगि=आकाश तक जा लगा ।

- 262 भीगार=बर की। भाति=तरह। भल्लि=अच्छी। भडिज्ज=घोड़ी। लळवळइ=लचकाती है। अङ्गि=शरीर को। ऐज्जम तिज्ज=लज्जावान वेश्या की तरह। हइ=अश्व पर। खत्रीवट्टु=क्षत्रित्व के माग पर। दोतियाँ=शत्रुआ के। सीसि=ऊपर। देवा दवट्टु=प्रहार करने के लिए।
- 263 कागारि=उल्लू के म। कन=वान। कुण्णुट्टु=कबूतर के से। कघ=कधे। वेस=वेश्या के समान। लुहमणी=लूबिया। व घ=वाधे। लह्हावि=दौडाकर। अस्सि=अश्व। असमाण लम्मि=आकाश तक जा लगा।
- 264 पुन वासी रयत्य=पवन रत्य। हाकियइ=हविन पर। ताळि मळइ हत्य (मु)=हाथो की ताली मिला देता है। मछराइत=स्वाभिमान गौरवावित। वाळासि क्त=भाला पकड कर। कळहण करेउ=युद्ध करने।
- 265 सोहलउ=सुंदर। तुरी=अश्व। वाँकउ=बाका। वेकाण=अश्व। कोट पूरवट्टु=उत्साह पूण करता है। कज्जि=युद्ध म। सङ्गहिय=लेकर। सुवरि=हाथ मे। सारि=तलवार। वाजिनि=अश्व पर। रिण जङ्ग वार=युद्ध के समय।
- 266 बूदइ=उठलता है। अडव गत्ति=आश्रयजनक चाल से। राही=गतकी। किरि=मानो। अवसरि=धूम धूम कर। रमइ=खलती है। रत्ति=रात म। सण्डरण=कूटने नष्ट करने। घडा=सना। ताग=तलवार स। चईनउ=स्वीकार करके। ध्यागि लागि=आकाश तक जा लगा।
- 267 गजि साकति=अश्व मजा कर। आणउ=लाया गया। रोपतउ=पैता है। फाळ=ऊँची कुदान। सतलङ्क=बंदर की। रक्क=तरह। मामी=प्रमुग, मुलिया। निहार=निभय बीर। सत्रुहराँ=शत्रुओ क। सीसि=ऊपर। फरइ सधार=तनवार घुमायेग।
- 268 जङ्गमाँ जत्ति=अश्या म पति के समान। थोथ गपन=आकाश को रौं देता है वामा को दबाय हुए। सासत गत्ति=शाश्वत चान। चडिय चीति (मु)=चित्त चढ गया। एक रीति=तलवार की रीति।
- 269 अस्मी=अश्व। सफरी छोह=रोप म मत्स्य के समान। लीतियउ=तेज चलाने पर, फक्न पर। सामहइ लोहि=शस्त्रा क सम्मुग। अमग=वीर। आह्वि अहल=युद्ध म स्थिर रहने वाला। दूजणी मन्=शत्रुआ क त्रिण मत्स्य स्वरूप।
- 270 नाति=ज्योति। जगएव=सूय। जत्ति=जमी। सोगउ=शुद्ध। मतत सत्ति=तेजवान है। वाहितइ=चलायेगा। सत्रा=शत्रुआ पर। तारायट्टु=तलवार। दमाँ प्रगट्टु=देश प्रदेश में विख्यात।
- 271 मत्हपति=पपटती है। इसी परि=दस प्रकार। सरी=चत्री। रम्म गति=अपराधा की चान म। गमसरि=नश्य म। सुवल्लन=अच्छी तरह चान वाला। हरि=अश्व पर। सज्जि पाणि=हाथों म मुमजित करव। अमुराँह पाट=यवन स य को। भेळण=भिटन। अराणि=युद्ध म।

- 22 हाटकी=अश्व । नीर हरि=नदी के समान । हीर हल्लि=सना मे चलती है ।
चञ्चले राउ=अर्धमा म राजा । चावुकी चल्लि=चावुक चलाकर । आरुहियउ=
चञ्च । सुरिताण सन सउ=बादशाह की सेना से । खग्ग साहि=तलवार धारण
करके ।
- 23 परि जास=जिस प्रकार के । पाइ=पर । वानर=बंदर के समान । प्रलम्ब=
लम्बे । अेक्णी=एक ही । प्राह्मइ=पीता है । पाणि=हाथ से । अम्ब=जल ।
ऊलाळि कूत=भाला चलाता है । साम्हउ=सामने । अयास=आकाश मे ।
दोमग्गि=युद्ध मे ।
- 24 तुरी=अश्व । आपइ धमस्स=जोर की चाल देता है । हसा=अशवा मे ।
मुहस=हस के समान । वांसइ=पीछे । ह्वस्स=ध्वनि, चलता है । सेधि=युद्ध
मे । वत्तवा हुयउ (मु)=परस्पर बातें करन । भउं=क्या । सत्रवेधि=दानु
वेध ।
- 25 वाउ=वायु का । झालइ=पकड़ता है । विवाण=विमान, प्रवाह । सीरजी=
भृजन हुआ है । वांसइ=पीछे लगन । मुरासाण=यवनो के । भार्ग मल्ल=
युद्ध मे अच्छी तरह से । जास=जिसके । मल्ल=मल्लिनाथ ।
- 26 धीवत्ति=पीता है । अम्ब=जल । एकण पाणि=एक ही हाथ से । खइगरू=
अश्व । तास=उसकी । ऊवाम खाणि=उच्च कुल । वाजिन्नि=अश्व पर ।
नवसहसी=राठोडो का । नाद=सुयश । नीर=आवरू (पानी) ।
- 27 अपि=बंदर के समान । पाळ=कूदान देता है । रिणहआवद्ध=कुत्तपुट के
समान । गळि=गले मे । गाण=प्रत्यञ्चा । जास=जा । गण्डइ गम घ=
हाथिया के हालता है । उजाळइ=उज्ज्वल करने । अप्प=स्वय की पानी ।
झूलाळ सीसि=यवना पर । देवा झडप=प्रहार करने ।
- 278 गहदनी=गदन । विक्किरि=भुर्गे के समान । सत्थोर गत्त=सत्वर गति । साफरो
छोह=मत्स्य के समान रोप । के=अशवा । लङ्कु मत्त=बंदर के समान ।
औध=सतति । गापत्तजीह=मूय की । तेणि=उम पर । अबीह=निभय
घोर ।
- 279 बहास=अश्व । सागीक लीण=एक लाल भक्षण किया हुआ । जर=जरी
की । मावत्ति पूठि=अश्व की पीठ पर । जडिम जीण=जीन कमी । गँजण
पळास=यवनो को नष्ट करन मारने ।
- 280 वाजिन=अश्व । वसाणि=शोभा । जळहरि=भय के समय । सिहण्ट=
मयूर । तण्डळइ=नृत्य करता है । जाणि=माती । बईनउ=निर्वाचित किया
ग्योकारा । रिम्म राह=अशुआ के सिद्ध राहु स्वरूप । सौवट्टइ=विपत्ति मे,
निरट । मर्मा=अशुआ के । मापी=सम्भुय । सताह=अवचित हाकर ।
- 281 सागीक=पगारवी । तुरह्म=अश्व । मूनि तवग=एक लाल मूल्य का ।
पूरउ=वग में । प्रवण्ड=उप तत्र । जइ=जिमक । मूघ पवत्त=दोनों पक्ष
शुद्ध है । निबोह=निबर यादा । गाभि छळि=स्वामी के लिए । कळहिवा=
सदा ।

- 282 पग=परों से। प्रपद्=नापता है। वनिक=वनक > धनऊर=वानर। पत्ति=चाल तरह। गिरि=पवत। धा=गाने वाले। पागारि=मयूर के समान, पानगारो। क घ=कघ। पोयो=नधुने। वि=अपवा। पत्ति=पत हो। पट्टि=पीठ पर। सामी=स्वामी की। मिहाइ=महापताथ। शीर=सम्प्रथ। मिसट्टि=मधुर।
- 283 घावतइ=घतता है। पाइ=परो से। नीघसइ=धेमती है। पु=तल। तिणि=उसकी। निहाइ=ध्वनिस। उभिपाणि (मु) =खडे हाथो म। घडा=सना का। अहिवा=मदन करने।
- 284 वीपरइ=वितर पडता है। वडि=युद्ध म। आवइ न वविक=कहने म नहीं आता है। परिपद पलाणि=काठी घरी। वरि=हाथा स। घेस डविर=वस्त्र टका। घड मोर=यवन सना बो। सँमेलण=मिलभे मिडने। मुहर पाइ=पहले प्रहार करने।
- 285 पातइ=डालता है। मिरी=यवनो क। प्राग=फासी। लाखीक=यसखी एक लाग। पमाइतउ=प्रोत्साहित करने पर। मोधि=मृत्य का। गिरि=ऊपर। ताम=अश्व पत्ति। माहिय=पारण करके। सुम्मसर=तलवार।
- 286 सारोत=संज्ञ। रिणमणिमत्य=मयूर। मिग्घ=चोरी के। बवक=कहते हैं। मनि=माना। साम् मिग्घ=य तर हो। सर्वा=गन्धो क। उरि=हृदय म। ताटसत्त=शल्य स्वरूप। मछराइत=रोय पूण।
- 287 रेवत=अश्व। पलाणउ=सुसज्जित क्रिया। वम्माथ=घनुग की। गीण=प्रत्यन्था। पातइ=उत देना है। कुरङ्ग=मृग क। धण घा=अपार प्रहारा द्वारा। घाण=समूह। रिण जङ्ग=युद्ध।
- 288 साहण राउ=अश्व म राजा। वाँजाडि=कुसकुट के समान। वधि=कघो वाना। मल्लइ कडाउ=छत्र की तरह ननता है। शानि=पक् कर। ओह=गस्त्र। चाडण=चढाण। मारि=तनवार मे। सोह=पोभा।
- 289 पव नहि=पजाव की। आपत्ति=पदार्थ। सम्मट=समाता। घट्टि=मना में। रणनूर महि=युद्ध वाद्या की ध्वनि। सार सज्जि=तनवार उवर। गाजणइ=यवना के। सीमि=ऊपर। मध गज्जि=मध गरजा हा।
- 290 तद्देगुरु=अश्व। महइ=चतता है। न >धोप=पवा की तरह। मछराळ=मात्स्य युक्त। अचप्पल=चक्का। पमण मोख=हवा छत्री हो। अगराण पूठि=अश्व की पीठ पर। जाह्वि=युद्ध म। सुज्जा हय=हाथ म तनवार लिय।
- 291 मज्जरो=कुसकुट के समान मजार बिलाटा। कघ=कघ। पद=पर हैं। माख मिग्घ=बतर स। सवण=वान। मुचङ्ग=बुने अचर। सडनसिग्घ=अग्नि शिवा। हइव=वांगगाह। राउ=राव क। ऊपरि=ऊपर महापताथ। उभि हाथि (मु) =खडे हाथा।

- 292 बडाळ=बिल्ली व स। मुलियर=मुलक, स्मितहास्य। सिग्घ=अग्नि सिग्घा के समान। मन पवन=मन और पवन के। जापइ=दौडता है। कि=बचवा। मिग्घ=मृग की तरह। द=देकर। अभङ्ग=दुजयी वीर को। लाख हूँत=लाखा स। टाळइ न अग=शरीर नहीं बचाता है।
- 293 तोल बन=तीसे काना धाला। वाजिन=अश्व। जेम=जसा। ऊहउ=उत्पन्न, गम मिजाज वाता। वहन=अग्नि व समान। माहणाहि=अश्वी म। दीवउ=दीपक। वाग साहि=दरगा धारण करके। यट्ट माहि=सता म।
- 294 सालउ=शुद्ध। सुवत्ति=भली गत करने वाला। गुणकळा=वेश्या। ठवइ=रखता है। गत्ति=चान, तरह। बङ्गाळ=यवनों के। मीसि=ऊपर। वावाडि बालि=बाल बोनेकर। वाजतइ गीनि (मु)=दोलक बजते हुए।
- 295 नाचइ=नाचना है। निटाळ=निश्चित रूप स। आवक=नगारो की। सम्ब=ध्वनि के साथ। त्रीडइ जु ताळ=जो ताल जोड कर चलता है। विरत्ति=वीरवर। वगिग=सना म। खुरिसाण=यवना के। साहियउ=धारण किया।
- 296 पग्गटइ=तजी स धूमता है। नट्ट जिम=नट की तरह। फुरणी=नृत्युनो स। घण जेम=गाला की तरह। नांवात्ति=डालता है। फाळ=फेन। करिय=करेगा। नवकाट राव=राठोड राव।
- 297 सागुर=अश्व को। बालि=लोह की कडी से। सार=खालकर। असि=अश्व। तीहउ=जसा उसी तरह। ऊहउ=गम। असवार=भवार है। प्रहसतइ वदनि=विहसत मुख स। पउरिस्मि पूर=पारुय म परिपूण। कळहणि=लहन म। कळर=नूर।
- 298 हालनइ=चलने ही। पि=दा। जोयण=योजन। हग=अश्व। अदराक नेत=इराक की पैदाईश। अमिराद=अश्वराज। अदा=पुत्र। सातिय=पकड कर। करिम्माळ=तलवार। सवाळ=सावधान वार।
- 299 ताजी=अश्व। सवेउ=मनेन। हइ=अश्व। जाम=जिसका। खेत=उत्पत्ति, स्थान। पांतइ=पीछे। हरेउ=देखा। आउधे=गस्त्रो स। वधारण=बडाने। आप=मान सम्मान। वाजिन=अश्व पर। वेवन्न=श्रीधित।
- 300 पाट=वावावट म। मुघट्ट=मुदर। मोनि=मूय म। लविग्घ=एक लाख (गल्पा)। परतविग्घ=प्रदण। जात=जिसका। रवत पविस्स=सूय व घोडा के पदा का। दे=देकर। पवङ्ग=अश्व का। ऊजउ=उठते हुए। अणी=मना म। टाळइ न अग=शरीर का नहीं बचाता है।
- 301 चारइ=दना है रजता है। त्रिणे नवग=तीन पीठ मुम्म। मूरउ=वीर। ताग=पदार्थ। पागरि=बचव। पनाणि=वाठी कमपर। काळउ पहाड=विषट वीर। वइरं=सन्ध्या का। विभाड=तप्ट करने।

- 302 चञ्चल=अश्व । गालेरउ=नारियल के । तिार=ऊपर । तत्य=चलता है । रूपन=बगवट, गाभा । जगवेस=सूय । रत्य=घोडा सी । घातिसइ=डालेगा । बुभारी घडा=अविवाहित, सना पर । घाउ=प्रहार । रिणि=युद्ध म ।
- 303 तुरी=अश्व । साहण चङ्ग=अश्वो म श्रेष्ठ । ऊगडी वाग=मुहरी उठत ही । वूदइ=वूदता है । असग=अत्यंत । गुजि गहिय वूत=हायो म भाला धारण करवे । भारतिथ=युद्ध को । भाळ=देखकर । पिठ=युद्ध । चईनउ=निर्वाचित किया ।
- 304 जया=माता । वह 7=अग्नि । तेवइ=यह । प्रति=करता है । वसास=विश्वास । तास=उसका । पून वोट=तलवार । कुळ लाज=वश की लज्जा । अजपुर=अजमेर । काट=दुग है ।
- 305 काळारि=बिल्ली, उल्लू । पक्व=तरह । ताजी=अश्व व । सुक्न=बान । निळ=लगाम । रत्य=सवारो । प्रति=वारे म । छोह=धोभ । म न=मन मे, मानता है । पदमि=अश्व का नाम । सिहाइ=धारण करके, सहायताय । पण झुझउ=झुझार वृत्ति वाला । भेळण=भिडने । मुहर=अग्रिम पक्ति म । धाव=प्रहार करने ।
- 306 खाफरा=यवना म । गडग=तलवार । वाहण=चलाने । सखुद्=सन्नाय । रिणि=युद्ध म । रउद्=यवना को । तुरी=अश्व । दीपक=दीपक के समान । चक्क=आँखें । नाटारभि=नत्य म । नाचइ=नत्य करता है । सूत नक्क=अश्व ।
- 307 वाजिन=अश्व । सत्त=सतवगुणी । तामसी=तमो गुणी । वग=मुहरी म । मन-पवन सरीखउ=मन और पवन के सदृश । जास=जिसका । मग=माग । ऊछजिय=मुशोभित । सार=तलवार से ।
- 308 हालइ=हिलता है । उवारि अम्भ=पेट का पानी । बाहू=मुजाएँ । असोस=पुष्ट । जडलग=कटारी । साहि=धारण करवे । जङ्गि=युद्ध म । वइरां=प्रतिशोध । वराह=यवना से । विडङ्गि=अश्व पर ।
- 309 साँवळइ=साकलो से । सोहू=शोभित । अगलउ=अग्रगामी । ऊर=चलने मे । पीडे=पिछली जाँघें । पट्टाड पूर=तग खचकर । कडच्छि=वरा के साथ । आरहिय=चढा । अस्सि=अश्व पर । अगच्छि=अगस्त्य ।
- 310 वाळियइ=लगाकर । टूबि=दुमची । पल्लाण=काठी । वधि=बाधकर । वत्रतर लड्डी जिसइ=लकी क्यूतर के समान । साहण सिगार=अश्व का गहना । पागडइ=रकाब पर । पाउ दे=पर देकर ।
- 311 खमइ=सहता है । बांघउ=बधना । ठाणि=ठान पर । असिराइ=अश्वराज । अमोलिक=बहुमूल्य । आणि आणि=ला-ला कर । देवाँउ=दीवान ।

बाषद रेगि=राज जोधा की तरह। दक्खि=दिलाकर। दियइ=देता है।
सक्खि=सागी।

- 312 गुण=प्रशयञ्चा। एण=मृग न। ग्रीव=गले में। दळ्ळ=सत्ता म। नक्ख=मुम्म पर। विमत्थी=घरता है। जु=जस। वेस=वेश्या। दीव=घरती है। माटमन=उदार हृदय। कुळि=वस।
- 313 पाथ=पर। लगुळि=बदर के समान। लाइ=रखता है। नाचतइ=नाचने से। भोमि=पृथ्वी। वाजइ=ध्वनित होती है। निहाइ=ध्वनि स। ग्रहि वाग=लगाम ग्रहण करने। गरट्टु=इट। हउवारे=हो कहने के साथ। पूठि=पीठ पर। हट्टु=हथौला।
- 314 वाजिन=अश्व। समेचउ=तुल्य। आढी पटाढ=तिरछे। अनत=अत्यंत। विमाळ=देरी। तरवारी=तलवार से। मळण=मिटने। मेळ=यवनो से। ताळ=युद्ध में।
- 315 अस्मि=अश्व। आगी=आगे। निसाण=अश्वो में। जिम=जैसे। ठवइ=रखती है। पाइ=पर। गति=चाल। पात्त=वेश्या। जुद्धमूळ=लडाई की जड़। कवाण=अश्व पर। कविलउ=यवनो का। कलूळ=शत्रु।
- 316 बरहास=अश्व। नास=नयुनो से। चाचरि=तलाट। विखारि=तोड़ देता है। पारवफ=ध्वजा, सनिक। असि=अश्व। फेरि=चलाने पर। ऊजळइ आसि=उज्वल आग वाला।
- 317 अचपळउ=चंचल। अउथ=आशय जनक। उरळउ=बोडा। उरुद्धि=वृत्तस्थल। जाणइ=मानो। पइमि=प्रविष्ट होकर। नीसरिय=निक्ला हो। जुद्धि=युद्ध स। ससिद्ध=सरोप। साहिय राडग्ग=तलवार धारण करने। आसाड सिद्ध=युद्ध में विजय प्राप्त करने वाला।
- 318 समापइ=देगा। मिरि=यवना की। बत्थ=युद्ध घोड़ा। वेकाण=अश्व। सेजाणइ=अच्छी तरह ग जानता है। कळह कत्थ=युद्ध कथा। रामसर साहि=तलवार धारण करने। साऊ=मली। सओष=अच्छे सानदान वाला। चईनउ=निर्वाचन किया। जड्ढि=युद्ध।
- 319 छोहि=शाय म। चक्कि=परिपूर्ण। परहइ=फहरा रही है। किरियउ=किरा। परकि=ध्वज। यामवाणी=सरस्वती। यसाणि=बखान करती है। वाजिन=अश्व पर। विमाणि=विमान पर।
- 320 थय=अग। बूदइ=उछलता है। कुरङ्ग=मृग। ज्ञापतउ=कुत्तन भरत हुए। टाळइ=बचाता है। भोति=मिति स। आत्रि नहि=जस कर बांधी। वाजिनि=अश्व की। चईनउ=स्वीकार कर। चहि=युद्ध म।
- 321 ममभउ रत्तवाइ=बाधु के प्रवाह की तरह। पायाळ=पाताल। डिमइ=ध्वनिग हाथा है। तइ=जिगची। मग्ग पाइ=परो के चलने स। म्हाार=मोटा। मळेवा=मर्भ करन।

- 302 भ्रूचल=भ्रम । गळरउ=नारियल वं । तिरि=उपर । चलत्य=चलता है । रूपक=भावावट, भाभा । जगवस=सूय । रत्य=घोडा सी । पातिसइ=डालगा । बुआरी पडा=अविवाहित, सना पर । पाउ=प्रहार । रिणि=युद्ध म ।
- 303 तुरी=अश्व । साहणी चन्ना=अशवा म थप्ट । उगढी वाग=मुहरी उठते ही । नूदइ=नूदता है । अलय=अत्यत्त । गुजि गहिय कूत=हाथो म भाला धारण करव । भारतिथ=युद्ध को । भाळ=डेपबर । पिठ=युद्ध । चईनउ=निर्वाचित विद्या ।
- 304 जपा=माता । वह्ता=अग्नि । तेवइ=वह । प्रति=करता है । यसास=विश्वास । तास=उसका । फूच बोट=तलवार । कुळ लाग=वस की तरजा । अजइपुर=अजमेर । कोट=दुग है ।
- 305 काळारि=विल्लो, उल्लू । पक्क=तरह । तापी=अश्व वं । सुकन=वान । निळ=लगाम । रत्य=सवारी । प्रति=धारे म । छोह=शाभ । मन=मन मे, मानता है । पदमि=अश्व का नाम । सिहाइ=धारण करवे, सहायताय । धण थूसउ=सूक्ष्म शक्ति वाला । भेळण=भिडने । मुहर=अग्रिम पक्ति म । घाव=प्रहार करे ।
- 306 साफरा=यवना म । गढग=तलवार । वाहण=चलाने । समुद्=सत्रोध । रिणि=युद्ध म । रउद्=यवना को । तुरी=अश्व । दीपकक=दीपक के समान । चक्क=आँसू । नाटारभि=नृत्य म । नाचइ=नृत्य करता है । पूत नकन=अश्व ।
- 307 वाजि न=अश्व । सत्त=सर्वगुणो । तामसी=तमा गुणी । वग्ग=मुहरी म । मन-यवन सरीखउ=मन और पवन के सश । जास=जिसका । मग्ग=माग । ऊछणिय=सुशोभित । सार=तलवार से ।
- 308 हालइ=हिलता है । उवरि अम्भ=पट का पानी । बाह्=मुजाए । असोम=पुष्ट । जडलग=कटारी । साहि=धारण करवे । जङ्गि=युद्ध म । वइरां=प्रतिसोप । बराह=यवना स । विडङ्गि=अश्व पर ।
- 309 सावळइ=सावलो स । रोह=शोभित । अगलउ=अप्रगामी । ऊर=चलन म । पीडे=पिछली जाँचे । पट्टाड पूर=तग खँचकर । बडच्छि=त्वरा के साथ । आइहिय=चढा । असिस=अश्व पर । अगच्छि=अगस्त्य ।
- 310 वाळियइ=लगाकर । टूवि=दुमची । पल्लान=काठी । वधि=बाधकर । कडूतर लड्डी जिसइ=लकी कबूतर के समान । साहण सियार=अशवा का गहना । पागइ=रवाब पर । पाउ दे=पर देकर ।
- 311 खमइ=सहता है । घाघउ=घघना । ठाणि=ठान पर । असिराइ=अद्वराज । अमोलिक=बहुमूल्य । आणि आणि=ला ला कर । देवानउ=दीवान ।

- बाषड रेगि=राव जोधा की तरह। दबिय=दिलाकर। दिग्द=देता है।
 सविय=साथी।
- 2 गुण=प्रत्यञ्चा। षण=मृग के। ग्रीव=गले में। दळ=सेना में। नकव=मुम्म, पर। विमल्ही=घरता है। जु=जसे। वेस=बेसया। दीव=घरती है।
 माटमन=उपर हृदय। कृळि=वण।
- 3 पाय=पर। लगूळि=बदर के समान। लाइ=रखता है। नाचनइ=नाचने स। भोमि=पृथ्वी। वाजइ=ध्वनित होती है। निहाइ=ध्वनि स। ग्रहि वाग=लगाम ग्रहण करवे। गरट्टु=ट्ट। हूउकारे=हो कहने के साथ। पूठि=पाठ पर। हूडु=हनीला।
- 4 बाजिन=अश्व। समेचउ=तुल्य। आढी पटाढ=तिरछे। अनत=अत्यंत। विमाळ=देरी। तरवारी=तलवार से। मेळण=भिदने। मेछ=मवनों से। ताळ=युद्ध में।
- 5 अस्मि=अश्व। आगी=आगे। निसाण=अश्वो में। जिम=जैसे। ठवइ=रगती है। पाइ=पर। गति=चाल। पात=बेसया। जुद्धमूळ=सडाई की जट। बेकाण=अश्व पर। कविलउ=मवनो का। बलूळ=शत्रु।
- 16 बरहाम=अश्व। नास=नथुनो से। चाचरि=सलाट। विखारि=तोड देता है। फारव=ध्वजा सनिक। असि=अश्व। फेरि=चलाने पर। ऊगळइ आसि=उज्ज्वल आना वाला।
- 17 अचपळउ=चचल। अउव=आशचय जनक। उरळउ=चौडा। उरुद्धि=वृथास्थल। जाणइ=मानो। पइमि=प्रविष्ट होकर। नीसरिय=निबला हो। जुद्धि=युद्ध स। सविद्ध=सरोप। साहिय खडग=तलवार धारण बरवे। आगाढ सिद्ध=युद्ध में विजय प्राप्त करने वाला।
- 18 समापइ=दंगा। मिरि=मवनों को। बत्य=युद्ध घोषा। बेकाण=अश्व। सजाणइ=भच्छी तरह से जानता है। बळह कत्य=युद्ध बया। समसेर साहि=तलवार धारण बरवे। साऊ=मली। समीप=अच्छे खानदान चाला। चईनउ=निर्वाचित किया। जङ्गि=युद्ध।
- 19 छोहि=त्रोध में। चविक=परिपूर्ण। परहरइ=पहता रही है। फिरिपउ=निरा। परविक=प्यत्र। घापवाणी=सरस्वती। वलाणि=वसान करती है। वात्रि=अश्व पर। विमाणि=विमान पर।
- 20 जेम=जग। बूदइ=उल्लंघता है। कुरङ्ग=मृग। प्रापनउ=कुशा भरते हुए। टाळइ=बषागा है। भीति=भित्ति स। आत्रि नदि=बग कर बांधी। वाजिनि=अश्व को। चईनउ=स्वीकार कर। बहि=युद्ध में।
- 21 समेपउ रत्यवाइ=वायु के प्रवाह की तरह। वापळ=पाठाप। द्विमइ=ध्वनित होता है। जइ=त्रिगती। शय पाइ=परों के समने से। मूतार=घोडा। मळेवा=मान करन।

- 302 चञ्चल=अश्व । गळरउ=गारिपत व । गिरि=ऊपर । रत्न=धनता है ।
 रूप=बावट, शाभा । जगवस=सूप । रत्न=पोषा सा । परतिसइ=
 डालेगा । कुमारी घडा=अविवाहित, सा पर । पाउ=प्रहार । रिणि=
 युद्ध म ।
- 303 तुरी=अश्व । साहणी चङ्ग=अश्वो म श्रेष्ठ । ऊगडी वाग=मुहरी उठत हो ।
 वृदइ=वृद्धता है । अलग=अत्यंत । मुजि गहिय कूत=हाथो म भाला धारण
 करव । भारतीय=युद्ध को । भाळ=देखकर । पिठ=युद्ध । चईनउ=
 निर्वाचित किया ।
- 304 जया=माता । वहा=अग्नि । तवइ=वह । प्रति=करता है । वसास=
 विश्वास । तास=उसका । पून धोट=तलवार । कुळ साज=वग की लज्जा ।
 अजइपुर=अजमेर । कोट=दुग है ।
- 305 काळारि=बिल्ली, उल्लू । पका=तरह । ताजी=अश्व व । सुबान=बान ।
 निळ=लगाम । रत्न=सवारी । प्रति=बारे मे । छोह=क्षोभ । मन=मन मे,
 मानता है । पदमि=अश्व का नाम । सिहाइ=धारण करव, सहायताय । पण
 झमउ=झुमार वृत्ति वाला । भेळण=भिडने । मुहर=अग्रिम पक्ति म । धाव=
 प्रहार करने ।
- 306 साफरा=यवनो मे । लडण=तलवार । वाहण=चलान । समुद्ध=सन्तोष ।
 रिणि=युद्ध म । रउइ=यवनो को । तुरी=अश्व । दीपक=दीपक के समान ।
 चवव=आँखें । नाटारमि=नृत्य म । नाचइ=नृत्य करता है । सूत नवग=
 अश्व ।
- 307 वाजिन=अश्व । सप्त=सत्वगुणो । तामसी=तमा गुणी । वग=मुहरी म ।
 मन-पवन सरीखउ=मन और पवन के सरण । जास=जितका । मग=भाग ।
 ऊछजिय=सुशोभित । सार=तलवार से ।
- 308 हालइ=हिलता है । उवरि अम्भ=पेट का पानी । वाट=मुजाए । असोस=
 पुष्ट । जडलग=कटारी । साहि=धारण करके । जङ्गि=युद्ध म । वइरां=
 प्रतिशाप । वराह=यवनो से । विडङ्गि=अश्व पर ।
- 309 सांळइ=सांकलो स । सोह=शोभित । अगलउ=अग्रगामी । ऊर=चलने
 म । पीडे=पिछली जाँघें । पट्टाड पूर=तग सचकर । कटच्छि=त्वरा के
 साथ । आइहिय=चढा । अरिस=अश्व पर । अगच्छि=अग्रस्त्य ।
- 310 वाळियइ=लगाकर । टूबि=दुमधी । पलाण=काठी । धधि=बाधकर ।
 वडूतर लङ्गी जिसइ=लकी कडूतर के समान । साहण सिगार=अश्वो का
 गहना । पागडइ=रकाब पर । पाउ दे=पर देकर ।
- 311 लमइ=सहता है । वांघउ=बधना । ठाणि=ठान पर । असिराइ=अश्वराज ।
 अमोलिक=बहुमूल्य । आणि-आणि=ला-ला कर । देवाँनउ=दीवान ।

- 352 लाक्षीक=यशस्वी के। मुखिल=मुह मे। दी हउ=दी। लगण=लगाम। पडछी=झून। माडिय=कसी। ताणियउ=खचा। तङ्ग=काठी के कसने की पट्टी। उरि=वक्ष पर। ताण ताणि=खच खेचकर कसी। सीरम्म गांठि=इसी नाम की गांठ। सपाणि=मजबूती के साथ।
- 353 उरि=वक्ष पर। फेरि=फिरा कर। सब घ=अच्छी तरह बाधकर। चञ्चल=अश्व। मुहि=मुख पर। चउर चाडि=चवर चढाया। छडावण=छुडाने के लिए। मारुवाडि=मरुप्रदेश को।
- 354 पाडडा=रकावे। विहूँ पासि=दोनों ओर। वाखरे=अश्व के कवचादि से। वानी=शोभा। ग्रहासि=अश्व के। खइगरु=अश्व के। डळी=बिछाई गई। चहुपासि=चारों ओर। खोळ=एक प्रकार का झल। रणवाखर=अश्व की सजावट के सामान। घूपर=घुघरुओं की। रगिय=बजी। रोळ=ध्वनि।
- 355 सण्ठविय=बाधकर। गळइ=गले मे। गजगाह=अश्वों का वस्त्र विशेष। मिक्ख=घोटो। वागुळि=चमगादड़। कि=मानो। डाळि=शाखा पर। विलम्बी=लटकती है। त्रिक्ख=वृक्ष की। डाल कजि=चाल चलाने के लिए। घटपडउ=बजाया। ढोइ=निकट। तोइ=उसका। रहइ=रहा है। कउतिग=कौतुक। जोइ=देख रहा है।
- 356 परकियउ=रखा। प्राण=शक्ति के साथ। पागडइ=रकाव पर। रेवत=अश्व पर। चउंटाहर=राव चूडा के वशज। चत्रवत्ति=चत्रवर्ती के समान। जाण=मानो। पङ्कपसि=गरुड पर।
- 357 छत्तीस=शासक। डावि=दवाकर। असि=अश्व को। छोहि=सरोय। विढण लोहि=गस्त्री द्वारा लडने के लिए। रेवत=अश्व पर। चम्पेवि=दवाकर। रण=रण को। वधि=बढकर। बोमि लग्ग=आकाश तक जा लगा।
- 358 उपाडि चरण=लगाम उठा कर। सङ्गावि=फवा। अस्सि=अश्व को। पाटपति=शासक। प्रहस्सि=स्पर्श करेगा। कवाण=अश्व को। कप्पि=घादर। धोर ह्य=फुनलि हाथों वाले। हइ=अश्व का। कयि=कघ। थप्पि=थपथपाये।
- 359 उइ गिरि=उदयाचन पर। जेम=जैसे। आदीत=सूय। ओपि=सुगोभित होता है। कूमनी सामी=पृथ्वी पति। आरुहिय=चढा। गइवरी=हाथियो। ऊरइ=उतरेगा। गाड=गघ। रुट=जवरदस्त।
- 360 तरुवा=यवनों। तखिक्क=गघ। सिरि=ऊपर। पाण=हाथ। तप्प=उत्ताप से। पइ=राव। गरुड=गरुड बनकर। देनी=देगा। सडप्प=अपट। मइगळ=हस्ती। सारे=तमवार से। सप्रामि=पुढ म। भाजइ=नष्ट करेगा। सनेह=पीरे धीर।

- 342 तुरी=अश्व । ताजी किलम्म=ताजिक स्थान वा । बलम=उत्पत्ति । सम्ब=सम (ताल पर) मुम्म । जाणइ=जानता है । सरम्म=नत्य करना । विलहिय=चत्वर । मांडण=मण्डन, शोभा । सबइ षट्ट=सभी संना म । प्रगट्ट=सुप्रसिद्ध ।
- 343 विलहिया=लिय, चढ़े । राजवश=राजकुल के । हइमरा=अश्वो । भडा=सुभटा की । हमस=ध्वनि । जइ जिसउ=जो जसा है । तइ=उसे । दोहू=दिया । जाणि=समझ बूझकर । पाटरइ=पाट का । पवेग=अश्व । पण्डव=अश्व रक्षण । पलाणि=वसेगे बसने लगे ।
- 344 दळ=पृथ्वी । आरति=दुःख । जर=घन । मावति=अश्व । आणउ=लाया गया । पटहोडउ=अश्व की । पण्डवा=सईशा न । पलाणउ=बस कर तयार किया । मोर बळा=भयूर के छत्र । भ्रिगसावा=बदर । मन=मानो । बूबड=मुपुबट । कावअरि=उल्लू स । काने=वान ।
- 345 कालम्म=बिल्ली के स । कान=वान । रेवत=अश्व । दीव=दीपव के समान । रतान=औता की । पाणेण=हाथ स । पिपइ=पीता है । पीव=नथुभो के । धुरि=प्रथम । वाळि=लौटाकर, ढाल कर । सय=साथ म माग म ।
- 346 पडछी=अश्वगूल गुदी के पीछ का भाग । गतुच्छ=छोटा । पीडे=जापें । पण्डरइ=तोड देना है । आठू=वक्ष म । भीति सण्ड=भीत व सण्डो की । पूछी=दुमची । तउच्छ=छोटी सी । सरथोर=फुर्तले । पय=पर । याजिन=अश्व । विछोडइ=तितर बितर करेगा । मिरी=पयनों की । वग्ग=सेना ।
- 347 पाण्डये=सईश । केवाणि=अश्व के । पासि=निकट । वाई=बजाई । परति=पृथ्वी । पाअ=परा से । ग्रहासि=अश्व न । सपेलि=देशपर । बळाइ=छत्र । क्रियइ=किये हुए । विगोर=भयूर व गमान ।
- 348 सोहारि=सुधार कर छिनक कर । नाम=नत्युने । काडि पास=पास गिबान कर । अगि=अश्व । ओरी अयास=आकाश की ओर आवेगा । तगूठ=पूछ । फेरिमउ=फिराई । अन्न=शरीर पर । पण्डवा=सईशो के । हायि=हाथ म । नाय=नही आता है । पवन्न=अश्व ।
- 349 रेवत=अश्व । भणइ=बहुता है । हुम=हृग्नि । तउ=तो । आप आउ=आप स्वय आइए । मूरिउज वण=सूयवशी की । सानिळि=मुनकर । समत्थ=गभी ।
- 350 वसि=बुन । मूर=भूय वा । मू=मरा में । वीर=राज वीरवा वा । नेत्र=भांते से । संवृ=प्रहार । घातउ=ढालूगा । निसीव=नवन्नीव । वराविय=बणन किया । राइ=राज ग । हातलि=मत्तकार कर । ग्रहाम=अश्व वा । नठहिय=निदग्ध व साथ । तुरी=अश्व ने । नित्रणी नाम=तयुन पृत्ताय ।
- 351 बेतनिय=विवाह म लेबर । सानिळा यत=वारता मुनकर । मारगर=सईश । पञ्च=पाँच । नूबिय=द गिद विरे । सपस=अश्व की । मुहरउ=मुहरा । उवारि=उतार कर । ताजी=अश्व के । मुहाह=मुह पर म । पदर घ=पैरों के बंधन । परा किया=दूर किय । पगाह=परो म ।

राव । उरि=इधर की ओर । करिय=करके । घूस=सेना को । मचकिपउ=तत्पर हुआ । लेय=लेकर । काळउ=बरवीर । मजूस=तलवार ।

- 370 धार=तलवार । सज=लेकर । करिय=की । सार=ध्यान पूर्वक सम्हाल । हितिया=सम्मिलित हुए । हुरमार=अश्वों की । हीस=ध्वनि । हईवर=अश्वों की । हुलाउ=ध्वनि । रउरौ=मवनो के । सिरि=ऊपर ।
- 371 पनर=पद्म । समत=सवत् । अकाणय=एकानवे । पक्करि=बचचित हुए । पुनि=पुन । मागसिरि=मागशीय । प्रथमपति=कृष्ण पक्ष । पुवरि=नरशय । हठमल=वीर राव । हईवइ=बादशाह । सउं=से । विट्टिपउ=सदा । चउधि=चतुर्थी । सिनिवारे=शनिवार को ।
- 372 वडिदनि=बनगानो । वावाहि=कहकर । डोइया=निकट पहुँचे । घाट=सेना । वाजतइ=प्रजते हुए । आरम्भ राम=युद्ध में राम के समान । अति=यहाँ, बहुत । आवियउ=आया । मोर सिरि=यवन के ऊपर । आपरति=अर्ध रात्रि के समय ।
- 373 घूषाहर=राठोड राव न । सामी=सम्मुख । डोई=पहुँचाया । हईवइ दळि=बागशाह की सेना में । हाइ होइ=ओ हाय=ओ हाय । जम्पिय=बहा । मुहाह=मुख से । ताह=तब ।
- 374 ताणिय=तान । कमाण=घनुप । कनाड=कानों तक । तुग=धीरो ने । बाणाउळि=बाणों के प्रहार से । ऊडिय=उड़ी । सोहि बूग=रक्त धारा । अइराम=ज राम । हिडु जणेहि=हिडुओ ने । घातिया=डाले । ताम=तभी । घणहि=सेना में ।
- 375 रोजि=बजाइ । रेवत=अश्वों की । रग्ग=ध्वनि । विच्छूट=छूटा हो । सडुली=साफल से । वग्ग=बाघ । हुलतइ प्रणेहि=उठते ही । मापइ=ऊपर । असि=अश्वों को । माहअेहि=महवासियो ने ।
- 376 वरकोइय=प्रकट हुई । तेजी=अश्वों की । विज्ज=विजली । माइये=भाइयो ने । भेळा=एकत्र । मडिज्ज=अश्वों को । राग वागाँ सँपोहि=रान और लगाम सम्हाल कर । लीखियउ=फँका । सामहइ=सम्मुख । सोहि=शरभो से ।
- 377 सङ्गामि धरि=युद्ध में धय पारण करने वाले । सामहइ=सम्मुख । सार=तलवार के । महियउ=सम्मिलित किया, छोटा । मागर=सेना में । मझारि=मध्य । मञ्चावि जङ्ग=युद्ध मचा कर । अम्मली माणि=रवाभिमानी । टालिय=बचाया । अङ्ग=शरीर को ।
- 378 रेवत=अश्व । घातियउ=डाला । नव सहम घणी=राठोड राव । कन्नह=राव शूनकरण की । नियाइ=तरह । खेड रइ राइ=खेड का राव । सोहिण=

- 361 रामण=रावण । मुगुल्ल=मुगल बादगाह । सहरइ=सहार करेगे । दइत=यवनो का । हुइसी=होगा । सँधाम=युद्ध । असपत्ति=बादगाह । उअह=समुद्र । अगतिय=अगस्त्य । सोखसी=सोखेगा । सत्र=शत्रुओं को । करिमाळ=तलवार । सत्थि=सेना ।
- 362 कटक्क=सेनाएँ । त्राँवक्क=नगारे । घाळ=बजे । वेडिसी=लडेगा । विमाळ=देर । असराळी=अत्यंत । ताजी=अश्व । ऊपगेरि=उमगित हो रहे हैं । पनगाँ नेस=गेप का गृह । पगेहि=परो से ।
- 363 नीसाण=नगारे । बाजि=बजे । नरगा नकेरी=युद्ध घाघ । रउड गति=अत्यंत तेजी के साथ । डउडो=डूडी । भरहरी=बजी । हालिया=चनी । ममत=ममय मस्त होकर । साइपर=सागर । जाणि=मानो । फाटा=फटे हो । सपत=सातो (सख्या)
- 364 नळ=नड । वाजिय=बजा । तुरिया=अश्वों की । बाजि=बजी । मास=मयूने । पयाळ=पातात । पाअे=परो से । ब्रहास=अश्वो के । जङ्गमाँ जोळ=अश्व समूह । कापियउ=परामा । सेस=गेपनाग । क्रूरम=कच्छप । कोळ=धराह ।
- 365 जडलग=कटार । फरी=युद्धास्त्र । लडलडइ=बज रही है । जोड=सधियाँ । पटहोडाँ=अश्वो के । पूरिपोड=पौडों का प्रवाह । ऊकपि=चढकर । अमुर रइ=यवनो की । सिलहगर=गस्त्राधिपति । सदाइ=अवसर से ।
- 366 कामाळ=अश्व की । पूठि=पीठ । छोडिय=छोड । कौडाळ=सिंहने । दइ=दो । जीणमाळ=अश्व कवच । दरपण=दपण के । सवतराह=बढिया । पटहोड=अश्वो के । घातिय=डाले । पवतराह=कवच ।
- 367 घगतरी=कवचो से । हुईयल=दस्ताने । जानवड=रान का कवच । सूर्रा=शूर । साहाह=कवच । पहिरइ=धारण करते हैं । सनड=तवार होकर लगकर । विडिवा=लडने के लिए । नर=वीर । हुअ=हुए । अउर व्रति=और ही वण क । किरि=मानो । पहिरी=धारण को हो । मुदाकनि=नायो ने ।
- 368 छफडी जरह=छ कडियो वाला कवच । सउ=से । अङ्ग=शरीर । छाइ=आच्छादित करने । रोपियउ=धारण किया । टोप सिरि=सिर पर टोप । पहरि=पहिना । रङ्गा वळोय=रानो का कवच । सत्र सइ=सजाये । करि=हाथो मे । हायळ=स्ताने । सङ्खळीय=पहने ।
- 369 ताजी तुरङ्ग=ताजी जातीय अश्व का । ताणय तङ्ग=तण खँच कर । जिडिवा=जीतने । आरुहि=चढा । अभङ्ग=अपराजेय वीर । घूघहर राउ=राठोड

राव । उरि=इधर की ओर । करिय=करके । घूस=सेना को । मचकियउ= तत्पर हुआ । लेय=लेकर । काळउ=बरवीर । मजूस=तलवार ।

- 370 धार=तलवार । सज=लेकर । करिय=की । सार=ध्यान पूर्वक सम्हाल । हिसिया=सम्मिलित हुए । हुमार=अश्वो की । हीस=ध्वनि । हईवर= अश्वो की । हुलाउ=ध्वनि । रउद्रा=यवना के । सिरि=ऊपर ।
- 371 पनर=प द्रह । समत=सवत् । अेकाणव=एकानवे । पक्तरि=कवचित हुए । पुणि=पुन । मागसिरि=मागशीप । प्रथम पखि=कुष्ण पक्ष । पुवरि= नरअण्ड । हठमल=वीर राव । हइवइ=बादशाह । सउं=से । विदियउ= लडा । चउधि=चतुर्थी । सिनिवारे=शनिवार को ।
- 372 वळिबति=बलशाली । वावाडि=कहकर । ढोइया=निकट पहुँचे । घाट= सेना । वाजतइ=बजते हुए । आरम्भ राम=युद्ध म राम के समान । अति= यहाँ, बहुत । आवियउ=आया । भीर सिरि=यवन के ऊपर । आधरति= अद्ध रात्रि के समय ।
- 373 घूघाहर= राठोड राव न । सामी=सम्मुख । ढोई=पहुँचाया । हइवइ दळि= बादशाह की सेना मे । होइ होइ=ओ हाय=ओ हाय । जम्पिय=कहा । मुहाह=मुख से । ताह=तब ।
- 374 ताणिय=तान । कमाण=घनुप । कनाठ=कानो तक । तूग=वीरो ने । वाणाउळि=बाणो के प्रहार से । ऊडिय=उडी । लोहि बूग=रक्त धारा । जइराम=ज राम । हिदु जणेहि=हिदुओ ने । घातिया=डाले । ताम=तभी । घणहि=सना म ।
- 375 रोळि=बजाई । रेवत=अश्वो की । रगव=ध्वनि । विच्छूट=छूटा हो । सद्धली=साकल से । वग्ग=बाप । हुसतइ प्रगेहि=उठते ही । मायइ=ऊपर । असि=अश्वो को । मारुअेहि=महवासियो ने ।
- 376 वरकोइय=प्रकट हुई । तेजी=अश्वो का । विजज=विजली । भाइअे= भाइया ने । भेळा=एकत्र । मडिजज=अश्वो की । राग वागाँ सँमोहि= रान और लगाम सम्हाल कर । सातियउ=फँका । सामहइ=सम्मुख । लोहि= गस्त्रा के ।
- 377 सङ्गामि घरि=युद्ध मे धर्यं धारण करने धाने । सामहइ=सम्मुख । सार= तलवार क । महियउ=सम्मिलित किया, छोडा । मागर=सेना में । मक्षारि= मष्प । मच्चावि जङ्ग=युद्ध मचा कर । अम्मली माणि=स्वाभिमानो । टाळिय=बचाया । अङ्ग=सरोर की ।
- 378 रेवत=अश्व । घातियउ=डारा । नव सहस घणो=राठोड राव । क्रप्रह= राव लूनकरण की । निपाइ=तरह । सेह रइ राइ=सेह का राव । लोहि=

सेना । सघार=यवनो की । डोयउ=प्रवेश कराया । वाजती धार=शस्त्रों की धार के बजत हुए ।

379 दळि दाणवि=यवनो की सेना का । दीठ=देखा । नेठाहि=निश्चित होकर । धीरि=धैर्य के साथ । नाखिय=ढाला, चलाया । निश्रीठ=भांसे का । हबिय हक्क=कोलाहल होने लगा । करिमाळ=तलवार । वाजि=बजी । काळवि=कोलाहल हुआ । कटक्क=मना म ।

380 पडियाळ=तलवार । घूणि=चलाकर । पउरिस्सि पूरि=पौरुष से परिपूर्ण । गाजणइ सणइ=यवनो के । पइठउ=प्रविष्ट हुआ । गरुरि=गर्वाला । खुरिसाण=यवनो को । विवाणे=चलाये । खेट=राठोडो ने । साग=तलवार से । वाजिया=बजे । घाउ=प्रहार । वजागि=वज्राग्नि ।

381 साफरीं=यवनो पर । वाहइ=चलाता है । खडग=तलवार । वासदे=अग्नि । जाण=मानो । वन=जगल म । विपग=लपो हो । ऊतरा सनि=यवनो की सेना मे । अबीह=निभय । सींधरे=हाथियो म । पईठउ=प्रविष्ट हुआ हो ।

382 कूमायळ=कपोल स्वरूप । भाजइ=तोड़ते हैं । मीर=यवनो के । ठ्ठुखड=ढेर । चडइ=त्रोघा वत हुआ । अनिब घ=अपार, अनगिनती । आवडि=शस्त्रो से । टोपि=टोपो पर । ऊभरी=प्रकट हुई । अगि=अग्नि । खीटिया=नष्ट किया । घाट=सेना को । बेवे=दोनो । खडगि=तलवारों से ।

383 गहगहिय=गौरवावित हुए । घाट=सेनाएँ । गरीठ=भारी, अत्यन्त । राठउडि=राठोडो । रउद्रि=यवनो के मध्य । वाजियउ=बजी । रीठ=शस्त्रों की झडी । सधीर=घमवान् । वाज=लडते हैं । पडिकाळे=तलवारों से । ऊडइ=उडत हैं । जिरहपोस=अश्व वयच ।

384 रिम्मराह=शत्रु के लिए राहु स्वरूप । सङ्गरई=सहारे जाते हैं । मीर=यवन । सहिता=सहित । सनाह=कवच । जरदाउळि=कवच । सेल=भालों की । जीह=अणी से । अरिउरे=शत्रुआ म हृदय म । अणी=नोक । ठेलइ=धुसा देते हैं । अबीह=निभय धीर ।

385 घण=अयस घन के समान । पाइ=प्रहारों से । मुगल्लां=यवनों के । घडिय=घडे बूटे । घट्ट=शरीर । रहचिवा=भिडने के लिए । घट्ट=सेना म । बाहरट्ट=ध्वनि । सेलार=अश्व । सहइ=सहते हैं । सार=तलवारों । भभार=प्रहार से । पट्ट=नष्ट होते हैं । पहार=पहाड, प्रहार से ।

386 ताइयां तणे=शत्रुओं के शरीर पर । वाजइ=बजती है । तियग=तलवार । गात=गरीर । हूता=से । अत्रग=किनारे । विडइ=लडते हैं । रिणि रस लुड=युद्धरस लुभ । सारे=तलवारो से । विबिसुद्ध=वेमुष, अचेत ।

47. अइराकि=ऐराकी। अणी=सना में। पाया=पर। अठाहि=रखते हैं। वाहइ=चलाते हैं। खडग=तलवार। वेसे=आयु से। विरक्त=विरक्त होकर। रिणठाह=युद्ध स्थान पर। रक्त=रक्त। आवद्ध रक्त=शस्त्रों में अनुरक्त।
- 388 रउद्र दळ=यवन सेना में। रहन्वइ=सहारा करता है, भिड़ रहा है। होहू=हुआ हो। कि=मानो। मेह=बरसा। बाजइ=बजती हो। हुलाउ=घर्षा कालीन शीत पवन। ताइया=शत्रुओं के। उरे=वध में। घइ=देता है। कूत=माते से। तेह=जलतिक्तना। मारअउ राउ=मार राव है। मातउ=मचा।
- 389 घढहइ=जोर से बजने पर। घजइ=कम्पायमान होती है। घरत्ति=पृथ्वी। पडियालगि=तलवार से। वरसइ=बरस रहा है। खेडपत्ति=मार राव। वीकाहर=राव वीका कवशज। इंद=इंद्र। वगि=सेना में। खाफरी सिरे=यवनों पर। खिविया=चमकीं। खडगि=तलवारें।
- 290 फउज=सेना की। फूर्ति=दूट रही है। पाळ=पचा, मर्यादा। ब्रह्मण्ड=ब्रह्मण्ड स्वर्षी। गाजइ=गज रहा है। विवाळि=मध्य। अम्बहर=मेघ स्वर्ष। अवार=निरंतर। घुडुक्रिया=गरजी। मीर मुहि=यवनों पर। खग=तलवार रूपी। धार=धाराएँ।
- 391 सार=तलवार रूपी। मेळ=यवन। सहइ सविक=सह सबते हैं। करिमाळ=तलवारों से। प्राह=कहर। पडियउ=पडा। कटविक=सेनामें। घूघहर=राठोड राव के। वरसतां=बरसते हुए। घन घन=घय घय। गुरिजा=गुरों की। निहाइ=ध्वनि से। बाजइ=बजता है। गिगन=आकाश।
- 392 सुरिसाण सीसि=यवनों पर। बाजइ=बजती है। खडग=तलवार। ऊभर=प्रकट होना है। बूर=बुरादा। आकामि=आकाश। लग=तक। बढनां=ढहते हुए। विलम्बर=भिड़ते हैं। वात चार (मु)=शीघ्रता से। घउसिया=त्वरा के साथ गिरने लगी गरजी। मीर मुहि=यवनों पर। खग धार=तलवार की धारें।
- 393 मरिया=मदन किया। जगमल्ल मल्ल=जगमान मानावत। ढण्डोळि=बजाकर। ट=ढोल। मारिय=मारा। मुगुल=मुगलों की। रळनळ=फल रहा है। रक्त=रक्त। सोखइ=सोख रही हैं। सपल=साओं जोगिनियों। सम्भळइ=मुनते हैं। सत्त=वीरता-पूवक लडना। विसयरइ=फल रहा है। वत्त=मुपग बातें।
- 394 अणिजे=सेना में। असत्त=योगिनियों। पूरिया=पूण किये। पत्त=पात्र। तिम=वसे। छइइ=कूटते हैं। गत्त=शरीर की। साळि=धावल की।

सेना । खघार=यवनो की । डोयउ=प्रवेश कराया । वाजती धार=श
 धार के बजते हुए ।

379 दळि दाणवि=यवनो की सना का । दीठ=देखा । नेठाहि=निश्चित ह
 घोरि=धय के साथ । नांखिय=बाला, चलाया । निथीठ=भाले की ।
 हक्क=कोलाहल होने लगा । करिभाळ=तलवार । वाजि=बली । काळ
 कोलाहल हुआ । कटक्क=सना मे ।

380 पडियाळ=तलवार । घूणि=चलाकर । पउरिस्सि पूरि=पीरुप से परिपु
 याजणइ तणइ=यवनो के । पइठउ=प्रविष्ट हुआ । गरुरि=गर्वी
 सुरिसाण=यवनो की । विवाणे=चलाये । सेड=राठोडो ने । खाग=तल
 से । वाजिया=बजे । घाउ=प्रहार । अजागि=वज्राग्नि ।

381 खाफरी=यवनो पर । वाहइ=चलाता है । सडभग=तलवार । वासदे'
 अग्नि । जाण=मानो । वन=जगल म । विलग्ग=लगी हो । ऊतरा सनि=
 यवनो की सेना म । अबीह=निभय । मीघरे=हाथियो म । पईठउ=प्रविष्ट
 हुआ हो ।

382 कूभापळ=कपोल स्वरूप । भाजइ=तोड़ते है । मीर=यवनों के । ऊकुवड=
 डेर । चडइ=क्रोधावित हुआ । अनिव भ=अवार, अनगिनती । आवडि=
 तस्त्रों से । टोपि=टोपी पर । ऊभरी=प्रकट हुई । अग्नि=अग्नि । सीटिया=
 नष्ट किया । घाट=सेना की । बेवे=दोनो । लडग्नि=तलवारो से ।

383 गहगहिय=गौरवावित हुए । घाट=सेनाएँ । गरीठ=भारी अत्यन्त ।
 राठउडि=राठोडो । रउद्रि=यवनो के मध्य । वाजियउ=बजी । रीठ=तस्त्रों
 की शही । सधीर=धयवान् । वाजइ=तडते हैं । पडिकाळ=तलवारो से ।
 ऊडइ=उडते हैं । जिरहपास=अश्व वच ।

384 रिम्मराह=शत्रु के लिए राहु स्वरूप । सङ्घरई=महार जाते हैं । मीर=यवन ।
 सहिता=सहित । सनाह=कवच । जरदाउळि=कवच । सेल=भालो की ।
 जीह=अणी से । अरिउरे=शत्रुओ म हृदय म । अणी=नोक । ठेलइ=पुसा
 देते हैं । अबीह=निभय घोर ।

385 घण=अयस घन के समान । घाइ=प्रहारों से । मुगल्ला=यवनों के । घडिय=
 घडे वूटे । घट्ट=शरीर । रहचिवा=मिडने के लिए । पट्ट=सेना म ।
 बाहरट्ट=ध्वनि । सेलार=अश्व । सहइ=सहते हैं । सार=तलवारें । मभार=
 प्रहार स । पट्टे=नष्ट होते हैं । पहार=पहाड, प्रहार से ।

386 ताइयां तणे=शत्रुओ के शरीर पर । वाजइ=वजती है । तियग्ग=तलवार ।
 घात=शरीर । हूता=स । अलग्ग=किनार । विडइ=तडते हैं । रिभिरस
 सुड=युद्धरस लुम्प । सारे=तलवारों स । बिभिसुद्ध=बेमुध, अचेत ।

जिमू=जसे । रासत=शत्रुओं को । राठउठ राह=राठीहो का राव । साह=बाहगाह । गळबाह पाति=गले में बाँहें डालकर । भजइ=नष्ट हैं । गडाह=पत्थर के गोली से ।

- 395 रडवडइ=इधर उधर उछल रहे हैं । रण्ड=मस्तक । राडि=तलवार । विसण्ड=कटे हुए । ताजिया=अश्वो के । तुण्ड=सिर । सइधणी=भोमि=पृथ्वी व । घाहसोत (मु)=राजा रामचंद्र की तरह । देवता रा देव स्वल्प राव । पाडइ=मारते हैं । दर्त=दत्य रूपी कामरा को ।
- 396 श्री राम=श्री रामचंद्र व समाप्त । सारे=ताबारों से । निसरू=निलोहडे=गस्त्रो से । लसकर=सेना रूपी । लियइ=ली । गळवळइ=गळकरते हैं । रोम=यवन । मायणउ=यामन । विलागउ=सगाहो ।
- 397 आहणिय=भारा । धेकि=एक को । असिमरि=तलवार । उलाहि होकर । पहटिया=मार के आगे दोह । विया=अय । गमिया=घले । पयाळि=पाताल म । पारूठ पाअे=पर रखकर । किय=किया ।
- 398 गोरियां सणी=यवनों के । गाळा=गलबघन । ग्रहाह=लेकर । बगुडि काटने के लिए । आइ=लाई गई । बाळी=लौटाई । विचाह=बाच मे मोलावि=छुटाई । गाइ=गायो को । राजवी जेम=राजाओं की तरह ।
- 399 सामी=सम्भुत । कूत=भाले के । घाडि=चढाकर । ऊतरा सेन=यवनो सना को । नातिय उपाडि=नष्ट कर डाला । झुलाळा=यवनो को । साडाडि=प्रत्येक धुप के पीछे तितर बितर । मोटा ग्रह=बड़े ग्रह से । मोली मुक्त करवाई । मारु भाडि=मरुप्रदेश ।
- 400 सद्धारि=सहार करके । भूगळी=यवनो की । साख=पंदाईश मान प्रति का । लाहउरि=साहोर वाला । गयउ=गया । सेरावि=नष्ट करवा का साख=यश, मान प्रतिष्ठा । मुरघरा=मरु प्रदेश म । धघिय=बढ़ा । उ मण्डाण=उत्सव होने लगे । सिवहरिय=स्मरण करके । परि=अपने पः
- 401 परभविष्य=पराजित करके । अम्ब=पानी । उतारि=उतारा । अमज्जा=वीरों ने । कहूँ=कही । गिडावि=सुढकाते हैं वराह । गोमट्ट=सिया ताडि=छींचते चलाते हैं । आठुअे=वधस्थलो को । तरज्जा=अश्वो म कहूँ=कही । समीर=अमीर । मइमत=मदो-मत्त । भोमि लोटइ=पृथ्वी लोटते हैं । घाइ भरिया=घावो से परिपूण । कहूँ=कही । इइइइइ=हिनहि रहे हैं । अज्ज=शरीरांग । असमरि=तलवारो से । ऊतरिया=कटे हुए काबिली घट्ट=यवन सेना को । इहवट्ट किय (मु)=तितर बितर कर दिय थीकाहर=राव थीका के वणज । वधरू=याघ्र ने । प्रयाडउ=गुद धरि अनुकरणीय माग । किय जमा=जमा किया । जाम=जब तक । सूर=सूय ससिहर=चंद्र । जरू=मजबूती के साथ ।

